श्रीहित प्रेमदास जी
की वाणी
दम्पति फूले कदंब तर झूलत,
बरषत फुही घमड़ि घन आये
सम्पादक
हितव्रजसअलिशरण

❀ श्रीहित राधिकाबल्लभो जयति ❀

❀ श्रीहित हरिवंश चन्द्रो जयति ❀

श्रीहित प्रेमदासजी की वाणी

श्रीहितअलि-सिंगार

अथ श्रीहितअलि जू कौ सिंगार वर्णन :— दोहा

जै-जै श्रीगुरु-कृपा तें, आनँद बढ़त न थोर।
तिनके चरन-कमल चढौ, रहौ कमल हृद मोर[१]।।१।।
श्रीराधाबल्लभलाल कौ, राजत प्रेम अनूप।
सो मूरति श्रीहितसखी, वरनत तिनकौ रूप।।२।।
कंचन-चौकी मणि-जटित, राजत नवल निकुंज।
तापर छबि सौं हितअली, शोभित शोभा-पुंज।।३।।
चहुँ दिशि झमकत सहचरीं, भरीं प्रेम आनन्द।
कनक-कुमुदिनी खिले मुख, निरखि वदन वर चन्द[२]।।४।।
कुसुमित वैंनीं फूलि रही, मनौं लता सिंगार[३]।
हेम-कदलि दल पीठ पर[४], राजत शोभा-सार।।५।।
सिंदूर-संवलित मुक्त-फल[५], सजे माँग में चारु।
मनु अंकुर अनुराग के, प्रगटे भूमि सिंगार।।६।।
झिलमिल-झिलमिल होत सिर, कलंगी कलित सुठौन[६]।
झूमि रहे मोती ललित, गह्यौ निरखि दृग मौन।।७।।
जगमग-जगमग होत सिर, सीसफूल छबि-मूल।
अद्‌भुत रविजा[७] में मनौं, कनक-कमल रह्यौ फूल।।८।।

---

१. मेरा हृदय-कमल सदा जिनके चरण-कमलों में चढ़ा रहे २. श्रीहितअली का मुख-चन्द्र देखकर ३. मानों शृंगार की लता फूल रही है ४. स्वर्ण-कदली के पत्ते की भाँति की पीठ पर ५. सिन्दूर संवलित मोती ६. सुन्दर ७. केशावली रूपी जमुना में।

बैंदी मोतिनु की लसत, दरसत अद्‌भुत भाइ।
विमल रूप की बेलि मनु, वदन चन्द रही छाइ[१]।। ९ ।।
तिलक जराऊ जगमगत, भाल रसाल अनूप।
रूप-सिन्धु मुख-छबि मनौं, छलकी सहस सरूप[२]।। १०।।
लाल बिन्दु वर भाल पर, झलकत बैंदी श्याम[३]।
मनु गुलाब के फूल पर, लसत भृंग[४] अभिराम।। ११।।
भृकुटि जुटीं विवि भ्रमरिनी[५], कनक-कमल-मुख आइ।
नील कमल दृग पर किधौं, रूप-लता रही छाइ।। १२।।
अंजन जुत रंजन[६] नयन, छबि कछु कहत बनैं न।
विशद विशाल कृपाल वर, जुगल-रूप-रस-ऐंन[७]।। १३।।
रतन-जटित ताटंक[८] श्रुति[९], झमक झूमकनि चारु।
कनक-कमल-मुख में दिपत, तन धरि शोभ अपारु[१०]।। १४।।
तिल अभिराम कपोल पर, श्याम महा छबि-धाम।
दल गुलाब पर भृंग मनु, राजत आठौं याम।। १५।।
घुँघरारी अलकैं झमकि[११], छलकत छबि सु नवीन।
सचिक्कन श्याम सुहावनीं, रहीं फुलेलनि-भीन।। १६।।
कीर बसत वन फूल तिल, चंपकली कुँभिलाइ[१२]।
नासा की उपमा रुचिर, नासा ही ठहराइ[१३]।।१७।।

---

१. मानों मुख-चन्द्र पर रूप की विमल बेली छा रही है २. मानों रूप के समुद्र मुख से नये-नये सहस्रों रूप में छबि छलक रही है। ३. हितअलीजी के भाल प्रान्त पर लाल बिन्दु और उसके थोड़े ऊपर श्याम बिन्दु सुशोभित है ४. भ्रमर ५. भृकुटि रूपी दो भ्रमरनी ६. सुन्दर ७. जुगलवर के रूप और रस के घर ही हैं ८. 'ताटंक' नामक कानों का एक आभूषण विशेष ९. कानों में १०. ताटंक का प्रतिविम्व और झूमका की झमक स्वर्ण-कमल स्वरूप मुख-कपोल पर ऐसी दीप्तमान हो रही है, मानों शोभा ही रूप धारण करके सुशोभित हो रही है ११. पाठा०—झलकि १२. नासा की सुन्दर छबि देखकर तोते वन में छिप जाते हैं और तिल का फूल व चंपकली कुम्हला जाती हैं १३. ठहरती है या स्थिर होती है।

बेशरि सुन्दर सखी की[१], सखी लखी छबि चारु।
जदपि न दृग छबि सौं लगत, छबि दृग लगत अपार[२]।।१८।।
बेशरि-मोती थरहरत, जगमग जोति अभंग।
क्यौं न दिपै मुख-चन्द कैं, शशि-गोती ह्वै संग[३]।।१९।।
जपा विंव की कहा छबि[४], कितिक पँवारी रूप[५]।
लाल मणिनु फीके[६] करत, राजत अधर अनूप।।२०।।
झिलमिलात मुसिकान मृदु, वरषत पुहुप रसाल[७]।
छबि के फूलनि की मनौं, तजत चन्द्रमा माल[८]।।२१।।
जगमगात दसनावली, रचित पान छबि पूर।
कमल-कोष में पाँति मनु, मोती रँगे सिंदूर[९]।।२२।।
झलकत चिलकी चिलक सौं[१०], छलकत छबि की माल।
चिवुक बिन्दु श्यामल लसत, दरसत परम रसाल।।२३।।
ग्रीव सींव छबि की ललित, रेखा त्रिगुन अनूप[११]।
हीरनि की दुलरी रही, झुल री! झलकत रूप[१२]।।२४।।
चंपकली[१३] चंपक वरन[१४], तन पर चिलकत[१५] चारु[१६]।
माल मोतियनि की बनी, झलकत रूप उदार।।२५।।
हार चन्द्र-सैंनी किधौं, छबि-सैंनी[१७] विस्तार।
बसे आइ उर-ऐंन[१८] किधौं, अमित चन्द्र ह्वै हार[१९]।।२६।।

---

१. श्रीहितसखी की २. यद्यपि मेरे दृग उस अद्वितीय छबि को नहीं छू पाते अपितु उनकी अपार छबि ही मेरे दृगों में आकर समा जाती है। ३. मुख-चन्द्र के साथ वह वेसर का मोती इतना अधिक दीप्तमान क्यों न हो क्योंकि वह चन्द्रमा के गोत्र का ही है ४. जपा पुष्प के विम्व की शोभा भी अधरों की शोभा के समक्ष तुच्छ है ५. अधरों में रूप की गहराई कितनी है- यह कहना कठिन है ६. पाठान्तर-फूके ७. रसपूर्ण फूलों की वर्षा हो रही है ८. मानों चन्द्रमा छबि के फूलों की माला छोड़ता है ९. मानों कमल-कोष में सिन्दूर से रँगे हुए मोतियों की पंक्ति सुशोभित है १०. चमकीली दमक के साथ ११. ग्रीव में सुशोभित तीन रेखायें छबि की सीमा ही हैं। १२. उस ग्रीव में हीरों की दुलरी झूल रही है जिससे ज्ञात होता है कि रूप ही झलक रहा है १३. चम्पा के फूलों की १४. पीले रंग वाले १५. चमक रही है १६. सुन्दर १७. शोभा की फौज का १८. हृदय रूपी भवन में १९. अमित चन्द्रमा ही हार का रूप धारण करके।

हार[१] उरबसी उर बसी[२], लसी शशी रद कीन[३]।
गसी सरस मखतूल में[४], दरसी शोभ नवीन।।२७।।
हरी कंचुकी तनि रही[५] झलकत सरस अमंद।
कनक-कमल कुच मनु भये, कली निरखि मुख-चंद[६]।।२८।।
कंचन-गिरि-कुच रूप की, रोमावलि-सरिताहि[७]।
नाभि सिन्धु रस कौं चली[८], त्रिवली लहरि ता माँहिं[९]।।२९।।
कुँवरि किशोरी रूप-निधि, प्रेम-सिन्धु नव लाल।
केलि विशद हिय-भवन में, राजत सदा रसाल[१०]।।३०।।
भुजा कनक की बेलि मनु, झेलि रूप रहीं झूल।
अंगद मणिमय फूल मनु, फौंदा अलि रस मूल।।३१।।
नीलमणी की चुरी कर, खमकीं[११] झमक अपार।
कंचन के कंकन करत, रंक शंख छबि चारु[१२]।।३२।।
जटीं कुंदन[१३] अरुणिम[१४] चुनीं[१५], पहुँची[१६] पहुँचनि[१७] कीन।
गजमोतिनु के अति सरस, गजरा[१८] बने नवीन।।३३।।
रतनचौक[१९] छबि-चौक सो[२०], करनि[२१] रहे छबि छाज।
कनक गगन् करजनि भवन, नख-उड़गन-उड़राज[२२]।।३४।।

---

१. पाठा०—आइ २.'उरबसी' नामक हार हितअली जू के उर में सुशोभित है अथवा 'उरबसी' नामक हार की शोभा तो मेरे हृदय में आकर ही बस गई है ३. वह इस प्रकार सुशोभित है कि उसके आगे चन्द्रमा की कान्ति भी फीकी पड़ गई है ४. पाठा० सौं ५. कसी हुई ६. मानों मुख-चन्द्र को देखकर कनक-कमल रूपी कुच कली बन गये अर्थात उन्होंने अपना मुख मूँद लिया ७. रोमावली रूपी सरिता निकली ८. रस-सिन्धु नाभि की ओर चली ९. उदर की तीन रेखायें ही उस रस-सिन्धु की लहरें हैं १०.रूप-समुद्र श्रीप्रिया और प्रेम-समुद्र श्रीलाल की विशद केलि इनके हृदय-भवन में सदा सुशोभित बनी रहती है ११. शब्दायमान हो रही हैं या बज रही हैं १२. कुवेर की निधि के देवता की सुन्दर छबि को रंक कर देते हैं अर्थात् बहुमूल्य हैं १३. स्वर्ण १४. लाल रंग के १५. माणिक्य के छोटे-छोटे टुकड़ों या नगों से १६. कलाइयों पर पहनने का एक आभूषण विशेष १७. हाथ की कलाइयों में १८. घनी गुँथी हुई बड़ी माला १९. हथेली की पीठ पर पेहनने का एक आभूषण विशेष २०. पाठा०—सौं २१. हाथों में २२. स्वर्णाकाश स्थित हस्तांगुलियों के भवन में नख रूपी तारागण और चन्द्रमा सुशोभित हैं।

कनक आरसी[१]-मुद्रिका[२], मणिमय रूप विशाल।
छला[३] छबीले छैल गति, छलकत छबि की माल।।३५।।
मँहदी कर मँह दी लसत[४], चित्र विचित्र अपार।
अद्भुत कमलनि चित्र जुत, थके अलि-नैंन[५] निहार।।३६।।
कृश कटि आवृत[६] किंकिनी, कटि तट रही विराज।
वारौं कदली हेम[७] के, जघन रही छबि छाज।।३७।।
चीन[८] चुनी[९] नाहिंन गनी, आवत छबि लखि नैंन[१०]।
अतरौटा[११] कंचन-वरन[१२], लावनि[१३] लावनि-ऐंन[१४]।।३८।।
सारी जाली लाल की[१५], तामें छबि झलकाइ।
मनु पारस[१६] सौं चन्द्र बहु, भये एक ठाँ आइ[१७]।।३९।।
जानू[१८] जानौं हेम[१९] के, दण्ड जगमगत रूप।
कुंदन की तर[२०] गूजरी[२१], मणिमय बनीं अनूप।।४०।।
कुंदन[२२] के नूपुर सरस, राजत जटित जराव[२३]।
मनौं चरन-अरविंद पर, करत हंस-सुत राव[२४]।।४१।।
मानौं लाल निचोरिकैं[२५], जावक रची रसाल।
पगनि चित्र झिलमिल रहे, मनौं रुप के जाल।।४२।।

---

१. हाथ के अँगूठे में पहनने की वह अँगूठी जिसमें शीशा जड़ा होता है २. हाथ की उँगलियों में पहनने की अँगूठी (पाठा० आरसी मुद्रिका मणिमयी) ३. 'छल्ला' नामक हस्तांगुलियों का एक आभूषण विशेष ४. हाथों में लगाई हुई मँहदी शोभायमान है ५. अन्य सभी सहचरियों के नेत्र ६. चारों ओर से घिरी हुई ७. स्वर्ण ८. एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ९. अतरौटा के अग्र भाग पर सुशोभित होने वाली साड़ी की पटुली १०. नैनों में ऐसी छबि दिखाई देती है ११. लहँगा १२. स्वर्ण के रंग का पीताभ है १३. लहँगा के घेर की किनोर १४. लावण्यता या सुन्दरता का घर ही है १५. लाल रंग का एक माणिक्य विशेष १६. पाठा० - या रस १७. लाल माणिक्य की वृत्ताकार जाली से जड़ी स्वेत वस्त्र की साड़ी अथवा लाल रेशमी वस्त्र की वृत्ताकार जाली वाली साड़ी ऐसी सुशोभित हो रही है मानों पारस [चन्द्रमा के चारों ओर यदा कदा संदृष्ट एक प्रकाश मण्डल] से संयुक्त अनेक चन्द्रमा एक स्थल पर आकर एकत्रित हो गये हैं १८. घुटने के आसपास का स्थल १९. स्वर्ण २०. नीचे २१. पगों का एक आभूषण विशेष २२. स्वर्ण २३. मणि-नग अथवा रत्न आदि के जड़ाव से जटित २४. शब्द २५.. मानों लाल माणिक्य या रत्नों को निचोड़कर।

चुकटीं[१] हेम[२] जटीं चुनी, हरी[३] जुरी छबि छाइ।
बनी पगनि की अँगुरियनि, निरखि मैंन[४] मुरझाइ।।४३।।
जटित चंद्रमणि कान्ति सौं[५], अनवट[६] छवि के वृन्द।
चरन-कमल पर चन्द्र नख, लखि आये मनु चन्द[७]।।४४।।
प्रेम-सिन्धु छबि-सिन्धु वर, रस कौ सिन्धु अनूप।
कृपा-सिन्धु श्रीहितअली, वरनि सकै को रुप।।४५।।
नवकिशोर वर जोर सौं[८], इक पल अंतर नाहिं।
बसत नैंन हित चित सदा, प्रगट रहत ज्यौं छाँहिं[९]।।४६।।
साँझ सन्धि दिन-निशि मिलत, निशि-दिन माँहिं विहान[१०]।
श्याम-राधिका माँहिं त्यौं, सन्धि हितसखी जान[११]।।४७।।
देहिं[१२] प्रेम[१३] निजु कृपा करि, श्यामा-श्याम अनूप।
कृपा भई साधन सफल, देखन श्रीहित रुप[१४]।।४८।।
जा हित सौं बस श्याम अरु, श्यामा मिलि सुख लैंहिं[१५]।
पूर्ण कृपा जापै करैं, ताकौं सो हित दैंहिं[१६]।।४९।।

---

१. पगों की अँगुलियों का एक आभूषण विशेष २. स्वर्ण से निर्मित ३. जो हरे रंग वाले माणिक के छोटे-छोटे टुकड़ों से जड़ी हुई हैं ४. कामदेव ५. चन्द्रकान्त मणि से जड़े हुए ६. पगों के अँगूठे में पहने जाने वाला एक प्रकार का आभूषण विशेष ७. मानों चरण-कमल में स्थित नख-चन्द्र को देखकर चन्द्रमा ही नीचे आ गये हैं ८.नित्य नव किशोर रूप में अभिव्यक्त श्यामा-श्याम की सुन्दर जोड़ी से इनका (हितअली जी का) ९. जुगल के नैंन और हृदय में श्रीहितअली जी उसी प्रकार सुशोभित बनी रहती हैं जिस प्रकार शरीर और शरीर की छाया प्रगट दिखाई देती है १०. सबेरा ११. जिस प्रकार सन्ध्या की सन्धि द्वारा और प्रात:काल के द्वारा ही रात्रि और दिवस मिलते हुए दिखाई देते हैं; उसी प्रकार श्याम-राधिका के मध्य उन दोनों का सम्मिलन कराने वाली श्रीहितअली जू सन्धि सहेली के रूप में प्रत्यक्ष बनी रहती हैं। १२. पाठा०- दैंहि १३. 'प्रेम' किंवा 'हित' ही १४. श्रीहित की कृपा से ही श्रीहित रूप श्यामा-श्याम को देखने के सम्पूर्ण साधन सफल होते हैं १५. जिस 'हित' के वशीभूत होकर श्यामा-श्याम मिलते हैं और रस केलि का सुख प्राप्त करते हैं १६. उस 'हित' को वे बड़ी कृपा से किसी को प्रदान करते हैं।
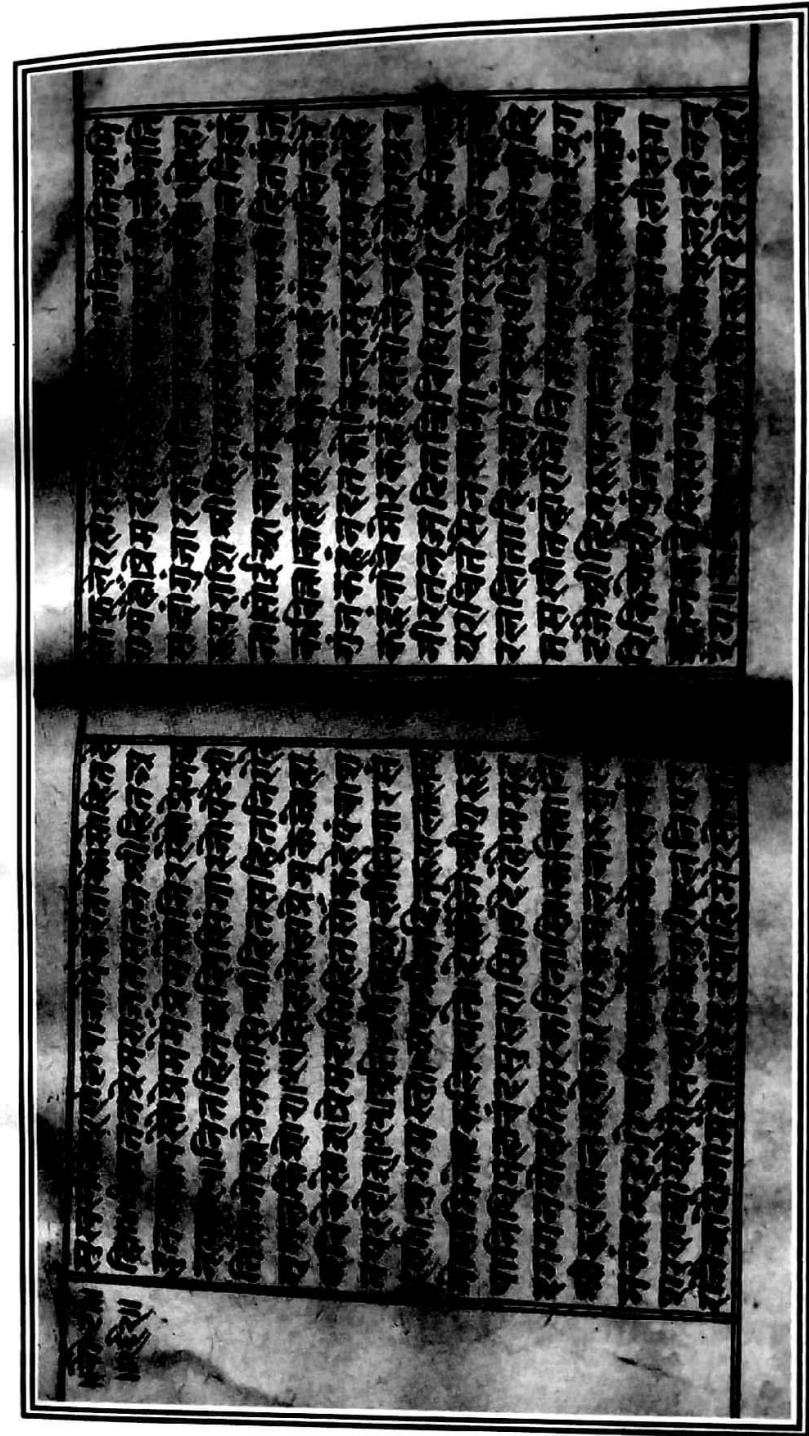
हितअलिसिंगार का अन्तिम अंश एवं श्रीहित रूप अष्टक का प्रारम्भिक अंश

प्रतिलिपिकार—नन्दराम ब्राह्मण, प्रतिलिपिकाल—वि० सं० १९२४—रस भारती संस्थान वृन्दावन, क्रमांक ८५५ के सौजन्य से।

अतन प्रेम राजत सतन, श्रीहित अद्भुत रुप।
कर्‌यौ[१] प्रेम मैं[२] प्रेम सौं, निरख्यौ प्रेम अनूप[३]।।५०।।
नित हितअलि-सिंगार जो, पढ़ैं प्रीति सौं भोर।
'प्रेमदासि' श्रीहित सहित, निरखैं जुगलकिशोर।।५१।।
दोहा दोहा प्रेम के, जोहा छबि के सोइ[४]।
प्रेमदासि हित सौं कहे, सुठि पचास पर दोइ[५]।।५२।।

।। इति श्रीहितअलि जू कौ सिंगार किंवा ध्यान श्रीहित प्रेमदास जी कृत संपूर्ण।।

---

१. पाठा०—पर्‌यौ २. पाठा०—में ३. वह अतन-'प्रेम' ही सतन होकर श्रीहित के अद्भुत रूप में [श्यामा-श्याम के रूप में] नित्य प्रत्यक्ष रहता है। अत: मैंने उस प्रेम से ही प्रेम करके उस प्रेम का अनुपम रूप देखा है ४. 'हितअली-सिंगार' के ये दोहे 'प्रेम' किंवा 'हित' का दोहन करके उसकी अद्भुत छबि का दर्शन कराने वाले हैं ५. पचास के ऊपर दो अर्थात् बावन (५२)।

❁ श्रीहित राधिकाबल्लभो जयति ❁

❁ श्रीहित हरिवंश चन्द्रो जयति ❁

श्रीगुरू हितरूप अष्टक

दोहा

जै जै श्रीगुरु कृपा-निधि, महा चन्द्र सुखरासि।
उदै रहौ मम हृद-गगन, मोह-तिमिर करि नासि[१]॥१॥

कवित्त

जै श्री हित रूपलाल जू के चरण-कमल चारु,
सुख-मकरन्द मृदु भरे छबि-धाम हैं[२]।
मानौं नख-चन्द्र शरण आये हैं रोष छाँड़ि[३],
अँगुरी-दलनि पर राजैं आठौं जाम हैं॥
हृदै-हद माँहिं मेरैं शोभा ही सौं फूले रहौ[४],
राजहु छबीली भाँति अति अभिराम हैं।
प्रेमदासि हित चित-मधुप रँगीली भाँति,
सदाँ गुञ्जार करौ तिन पर सु नाम हैं[५]॥२॥

दोहा

रूप-रासि श्रीहितसखी, राजत नवल निकुंज।
सोइ आचारज रूप श्री, रूपलाल हित-पुंज[६]॥३॥

१. मोह रूपी अन्धकार का नाश करके मेरे हृदय-आकाश में सदा उदित बने रहो २. जो सुख रूपी मकरन्द से भरे हुए शोभा के भवन हैं ३. मानों नख रूपी चन्द्रमाओं के समूह अपना रोष छोड़कर चरण-कमलों की शरण में आ गये हैं ४. मेरे हृदय रूपी सरोवर में शोभा से युक्त आपके चरण-कमल सदा प्रफुल्लित बने रहें ५.प्रेमदास का चित्त रूपी भ्रमर रँगीली भाँति से आपके ही चरण-कमलों पर सदा सुन्दर श्रीहित नाम की गुञ्जार करता रहे ६. नवल निकुंज में जो रूप की रासि श्रीहितसखी के रूप में विराजमान हैं वही लोक में हित के समूह आचार्य प्रवर गो० श्रीरूपलालजी के रूप में प्रत्यक्ष हैं।

कवित्त

कहूँ[१] फूलीं कुंज कहूँ मंजु अलि करैं गुंज,
कहूँ नदित कोकिला सुन्दर सँग कीर हैं।
कहूँ नाचैं मोर कहूँ हंस बोलैं चहूँ ओर,
अवनी रतन-जटित त्रिविध समीर हैं॥
किशलय रचित सैंन श्यामा-श्याम रस-ऐंन[२],
चहूँ ओर ललितादिक आनँद अधीर[३] हैं।
जै श्रीहितसखी तहाँ राजैं नित प्रेमदासि,
सोइ प्रगट जै श्रीहित रूपलाल धीर[४] हैं॥४॥

दोहा

कुँवरि किशोरी पुंज छबि, रूप हित अली संग।
कनक-बेलि सँग डारि मनौं, फूलि रही नव रंग[५]॥५॥

कवित्त

प्यारी जू कौ रूप देखैं रूप ही कौं रूप होत[६],
रूप ही चहलपहल महल रूप मई है[७]।
काम की लता[८] सी फूली फूल मुसिकान लयैं[९],
पिय सिंगार कौ तमाल तासौं अरुझई है[१०]॥
आलबाल-तलप सखी रूप ही डारि मानौं,
फैलि रहीं चहूँ ओर फूल फूल छई है[११]।
केलि-फल प्रेम रस हितरूपअली नैंन-
चषक सौं पीवत प्रेमदासि चौंप नई है[१२]॥६॥

१. कहीं पर २. रस के धाम जुगलवर ३. प्रेमानंद में अधीर ४. शान्त स्वभाव वाले तथा विपरीत परिस्थितियों में भी उद्विग्न या विचलित न होने वाले ५. शोभा की रासि कुँवरि किशोरी श्रीराधा के साथ हितरूपअली ऐसी सुशोभित हो रही हैं मानों स्वर्ण-बेलि के साथ उसकी कोई शाखा ही नवीन आनन्द के साथ प्रफुल्लित हो रही है ६. रूप भी रूपवान बन जाता है ७. रूपमई निकुंज महल में रूप की ही धूमधाम बनी रहती है ८. प्रीतम की अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाली बेली ९. मन्द मुसिक्यान रूपी फूलों से सुशोभित १०. जो शृंगार रस के तमाल प्रीतम से उलझ रही है ११. तमाल [श्याम] से लिपटी हुई वह बेली [प्रिया जू] शैया रूपी थाँभले में अपनी सखी रूपी शाखाओं के मध्य चारों ओर फैली हुई प्रसन्नता का वातावरण बना रही है। १२. नित्य क्रीड़ा रूपी फल से निःसृत प्रेम रस को हितरूपअली के नैन-चषक नई चोंप के साथ नित्य पान करते रहते हैं।

दोहा

रास-विलास प्रहास में, लाल-बाल सँग आलि।
अलि दामिनि प्रतिविम्व मनु, घन-दामिनि पिय बाल[१]॥७॥

कवित्त

कालिन्दी जू कौ जल इन्द्रनीलमणिमय कल,
कनक-कमल अमल फूल्यौ विस्तार सौं[२]।
गौर-श्याम रूप-पुंज खेलैं तहाँ रस-रासि,
गावत रँगीली भाँति मिले इक ढ़ार सौं[३]॥
अरुण दलनि पर[४] राजैं सखी चहूँ ओर,
वीण-धुनि मिलाइ[५] नूपुर-किंकिणी के तार सौं।
प्रेमदासि तहाँ हितरूपअलि देखैं छबि,
नीलांबर सारी फूल कंचन के चारु सौं[६]॥८॥

दोहा

एक वैस छबि एक सी, प्यारी अरु अलि रूप।
कुँवरि-प्राण आली, अली-प्राण सु कुँवरि अनूप[७]॥९॥

कवित्त

कुँवरि किशोरी जू की गोरी भुजा ग्रीव मधि[८],
भोरी-भोरी बातैं कहैं हितरूपअली सौं।

१. रास, विलास और हास्य-परिहास पूर्ण लीलाओं में श्रीप्रिया-लाल के साथ श्रीहित रूपलाल जू सहचरी रूप में ऐसे सुशोभित हैं मानों घन-दामिनीवत् प्रिया-लाल के साथ वे दामिनी स्वरूपा सहचरियों का ही प्रतिविम्व हों २. सुन्दर श्याम रंग वाली इन्द्रनीलमणि की भाँति चमकती हुई श्रीजमुना के जल में एक स्वच्छ स्वर्ण कमल विस्तार के साथ प्रफुल्लित हो रहा है ३. एक ही स्वर में ४. उस कमल के लाल-लाल दलों पर ५. वीणा के तारों से मिलाती हैं ६. सुन्दर स्वर्णिम फूलों से जटित नीले वस्त्र की साड़ी पहने हुए हितरूपअली ७. प्रिया जू और रूपअली इन दोनों की वय और छबि एक ही समान है अर्थात् नित्य किशोर वय है और नित्य नवल छबि है। ये दोनों ही परस्पर एक दूसरे की प्राण हैं। कुँवरि श्रीराधा के प्राण हितरूपअली हैं और हितरूपअली के प्राण कुँवरि श्रीराधा हैं। ८. श्रीराधा अपनी गौर भुजा को हितरूपअली की ग्रीवाँ में डाले हुए।

प्राण के समान जान राखत न कछू आन,
प्रीतम के रस-रंग कहैं भली रली सौं[१]॥
श्यामा जू अभिराम श्याम महा सुख धाम,
तिनकौं हितरूपअली शोभा झिलमिली[२] सौं।
प्रेमदासि हित मानौं कंचन के कमल की,
कली फूलि रही हितरूपअली लली सौं[३]॥१०॥

दोहा

अद्भुत गुण-माधुर्य-छबि, श्रीरूपलाल सुखकन्द।
सो मेरी रक्षा करौ, भरे प्रेम आनन्द[४]॥११॥

कवित्त

अद्भुत सु रूप कैसैं वरनि सकौं शोभा-सिन्धु,
राधाकृष्ण-भक्ति-हेत एक जग में भयौ[५]।
व्यौम-उरसि मध्य, उदै रहैं चन्द्र विवि,
ललितादिक-तारागन मण्डित नयौ-नयौ[६]॥
मध्य कृपा-घन ल्याइ वर्षा करैं प्रेम-भक्ति[७],
उदित उजागर सन्तनि ऊपर छयौ[८]।
राधाबल्लभलाल जू कैं प्रेम कौ पूरन सुख,
प्रेमदासि जैश्रीहितरूपलाल जू लयौ॥१२॥

१. प्रिया जू हितरूपअली को प्राण के समान ही जानती हैं। उनसे किसी प्रकार का अन्तर नहीं रखतीं। प्रीतम के साथ की गई रसानंद पूर्ण केलि की बातों को भी उन्हें बतलाकर आनंदित होती हैं। २. सुन्दर श्यामा-श्याम के लिए शोभा से झिलमिलाती हुई हितरूपअली महा सुख की धाम ही है ३. लली श्रीराधा के साथ हितरूपअली इस प्रकार प्रसन्न हो रही हैं मानों स्वर्ण कमल की कली खिल रही हो ४. प्रेमानन्द से परिपूर्ण वे श्रीरूपलाल जू ५. इस संसार में इस समय रसमूर्ति श्यामा-श्याम की रसभक्ति का दान देने वाले एकमात्र यही हुए हैं ६. इनके हृदय-आकाश में ललितादिक-तारागणों से मण्डित जुगलवर रूपी चन्द्रमा नये-नये रूप में सदा उदित बने रहते हैं ७. कृपा का बादल लाकर वे निष्पक्ष रूप से प्रेम भक्ति की वर्षा करते हैं ८. प्रकाशमान श्रीहितरूप रसिक सन्तों के हृदय में उदित होकर उनके ऊपर छाये रहते हैं।

दोहा

निज प्यारे हरि गुरु दये, कीनौं विलंव छिनौं न।
कहा पलटौ जन देहि हरि, सम न चतुर्दश भौंन[१]॥१३॥

कवित्त

सन्त-महन्तनि गुरु हरि हू तें बड़े कहे,
कमल कर धारि सीस अभय पद देत हैं।
याकौ यह हेत हरि की माया माँहिं परे जीव,
गुरु कृपा-दृष्टि सौं निकासि सद्य लेत[२] हैं॥
ऐसौ भव-त्रास देखि भाजि आइ लई शरण,
मन-क्रम-वच गुरु निकाई के निकेत[३] हैं।
प्रेमदासि हित हरि चिन्तामणि तातें गुरु,
चतुर चिन्तामणि उदै शुभ सुख हेत[४] हैं॥१४॥

दोहा

तारागन-रजकन सु घन, बूँद गनित यौं होंइ।
गुरु-गुन-गन को गनि सकै, कहत सन्तजन सोइ[५]॥१५॥

---

१. प्रभु ने शीघ्र ही कृपा करके मुझे मेरे प्यारे गुरु [गो॰ श्रीहितरूपलाल जू] के दर्शन करा दिये। इसके बदले मैं श्रीहरि को क्या दूँ क्योंकि गुरु के समान चौदह भुवनों में कुछ नहीं है या अन्य दूसरी वस्तु नहीं है। २. सन्त और महन्तों ने श्रीगुरु को प्रभु से भी महान बतलाया है और इसका कारण यह है कि एकमात्र श्रीगुरु ही अपनी कृपा-दृष्टि से प्रभु की माया में पड़े हुए जीवों को तत्काल निकाल लेते हैं ३. संसार में ऐसा माया जनित कष्ट देखकर और उसे मन से त्यागकर मैंने मन से, क्रिया से और वाणी से उन श्रीगुरुवर की शरण ग्रहण की जो सब प्रकार से भलाई के धाम हैं ४. इसलिए यदि श्रीहरि चिन्तामणि [ऐसी मणि विशेष जो किसी विषय की सभी आवश्यकतायें और इच्छायें पूरी कर दे] स्वरूप हैं तो श्रीगुरुवर चतुर चिन्तामणि [श्रीगुरुवर समस्त सांसारिक चिन्ताओं को ही समूल रूप से नष्ट कर देते हैं। यही उनकी चतुरता है और इसीलिए वे चतुर चिन्तामणि हैं] के रूप में प्रकाशित होकर संपूर्ण शुभ सुखों के कारण हैं ५. तारागणों, रजकणों और बादल की बूँदों की गणना तो येनकेन प्रकारेण की जा सकती है किन्तु श्रीगुरुवर के गुण-समूहों की गणना कौन कर सकता है अर्थात् उनके गुण अनगिन हैं; सन्त भी ऐसा ही कहते हैं।

कवित्त

जै श्रीरूपलाल जू कौ जगमग रह्यौ है जस,
सकल जगत पर करुना-निधान हैं[१]।
भक्त-वत्सल दीन-बन्धु विदित विमल नाम,
गुरु-हरि हरि-गुरु एक ही समान हैं॥
भक्ति कौ न कन मोमैं दीनता हू बड़ी निधि,
अधम-उधारन सुनि मैं सुख मान[२] हैं।
प्रेमदासि जैश्रीहितहरिवंश चन्द्र रूप,
जैश्रीहितरूपलाल प्रगट सु जान हैं[३]॥१६॥

॥ इति गुसाँईं श्रीमद् हित रूपलाल जू कौ अष्टक श्रीहित प्रेमदास जी कृत संपूर्ण॥

---

१. संपूर्ण जगत में वे करुणा के भंडार रूप में प्रकीर्तित हैं। २. मुझमें न तो दैन्य ही है और न बड़ी सम्पति भक्ति का ही कोई कण है किन्तु श्रीगुरुवर अधम जीवों का भी उद्धार करने वाले हैं—यह सुनकर मैंने बहुत सुख माना है ३. मुझे ज्ञात हो गया है कि श्रीहित हरिवंश जू ही गो॰ रूपलाल जू के रूप में प्रकट होकर इस अवनी तल पर विराजमान हैं।

❁ श्रीहित राधिकाबल्लभो जयति ❁

❁ श्रीहित हरिवंश चन्द्रो जयति ❁

पदावली

मंगलाचरण

[१]

मंगल मूर्ति श्रीहित : रूप और स्वरूप :- राग-पंचम

भर्‌यौ आनन्द-रस-सिन्धु सुन्दर विमल[१],
जयति हरिवंश हित नाम मंगल सदा।
ललित कल अमित भावनि वलित कलित वर[२],
जपत जो जान जन[३] ताहि सुख सर्वदा[४]।।१।।
अमृत के सिन्धु में होइ पंकज हेम,
तदपि कछु रीति नहिं मनहिं भावै।
चरन-अरविन्द पर भृंग भावक-प्रान,
रखे नख-मणि-जोति हिय सिरावै[५]।।२।।
जानु[६] जुग[७] भरे रस, जंघ निर्मल सरस,
हेम-कदलीहु उपमा न पावै[८]।
मृदुल पट झीन धोती सु[९] कटि, किंकिनी—
हरित[१०] निरखत मोद तदुपजावै[११]।।३।।

---

१. पवित्र २. अनेकानेक सुन्दर और श्रेष्ठ भावों से परिपूर्ण ३. पाठा०— जानि मन ४. जो बुधजन इस नाम का जाप करते हैं उनका मन सदैव सुख-संभृत बना रहता है ५. [पाठा०— रसे] अमृत के समुद्र में स्वर्ण-कमल ही क्यों न खिला हो तो भी भावक रसिकजनों को वह अच्छा नहीं लगता; उनके प्राण तो श्रीहरिवंश जू के चरण-कमल पर ही अनन्य भ्रमर बनकर बसे रहते हैं। श्रीहित जू की नख-मणि की ज्योति ही उनके हृदय को शीतल करती है ६. घुटने और उसके नीचे का भाग ७. दोनों ८. स्वर्ण-कदली भी उन जंघाओं की उपमा के योग्य नहीं है ९. मृदुल और झीने वस्त्र की धोती सुन्दर कटि प्रान्त में सुशोभित है १०. हरे पन्ना की अथवा प्रसन्न करने वाली ११. वह हरे पन्ने की किंकिणी देखते ही सबके हृदय में आनन्द उत्पन्न करती है।
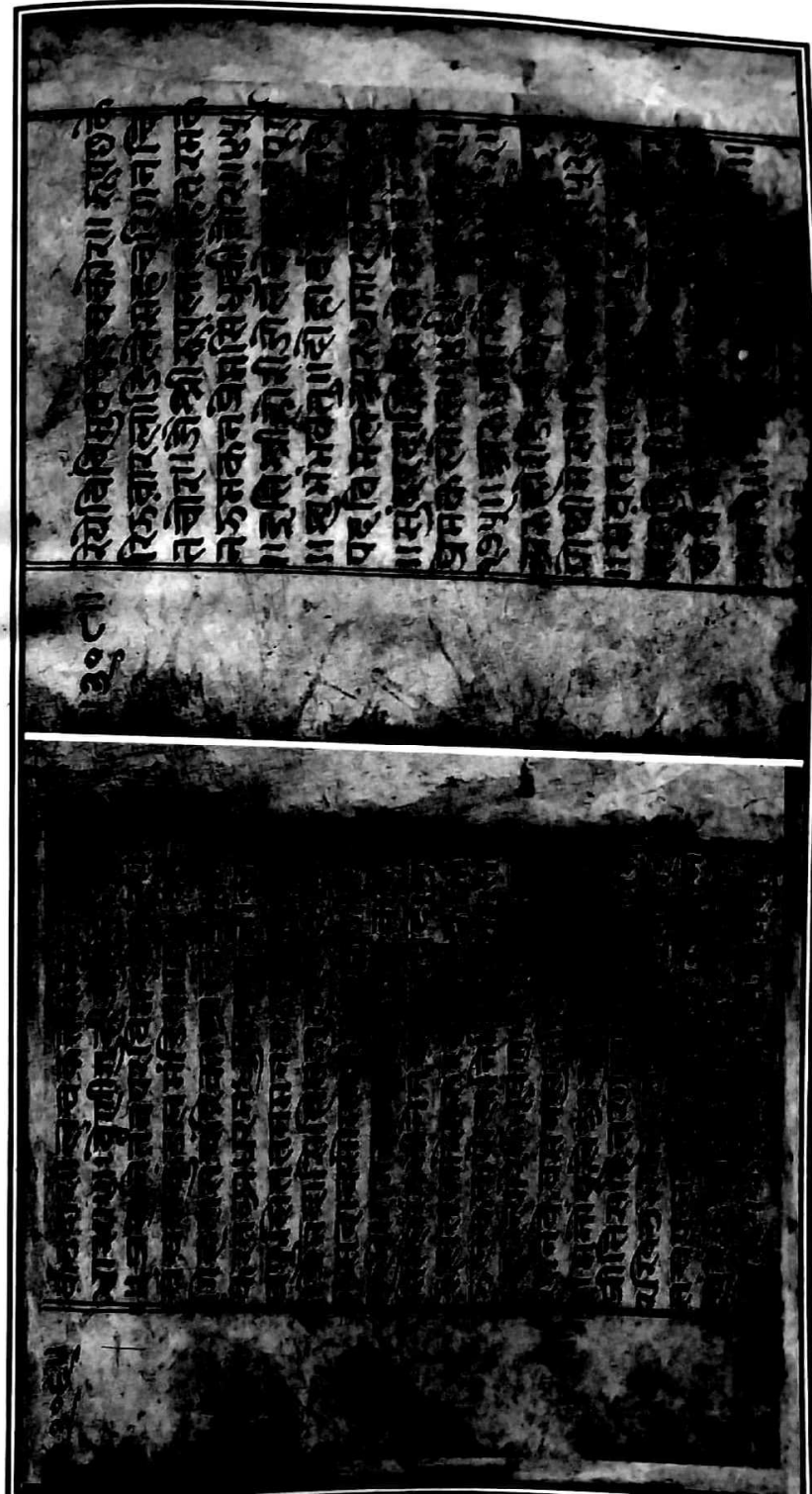
बसन्त-होरी धमार और होरीडोल के पदों का एक प्राचीन पद संग्रह

जिसमें वाणीकार प्रेमदास जी के सर्वाधिक पद प्राप्त हैं और जो सुन्दरदास जी द्वारा वि० सं० १७९७ में प्रतिलिपि किया गया है।

— कासगंज निवासी डॉ० नरेशचन्द्र जी बंसल के सौजन्य से।

छीन[१] कटि पीन उर[२] लसति रोमावली,
मध्य त्रिवली[३] नाभि छबि बढ़ावै।
पीत कौसेइ[४] ओढ़ैं महा माधुरी,—
कथत जो सारदा कथि न आवै[५]।।४।।
ढरल्ठ सु सुढार भुज[६] करवर सु कटक जुत[७],
ग्रीव छबि-सल्ठव[८] मणि माल सोहैं।
मंद मुसिक्यानि झिलमिलति नासा उच्च,
नैंन की कोर सत मार मोहैं[९]।।५।।
निर्मल कपोल में अलक-कुंडल-झलक[१०],
उच्च पदवीय पद भाल भ्राजै[११]।
जगमगत तिलक सिर सुरँग चीरा[१२] लसत,
रतनमय पेंच कलँगी विराजै।।६।।
महा माधुर्ज सुकुँवार रस-सिन्धु विवि,
गौर अरु श्याम सम्पत्ति तिनकैं[१३]।
धाम अभिराम श्री सहित वृन्दाविपिन[१४],
एक रसरीति सौं[१५] प्रीति जिनकैं।।७।।
हित प्रेमदास निज नेम जिन यह गह्यौ,
गति न तुम बिनु कछू और बूझै।
रूप में आपनैं धरौ मम चित्त, श्री —
विपिन बिनु ठाँव नहिं और सूझै[१६]।।८।।

१. सूक्ष्म २. पुष्ट हृदय ३. नाभि से कुछ ऊपर पड़ने वाली सौन्दर्य सूचक तीन रेखायें ४. पीला रेशमी वस्त्र ५. जिसकी महा माधुरी का कथन यदि शारदा भी करे तो वह भी कह नहीं सकती ६. जैसे किसी साँचे में ढालकर बनाई हुई सुन्दर भुजायें ७. सुन्दर कर-कमल कड़ों से संयुक्त हैं ८. छबि की सीवाँ ग्रीवाँ में ९. सैकड़ों कामदेव मोहित होते हैं १०. अलक और कुण्डलों का प्रतिविम्व सुशोभित हो रहा है ११. प्रिया जू के सम्मानित श्रीचरण जिनके भाल प्रान्त पर सुशोभित हैं १२. लहरियादार रंगीन वस्त्र की पाग १३. गौर और श्याम जुगलवर ही उनका धन हैं १४. शोभा से सम्पन्न सुन्दर वृन्दावन ही जिनका धाम है १५. एकमात्र नित्यबिहार प्राण श्रीराधा चरण प्रधान रसरीति से ही १६. मैंने यह दृढ़ व्रत धारण कर लिया है कि तुम्हारे अतिरिक्त मेरी और दूसरी गति नहीं है। अत: आप भी कृपा करके मेरे चित्त को अपने स्वरूप में स्थिर कर लो। उसे [मेरे चित्त को] आपके वृन्दावन धाम के अतिरिक्त और कोई आश्रय स्थल नहीं दिखाई देता।

[२]

श्रीहित सेवक स्वरूपोत्कर्ष :- राग-सारँग, ताल झप

मधुर सेवकअली वदन अति मधुर है,
मधुर अति नैंन मधु[१] अधर मधु हँसनि है।
मधुर अति बैंन हैं मधुर अति हृदै है,
मधुर अति गवनि[२] धनि मधुर हित-गसनि है[३]॥१॥
मधुर अति चरित हैं मधुर अति वसन हैं,
मधुर हित-मिलनि रमि[४] मधुर अति लसनि[५] है।
मधुर हित-पान है मधुर छबि-गान है,
मधुर अति रूप-सिंगार मधु दसनि[६] है।।२॥
मधुर हरिवंश-धन मधुर सेवक धनी,
मधुर हरिवंश-फल सेवक मधुर रसनि है[७]।
मधुर सेवक-दृष्टि करत हित-वृष्टि है,
पुषति प्रेमदासि हित मधुर-पद असनि है[८]॥३॥

[३]

श्रीगुरु हितरूप रम्यता :– राग-सूहौ विलावल

मंगल[९] श्रीहित रूपलाल आनँद भरे।
मंगल[१०] नाम अनूप जपत मंगल[११] करे।।
उदै भयौ ज्यौं चन्द्र विपिन श्री गगन में[१२]।
जस-प्रकाश जगमगत संत-उड़गननि में[१३]।।

१. मधुर २. चलने की गति ३. सेवक जू की श्रीहित जू के प्रति अनुराग की डोरी भी मधुर है जिसके सुदृढ़ बन्धन में वे सदा बँधे रहते हैं ४. हित जू से सेवक जू का सुन्दर सम्मिलन ५. शोभा ६. दन्तावली की कान्ति ७. सेवक जू की मधुर जिह्वा के लिए श्रीहरिवंश ही मधुर फल हैं ८. श्रीहित जू की मधुर वाणी [पदों] का भोजन करके ही सेवक जू तुष्ट पुष्ट होते हैं ९. सुख-सौभाग्य आदि देने वाले १०. कल्याणकारी ११. भलाई या कल्याण १२. जैसे चन्द्रमा उदय होता है उसी प्रकार इनका प्रागट्य भी वृन्दावन रूपी गगन में हुआ १३. इनके सुयश का प्रकाश सन्त रूपी तारागणों के मध्य प्रकाशित हो रहा है।

भयौ सुजस-प्रकाश अमृत, श्रवत भक्ति सु प्रेम मै[१]।
आइ जो जन शरन आनँद, पाइ प्रफुलित कुमुद ह्वै[२]।।
सरस वानी करत शीतल, किरनि मोह-तिमिर हरे[३]।
मंगल श्रीहित रूपलाल आनँद भरे।।१।।
बलि-बलि श्रीहित रूपलाल दृग रस भरैं[४]।
नव किशोर वर जोर महा क्रीड़ा करैं।।
अंश-अंश दै बाँहु निरखि छबि सुख लहैं[५]।
मंद हँसनि सौं चोंज-सनीं बतियाँ कहैं।।
कहैं बतियनि चोंज की अति, झलक तन-मन भावनीं[६]।
लखति सखि ललितादि ललना-लाल रुचि उपजावनीं।।
रूप की जहाँ चहल-पहल[७] सु, महल टहल तहाँ करैं[८]।
बलि-बलि श्रीहित रूपलाल दृग रस-भरैं।।२।।
जै-जै श्रीहित रूपलाल, हित वपु धर्यौ।
रसिकअनन्यनि-नृपति प्रगट जस जग कर्यौ[९]।।
श्रीवृन्दावनधाम कनक मणि-नग खचे।
तहँ श्याम-श्यामा राजत,रास-रस-रँग रचे।।
रचे रस-रँग रास खेलत, मंजु मृदु पुलिनस्थली।
चलत त्रिविध समीर, मैंन[१०] निकुंज सेवत विधि भली।।
जहाँ श्रीहरिलाल-नंदन[११], रहत नित आनँद भर्यौ।
जै-जै श्रीहित रूपलाल हित वपु धर्यौ।।३।।

१. इन्होंने श्रीहित जू की प्रेम मई भक्ति किंवा रसभक्ति रूपी अमृत का निर्झरण किया २. शरणागतजनों ने कुमुद होकर ३. इनकी वाणी रूपी किरणों ने सबके मोह रूपी अन्धकार को हरण कर लिया ४. नव किशोर जुगलवर की केलि देखकर जिनके नेत्र रसपूर्ण होते रहते हैं ५. परस्पर अंशों में भुजायें रखे हुए क्रीड़ा परायण जुगलवर की शोभा देखकर ये सुख प्राप्त करते हैं ६. नैंनों और मन को अच्छी लगने वाली जुगलवर की झलक ७. आनन्दोत्सव या धूमधाम ८. वहाँ पर वे अपने नित्य सिद्ध वपु-हितरूपअली रूप से टहल करते हैं ९. उन्होंने रसिक अनन्य नृपति श्रीहरिवंश जू के सुयश का जगत में प्रचार प्रसार किया १०. कामदेव ११. श्रीहित कुलभूषण गो॰ हरिलाल जी के पुत्र गो॰ रूपलाल जी।

जै-जै श्रीहित रूपलाल निर्भय कर्‌यौ[१]।
दंपति-केलि-सुधा-सागर आनँद भर्‌यौ[२]।।
श्रीवृन्दावन वास सकल विधि सौं दियौ।
जुगल-केलि-अरविन्द, अली ह्वै रस पियौ।।
पियौ रस अति हियौ भींज्यौ, रह्‌यौ सुखहि अभंग में।
जाहि श्रीहित रूपलालहिं, निरखि करुन प्रसंग में[३]।।
प्रेमदास हित जानि निजु जन, कंज करवर सिर धर्‌यौ[४]।
जै-जै हित रूपलाल निर्भय कर्‌यौ।।४।।

श्रीहित प्रागट्‌योत्सव

[४-१]

नित्य निकुंज में हितोत्सव :— राग-सूहौ विलावल

नव निकुंज में आजु बधाई। निजुसजनी मिलि दुहुँनि लड़ाई।।
करि उवटन हितअली न्हवाई। करति सिंगार कुँवरि सुखदाई।।
करति कुँवरि सिंगार निजु कर, फूल माति न गात री[५]।
गुहि पुहुप बैंनी बनावति, खौरि[६] मुख सरसात री।।
पीत अंबर[७] सजे तन मनु, रूप-निधि लहरात री।
कुसुम-भूषन बने अँग-अँग, कही क्यौं छबि जात री।।१।।
बहु फूलनि सौं मंडप छायौ। रँग-रँग की धरि धुजा रचायौ।।
नव रतननि सौं अजिर[८] खचायौ। गजमोतिनु कौ चौक पुरायौ।।

१. जिन्होंने मुझे निर्भय कर दिया २. जुगल केलि रूपी अमृत-समुद्र के आनन्द से मेरा हृदय भर दिया ३. करुणा से युक्त गुरुवर्य गो० श्रीहित रूपलाल जी की चरण शरण में जाकर मेरा हृदय अभंग सुख से भींज गया ४. जिन्होंने अपना सुन्दर कर-कमल मेरे सिर पर रखकर मुझे निर्भय कर दिया ५. श्रीअंग में प्रफुल्लता समाती नहीं है ६. चन्दन की पत्रावली ७. वस्त्र ८. आँगन।

पुराय मोतिनु चौक चहुँ दिसि, कनक-कदली रोपिकैं[१]।
धरे कंचन कलश जित तित, भरे अमृत ओपिकैं[२]।।
तानि जलज[३]-वितान वन्दनमाल सुमननि की रची।
पचत कवि कब के कहन कौं, निरखि यह दुति मति लची[४]।।२।।
रतन-जटित सिंहासन छाजे[५]। तहाँ आइ जुगराज[६] विराजे।।
मणिमय चौकी आनि बिछाई। सुहृदअली[७] तहाँ लै बैठाई।।
बैठाइ तापर सुहृदहेली, भर्‌यौ आनन पान सौं।
झरत फूल कपूर के मनु, हँसत मुख रस-खान सौं[८]।।
लख्यौ निजु रस कौ प्रगट, दोउ गान मिलि मंगल करैं।
रीझि दंपति देत भूषन, लेत अलि निर्त्तत खरैं[९]।।३।।
नाँचत मोर-मंडली आगैं। गावत शुक-पिक अति अनुरागैं।।
देत मधुप मृदु सुर सुख साजैं। कूजत हंस वीन सी बाजैं।।
बाजत सु वीन नवीन तिन सँग, स्याम-स्यामा नाँचहीं।
कहत सूहौ राग सूहे, करत चित नित राचहीं[१०]।।
लाल मुरली में कहत सोई, बाल नूपुर में लयौ।
प्रेमदासि हित रीझि इहिं[११] चिर[१२], सहचरिनु आनँद दयौ।।४।।

[५-२]

राग-नाइकी

अब अरी ये व्याससुवन की, बाजति नव निकुंज में बधाई।
करि उत्साह पुहुप-मंडप रचि, दुहुँनि मंगली[१३] गाई।।
निर्त्तति अलि रीझत दंपति कल[१४], देत अंग सौं भूषन माई।
प्रेमदासि हित मुदित दोऊ लखि, निजु रस की प्रगटाई[१५]।।

१. खड़े किये गये या जमाये गये २. अमृत युक्त करके ३. मोतियों का ४. न जाने कितने समय पूर्व से कविगण इस शोभा का वर्णन कर रहे हैं किन्तु इस द्युति का वर्णन करने में उनकी बुद्धि भी शिथिल हो गई ५. सुशोभित हैं ६. जुगलवर ७. हितअली जू ८. रस की खान मुख से जब वे हँसते हैं तब मानों ९. प्रसन्न होकर या भली प्रकार से १०. सूहौ राग [संगीत में ओड़व-षाड़व जाति का एक राग विशेष जो दिन के दूसरे पहर के अन्त में गाया जाता है] कहकर अर्थात् गान करके चित्त को नित्य प्रति अनुराग के लाल रंग से रचा हुआ बना देते हैं ११. इस प्रकार से १२. स्थाई १३. मांगलिक गीत १४. सुन्दर १५. अपने प्रेम किंवा रस का प्राकट्य देखकर।

[६-३]

श्रीहित रस-जस :— राग-राइसौ

मंगल[1] श्रीहरिवंश हित, नाम-रूप सुखदाई।
प्रगटे श्रीमत् व्यास-घर, मंगल[2] जग रह्यौ छाई।।१।।
श्रीराधाबल्लभलालजू, नव निकुंज में राजैं।
तहाँ संग नित हितअली, ललित छबिनु सौं छाजैं।।२।।
बढ़्यौ मोद मन कुँवरि कैं, दई जु आज्ञा कवनीं।
श्रीवृन्दावन प्रगट है, प्रगट करौ रस अवनीं[3]।।३।।
हरषि पाइ हरि रूप धरि, गौर बाद में आये[4]।
मंगलचारु सुहावने, घर-घर होत सुहाये।।४।।
जै जै जै श्रीव्यास जू, फूले फिरत उमाहे।
विदित वेद-विधि विप्र कल, नाम धरत अवगाहे[5]।।५।।
श्रीराधा जू हरि सु हरि, तिनकौ प्रेम सु वंशी।
श्रीहरिवंश धर्‌यौ रुचिर, नाम जगत परसंशी[6]।।६।।
कुमकुम[7] के धरि साथिये, मोतिनु चौक पुराये।
धुजा-पताका विविध रँग, सदन-सदन फहराये।।७।।
मंगल बाजे बाजहीं, पंचशब्द[8] सुर सौं री।
गावत मंगलमुखी मिलि, ललित मंगली[9] कौं री।।८।।
विविध कुसुम कल मृदुल के, तोरन[10] सरस बनाये।
द्वार-द्वार करि चित्र वर, सुन्दर भाँति बँधाये[11]।।९।।

१. हर प्रकार से शुभ २. हित या आनंद ३. वृन्दावन में प्रकट होकर अवनी पर रस [रसोपासना] का प्राकट्य करो ४. तब श्रीहित प्रभु हर्षित होकर गौर और हरि का सम्मिलित [श्रीहरिवंश रूप] रूप धारण करके बाद ग्राम में प्रकट हुए अथवा श्रीप्रिया जी की आज्ञा से तब वंशीधर श्यामसुन्दर ही गौर वपु धारण करके श्रीहरिवंश रूप में बादग्राम में अवतरित हुए ५. खोजकर ६. वृन्दावन के सुन्दर चन्द्रमा [सु हरि] श्रीराधा-हरि का वंशी से अत्यधिक प्रेम है। ये तीनों ही एक श्रीहरिवंश नाम-रूप से प्रगट होकर जगत में विख्यात हुए ७. रोरी ८. तंत्री, ताल, झाँझ, नगाड़ा और तुरही-ये पाँच प्रकार के बाजे और इनसे निकलने वाला स्वर ९. सुन्दर मांगलिक गीत १०. मांगलिक अवसरों पर की गई अस्थाई रचना जो प्राय: शोभा सजावट आदि के लिए द्वार पर लगाई जाती है ११. द्वारों पर वे तोरन सुन्दर प्रकार से बँधवाये गये।

बाँधीं वन्दनमाल मृदु, कमल-दलनि की छाजैं।
भरे कलश तोरन धरे, चलदल-डार[1] विराजैं।।१०।।
मागद-चारन-सूत जस, बन्दीजन उच्चारैं।
कनक-चीर[2] मुक्ताफलनि[3], देत व्यास नहिं हारैं।।११।।
घसि चन्दन कोमल ललित, नीर गुलाब मिलायौ।
भरत परस्पर प्रेम सौं, सुख सौरभ बहु छायौ।।१२।।
चन्द्रमुखी आनन्द लहि, उमगि चलीं घर सौं री।
कनक-थार में भेंट लै, श्रीफल-अक्षत-रोरी।।१३।।
नाचति गावति व्यास-घर, जगमगात छबि भारी।
श्रम जलकन झलकत वदन, वरषत चंद सुधा री[4]।।१४।।
ललित हार तन रूप-निधि, छबि-सरिता की लहरी[5]।
कनक-कमल-मुख पर मनौं, अलक-भृंग[6] थिरकहिं री।।१५।।
जै जै जै कहि मुदित ह्वै, सुर दुन्दुभी बजावैं।
गावत तिनकी नारि मिलि, पुहुपावलि वरषावैं।।१६।।
भये सजल सर[7] सु थल के, वन-उपवन बहु फूले।
नव-नव सुख जग में भये, उत्तम रुचि अनुकूले[8]।।१७।।
करी भक्ति सब जग प्रगट, जो जाकैं मन भावै।
द्रवित भींजि सबके हियैं, आनँद उर न समावै।।१८।।
प्रेमभक्ति श्रीविपिन में, प्रगट करी सुख-सागर।
ललित केलि कल माधुरी, गावत रसिक उजागर[9]।।१९।।
तहाँ[10] लतागृह में रहत, श्रीहरिवंश[11] सदाईं।
श्रीललितादिक ललित गति, प्रेम-रूप ता ठाँईं[12]।।२०।।

१. पीपल के पत्तों की डाली २. स्वर्णिम जड़ाव के वस्त्र ३. मोती ४. मानों चन्द्रमा अमृत की वर्षा कर रहे हैं ५. रूप समुद्र जैसे बालाओं के श्रीअंग में सुशोभित सुन्दर हारावली छबि-सरिता की लहरी जैसी शोभा पा रही हैं ६. अलकावली रूपी भ्रमर ७. सरोवर ८. सुन्दर रुचि के अनुकूल ९. श्रीहित जू द्वारा उजागर की गई श्यामा-श्याम की माधुर्यमयी सुन्दर केलि का गान रसिकजन आज तक कर रहे हैं १०. निकुंज भवन में ११. श्रीहरिवंशी रूप से १२. उस नित्यबिहार स्थल में।

कोमल किशलय के दलनि, सुन्दर सेज रचाई।
पूरित मधु[१] भाजन कनक, धरे जटित मणि माई।।२१।।
शीतल-मंद-सुगंध कल, चलत पवन रुचिदाई।
वदित कीर कल कोकिला, सरस राग धुनि गाई[२]।।२२।।
गौर-स्याम नवसत सजैं, फूलनि सौं तन झलकैं।
तहाँ विराजत प्रेम रँग, भीने[३] अति छबि छलकैं।।२३।।
अलक छबीली ललित मुख, कुंडल गंडनि झमकैं।
करत परस्पर हास मुख, झरत फूल मन रमकैं[४]।।२४।।
बड़ड़े दृग आसव-छके[५], चितवत कोरनि सौं री।
झिलमिलात तन चाँदनी, तन की अद्‌भुत जोरी[६]।।२५।।
हाव-भाव करि लाज[७]-पग, ललित वलित सौं पेलैं।
उदित मुदित कल कोक की, कलित कलनि सौं केलैं[८]।।२६।।
श्रवत अमी आनंद के[९], रीझि-रीझि दुति-रेलैं[१०]।
सखी-चकोरी प्रेम-मुख-चंद निरखि[११] सुख झेलैं।।२७।।
छुटत सुगन्ध फुहार नल, जल सौरभ चहुँ ओरी।
गुंजत मत्त मधुप मधुर, हरषित कुँवर-किशोरी।।२८।।
उठत तरंगैं माधुरी, कंचन अवनी मोहैं।
हीरा-मर्कतमणिनु के, विविध लहरिया सोहैं।।२९।।
कमल केतकी माधवी, वर गुलाब सु चँबेली।
बने फूल बहु मणिनु के, जटित धरनि में हेली।।३०।।
मर्कत मणिमय तरुनि सौं, कनक-लता लपटानी।
तरु कंचनमय बेलि तहाँ, मर्कत मणि सी जानी।।३१।।

---

१. मधुर पेय पदार्थों से पूरित २. रसपूर्ण राग की ध्वनि में गान करते हुए ३. उस स्थल पर विराजमान प्रेम रंग से भींजे हुए गौर-श्याम ४. प्रसन्न मन से ५. रसासव से पूर्ण ६. मूर्तिमान चाँदनी ही इस अद्‌भुत जोड़ी के रूप में झिलमिला रही है ७. हाव-भाव के द्वारा लज्जा को ८. क्रीड़ा करते हैं ९. आनंदामृत का निर्झरण करते हैं १०. दुति का तीव्रता से विस्तार करते हैं ११. श्रीहित के मुख-चन्द्रमा को देखकर।

अद्‌भुत द्रुम-साखा कनक, पत्र अरुण मणि भाँती[१]।
झौंरा मोतिनु के तहाँ, फल मर्कतमणि कांती।।३२।।
मोतिनु के तरु की अरुन, डार जगमगति जोती।
विविध रंग के दलनि सौं, लगे विविध रँग मोती।।३३।।
कनक सु दल में झूमिका, मोती जंगाली[२] री।
झूमक मोती स्वेत कौ[३], त्यौं दल में लाली[४] री।।३४।।
झमकि रहे दल स्वेत में, मोती रँग ऊदे[५] री।
सरस गुलाबी मुक्तफल[६], दल मर्कतमणि में री[७]।।३५।।
आलबाल[८] तिनके बने, लाल मणिनु के हेरी[९]।
कहूँकि[१०] हीरनि के बने, कहुँ मर्कतमणि के री।।३६।।
आभूषन बहु फूल के, कोउ इक तरु सौं लागे[११]।
कोउ इक तरु फूलनि विषैं, लयैं वसन अनुरागे[१२]।।३७।।
विविधि भाँति फूले फले, तरु-बेली विवि-संगा[१३]।
प्रतिविंवित कल धरनि मं, राजति दुति अनभंगा[१४]।।३८।।
अद्‌भुत तने वितान बहु, मोतिनु के सुखरासी।
सेवत मदन निकुंज बहु, सदन बसंत प्रकासी[१५]।।३९।।
कंकन-आकृत प्रेममय, राजति रविजा आली।
अमल सु जल पूरित विविध, सरसी सुरस विशाली[१६]।।४०।।
जल-थल में फूले कमल, अरुन-पीत-सित-नीले।
चन्द्रकान्ति मणि के बने, मंडल धर[१७] झमकीले।।४१।।

---

१. पत्ते अरुण मणि की भाँति के हैं २. नीले रंग के ३. स्वेत मोतियों के झब्बे हैं ४. लाल-लाल पत्तों में ५. बैंगनी रंग के मोती ६. रस भरे गुलाबी मोती ७. श्याम रंग वाली मणियों के पत्तों में ८. थाँभले ९. अरी हेली! अथवा देखो १०. कहीं पर ११. किन्हीं वृक्षों पर फूलों के अनेकों आभूषण लटके हुए शोभा दे रहे हैं १२. कोई वृक्ष फूलों में वस्त्र लेकर अनुराग से भरे हुए हैं १३. तरु और बेली दोनों एक साथ १४. जिसका नाश न हो या निरंतर बनी रहने वाली १५. उन निकुंज सदनों में बसन्त सदा ही प्रकाशित बना रहता है १६. सुन्दर रस के विशाल सरोवर १७. धरती पर।

हंस-मोर-चकवादि बहु, मिले जुगल-रस भाखैं[१]।
संपति श्रीहरिवंश की, वरनत रसना थाकैं[२]।।४२।।
वरनत हारै सरस्वती, मो मति कहा विचारी।
जथाशक्ति चाहत कह्यौ, आनँद हित पिय-प्यारी[३]।।४३।।
जै जै श्रीहितरूपअलि, तिनकी कृपा मनाऊँ।
'प्रेम' सहित वृन्दाविपिन, वास बधाई पाऊँ।।४४।।

[७-४]

रस-रूप-कल्पतरु श्रीहित :- राग-सारँग,चौतालौ

प्रगटे मधुर रस रूप-कलपतरु[४], श्रीहरिवंश गुसाँईं।
विमल विशद गुन गन नव[५] पल्लव, लहलहात लसि सघन[६],न पावत—
त्रिविध ताप-रवि-झाँईं[७]।।
अति अनुराग रँगे नवधा के, नव लक्षन बहु भाँतिनि फूले[८],
फूल-सुगंध-सुजश सब ठाँईं[९]।
'प्रेम' सहित पद मूल गहैं जे, ते जन पावैं गौर-स्याम-फल,
बैठि सदा सुख-छाँईं[१०]।।

---

१. जुगलवर की रस केलि का गान करते हैं २. रसना थक जाती है; किन्तु उस रस-सम्पत्ति की शोभा पूर्ण रूप से वर्णन नहीं हो पाती ३. हित मूर्ति प्रिया-प्रीतम का आनंद ४. महामधुर रस और रूप के कल्पतरु ५. पाठा०—मृदु ६. श्रीहित जू के विमल और विशद गुण ही सघन नवीन पल्लवों के रूप में लहलहा उठे हैं ७. त्रिविध ताप रूपी सूर्य की धूप उस कल्पतरु को स्पर्श भी नहीं कर पाती ८. नवधाभक्ति के नवौ लक्षण [श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वन्दन, सख्य, दास्य और आत्म निवेदन] भी विविध प्रकार से फूल उठे और अत्यन्त अनुराग से रँजित हो गये अर्थात् नवधाभक्ति-संलग्न भक्तजनों पर भी हित-रसोपासना का पुण्य प्रभाव छा गया ९. इनका सुयश ही उस कल्पतरु के फूलों की सुगंध के रूप में सर्वत्र संव्याप्त हो गया १०. जो जन प्रेम पूर्वक इस हित-कल्पतरु का चरणाश्रय ग्रहण करेंगे वे सदा इसकी सुखदाई शीतल छाया में बैठकर नित्य क्रीड़ा परायण गौर-श्याम रूपी फल को प्राप्त करेंगे।

[८-५]

श्रीहित-हंस :— राग-कान्हरौ, चौतालौ

प्रगटे श्रीहरिवंश-हंस[१] उदयाचल[२], तारा रानी उदर कल[३]।
व्यास मिश्र घर व्योंम मनोहर, भयौ प्रकाश प्रेम कौ[४], फूले—
रसिक-कमल अलि निर्मल[५]।।
दुरे कर्म-उड़गन[६] कामादिक-तसकर जाइ छिपे सु रसातल[७]।
प्रेमदासि हित मिट्यौ तिमिर भ्रम[८], सब जन लागे भक्ति-कृत्य कौं[९],
जै जै होति सकल थल[१०]।।

[९-६]

बासन्ती वातावरण में शारदीय सौन्दर्य :— राग-आसावरी

आजु सखी! दिन परम सुहायौ।
प्रगट्यौ व्यास-सुवन अति सुंदर, मनु बसन्त में सरद लसायौ[११]।।१।।
भये विमल[१२] उर-गगन[१३] सबनि के, जहाँ तहाँ मन ससि सरसायौ[१४]।
खिली चाँदनी चारु प्रीति वर, ललित रीति सुख-सिन्धु बढ़ायौ[१५]।।२।।
विषय-पंक[१६] मिटि गई निपट ही[१७], प्रेम-भक्ति कौ मग दरसायौ[१८]।
स्वच्छ सरोवर बुधि विवेक तहाँ, संतत कुमुद-वृन्द विगसायौ[१९]।।३।।
भक्ति बिना जे तन उखटे तरु, ते जन फूलत विरमि न लायौ[२०]।
रास-विलास स्याम-स्यामा कौ, हित सरूप में प्रगट दिखायौ।।४।।

---

१. श्रीहरिवंश रूपी सूर्य २. पूर्व दिशा में स्थित एक पर्वत जिसके पीछे से नित्य सूर्य उदित होता है ३. तारारानी का सुन्दर उदर ही उदयाचल पर्वत है ४. व्यास मिश्र के घर रूपी मनोहर आकाश में श्रीहरिवंश-सूर्य के प्राकट्य से प्रेम का प्रकाश छा गया ५. अलियों [राधाकिंकिरीगणों] के निर्मल भाव से भावानुभावित रसिकजन रूपी कमल प्रफुल्लित हो उठे ६. वैदिक कर्मकाण्ड रूपी तारागण छिप गये ७. काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर— ये षट विकार रूपी चोर रसातल [पृथ्वी के नीचे वाले सात लोकों में से छटा लोक] में जाकर छिप गये ८. भ्रम रूपी अन्धकार नष्ट हो गया ९. सभी जन भक्तिपूर्ण कार्य करने लगे १०. संपूर्ण धरती में ११. श्रीहरिवंशचन्द्र के प्रागट्य से बसन्त ऋतु [मधुरितु के माध व मास] में शरद ऋतु के दर्शन हो रहे हैं १२. स्वच्छ १३. हृदय रूपी आकाश १४. उस हित-चन्द्रमा ने उदित होते ही जहाँ तहाँ सबका मन रसपूर्ण बना दिया १५. सुन्दर प्रीति की चाँदनी फैल गई और हित रीति रूपी सुख का समुद्र बढ़ चला १६. विषय वासनाओं की कीच १७. पूर्ण रूप से १८. रस भक्ति का मार्ग दिखा दिया १९. बुद्धि के स्वच्छ सरोवरों में सद्विचार की योग्यता ही कुमुद वृन्द के रूप में विगसित हो उठी २०. भक्ति के बिना जिनके तन रूपी तरु उजाड़ हो चले थे उन्हें प्रफुल्लित होते हुए देर नहीं लगी।

सीत उष्ण जे काम-क्रोध ते, तिनकौ मद बहु भाँति नसायौ[१]।
बढ़्यौ हुलास सकल रसिकनि में, सुर-नर-मुनि मिलि मंगल गायौ।।५।।
लखि अद्‌भुत छबि विप्र-इन्द्र जू[२], करि सब विधि[३] भंडार लुटायौ।
प्रेमदासि हित निरखि कुँवर-मुख, नैंन धरे कौ फल अलि![४] पायौ।।६।।

[१०-७]

श्रीव्यास भवन में हितोत्सव :— राग-जैतश्री

आजु बधाई मिश्र व्यास कैं, प्रगटे रसिक-नरेश ।।टेक।।
लाल-बाल कौ प्रेम नेम बिनु, त्यौं निजु नेह नवीलौ।
तिनकौ सार सु हित तिनकौ तन, दरसायौ झमकीलौ[५]।।१।।
हेम निचोरि नेह-साँचे में, मनु अद्‌भुत तन कीनौं[६]।
जौ लौं कहौं गौर तौ लौं वह, स्याम होतु रँग भीनौं[७]।।२।।
वे सुनि[८] देव-दुन्दुभी बाजति, सुर सुमननि वरषावैं।
त्रिभुवन मोद विनोद बढ़्यौ अति, घर-घर मंगल गावैं।।३।।
लीपि अरगजनि सौं आँगन अलि![९], सथिये सुभग बनावौ।
गजमोतिन जोतिनु सौं[१०] तिनके, चंचुर[११] चौक पुरावौ।।४।।
कनक-कलस भरि राखौ द्वारनि, धरि करि पुहुप रसाला।
रँग-रँग के कंजनि की मंजुल, बाँधहु वन्दनमाला।।५।।
कंचन केलि[१२] रुपाइ चाइ सौं, मन्दिर चित्र बनावौ।
गली भली छिरकौ सौरभ सौं, स्वर्ण-पुहुप वरषावौ।।६।।

---

१. काम-क्रोध रूपी शीत और गर्मी का घमण्ड भी नष्ट कर दिया २. विप्रों में श्रेष्ठ व्यास मिश्र ३. सब प्रकार से अर्थात् वस्त्र देने लगे तो वस्त्र ही वस्त्र, स्वर्ण देने लगे तो स्वर्ण ही स्वर्ण के भंडार लुटा दिये ४. अरी सखी! अथवा आगन्तुक ब्रजबालाओं ने ५. श्रीप्रिया-लाल का नेम रहित प्रेम और उसी प्रकार उनके अपने नवीन नेह का सार ही श्रीहित जू के तन के रूप में प्रत्यक्ष होकर चमक उठा है ६. श्रीहित जू का अद्‌भुत श्रीअंग मानों स्वर्ण को निचोड़कर नेह के साँचे में विनिर्मित किया गया है ७. जब तक उसे गौर कहते हैं तब तक वह श्याम हो जाता है [और जब तक उसे श्याम कहते हैं तक वह गौर हो जाता है] अर्थात् श्रीहित जू के तन में गौर-श्याम दोनों के सम्मिलित रूप के दर्शन होते हैं ८. वह ऊपर की ओर सुनो ९. अरी सखी! १०. ज्योतिपूर्ण गज मोतियों से ११. निपुणता पूर्वक १२. स्वर्ण-कदली।

लाल-पीत-सित-हरी जरी की, सुन्दर धुजा धरावौ।
होत कुलाहल द्विज-कुल उमड़े, फूलनि-मंडप छावौ।।७।।
मणिमय दीपक दिपत चहूँ दिशि, बाढ़्यौ रंग रँगीलौ।
मनौं धाम अभिराम विराजै, सजैं सिंगार छबीलौ[१]।।८।।
तने वितान बने पुष्पनि के, कौंन एक विधि राजैं[२]।
हँसत अकास प्रकाश भयैं मनु, महा मुदित छबि छाजैं[३]।।९।।
विप्र क्षिप्र ही[४] धाइ आइ लै, लगन सु ललित सुनाई।
शुभ नक्षत्र शुभ वार शुकल कल, ग्यासि आजु सुखदाई।।१०।।
सदा रहत मधुरितु वृन्दावन, अब मधुरितु सब ठाँईं[५]।
ता रितु की फूलनि सुत जनम्यौं[६], जहाँ तहाँ छबि छाई।।११।।
तारा रानी सब जग जानी[७], यह सुनि अमृत वानी।
पूत सपूत भयौ कुल-दीपक, कुंज-केलि-रस-दानी।।१२।।
सुनहु मिश्र जू! बहुत कहा कहौं, मैं निर्धार विचारी।
यह बालक वर विमल तुम्हारैं, प्रगट्यौ कुंजबिहारी।।१३।।
जे जन भक्ति बिना उखटे तरु, ते फूलनि सौं काछैं[८]।
जिनके हिये-सरोवर सूखे, ते रस में भरैं आछैं[९]।।१४।।
तब मोंहन है वर वंशी सौं, किये बहुत गिरि पानी।
अब जे मन-पाहन ते पिघले, सुनि हरिवंश सु वानी[१०]।।१५।।

---

१. मानों छबि पूर्ण शृंगार सुसज्जित करके सुन्दर भवन सुशोभित हो रहा है २. एक प्रकार का कौन-सा रूप बतलाया जाय अर्थात् वे अनेक प्रकार के वितान हैं ३. मानों महा मुदित छबि से सुशोभित आकाश ही हँस रहा है जिसका कि यह प्रकाश है ४. शीघ्र ही ५. नित्य लीला धाम वृन्दावन में सदैव बसन्त रितु बनी रहती है किन्तु इस समय तो सर्वत्र बसन्त रितु छा गई है ६. ऐसा ज्ञात होता है कि उस बसंत रितु की प्रसन्नता में ही यह पुत्र उत्पन्न हुआ है ७. जो संपूर्ण जगत में विख्यात हैं ८. जो जन भक्ति के बिना उजड़े हुए वृक्ष के समान थे वे हरे भरे होकर फूलों से अलंकृत हो गये हैं ९. जिनके हृदय रूपी सरोवर सूख गये थे वे अब रस से लवालव भर गये हैं १०. श्रीकृष्णावतार काल में वंशी के प्रभाव से बहुत से पर्वत पिघलकर पानी बन गये थे किन्तु अब श्रीहरिवंश जू की वाणी को सुनकर तो पाषाण मन वाले भी पिघल गये अर्थात् सबके मन में प्रेम उत्पन्न हो गया।

सुनि-सुनि सुखद वचन द्विज-नृप जू, हिय जिय मोद बढ़ावैं।
जनमपत्र लै लख्यौ तात[१]-मुख, फूले तन न समावैं।।१६।।
भरे पान मुख सब सुहृदनि[२] के, छिरके केसरि सौं री।
माल रसाल मेलि गर तिनकैं, हरषावत सबकौं री।।१७।।
करत दान सनमान सहित सब, बहु भंडार लुटावैं।
जाँचकजन गावैं ते पावैं, तूरनि[३] लियैं बजावैं।।१८।।
विधिवत धैंनु दई विप्रनि कौं, हीर[४] चीर[५] बहु दीने।
जिन जो माँग्यौ तिन सो पायौ, भये सबनि के चीन्हे[६]।।१६।।
बंदीजन उच्चारत विरदनि, जै-जै वानी बोलैं।
कनक-वसन मुक्ता-मणिगन लै, मनौं इन्द्र से डोलैं।।२०।।
पंच शब्द बाजत सुनि नारी, घर-घर तें उठि धाईं।
दमक दामिनी सी वर भामिनि, हँसति भवन में आईं।।२१।।
कनक-थार लै धावति तिय कल, झलकत मुख तिनमें री।
चन्द्र-वृन्द निर्त्तत आवत मनु, कंचन-मंडल पै री[७]।।२२।।
द्विज-नरेश कैं धाम भाम बहु, नाँचति हैं सुकुमारी[८]।
जगमगात भूषण जराव के, झमकति[६] झूमक सारी।।२३।।
नदित[१०] नवल भूषण रतननि के, पगनि महावर सोहै।
मोंहनि मंत्रनि पढ़त कमल मनौं, धुनि सुनि कौंन न मोहै।।२४।।
बाजत वीन-मुरज-सारंगी, ताल मृदंगनि संगा।
डुलत हार उर मिले ताल सौं, उपजत तान तरंगा[११]।।२५।।
कोकिल-कंठ लजावति गावति, नव जुवती रस झेलैं।
ताननि ही में मनु कमान बिनु[१२], बान मैंन पर मेलैं।।२६।।

१. आदर सूचक या प्रेम पूर्ण संबोधन २. इष्ट मित्रों के ३. फूँककर बजाया जाने वाला एक तरह का लम्बा बाजा ४. हीरा जवाहरात ५. वस्त्र ६. मन की चिन्तना या अभिलाषा पूर्ण हो गई ७. स्वर्ण थाल में झलकता हुआ मुख इस प्रकार सुशोभित हो रहा है मानों स्वर्ण मंडल पर चन्द्रमा के वृन्द नृत्य करते हुए आ रहे हैं ८. कोमलांगी भाम ६. बहुत अधिक चमचमा रही है १०. शब्दायमान ११. जो ताल से मिले हुए तानालाप कर रहे हैं उनके उर में हार हिल रहे हैं १२. धनुष के बिना ही।

द्विजरानी सुख सानी हरषित, सब तिय निकट बुलाईं।
जो जाकी रुचि सो ताकौं त्यौं, भली भाँति पहिराईं।।२७।।
जो सुख आजु बढ़्यौ री सजनी, सो कापै कहि आवै।
रोम-रोम प्रति ह्वै सत रसना, तऊ पार नहिं पावै।।२८।।
फूले रसिक रँगीले जित तित, लखि हित रूप सुहायौ[१]।
प्रेमदासि हित बसि वृन्दावन, हरषि-हरषि जस गायौ।।२६।।

[११-८]

राग-काफी

गावति मंगलचार, बधाई सुहाइयाँ[२]।
रंग रँगीली सखी सब, बनिठनि आइयाँ[३]।।१।।
झूमक सारी सुरँग सजैं, रँगि राग सौं[४]।
दामिनि सीं लहकति, लपटी अनुराग सौं[५]।।२।।
नीली छबीली अँगिया, अँग में यौं लसै।
चंद के डर मनु तिमिर, हेम गिरि में बसै[६]।।३।।
लहँगा हरे में[७] सुरंगित[८], बूटियाँ छोटियाँ।
सोहैं हरी धर पर मनु, वीरवहूटियाँ[६]।।४।।
सीस पै सीस के फूल[१०], धरे रसरीति कैं[११]।
मानौं कलश चढ़ाये, मनमथ जीति कैं।।५।।
भाल विशाल पै वंदन बिन्दु विराजहीं।
हेंम-सिंहासन पर हेम-सूर से[१२] छाजहीं।।६।।

१. श्रीहित जू का सुन्दर रूप देखकर २. श्रीहरिवंश जन्मोत्सव के शुभावसर पर सुन्दर मांगलिक गीत गान कर रही हैं ३. सजधजकर आईं ४. अनुराग से रँगी हुई वे युवतियाँ ५. अनुराग से लिपटी हुई दामिनी की भाँति इधर उधर झूम रही हैं ६. मानों चन्द्रमा [मुख-चन्द्र] के डर से अन्धकार [नीली कंचुकी] स्वर्ण पर्वत [उरोज युगल] पर जाकर बस गया है ७. हरे रंग के लहँगे में ८. लाल रंग की ६. गहरे लाल रंग के छोटे रेंगने वाले कीड़े, जो वर्षाकाल में बहुत ही सुन्दर दिखाई देते हैं १०. सीसफूल ११. रस की किसी विशिष्ट रीति से धारण किये गये हैं १२. उदयकालीन स्वर्णिम सूर्य की भाँति।

लोचन लोल कलोल करैं, मुख सोंहनैं।
चंद के अंक में खेलैं, चकोर से मोंहनैं[१]।।७।।
हलत तरौना दिपैं, मुख लट लांबी रुरैं।
घेरे मनौं शशि-सूर, राहु बिच में डरैं[२]।।८।।
नासिका में गजमोती, रहे थहराय कैं[३]।
रूप की गेंद सौं खेलैं, मनौं शुक आय कैं।।६।।
भूषण चंद्र मणिनु के, धरैं तन में सबै।
लपटे कंचन खंभनि, चन्द्र मनौं अबै[४]।।१०।।
बैंनी लगैं झुकि पाइनु, लंक जबै मुरैं[५]।
मोंहनी मंत्र किधौं धुनि, नूपुर की घुरैं[६]।।११।।
मोतिनु चौक पुरावति, चंचुर चाइ सौं[७]।
छबि के अंकुर से, निपजावति भाइ सौं[८]।।१२।।
बाँधति द्वारनि तोरन, ससि-गोती खिले।
हँसत सदन के वदन, रदन से झिलिमिले[६]।।१३।।
दीपति दीपक चहुँ दिसि, जगमग जोति के।
भूषण भवन सजे मनु, हेम-उदोति के[१०]।।१४।।
लाल गुलाल धुजा धरि, कैं, थिरकाइयाँ[११]।
तानि वितान सुरंग, सु झालरि लाइयाँ[१२]।।१५।।
नाँचति राचति[१३] नागरि, भरीं कलोल सौं।
कोकिल कंठ लजावति, बोल सुबोल सौं[१४]।।१६।।

१. मोहित करने वाले २. मानों सूर्य [कपोलों पर प्रतिविम्वित तरौना] और चन्द्रमा [मुख-चन्द्र] मिलकर राहु [मुख पर सुशोभित लटों] को बीच में घेरे हुए हैं और वह डर रहा है ३. हिलते हुए शोभा दे रहे हैं ४. मानों इस समय स्वर्ण के खम्भों [युवतियों के आनख शिख] में अनेकों चन्द्रमा [आभूषण] लिपट रहे हैं। ५. जब सूक्ष्म कटि मुड़ती है ६. पगों में सुशोभित नुपूरों की ध्वनि है अथवा मोहिनी मंत्र हैं ७. बड़े चाव से चतुरता के साथ ८. बड़े भाव से शोभा के अंकुर जैसे उत्पन्न करती हैं ६. द्वार पर सुशोभित उन तोरनों में शशि के गोत्र वाले मणि-समूह इस प्रकार खिल रहे हैं जैसे सदनों के मुख हँस रहे हैं और उनकी दन्तावली झिलमिला रही है १०. स्वर्ण की आभा जैसे ११. गुल्लाला के लाल-लाल फूल रखकर धुजायें फहराईं गईं १२. उन वितानों में सुन्दर झालर लगाईं गईं १३. आनन्द से रची हुईं १४. सुन्दर वचनावली बोलकर।

बाजत वीन नवीन, प्रवीन बजावहीं।
ताल रसाल सौं बाल[१] सु, कंज फिरावहीं।।१७।।
तारा जू की कूख, मल्हावति मोंहनी[२]।
निरखि कुँवर कौ वदन, थकीं सब सोंहनीं[३]।।१८।।
आवत भावत छावत, द्विज दुति वृन्द कौं[४]।
रंक करत जिनकी छबि, इन्द्र सु चंद कौं।।१६।।
छिरकत केसरि विप्र, समाजनि[५] प्रेम सौं।
फूले रूप-तरु से बहु, फूलनि हेम सौं[६]।।२०।।
होति निगम-धुनि सुनि सुर, देत निसान कौं[७]।
वरषावति मृदु फूलनि, फूले गान कौं[८]।।२१।।
छायौ विमाननि सौं नभ, छबि कवि यौं कहैं।
मानौं गुडी सी उड़ाई, चढ़ी रँग कौं लहैं[६]।।२२।।
गाजि उठ्यौ घन सौ[१०], धन दैंन कौं व्यास जू।
जाँचकजन किये भूप, बढ़ाइ हुलास जू।।२३।।
भूषण-वसन अमोल सौं, मंजूषैं धरीं[११]।
कुल-वधुवनि पहिराइ, गोद मेवनि भरीं।।२४।।
विदा भये सब देत, असीसनि कौं भलैं।
देखि लाल कौ रूप, पाँय काके चलैं[१२]।।२५।।
प्रेमदासि श्रीव्यास मिश्र, मन लाइकैं[१३]।
तिनहिं बसायौ भवन, माँहिं मुसिक्याइकैं।।२६।।

१. बधाई देने वाली वे बालायें रसपूर्ण ताल के साथ २. मन को मोहित करने वाली ३. वे सुन्दरी ४. चन्द्रमाओं की द्युति को छाती हुई जब वे आती हैं तो सबको बड़ी अच्छी लगती हैं ५. विप्र-समूह पर ६. जैसे रूप के बहुत से वृक्ष स्वर्ण-फूलों से प्रफुल्लित हो रहे हैं ७. देवतागण नगाड़े बजा रहे हैं ८. गान करने के लिए प्रफुल्लित हो रहे हैं ६. मानों आकाश में अनेक पतंगें उड़ा दी हैं जो स्वयं आनन्दित हो रही हैं और सबको आनन्दित कर रही हैं १०. बादल की भाँति गर्जना कर दी ११. अमूल्य वस्त्राभूषणों से भरी हुई सन्दूकें लाकर दे दीं। १२. किसके पग चल सकते हैं अर्थात् सभी वहीं रुक गये १३. भीतर से प्रसन्न होकर।

[१२-६]

राग-भैरौं

गावति मंगल अली सुहाई[१]।
मंगलमुखी[२] समय मंगल के[३], अरस परस हरषी हरषाई[४]।।१।।
तारारानी-कूखि सिरानी, बाजति सुंदर सुघर बधाई[५]।
प्रगटे रसिक-नरेश वेश वर[६], गौर-स्याम-छबि तन दरसाई[७]।।२।।
फूलनि मंडप छाइ चाइ सौं, रँग-रँग की करि[८] धुजा धराई।
मोतिनु चौक पुराइ चहूँ दिसि, कंचन-कदली कलित रुपाई[९]।।३।।
लीपि[१०] ललित आँगन केसरि सौं, जहाँ तहाँ रचना रचवाई[११]।
मणिमय कलस पूरि[१२] तोरन धरि, किसलय वंदनमाल बँधाई।।४।।
होत कुलाहल द्विज-कुल उमड़े, धाइ आइ शुभ लगन सुनाई।
विदित वेद विधि विप्र[१३] क्षिप्र ही[१४], नामकरन करि नव निधि[१५] पाई।।५।।
देव-दुन्दुभी बहु विधि बाजति, राजति अति अछरौटि निकाई[१६]।
तिनकी बनिता[१७] बनिठनि नाँचति, वरषावति पुहुपनि उमगाई।।६।।
कनक-वसन मुक्ता-मणि कंचन, देत व्यास जू झरी लगाई।
बंदीजन उच्चारत विरदनि, लेत[१८] सबनि मन आस पुजाई।।७।।
धरी हरी सिर दूब मिश्र कैं,सब कल कुल[१९] मिलि करत बड़ाई।
भयौ उजागर विप्र-वंश नित, रहौ तुम्हारी यह ठकुराई[२०]।।८।।
छिरकि अरगजनि सुहृद[२१] पान दै, विप्र-इंद्र[२२] माला पहिराई।
प्रेमदासि हित ता[२३] उत्सव में, रहसि भजन की दृढ़ता पाई[२४]।।६।।

१. सुन्दर २. जिनमें शारीरिक दृष्टि से स्त्री और पुरुष दोनों के कुछ-कुछ चिह्न तथा लक्षण जन्मजात और प्राकृतिक रूप से हों ३. जन्म के मांगलिक अवसर पर ४. परस्पर एक दूसरे को हर्षित करती हैं और हर्षित होती हैं ५. सुघर युवतियाँ विविध वाद्यों में सुन्दर बधाई गान करती हैं ६. सुन्दर रूप वाले ७. जिनके श्रीअंग में गौर-श्याम की छबि प्रत्यक्ष हो रही है ८. अनेक रंगों से रचकर ६. लगा दी १०. लेपन किया ११. चित्र चित्रित किये १२. जल, रोरी, हल्दी चावल और पंच पल्लव आदि से पूर्ण करके १३. विप्रजनों ने १४. शीघ्र ही १५. कुवेर की सम्पत्ति १६. सितार आदि वाद्यों पर राग के बोल अलग-अलग और साफ निकालने की क्रिया बड़ी ही सुन्दर सुशोभित हो रही है १७. उन देवताओं की बनितायें १८. दान लेते हुए १६. सभी आगन्तुक गुणीजनों के समूह २०. तुम्हारा यह वैभव सदा बना रहे २१. मित्रजनों को २२. विप्रों में श्रेष्ठ व्यास मिश्र ने २३. पाठा०-या २४. रहसि भजन किंवा रसोपासना की दृढ़ता प्राप्त की।

[१३-१०]

राग-जैतश्री तथा बिहागरौ

मंगल गावैं सखी सुहावनीं,गावैं हेली रूप-लता सी[१] आज।
धनि-धनि श्री ब्रज भूमि री, रह्यौ बाद छबि छाज[२]।।१।।
श्रीतारा-कूखि सफल भई, प्रगटे रसिक-नरेश।
सुर-नर-मुनि जै जै करैं, फूले रसिक सुदेश।।२।।
देव-दुन्दुभी बाजहीं, वरषावत सुर फूल।
तिनकी बनिता नाँचहीं, सजि-सजि सुरँग दुकूल।।३।।
व्यास मिश्र प्रमुदित खरे, विप्र सभा में राज।
मनु उड़गन में ऊगियौ[३], पूरन शशि सुख साज[४]।।४।।
मोतिनु चौक पुराइकैं, फूलनि मंडप छाइ।
वन्दनमाल बँधाइकैं, रचना रुचिर रचाइ।।५।।
जनमपत्र लिखवाइकैं, सुत-मुख लखि हरषाइ।
धरत नाम द्विज सोधिकैं[५], श्रीहरिवंश बनाइ।।६।।
बन्दीजन मन में बढ़े[६], गनत न राजा राव[७]।
वंशावलि द्विजराज की, वरनत चित कैं चाव।।७।।
देत दान सनमान सौं, मिश्र मुदित मन माँहिं।
जाँचकजन किये इन्द्र से, अगनित धन दै ताहि[८]।।८।।
कामधैनु विप्रनि दईं, नर-नारी पहिराइ[९]।
प्रेमदासियनि सौं कह्यौ, तुम हरषौ जस गाइ[१०]।।६।।

१. रूप की लता जैसी सहचरीगण २. छबि से सुशोभित ३. उदित हुआ ४. सुख की सज्जा स्वरूप पूर्ण चन्द्र ५. अच्छी तरह सोच समझकर कोई निर्णय निश्चित करना ६. अपने मन में बहुत अधिक उत्साहित हुए ७. राजा और राजा के दरबारीगणों को भी अपने आगे तुच्छ समझते हैं ८. उनको ९. वस्त्राभूषणों से सुसज्जित किया १०. तुम आनन्दित होकर यश गान करो।

[१४-११]

राग-चैती गौरी

अहो हेली गावौ मंगलचार, सुहायौ[१] दिन आजु कौ।
अहो कोऊ पुन्य उदै भयौ आनि, जानि द्विजराज कौ।।१।।
अहो धनि श्रीतारा कौ भाग, सुहागिनि नित रहौ।
अहो इन जायौ है रसिकनरेश, मोद सबही लहौ[२]।।२।।
अहो सुनि! नर-मुनि जै जै कहत, देव-दुन्दुभी बजैं।
अहो हेली सुर सुमननि वरषाइ, परम सुख कौं सजैं।।३।।
अहो हेली केसरि अजिर लिपाइ, चौक मोतिनु रचौ।
अहो हेली कदली कनक रुपाइ, दीप रतननि सचौ[३]।।४।।
अहो हेली वंदनमाल बँधाइ, धुजा सुरँगित धरौ।
अहो हेली फूलनि-मंडप छाइ, हेम-कुंभनि[४] भरौ।।५।।
अहो हेली ह्वै आनन्द अधीर[५], तिहूँ पुर में छयौ।
अहो हेली जुगल-प्रेम कौ रूप, अवनि प्रगटित भयौ।।६।।
अहो हेली आयौ विप्र-समाज, मान सबकौ करौ।
अहो हेली तिनहिं रंग सौं[६] भरौ, धरौ चंदन खरौ[७]।।७।।
अहो हेली देत द्विजनि कौं दान, मिश्र विधि सौं खरे[८]।
अहो हेली खोलि दिये भंडार, विविध धन सौं भरे।।८।।
अहो हेली मागद-चारन-सूत, विरद वरनन करैं।
अहो हेली मन वांछित फल लेत, इन्द्र से ह्वै फिरैं।।९।।
अहो हेली नर-नारी पहिराये, हरष बढ़ाइकैं।
अहो करीं प्रेमदासि सब सीतल, सुतहिं दिखाइकैं[९]।।१०।।

१. सुन्दर २. प्राप्त करो ३. चारों ओर सजा दो ४. स्वर्ण-कलश ५. आनन्द भी उत्सुकता में भरकर ६. केशर के रंग से ७. सुन्दर चन्दन से चित्रित करो ८. प्रसन्न होकर ९. अपने पुत्र श्रीहरिवंश के दर्शन कराकर।

[१५-१२]

राग-काफी

गावौ मंगलचार बधावौ[१]।
तारा रानी सुखदानी सुत-जायौ मोद बढ़ावौ[२]।।१।।
केसरि अजिर लिपावौ सजनी, कंचन-कलस भरावौ।
मोतिनु चौक पुरावौ आवौ, कदली कनक रुपावौ।।२।।
सरस मुकेशी[३] कोर मँगावौ, सुंदर धुजा धरावौ।
लाल-पीत-सित कल कमलनि की, वंदनमाल बँधावौ।।३।।
सुरँग साथिये धरि रोरी के, सुख सौरभ[४] छिरकावौ।
विदित वेद-विधि विप्र बुलावौ, जै जै शब्द करावौ।।४।।
होत कुलाहल द्विज-कुल उमड़े, फूलनि-मंडप छावौ।
पूरन पुन्य मिल्यौ यह औसर[५], पुहुपावलि वरषावौ।।५।।
देव-दुन्दुभी बाजत राजत, सुनि-सुनि हिय हरषावौ।
प्रगट भयौ आनँद कौ आनँद[६], सकल रसिक सचु[७] पावौ।।६।।
पाँचौ शब्द कराइ चाइ सौं, मंगलमुखी नचावौ।
मागद-चारन-सूत कहत जस, तिनकी आस पुजावौ।।७।।
फूले तन न समात मिश्र जू, तिनकौं[८] माँथौ नावौ।
प्रेमदास श्रीव्यासकुँवर कौ, मुख लखि नैंन सिरावौ[९]।।८।।

[१६-१३]

राग-सूहौ विलावल

चलि-चलि री हेली, व्यास घर जाइयैं।
प्रगटे सु रसिक-नरेश हित हरिवंश जू तिहिं गाइयैं[१०]।।१।।
वेद-विधि में विदित विप्र[११] सु, मुदित नामकरन करैं।
माँगद-चारन-सूत-बन्दीजन सु विरदनि उच्चरैं।।२।।

१. अरी सखी! श्रीहित जू के मंगलचार की बधाई गान करो २. अतः हार्दिक आनन्द की वृद्धि करो ३. जड़ाव का ४. सुखदायक सुगन्ध ५. सुन्दर अवसर ६. आनन्द का आनन्द ७. विश्राम ८. व्यास मिश्र जू को ९. अपने नैनों को शीतल करो [पाठा०– नैन सिहावौ] १०. उनकी बधाई या उनका सुयश गान करो ११. वेद-विधि-ज्ञाता के रूप में विख्यात विप्रगण।

पुराइ मोतिनु चौक घर-घर, चित्र की रचना रचैं।
बाँधि वंदनमाल फूलनि की सरस तोरन सचैं।।३।।
मिश्र जू आनन्द में भरि, करत दान उमाह सौं।
कनक-मोती दर्वि[1] बहु पट, देत अति उत्साह सौं।।४।।
बाजैं आनक[2] सहनाइ भेरी, पणव[3] झाँझ न कहि परैं।
बहु मृदंग-उपंग-वीना, मुरज[4] की धुनि मन हरैं।।५।।
नाँचैं रु गावैं जूथ-जूथनि, नव जुवति आनँद भरीं।
तिनके चरन की नख छटा पर, देव-बनिता बलि करीं[5]।।६।।
सुर सुमन वरषाइ जै-जै, कहि निसान बजाइयौ।
वंशीधर हरि[6] भये प्रगटित, आनँद जग में छाइयौ।।७।।
कुमकुम के धरि साथिये री, मनवांछित फल पाइयैं।
प्रेमदासि हित कुँवर कौ मुख, निरखि नैंन सिहाइयैं[7]।।८।।

[१७-१४]

राग-कान्हरौ, चौतालौ

प्रगटे गौर-स्याम हित रूप अनूपम, श्रीहरिवंशचन्द्र वर[8]।
सुर सुमननि वरषावत गावत, तिनकी बनिता बनिठनि नाँचत,
दै निसान प्रमुदित डारि डर[9]।।
विप्र क्षिप्र सौं[10] धाइ आइ धरि, लगन[11] लेत दृग लगननि कौ फल[12],
निरखि कुँवर-मुख महा मधुरतर[13]।
'प्रेम' सहित श्रीव्यास मिश्र जू, मिश्रित[14] बधाई सुनि बन्दीजन कौं[15],
हरषावत करि कंचन-झर[16]।।

---

१. द्रव्य या सम्पत्ति २. एक प्रकार का बड़ा नगाड़ा ३. छोटा ढोल या नगाड़ा ४. एक वाद्य विशेष ५. न्यौछावर कर दीं ६. वंशी को अपने कर-कमलों में धारण करने वाले श्रीहरि ही ७. प्रसन्न होइये ८. हित रूपी अनुपम गौर-श्याम ही श्रीहरिवंशचन्द्रवर होकर प्रकट हुए हैं ९. लोक लज्जा का डर त्यागकर प्रमुदित होकर नगाड़े बजाती हैं १०. शीघ्र ही ११. कोई शुभ कार्य करने के लिए फलित ज्योतिष के अनुसार निश्चित किया हुआ मुहूर्त १२. नेत्रों को जो लौ लगी हुई थी वह पूर्ण हो गई १३. मधुर से भी मधुर १४. पाठा०–मुदित १५. बन्दीजनों के द्वारा संयुक्त रूप से गाई जाने वाली बधाई को सुनकर अथवा हित जन्मोत्सव में गौर-श्याम श्रीराधा-श्यामसुन्दर की जन्म बधाई का एक साथ गान सुनकर १६. स्वर्ण की वर्षा करके सबको आनन्दित करते हैं।

[१८-१५]

ढाँढी-नर्तन :– राग-मारू

ढाँढ़ी नाचतु रंग रँगीलौ।
गावतु जस भींजति[1] मसि[2] मुख-शशि, हँसि लसि रह्यौ छबीलौ।।१।।
लाल पाग कलँगी मोतिनु की, तुररा[3] हलतु लसीलौ।
लौंनौं तन टौंनौं सौंनौं सौ[4], झगा[5] उपरना पीलौ[6]।।२।।
सजें रतन-भूषन भूषित तन, मनौं इन्द्र सरसीलौ[7]।
पैंजनि गैंजनि करत[8] फिरावत, कमल ताल सौं नीलौ[9]।।३।।
ब्रह्मरिषिन में[10] रिषि-नरेश[11] जू, जगमग होत हँसीलौ।
मनौं मुदित कंजनि में[12] प्रमुदित, ऊग्यौ हंस रसीलौ[13]।।४।।
द्विजराजन[14] की सभा विराजत, सजि आनन्द नवीलौ[15]।
तिनकौं आइ नवावत माथौ, महा मगन झमकीलौ[16]।।५।।
लै सुकुँवारि वधू सँग निर्त्तत, टरत[17] न[18] छबि अरुझीलौ।
मति उड़ि परै परी सी ढाँढिनि[19], लगत स्वाँस सुरभीलौ[20]।।६।।
विप्र-इन्द्र[21] की वर वंशावलि, वरनत दृग उनमीलौ[22]।
मुक्ति आदि सुख पेलि पाँइ सौं, यौं ऐंड़त ऐंड़ीलौ[23]।।७।।

---

१. व्यास वंश के सुयश का गान कर रहा है और उसी रस-जस में भींजा हुआ है २. उसके ऊपरी ओष्ठ पर मूँछों की हल्की रेखायें सुशोभित हैं अर्थात् किशोरावस्था का अभ्युदय हो चला है ३. फूलों का गुच्छा या बादले-मोतियों आदि का लच्छा ४. स्वर्ण कान्ति जैसा उसका तन अत्यन्त सुन्दर है और देखते ही दृष्टा को मोहित कर लेने वाला है ५. प्राचीन काल में पहना जाने वाला ढीलाढाला एक कुर्ता विशेष ६. पीले रंग का ७. रसपूर्ण ८. पगभूषण की ध्वनि करता हुआ ९. ताल के साथ नीलकमल फिराता है १०. मन्त्रदृष्टा रिषियों में ११. व्यास मिश्र १२. कमलों के बीच में १३. रसपूर्ण सूर्य उदित हो गया है १४. श्रेष्ठ ब्राह्मणों की १५. नवीन १६. प्रकाशवान वह ढाँढ़ी १७. पाठा०–डरत १८. वहाँ से हटता नहीं है १९. उस ढाँढी के संग में सुशोभित ढाँढिनी इतनी अधिक चंचल है जिसे देखकर लगता है कि वह परी की भाँति कहीं उड़ नहीं जाये २०. जिसकी स्वाँसें सुगंध युक्त हैं २१. ब्राह्मणों में श्रेष्ठ व्यास मिश्र की २२. प्रफुल्लित नेत्रों से २३. गर्व से भरा हुआ।

श्रीराधाबल्लभ जू तिनकौ, रंग परम चटकीलौ।
तिनसौं इनकी साखि मिलावतु[१], भावत मन झलकीलौ।।८।।
मणिगन मुक्ताहल[२]-कंचन-पट, देत मिश्र हरषीलौ।
सोऊ लै-लै सकल लुटावत, महा मत्त गरवीलौ।।६।।
सर्वसु दयौ तऊ नहिं मानत, ऐसौ अरनि अरीलौ[३]।
बिनु देखैं श्रीतारासुत कौं, टरत न हठनि हठीलौ।।१०।।
जब निरख्यौ श्रीव्यास-दुलारौ, रूप-रंग- बरसीलौ[४]।
प्रेमदास तब दै असीस कर, सुख-सागर में झीलौ।।११।।

[१६-१६]

ढाँढिनी-नर्तन :- राग-ईमन

ढाँढ़िनि नाँचति अति रँग भीनी।
गावति छबि छावति[५] उपजावति, तान तरंग नवीनी।।१।।
झमकि रही तन झूमक सारी, जरतारी रँग पीरी[६]।
हलत मुकेशी[७]-किरन[८] डुलति सिर, कलंगी मोतिन की री[६]।।२।।
थरहरात[१०] बैंना के मोती, आनन ओप[११] बढ़ाई।
खेलत मनौं मयंक-अंक में[१२], उड़गन करि चपलाई[१३]।।३।।
लटकी लट ठठकी लगि उरजनि, करनफूल तें यौं री।
दुरत राहु मनु कंचन-गिरि में, डरै आजु रवि सौं री[१४]।।४।।

---

१. परम चटकीले रंग वाले श्रीराधाबल्लभलाल जू से श्रीहित जू की साखि मिलाता है अर्थात् श्रीराधाबल्लभलाल जू ही श्रीहित जू के रूप में प्रत्यक्ष हुए हैं। २. मोती ३. अपनी हठ में अड़ने वाला ४. रूप और रंग की वर्षा करने वाले श्रीव्यासनंदन का मुख ५. अपनी छबि का विस्तार करती हुई ६. पीले रंग के वस्त्र पर जड़ाव की हुई ७. जरदोजी काम ८. बादले के तार ६. नृत्य करते समय जब ढाँढिनि का सिर हिलता है तो जड़ाव के काम और बादले के तारों से विनिर्मित मोतियों की कलंगी भी हिलती है १०. हिलते हैं ११. आभा १२. चन्द्रमा के अंक में १३. चंचल तारागण १४. कर्णफूल से लटकती हुई एक लट उरजनों पर लगकर इस प्रकार रुक गई है मानों आज राहु सूर्य से डरकर स्वर्ण पर्वत में छिप रहा है।

लचकति कटि कच के भारनि सौं[१], कुनित किंकिनी भारी[२]।
मनौं बोलि सखियनि चहुँ दिशि तें, थाँभि लई सुकुमारी[३]।।५।।
गोल गुलफ तरहर[४] रव नूपुर, मिले वीन सौं यौं री।
मानौं हंस प्रसंशत दुहुँ दिशि, अमलनि कमलनि मौरी[५]।।६।।
सुनत जनम श्रीरसिक-नृपति कौ, देति असीस न थोरी।
विप्र-इन्द्र[६] की वर वंशावलि, वरनति वैस किशोरी[७]।।७।।
सुनि-सुनि मुदित भईं द्विजरानी,ततछिन निकट बुलाई।
हँसति लसति मनु कल कपूर के, झरत फूल छबि छाई।।८।।
जदपि दिये बहु वसन-आभरन, तदपि न हरषित सो री[८]।
यह तौ लालहिं देख्यौ चाहै, बँधी निबंधन डोरी[६]।।६।।
जब निरखे श्रीव्यास-दुलारे, तब अँखियाँ सियराईं[१०]।
प्रेमदासि हित लै बलाइ कर, धरि अँगुरी चटकाईं[११]।।१०।।

[२०-१७]

राग-गौरी, तिताल

ढाँढिनि निर्त्तति रंग भरी[१२], द्विजरानी जू के आगैं।।टेक।।
भूषण भूषित लाल रतन के, पहिरैं सुरँग दुकूल।
लै कर कमल फिरावति गावति, वरषावति हँसि फूल ।।१।।
बाजत ताल-मृदंग-चंग सँग, वीन-मुरज-सहनाइ।
लेति सुलप में[१३] ठुमकि-ठुमकि गति, नूपुर नव झनकाइ।।२।।

---

१. केशों के भार से कटि लचक रही है २. बहुत अधिक ३. मानों चारों ओर से अपनी सखियों [शब्दायमान किंकणी] को बुलाकर कोमल कटि को थाँभ लिया है [अन्यथा वह गिर ही जाती] ४. एड़ी के ऊपर की गाँठ के नीचे ५. पगों में सुशोभित नुपूर-रव ऐसा लग रहा है मानों दोनों ओर पवित्र कमलों के सिर पर विराजमान हंस जस गान कर रहे हैं ६. विप्रों में सर्वश्रेष्ठ व्यास मिश्र ७. किशोर वय वाली वह ढाँढिनी ८. तो भी वह प्रसन्न नहीं होती ९. हित की निर्बन्ध डोरी से बँधी हुई वह ढाँढ़िनी १०. प्रसन्न हुईं या शीतल हुईं ११. कानों के पास हाथ की उँगलियों को चटकाकर बलैया लेती है १२. आनंद से भरी हुई १३. सुन्दर आलाप के साथ।

झरत कचनि तें[१] कुसुम झिलिमिलत, चपल पगनि नख वृन्द[२]।
मिलत मनौं घन तें चलि उड़गन, नचत कंज चढ़ि चन्द[३]।।३।।
अलक झलक रुरकति आनन पर, विलुलित नैंन अभंग[४]।
भाजत खंजन से कंजनि तजि, लखि मतवारे भृंग[५]।।४।।
द्विज-नरेश की कहि वंशावलि, उमगी देति असीस।
व्यास मिश्र कौ कुँवर लाड़िलौ, जीवौ कोटि बरीस[६]।।५।।
प्रेमदास हित तारा जू सुनि, भरीं पुत्र कैं मोद[७]।
नख-सिख लौं ढाँढ़िनि पहिराई[८], भरि मेवनि सौं गोद।।६।।

[२१-१८]

मुक्त मंगलमुखी :— राग-वरवै

नाचत मंगलमुखी रँग भीने, नवल रँग भीने।
व्याससुवन के जनम सोहिलैं, गावत परम प्रवीने।।१।।
हीरा-लाल-कनक-पट-मोती, मुदित मिश्र जू दीने।
सोऊ लै-लै देत भिक्षुकनि, रूप-रसासव पीने[९]।।२।।
चारि पदारथ[१०] छुवत न क्यौं हूँ,अति उदार मन कीने।
प्रेमदासि लखि तारा-सुत-मुख, प्रान वारनैं[११] कीने।।३।।

[२२-१६]

मुग्ध मालिनी :— राग-सारँग

लै आई री मालिनियाँ, वन्दनमाल सँवारि।
रँग रलियाँ[१२] डलियाँ कर लीयैं, झलमलियाँ सुकुँवारि[१३]।।

१. केशों से २. केशों से झड़ते हुए फूल चपल पगों के नख समूहों पर झिलमिला रहे हैं ३. मानों बादल [केश] से उतरकर तारागण [झड़ते हुए फूल] कमलों [पग-कमल] पर चढ़कर नृत्य कर रहे अपने स्वामी चन्द्रमाओं [नख-चन्द्र] से मिल रहे हैं ४. नैन निरन्तर चंचल हो रहे हैं ५. मानों मतवाले भ्रमरों [अलकावली] को देखकर खंजन [चंचल नैन] कमलों [मुख-कमल] को छोड़कर भाग जैसे रहे हैं ६. वर्ष ७. लाड़ जन्य आनन्द ८. आनख शिख वस्त्राभूषणों से सुसज्जित किया ९. वे मंगलमुखी श्रीहरिवंशचन्द्र का रूप-रस-पान करके दान में प्राप्त संपूर्ण वस्तुओं को भी अन्य भिक्षुकों को लुटा देते हैं १०. वे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पदार्थों को भी नहीं चाहते- एकमात्र श्रीहरिवंश जू की छबि ही देखना चाहते हैं ११. न्यौछावर १२. आनंद से भरी हुई मालिन १३. झिलमिलाती हुई वह कोमलांगी।

तिमिर-हरन[१] तोरन सजि द्वारनि, झगरति लीकनि[२] कौं नव नारि।
प्रेमदासि लखि व्याससुवन कौं, लह्यौ लाग मनुहारि[३]।।

[२३-२०]

छबीली छटी :— राग-सूहौ विलावल

चलि मिलि गावौ री! मंगल, श्रीद्विजराज कैं।
सखी! लड़ावौ री तारा-सुत रह्यौ छाजि कैं[४]।।
छटी[५] अति सुख-जटी[६] सजनी, आजु रसिक-नरेश की।
सुर निसान[७] बजाइ वरषा, करत सुमन सुदेश की[८]।।१।।
सूत-मागद आदि बन्दीजन, विरद कहि सुख छये।
अमित हीरा-लाल-मोती, मिश्र जू तिनकौं दये।।२।।
लैंहिंगी हम झगरि अपनौं, नेग[९] वन्दनमाल कौ।
प्रेमदासि हित लाग[१०] में अति, लाभ दरसन लाल कौ[११]।।३।।

[२४-२१]

पलना में हित ललना :— राग-पूर्वी

झूलत री श्रीव्यास-दुलारौ लाल, पालने में छबि छायैं[१२]।
तारा रानी आनँद सानी, झमकि[१३] झुलावत मोद बढायैं[१४]।।१।।
ऐसैं रक्षा करत लाल की, ज्यौं पल रहत दृगनि अछवायैं[१५]।
प्रेमदास रसिकनि कौ सर्वसु, किलकत जुगल रूप के गायैं[१६]।।२।।

१. अन्धकार को दूर करने वाली अर्थात् हीरे-मणि आदि की २. नेग या उपहार ३. उस मालिन ने प्रेमपूर्ण आग्रह से व्याससुवन का दर्शन करके ही मांगलिक उपहार या नेग प्राप्त कर लिया ४. अरी सखी! सौन्दर्य-संभृत श्रीहरिवंश जू को लाड़ लड़ाओ ५. जन्म के छठे दिन होने वाला उत्सव ६. सुख से जटित् ७. नगाड़े ८. सुन्दर फूलों की ९. वह उपहार जो जन्मादि शुभ अवसरों पर ब्राह्मणों, भाटों, नाइयों, मालिन आदि को अलग-अलग रीति रिवाज के संबंध में दिया जाता है १०. नेग अथवा उपहार स्वरूप ११. हित लाल के दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ १२. शोभा का वितान जैसा ताने हुए १३. उत्साहित होकर १४. आनन्द की वृद्धि करते हुए १५. जैसे पलकैं प्रतिपल नेत्रों की साज सँवार करती रहती हैं १६. रसिकजनों का सर्वस्व श्रीहरिवंश जुगल-रूप का गुण गान सुनकर किलक उठता है अथवा स्वयं ही जुगल-रूप का गुण-गान करके अर्थात् 'रस सुधानिधि' के श्लोकों का उच्चारण करते हुए स्वयं ही किलक उठता है।

[२५-२२]

राग-ईमन

झूलत है री पालने में, व्यास मिश्र कौ लाल।
जुगल रूप कौ प्रेम अनूपम, धरैं सरूप रसाल[१]।।१।।
श्रीताराराानी सुख-सानी, देखि कुँवर के अद्भुत ख्याल[२]।
'प्रेम' सहित निजु करनि झुलावति, मानति भाग विशाल।।२।।

[२६-२३]

राग-ईमन

लालन झूलै रँगभीनौं, व्याससुवन सुन्दरवर।
बन्यौं पालनौं परम मनोहर, रच्यौ रुचिर रतननि कर[३]।।१।।
तापर तन्यौं वितान जरी कौ, लाल गुलाल रँगायौ[४]।
मानौं शीतल रवि चौसर है[५], छबि देखनि कौं आयौ।।२।।
द्विजरानी दीपति वर दानी[६], मोदनि भरी झुलावैं।
देखि कुँवर की किलकारिनि लै[७], फूलि-फूलि उर लावैं।।३।।
कबहूँ देति कमल कर[८] लटुवा[९], लेत लाल मन मोहै[१०]।
कबहूँ तारी दै गति न्यारी[११], सुतहि नचावति सोहै।।४।।
कबहूँ अपनी दीठ लगन डर[१२], मुख पर देति दिठौना[१३]।
बाल-चरित्र पवित्र करत सब[१४], द्विज-नरेश कौ छौना[१५]।।५।।
जननी-जनक भरे आनँद सौं, निशि-दिन जात न जानैं[१६]।
रहत पुत्र के लाड़-चाव में, 'प्रेम' सहित सुख-सानैं[१७]।।६।।

१. जुगल के पारस्परिक प्रेम ने ही यह रसाल स्वरूप धारण किया है २. खेल ३. रत्नों के द्वारा या रत्नों से जटित ४. लाल रंग से रँगा हुआ ५. चौकोर होकर ६. बहुत अधिक दान देने वाली के रूप में प्रसिद्ध ७. गोद में लेकर ८. लाल के कर-कमलों में ९. लकड़ी का एक गोल खिलौना जिसके मध्य भाग में कील जड़ी रहती है तथा जो चलाये जाने पर उक्त कील पर घूमने या चक्कर लगाने लगता है– लट्टू १०. वह लट्टू लाल का मन मोहित कर लेता है अथवा लाल की उस समय की शोभा सबका मन मोहित कर लेती है ११. अद्भुत गति से ताली बजा-बजाकर १२. अपनी ही नजर लगने के डर से १३. लाल को दीठ न लगे इस हेतु उसके माथे पर लगाया गया काजल का चिह्न १४. सबके मन को १५. द्विजराज श्रीव्यास मिश्र का पुत्र अपने बाल्यकालीन चरित्रों से १६. पुत्र का लाड़-चाव करते हुए कब-कब में दिन-रात बीत जाते हैं उन्हें यह अनुभव नहीं होता १७. सुख में सने हुए।

बासन्ती विलास

[२७-१]

मधूत्सव :–

राग-बसन्त

श्रीवृन्दावन आनन्दकन्द[१]। तहाँ अनुदिन[२] सेवत मदन-वृन्द।।टेक।।१।।
कंचन की अवनी अति अनूप। तामें जटित रतन बहु विविध रूप[३]।।२।।
बने नील-पीत-सित-हरित-लाल। रतननि के लहरिया वर विशाल।।३।।
जटे अवनि कमल हीरनि के चारु[४]। तापै लालनि के बने अलि अपारु[५]।।४।।
त्यौं लालनि के बने विविध कंज। तापै हीरनि के बने मधुप मंजु।।५।।
बने नीलमणिनु के बहु सरोज[६]। तापै कनक-भृंग[७] लखि बढ़त चोज।।६।।
ज्यौं हेम-अब्ज[८] बने रूप-लीक[९]। तापै नीलमणिनु के चंचरीक[१०]।।७।।
बने तैसैंइ बहु रतननि के फूल। सोई जटित धरनि में रूप-मूल[११]।।८।।
यह कल कपूर मणि की निकुंज[१२]। ताहि सेवत मधुरितु मदन-पुंज।।९।।
कहूँ मर्कतमणिमय तरु तमाल। तासौं कनक-लता लपटी रसाल।।१०।।
कहूँ कंचनमय तरु रहे राजि[१३]। मिलि मर्कतमणि सी लता छाजि[१४]।।११।।
काहू तरु की साखा कनक-वेष[१५]। ताकैं पत्र[१६] दिपत पन्ना[१७] कैं भेष।।१२।।
मोतिनु के झौंरा कुसुम आइ[१८]। फल मूँगा[१९] से रहे झिलमिलाइ।।१३।।
काहू अद्भुत द्रुम में अमित कान्ति। तामें लगे आभरन विविध भाँति।।१४।।
कोऊ फूलि लै रहे मधु दुकूल[२०]। मेरे पिय-प्यारी कौं सु अनुकूल।।१५।।
फूलीं सौंनजुही जाही[२१] अभंग। फूलीं राइबेलि मालती संग।।१६।।
फूलीं माधविका केतकी[२२] सुरंग। फूलीं बकुल[२३] सेवती[२४] अति उमंग।।१७।।

१. आनन्द का मूल स्थल २. प्रतिदिन ३. विविध प्रकार के अनेक रत्न ४.हीरों से विनिर्मित कमल धरती में जड़े हुए हैं ५. उन कमलों पर रत्नों से विनिर्मित अपार भ्रमर बने हुए हैं ६. कमल ७. सोने के भ्रमर ८. सोने के कमल ९. रूप की अन्तिम सीमा १०. भ्रमर ११. रूप के प्राकट्यकर्ता वे फूल १२. सुन्दर कपूर की सुगन्ध वाली मणियों से विनिर्मित निकुंज १३. विराजमान १४. सुशोभित १५. स्वर्ण से विनिर्मित १६. पत्ते १७. गहरे हरे रंग का बहुमूल्य रत्न १८. मोतियों के झब्बों के ही जिनमें फूल सुशोभित हैं १९.समुद्र से निकलने वाला लाल रंग का एक रत्न विशेष २०. कोई सखी प्रफुल्लता के साथ या कोई वृक्ष फूलों को तो कोई बासंती वस्त्रों को लिये हुए सुशोभित हैं २१. चमेली की जाति का एक पौधा २२. केवड़ा २३. मौलसिरी २४. सफ़ेद गुलाब।

बने रतन-जटित कल आलबाल[१]। तहाँ केसरि के रँग भरे आलि[२]।।१८।।
तामें[३] फूलि रहीं कुमुदिनि की माल। तापै गूँजैं अलि-सँग अलिनी बाल[४]।।१६।।
बने रँग-रँग के जल नल[५] न थोर। छूटैं अति आनँद सौं चहूँ ओर।।२०।।
चलै सीतल-मन्द-सुगन्ध वाइ[६]। रँग-रँग पराग उड़ि रहे छाइ।।२१।।
पारावत[७] कंचन के[८] सुहाँइ। रतननि की पैंजनी अरुन पाँइ[९]।।२२।।
बने मुक्ताफल से चुंच नैन[१०]। पर मर्कतमणि से मधुर बैन[११]।।२३।।
चुगैं हंस-हंसिनी सँग पराग। नाचैं जित तित केकी[१२] भरे राग[१३]।।२४।।
कूजैं कीर-कोकिला भरे मोद। बोलैं रँग-रँग के खग करि विनोद।।२५।।
बँगला[१४] की शोभा कही न जाइ। मोतिनु की जाली जगमगाइ।।२६।।
राजैं दम्पति किशलय-दलनि-सैन। खेलैं मिलि बसंत रस-रूप-ऐन[१५]।।२७।।
अति सुन्दर सरस तमाल श्याम। तासौं कनकलता सी लपटी भाम।।२८।।
तामें लगे मनोहर फल उरोज। दोऊ लेत सवादनि भरि मनोज।।२६।।
फूले चरन-कमल अरु कमल पानि[१६]। फूले नाभि-कमल हृद-कमल जानि।।३०।।
फूले अमल कमल मुख श्याम-गौर। पीवैं अलिन-नैन अलि रस-झकोर[१७]।।३१।।
साजैं पिचकारी दृग[१८] विवि किशोर। भरैं प्रीति-रंग सौं लखत कोर[१९]।।३२।।
चलैं विशद कटाक्षनि की सु धार। उड़ै हँसनि-अबीर सखी ! निहार[२०]।।३३।।
मिलि कुच की केसरि श्रम की वारि। दोउ रँगे रँगीले अति उदार।।३४।।
बाजैं भूषन ताल-मृदंग-चंग। गावैं श्रुति घुरि दंपति भरि अनंग[२१]।।३५।।
लियैं चौंप-सहचरी अंग-अंग[२२]। नाचैं कोक-कलनि सौं वर सुधंग।।३६।।

---

१. वृक्ष के नीचे का थाँभला २. हे सखी! अथवा सखियों ने ३. उस केशरी जल में ४. भ्रमरों के संग भ्रमरी बालायें ५. फुहारे ६. हवा ७. कबूतर ८. पाठा॰– से ६. लाल-लाल पगों में १०. उनकी चोंच और नेत्र मोतियों जैसे हैं ११. उन कबूतरों के पर मर्कत मणि जैसे हैं और बोल अत्यन्त मधुर हैं १२. मोर १३. अनुराग से भरे हुए अथवा राग अलापते हुए १४. हवादार महल १५. रस और रूप के घर जुगलवर १६. हस्त-कमल १७. सहचरियों के नैन-भ्रमर उन रस-झोंकाओं का पान करते हैं १८. नैनों की पिचकारी १६. एक दूसरे की नैन कोरों को देखते हुए २०. अरी सखी! देख हँसनि रूपी अबीर उड़ रही है २१. स्वानंग में भरकर जुगलवर का मधुर शब्दोच्चारण ही संगीत शास्त्र के स्वरों की विशिष्ट ध्वनियाँ हैं २२. अंग-अंग में विद्यमान चोंप रूपी सहचरियों को लेकर।

बेसरि के मोती थरहराँइ[१]। लट रुरत, हार उर पर डुलाँइ[२]।।३७।।
श्रवै वन्दन श्रमजल मिलि सीमन्त[३]। रँगे चुम्बन सौं कामिनी-कन्त।।३८।।
करैं परिरंभन सोई लाग-डाट[४]। चलैं घातनि सौं अप-अपने घाट[५]।।३६।।
ललितादिक सजनी लखि विलास। वारति तन-मन-धन-प्रान-रासि।।४०।।
यह नव निकुञ्ज कौ नितहिं खेल। यामें बढ़त परम आनँद की बेलि।।४१।।
जय श्रीहितहरिवंश-कृपा मनाइ। कह्यौ महा मधुर रस प्रगट गाइ।।४२।।
हित प्रेमदासि कैं यहै भाइ[६]। रहौ यह समाज नित चित में छाइ।।४३।।

[२८-२]

बासंती विलास :–

राग-बसन्त

देखौ श्रीराधे जू! वन बसंत। आयौ बनिठनि[७] छबि सौं मूर्तिवंत।।टेक।।
बोलैं कुहू-कुहू कोकिल रसाल। मानौं मैंनहि टेरति रति की आलि[८]।।
मतवारे मधुप-चय[९] करैं गुंजार। मनौं मनमथ कैं[१०] दुन्दुभि अपार।।१।।
फूले कलित केवरा छबि निहार[११]। मानौं मनोज के[१२] छरीदार।।
नव नूत मंजरी हरित संग[१३]। मनौं मदन-बाण पूरित निषंग[१४]।।२।।
चलत अति रुचिर त्रिविध समीर। मनौं अतनराज कौ मंत्री धीर[१५]।।
बोलैं मधुर हंस कल ललित ठाम[१६]। मनु आवत बजावत वीन काम[१७]।।३।।
फूली कनकलता मिलि तरु तमाल। मानौं पुलकित मनसिज अंक बाल[१८]।।
फूली राइबेलि मालती चारु। मानौं हँसति सखी रति की उदार[१९]।।४।।

---

१. हिलते हैं २. डोलते हैं ३. माँग का वन्दन श्रमजल से मिलकर श्रवित हो रहा है ४. एक दूसरे को कसकर आवद्धवक्ष करना ही संगीत शास्त्र की लाग-डाँट [गाने या बजाने के समय स्वर के मुख्य अंश या श्रुतियों को आपस में एक दूसरे से अलग न होने देना और सुन्दरता से उनका संयोग करना] प्रस्तुत करना है ५. निश्चित स्थल या ठिकाने पर ६. एकमात्र यही भाव भावना है अथवा केवल यही अच्छा लगता है ७. सुसज्जित होकर ८. मानों रति की सखी कामदेव को पुकार रही हैं ६. भ्रमर-समूह १०. कामदेव के घर में ११. अरी सखी! उनकी छबि देखो १२. राजा कामदेव के १३. नवीन हरे आम्र पत्तों के साथ मंजरी सुशोभित हो रही हैं १४. मानों तरकस में कामदेव के बाण भरे हुए हैं १५. मानों वह समीर कामदेव का धैर्यवान मंत्री है १६. सुन्दर स्थली में १७. मानों वीणा बजाते हुए कामदेव ही चला आ रहा है १८. मानों कामदेव के अंक में उसकी बाला [रति] पुलकित हो रही है १६. मानों रति की उदार सखियाँ हँस रही हैं।

फूले बहु विधि कमल उड़त पराग। मनौं कुसुमसरा-रति खेलैं फाग[१]।।
नाचैं केकी अति आनँद अधीर। लखि सरस श्यामघन जमुना-तीर[२]।।५।।
फूले नव किंशुक[३] झिलमिलत लाल। मनु उर सिंगार अनुराग-माल[४]।।
फूले अमल कमल थल गैन-गैन[५]। मानौं तव हित धरनि बिछाये नैन[६]।।६।।
फूली सौंनजुही जित तित अभंग। मनु प्रगटित दिशि-दिशि प्रीति-रंग।।
वंजुल की कुंज[७] सुख पुंज ऐंन। रची मोंहन किशलय-दलनि[८] सैन।।७।।
मुसिकात बजावत वैंनु स्याम। गावत श्री-राधा-राधा नाम।।
तब मिली कुँवरि चलि गति गयंद। भयौ प्रेमदासि हित अति आनन्द।।८।।

[२९-३]

मधु-मूर्ति मोहिनी :— राग—बसन्त

मेरी कुँवरि रँगीली रूप-रासि। फूली वृन्दावन लौं[९] करि प्रकाश।।टेक।।१।।
नव नीलांबर सारी सुहात। मनु चहुँ दिशि रविजा जगमगात।।
फूल्यौ विमल कमल मुख हेम-रंग[१०]। सखि! विलुलित लट मनौ लुलित[११] भृंग।।२।।
दृग भरे कटाक्षनि करत शोभ[१२]। मनौं प्रगटित रस के रुचिर गोभ[१३]।।३।।
भ्रू उलहत अंकुर अमल ऐंन[१४]। नासा-शुक, कोकिल वदत बैंन[१५]।।४।।
मधु अधर विम्व मृदु जुही हास[१६]। मनौं कुञ्ज सुगन्ध समीर स्वाँस[१७]।।५।।
फूलनि के झौंरा उर-उरोज। तन मौर्‌यौ जोवन मथि मनोज[१८]।।६।।
भुज बैंनी कनक सिंगार-बेलि[१९]। कर पल्लव रंगनि रहे झेलि[२०]।।७।।

१. मानों फूलों के बाण धारण करने वाला कामदेव और रति परस्पर फाग खेल रहे हैं २. यमुना तीर की सघन हरितमा को ही श्याम घन के रूप में देखकर ३. पलाश के फूल ४. मानों श्रृंगार रस के हृदय में अनुराग की माला सुशोभित हो रही हैं ५. प्रत्येक मार्ग में पवित्र गुलाब [थल कमल] फूले हुए हैं ६. वे ऐसे लग रहे हैं मानों तुम्हारे आगमन हेतु धरनी ने अपने नेत्र ही पाँवड़ों के रूप में बिछा दिये हैं ७. अशोक वृक्षों की कुञ्ज में ८. कोमल और नवीन पत्तों से ९. वृन्दावन की भाँति १०. स्वर्ण कान्ति से युक्त मुख-कमल ११. चंचल १२. शोभा देते हैं १३. मानों रस की ही सुन्दर तरंगें प्रकट हो रही हैं १४. भौंहें ही अमल अंकुरों के रूप में उदित हो रही हैं १५. नासिका ही तोता और मधुर बोल ही कोकिल की कुहुक है १६. कुंदरू के पके हुए फल की तरह लाल ओष्ठ ही मधुर मकरन्द और मृदुल हास्य ही जुही खिली हुई है १७. मानों स्वाँस ही कुञ्जों में चलने वाली सुगन्धित हवा है १८. कामदेव के मन को भी मंथन करने वाले श्रीअंग में योवन का आगम ही आम्र-मंजरी है १९.स्वर्णिम भुजाओं पर विलुलित वैंणी ही श्रृंगार रस की बेलि है २०. कर ही पल्लव हैं जो आनंद को झेलते हैं।

कंचन-कदली जंघा अनूप। मन-हरन चरन कल थलज रूप[१]।।८।।
बरसावति सुन्दरि छबि-पराग[२]। लियैं गति मराल अति रँगी राग[३]।।९।।
रस-सींची 'प्रेम' सहित विशाल। ताहि सेवत मधुरितु रुचिर लाल[४]।।१०।।

[३०-४]

मोहन-मोहिका मधुरितु :—

सुन्दर व्यास-दुलारौ प्यारौ, वृन्दाविपिन विराजै।
गौर-स्याम फूलनि सौं फूल्यौ, नित मधुरितु सो छाजै[५]।।१।।
कनक-कमल वर वदन विकासित[६], नील कंज दृग दूजें[७]।
हँसनि-मंजरी पर अति मंजुल, वचन-कोकिला कूजें[८]।।२।।
चिवुक-नूतफल के रस कौं अब, नासा-शुक झुकि जोहै[९]।
चलत मलय मारुत मृदु स्वाँसा, मौर्‌यौ आनन सोहै[१०]।।३।।
प्रेम-प्रसंग रोम रहें[११] ठाढ़े, नव अंकुर विस्तारे[१२]।
कंचन की कल बेलि भुजा जुग, कर[१३] पल्लव रँग धारे[१४]।।४।।

१. मनहरण सुन्दर चरण ही गुलाब के रूप में शोभा दे रहे हैं २. सुन्दरी श्रीश्यामा जू अपनी शोभा के पराग की वर्षा करती हैं ३. वे हंस की मन्द गति लिये हुए गहरे अनुराग के रंग में रँगी हुई हैं ४. अत्यधिक प्रेम पूर्वक जिनका रस से सिंचन किया गया है ऐसी मधुरितु स्वरूपा श्रीराधा का सुन्दर प्रीतम सेवन करते हैं ५. वृन्दाविपिन में विराजमान सुन्दर और परम प्रिय श्रीहरिवंशचन्द्र ही नित्य बसन्त रूप में सुशोभित हो रहे हैं और वही बसन्त गौर-श्याम रूपी फूलों से प्रफुल्लित हो रहा है ६. पाठा॰—प्रकाशित ७. प्रिया जू का सुन्दर मुख स्वर्ण कमल जैसा और नैन द्वय नीलकमल जैसे विकसित हो रहे हैं अथवा एक का [प्रिया जू का] मुख स्वर्ण कमल जैसा और दूसरे [लाल जू] के नैन नीलकमल जैसे विकसित हैं ८. प्रिया जू की मन्द मुसिक्यान रूपी मंजरी पर अत्यन्त सुन्दर वचन ही कोकिला की कूक हैं ९. चिवुक रूपी आम्र फल का रसपान करने हेतु नासिका रूपी शुक झुककर देख रहा है १०. कोमल स्वाँस ही मलयानिल के रूप में और मुख ही रसपूर्ण आम्र-फूलों के रूप सुशोभित हो रहा है ११. पाठा॰—भये १२. प्रेम-क्रीड़ा में अंगों का रोमांचित होना ही नवीन अंकुरों का विस्तरण है १३. पाठा॰—नव १४. दोनों भुजायें ही स्वर्ण की सुन्दर बेलि और रंगों से युक्त कर या करांगुलि ही पल्लवों की शोभा देते हैं।

हेम[१]-रंभ ज्यौं जंघ जगमगति, पग-गुलाब-छबि छाई[२]।
'प्रेम' सहित क्यौं न हौंइ इते पर, रसिक भँवर की नाईं[३]।।५।।

[३१-५]

मानिनी-मधुरितु :—

राजत जो तोमें छबि मानिनि[४], सो कापै कहि आवै।
बढ्यौ अनूठौ खेल आजु अति, निरखत चितहि चुरावै।।१।।
तन-वन में सुधौट जे पल्लव, ते झरि करि भये न्यारे[५]।
अँग-अँग भई कुटिलता सुन्दर, नव अंकुर विस्तारे[६]।।२।।
मौर्‍यौ मौर सोच तापर बलि[७], गरव-भँवर दुति नाखी[८]।
वक्र वचन कोकिल कल चुनि-चुनि, हँसनि-मंजरी चाखी[९]।।३।।
देख्यौ यह रितुराज अनूपम, हठ कौ रूप बनायैं।
तामें खेल बन्यौं जु अनौंखौ, असुख सौंज सरसायैं[१०]।।४।।
रस की वृत्ति भई ते रिसमय, सो समाज सँग साजे[११]।
राते नैंन नवल पिचकारी, रँग गुलाल भरि छाजे[१२]।।५।।

१. पाठा०—कनक २. जंघायें ही स्वर्ण-कदली जैसी जगमगा रही हैं और चरण ही गुलाब-फूल की छबि बिखेर रहे हैं ३. प्रिया जू की ऐसी अद्वितीय छबि पर रसिक प्रीतम भ्रमर की तरह क्यों नहीं बनें अर्थात् नीलकमल जैसे नेत्रों वाले रसिक प्रीतम का प्रिया जू की अद्‌भुत छबि पर भ्रमर की तरह प्रेमपूर्वक मँड़राना न्यायोचित ही है। इसमें आश्चर्य की क्या बात है ⊛ **विशेष ज्ञातव्य—**उपर्युक्त पद में आचार्य चरण के प्रगट वपु में भी बासन्ती सौन्दर्य का दर्शन किया जा सकता है ४. हे मानिनी श्रीराधा! तुम्हारे श्रीअंगों में जो शोभा विराजमान है ५. आपके तन रूपी वन में सीधेपन या भोलेपन [सुधौट] के जो पत्ते थे वे सब झड़ गये हैं ६. आज तो आपके अंग-अंगों में कुटिलता [लाल जू के प्रति प्रतिकूलता] के ही सुन्दर नवीन अंकुरों का विस्तार हो गया ७. मैं आपकी इस विचार निमग्न-छबि पर बलिहारी जा रही हूँ जो इस समय आम्र-मंजरी के रूप में सुशोभित हो रही है ८. इस समय आपके गर्व रूपी भ्रमर ने आपकी सहज सुकुमारता की दुति नष्ट कर दी है ९. आपके वक्र वचन रूपी कोयल ने आपकी हँसनि रूपी मंजरी को चुन-चुनकर चाख लिया है अर्थात् इस समय आप मन्द मुसिक्यान या हास्य को छिपाकर प्रणय कोप युक्त वचनावली बोल रही हो १०. सुख के अभाव की सामग्री प्रत्यक्ष करके ११. रस की संपूर्ण वृत्तियाँ रिसमय हो गई हैं और आपने उनके संपूर्ण समाज को अपने साथ ही सुसज्जित कर लिया है १२. नैनों की लालिमा ही रंग भरी पिचकारी और गुलाल के रंग के रूप में सुशोभित हो रही है।

खेलत खेल हरायौ मोंहन, हारि सरन पिय आयौ[१]।
'प्रेम' सहित तिय मान सु तेरे, मनहुँ बसंत मचायौ[२]।।६।।

[३२-६]

मधुरितु-मिलन :—

आयौ श्रीराधे जू! वन-बसंत, फूले फूलनि के झौंरा[३] अनंत।
भूमि छबीली पर तव मग हित, चितवनि रह्यौ बिछाइ कन्त[४]।।१।।
स्याम तमालनि सौं मिलि फूली, कंचन-बेलि अपार।
तोहि कहत मनु पिय-सँग मिलि क्यौं न,फूलत अहो रँगीली नारि[५]।।२।।
नव किंशुकनि[६] माल नव कलिकनि की, पहिरीं झिलमिलत लाल[७]।
प्यारी ! क्यौं न लसत प्रीतम कैं, उरसि सहज तू रूप-माल[८]।।३।।
त्रिविधि समीर चलत पुहुपनि तें, झरत पराग सु छबि निहार[९]।
मनु बसंत खेलत बल्ली अरु, विटप उड़ाइ अबीर चारु[१०]।।४।।
पी मकरंद भये मतवारे, मधुप गुञ्जरत सोइ।
मनौं मैंन की फिरति दुहाई, जुवती मान नहिं करै कोइ[११]।।५।।
मधुमाती[१२] कोइल जहाँ कुहुकत, कुहू-कुहू[१३] रस-खान।
मानौं रति टेरति[१४] मनमथ कौं, सोय दूति ह्वै छाँड़ि मान[१५]।।६।।

१. इस प्रणय कोप रूपी बासंती खेल में आपने मोहन को हरा दिया है और वे अपनी हार स्वीकार करके आपकी शरण में आ गये हैं २. हे प्रिया जू! प्रेम पूर्वक किये गये आपके इस 'मान' ने मानों बसन्त ऋतु का दृश्य ही प्रस्तुत कर दिया है ३. गुच्छा या झब्बा ४. आपके गमन-पथ की छबीली भूमि पर रसिक प्रीतम अपनी प्रीति भरी चितवन को ही पाँवड़े बनाकर बिछा रहे हैं ५. श्याम तमाल से लिपटी हुईं प्रफुल्लित अनन्त स्वर्ण बेलियाँ मानों आपसे कह रही हैं कि अहो रँगीली श्रीराधे! आप भी ऐसे बासंती वातावरण में अपने प्रीतम से मिलकर प्रफुल्लित क्यों नहीं हो रहीं ६. अरुणाभ पलास पुष्प ७. बासन्ती वातावरण से संभृत वृन्दावन के वक्षस्थल में अरुणाभ पलास की नवीन कलियों की मालायें पहिरी हुईं झिलमिला रही हैं ८. तुम सहज रूप की माला बनकर ९. ऐसी अथवा यह शोभा देखो १०. मानों तरु-बेलियाँ सुन्दर अबीर उड़ाते हुए बासंती क्रीड़ा कर रहे हैं ११. उन भ्रमरों की गुञ्जार मानों कामदेव की डौंड़ी के रूप में बजती हुई सार्वजनिक रूप से सबको यह सूचना दे रही है कि कोई भी युवती अपने प्रीतम से मान न करे १२. बासन्ती वातावरण से प्रमत्त १३. कोयल की बोली १४. पुकार रही है १५. अथवा वह कोयल की बोली ही कामदेव की दूती होकर सबको मान त्यागने का उद्‌बोधन दे रही है।

मुकुलित[१] कलीं मालती-मल्ली[२], कानन महकि रही सुवास।
तव दरसन तें सकल खिलैंगी, यहै हियैं धरि रहीं आस।।७।।
मंथर गति चलि[३] कुँवरि कुंज किशलय-दल-सैंन विराजी आइ।
श्याम-राधिका मिलि सुख बाढ्यौ, प्रेमदासि हित हियौ सिहाइ[४]।।८।।

[३३-७]

मधु-रंग-रँगीले :— राग-बसन्त

रँगमगी[५] ललना लाल रँगमग्यौ, रँगमगीं सखी सँग लीने।
रँगमगे भूषन, वसन रँगमगे, रँगमगे अँग रँगभीने[६]।।१।।
रँगमगी तान मान सौं[७] गावत, रँगमगे सुरनि मिलावैं।
रँगमगे जंत्र[८] बजाइ जंत्र करि[९], रँगमगे चितहिं चुरावैं।।२।।
रँगमगी भरनि[१०] दुरनि रँगमगी रँग, चलत रँगमगीं धारैं।
रँगमगे लाल गुलाल हाल दै[११], रँगमगे मुख पर डारैं।।३।।
जित देखौ तित रंग रँगमग्यौ, छयौ सबनि पर छाजैं।
'प्रेम' सहित जे रसिक रँगमगे, ते या रँग में राजैं।।४।।

[३४-८]

बासन्ती छबि :— राग–बसन्त

छबीली बाल मिलि छबीले लाल सौं,छबीली सखिन में राजैं।
छबीले वसन, आभरन छबीले, छबीले अंग छबि छाजैं।।१।।
बर्नी छबीली कर पिचकारी[१२], चलत छबीली धारैं।
अंचल ओट बचत न बचाईं, छनि परी वदन फुहारैं[१३]।।२।।

१. अधखिली २. चमेली ३. मन्द गति से चलती हुई ४. प्रेम दासियों का अथवा सखी भावापन्न प्रेमदासी का हृदय प्रसन्न हो गया ५. आनन्द से भरी हुई ६. आनन्द भरे श्रीअंग गुलाल के रंग से भींजे हुए हैं ७. ताल के संपूर्ण विरामों का प्रत्यक्षीकरण करते हुए ८. वाद्य ९. उन वाद्यों के द्वारा निश्रित ध्वनि से अथवा जादू टोना करके अथवा सबके मन को बाँधकर १०. पिचकारियों का चलाना ११. उसी समय या तत्काल ही १२. लाल जू के हस्त-कमल में छबीली पिचकारी सुशोभित है १३. प्रियाजू ने मुख पर अंचल की ओट करके उसे बचाने का बहुत प्रयत्न किया फिर भी उनके मुख पर अंचल से छनकर रंग की छींटें पड़ ही गईं।

कोउक[१] छबीले जंत्र बजावैं, हरत जंत्र से कीने[२]।
ताननि में मन तानि विराने, अपनेई करि लीने[३]।।३।।
छल सौ करत छबीले हिलमिलि, हँसि लसि रस बरसावैं।
रमकि झमकि दुरि मुरि भरि भाजैं[४], छबीली छकनि छकावैं[५]।।४।।
लाल गुलाल लाल-ललना लै, कर-कमलन में धारे।
चमकि-चमकि मुख मलत हाल दै[६], दमकि-दमकि भये न्यारे।।५।।
छबीले सित अबीर[७] घमड़ाने, आनन ओप बढ़ाई।
मनौं छबीले चन्द वृन्द सौं[८], छबीली चाँदनी छाई[९]।।६।।
लाल-पीत-सित-हरी-सुनहरी, तन-तन बिन्दु सुहाई[१०]।
मनौं छबीली लता मधु श्रवैं, मधुरितु में उमगाईं[११]।।७।।
छबीले रसिक[१२] या छबीले रस कौं, छबीली विधि जो गावैं।
'प्रेम' सहित छबीले दम्पति कौं[१३], छबीले भाव सौं[१४] पावैं[१५]।।८।।

[३५-९]

कुसुमाकर-क्रीड़ा :— राग-बसन्त

आजु बसंत बन्यौं वृन्दावन, निरखि खेलत पिय-प्यारी।
बाजत ताल-मृदंग-झाँझ-डफ, गावत उपजावत सुख भारी।।१।।
कनक-पिचकई भरि केसरि-रँग, छिरकत बूँद बर्नी तन न्यारी।
अगनित हेम-खम्भ में मानौं, जटित चुर्नी मनमथ जरिया री[१६]।।२।।

१. कोई सहचरी २. जादू टोना जैसा करके सबका चित्त हरण कर लिया अथवा चित्त हरण करके सब पर जादू टौना कर दिया या चित्राकृति जैसा बना दिया अर्थात् सभी उस वाद्य वादन को सुनते ही रह गये ३. तानों में ही दूसरों के मनों को खींचकर [आकर्षित करके] उन्हें अपना बना लिया ४. कभी छिपते हैं कभी पीछे की ओर मुड़ते हैं और कभी रंग से सरोबार करके भाग जाते हैं ५. छबीले आनंद से तृप्त कर देते हैं ६. उसी क्षण या तत्काल ही ७. सफेद अबीर ८. पाठा०–से ९. मानों छबीले चन्द्र-समूहों से छबीली चाँदनी छा गई हैं १०. प्रत्येक के अंगों में रंगों की बूँदें सुशोभित हो गईं ११. मानों बसंत ऋतु में उत्साहित छबीली लतायें मकरन्द का निर्झरण करती हैं १२. जुगलवर की छबीली छकन में ही सदैव छके हुए रसिकजन १३. पाठा०–के १४. पाठा०–सो १५. राधा किंकरीगणों के छबीले भाव से प्राप्त करेगा अथवा वह रसिक छबीले भाव को प्राप्त करेगा १६. मानों अगनित स्वर्ण खम्भों [श्रीप्रिया-परिकर के श्रीअंग] में जड़ाव करने वाले कामदेव ने मणियों और नगों के छोटे-छोटे टुकड़े जड़ दिये हैं।

उड़त गुलाल लाल घमड़नि में, झमकि रहे आनन[१] हितकारी।
अरुण गगन में उदय भये मनु, अमित चन्द छबि श्रवत सुधा री[२]।।३।।
'प्रेम' सहित धर बढ़्यौ अरुण रँग, मधि समाज शोभा विस्तारी[३]।
मनु अनुराग-सरोवर में सखि, फूले कंचन-कञ्ज[४] महा री।।४।।
[३६-१०]

मधुरितु-विलास :–

खेलत वर वसंत पिय-प्यारी, प्राननि-प्रान मिलायैं[५]।
ये उनके रँग वे इनके रँग, रँगे दोऊ रँग छायैं।।१।।
ये गोरे तन सौं प्रतिविंवित, छिरके केसरि ही सौं।
वे श्यामल तन सौं प्रतिविंवित, सींचीं कस्तूरी सौं।।२।।
ये उनके अनुराग-भरे वर, ह्वै रहे लाल गुलाल।
वे इनके अनुराग भरत भईं, गुललाला सी बाल[६]।।३।।
ये उनकी चंदनमय स्वाँसनि, भये सुवासित सोहैं।
वे इनके चोबामय स्वाँसनि, भईं सुवासित मोहैं[७]।।४।।
ये उनकी अँखियाँ-पिचकनि लखि[८], भये नेहमय भारी।
वे इनकैं दृग-पिचक छुटत भईं, दुति की दुति सी न्यारी[९]।।५।।
ये मुसिकानि लखत बूका, वे हँसनि-अबीर निहारैं[१०]।
रीझि-भींजि तन-मन कौं हारैं, खेलत खेल न हारैं[११]।।६।।
रूप कला अरु हित-वृति सजनी, दुहुँ दिसि रागनि साजैं[१२]।
उनके-इनके बैंन मैंनमय, मनौं घूँघरू बाजैं[१३]।।७।।

१. मुख २. शोभा रूपी अमृत का निर्झरण कर रहे हैं ३. संपूर्ण समाज के मध्य शोभा का विस्तार हो रहा है ४. स्वर्ण कमल ५. प्राणों से प्राणों को मिलाकर अर्थात् मन और प्राणों की संपूर्ण वृत्तियों को एक करके ६. वे प्रिया जू इनके [लाल जू के] अनुराग में भरकर गुल्लाला फूल की भाँति प्रफुल्लित हो गई हैं ७. सबके मन को मोहित कर लेती हैं ८. प्रिया जू की नैंन रूपी पिचकारी को देखकर ९. द्युति की विचित्र कान्ति की तरह प्रिया जू जगमगा उठीं १०. लाल जू प्रिया जू की मुसिक्यान रूपी बूका को देखते हैं और प्रिया जू लाल जू की हँसन रूपी अबीर को निहारती हैं ११. खेल खेलते हुए वे कभी नहीं हारते १२. जुगलवर की रूप, कला और हित की वृत्ति रूपी सहचरियाँ ही अथवा कोक कलाओं के विविध रूप ही हित की वृत्ति वाली सहचरी बनकर दोनों ओर अनुराग को सुसज्जित करती हैं १३. प्रिया और लाल की मदनमय [स्वानंग केलि वर्द्धिनी] वचनावली ही मानों घुँघरू बज रहे हैं।

'प्रेम' सहित अलि भईं चित्र सी, निरखि-निरखि छबि जीवैं।
सम रस में जो रस बाढ़्यौ है[१], ताही रस कौं पीवैं।।८।।
[३७-११]

मधुरितु-विलास :–

रहसि-रस-राचे[२] हो, दंपति खेलत सरस बसंत।
मृगमद-केसरि-तन-छबि छिरकत[३], हँसनि-अबीर लसंत[४]।।१।।
रूप-सनेह वृत्ति दुहुँ दिशि अलि, सूचत राग मैमंत[५]।
'प्रेम' सहित नूपुर-धुनि बाजत, वीन परम रसवंत[६]।।२।।
[३८-१२]

बसन्त-वपु बाला :–

प्यारी ! तेरौ तन-बसंत फूल्यौ रसाल[७]।
कनक-कमल-मुख पर अलकावलि, भ्रमत भ्रमर की माल[८]।।१।।
बैंदी बेलि लसत मोतिनि की, बैंना फूल सुचारु[९]।।
सीसफूल-फल कुसुमित बैंनी, फूली लता सिंगार[१०]।।२।।
अरुणिम आड़ गुलाब-फूल अलि,बिन्दु श्याम दृग कंज नील[११]।।
भृकुटी-अंकुर मुसिकनि-मंजरि, कोकिल कूजत जील[१२]।।३।।

१. रस मूर्ति श्यामा-श्याम की समतूल रस क्रीड़ा में जिस रस की वृद्धि हुई है २. ऐकान्तिक रस क्रीड़ा में रचे हुए ३. इस बासंती क्रीड़ा में वे दोनों अपनी-अपनी अंग कान्ति को ही मृगमद और केसरी रंग के रूप में एक दूसरे पर छिड़कते हैं ४. जुगलवर का हास्य ही अबीर के रूप में उड़ता हुआ सुशोभित हो रहा है ५. दोनों ओर रूप और सनेह की वृत्तियाँ ही प्रेमोन्मत्त होकर रागालाप कर रही हैं ६. नुपूरों की ध्वनि ही परम रसवन्त वीणा के रूप में बज रही है ७. हे प्रिया जू! आपका श्रीअंग रसपूर्ण बसंत ऋतु के रूप में फूल रहा है ८. आपके स्वर्ण कमल रूपी मुख पर अलकावली रूपी भ्रमर पंक्तियाँ भ्रमण कर रही हैं ९. आपकी वन्दिनी ही मोतियों की बेल के रूप में शोभा दे रही है और उसमें सुशोभित 'बैना' नामक आभूषण सुन्दर फूल के रूप में खिल रहा है १०. सीसफूल नामक आभूषण ही फल और फूलों से गूँथित वैणी ही श्रृंगार रस की लता के रूप में प्रफुल्लित हो रही है ११. माथे पर रोरी की आड़ और श्याम विन्दु ही गुलाब का फूल और उस पर विराजमान भ्रमर है तथा नेत्र ही नील कमल हैं १२. भृकुटी ही अंकुर, मुसिकान ही मंजरी और मधुर वाणी ही कोकिला की पतली तथा मधुर कुहुक है।

चिवुक-नूतफल अधर-अरुणदल, सुन्दर नासा-कीर।।
श्रुति-झूमक मोतिन के झौंरा, सौरभ-स्वाँस-समीर[१]।।४।।
कंचन के विवि ललित सदा फल, कुच राजत नव रंग[२]।।
भुजा-बेलि रसमय कर-पल्लव, शोभित रूप अभंग।।५।।
कदली कलित हेम के[३] दोऊ, जघन बने सुकुँवार।।
चरण सु अरविंदनि पर नूपुर-भृंग करत गुञ्जार[४]।।६।।
सुरँग कंचुकी सारी पीत, फव्यौ अतरौटा लाल।।
वसन-निकुञ्ज सु तन-फुलवारी, पियहिं लखावहु बाल[५]।।७।।
झमकि रँगीली उर-लपटानी, बाढ़ी केलि अपार।।
प्रेमदासि हित यह सुख निरखत, प्राण करति बलिहार।।८।।

[३६-१३]

मधुआलयाक्ष :—

खेलैं दंपति नैंननि में बसंत।।
फूलि रही फुलवारि मदन की, सींचत अमृत सुख अनंत[६]।।१।।
स्वेत-अबीर गुलाल-अरुणिमा, चोबा अति कल स्याम[७]।।
छूटत मुठीं मनोरथ भरि-भरि[८], रँगे जुगल अभिराम।।२।।

---

१. चिवुक ही आम्रफल, अधर ही अरुणाभ पत्ते, सुन्दर नासिका ही तोता, कानों के झूमका ही मोतियों के झब्बे और सुगन्धिपूर्ण स्वाँस ही समीर है २. सदा नवीन आनन्द उत्पन्न करने वाले उरोज ही सुन्दर स्वर्णिम फल के रूप में सुशोभित हो रहे हैं ३. स्वर्ण की सुन्दर कदली के रूप में ४. सुन्दर चरण-कमलों में नूपुरों की मधुर ध्वनि ही भ्रमरों की गुञ्जार है ५. हे बाला! आप अपनी सुरँग कंचुकी, पीत साड़ी और अरुण अतरौटा आदि वस्त्र रूपी निकुंजों में सुशोभित श्रीअंग रूपी फुलवारी का दर्शन प्रीतम को कराओ ६. उन नेत्रों में कामदेव की फुलवारी फूल रही है। जो परस्पर युगलवर के हृदय को अनन्त सुख-अमृत से सिंचित करती है अथवा युगलवर अनन्त सुख रूपी अमृत से उस फुलवारी का सिंचन करते हैं ७. अत्यन्त सुन्दर उन नैंनों की स्वेतता ही अबीर, अरुणिमा ही लाल गुलाल और श्यामता ही चोबा है ८. रस केलि की अनेकानेक अभिलाषायें रूपी गुलाल की मुठ्ठी भर-भरकर एक दूसरे पर छोड़ते हैं।

प्रीति-पिचक अनुराग-सुरँग भरि, छुटत कटाक्ष नवीन[१]।।
कोरनि फेरति मुरि-मुरि हेरत, झेलत रसिक प्रवीन[२]।।३।।
गंधसार सीतलता तिनमें, महा मधुर रस सार[३]।।
उमगि अलीं दोऊ गन राजत, मद आसव कल चारु[४]।।४।।
दीठि रूप प्रीतम अरु प्यारी, सुरस भूमि निर्तकार[५]।।
पलक-ताल-धुनि आवझ-ललकनि, गावति नित्यबिहार[६]।।५।।
प्रेमदासि हित छबि सौं झूमी, प्यारी पिय भरि लई रसाल[७]।।
परिरंभन-चुम्बन रस विलसत, नवल रँगीले लाल।।६।।

[४०-१४]

नर्तक बसन्त :— राग-बसन्त

राधे जू! आयौ वन रितुराज।
सुभग नटुवा[८] ह्वै रिझावनि, सजैं सरस समाज।।१।।
लता-तरु फूले भवन, धर बिछे सुरँग पराग।
मोर निर्त्तकाली[९] करैं निर्त्त, भरे अति अनुराग।।२।।
देत अलि[१०] सुर कीर-कोकिल, करत गान नवीन।
हंस कल कूजत सु बाजत, वीन वर रस लीन[११]।।३।।

---

१. अनुराग-रंग-संभृत प्रीति की पिचकारियों से अनेकानेक नवीन कटाक्षें छूट रही हैं २. चतुर रसिकवर लाल जू अपनी नेत्र-कोरों को प्रिया जू की ओर फिराते हुए उनकी छबि को मुड़-मुड़कर देखते हैं और अनुराग रंग से संभृत उनकी कटाक्षों को झेलते हैं ३. महा मधुर रस के सार उन नैंनों में कपूर की शीतलता है अथवा उन नैंनों में महा मधुर रस सार रूपी कपूर की शीतलता है ४. आँखों में संभृत अत्यन्त सुन्दर प्रेमोन्मत्तता, प्रेमासव और प्रेमोत्साह ही दोनों ओर सुशोभित सहचरियों के समूह हैं ५. प्रीतम और प्यारी के नेत्रों की रसपूर्ण भूमि में उनकी दृष्टि ही नर्तक के रूप में निर्त कर रही है ६. तीव्र लालसा रूपी आवझ [तासे की तरह का एक प्राचीन वाद्य] में पलक-झपकों की ताल ध्वनि करते हुए वे नित्य बिहार का गान करते हैं ७. प्रिया जू हित की छबि से झूम उठीं और रसालय प्रीतम ने उन्हें अंकस्थ कर लिया ८. प्राचीन भारत की एक जाति जिसका पेशा गाना-बजाना था ९. नर्तक या निर्तकार १०. भ्रमर ११. हंसों की कूजन ही रसपूर्ण वीणा की ध्वनि है।

प्रेमदासि हित देहु सुन्दरि, रीझि में निज[1] मान[2]।
लाल ललित बसंत सौं मिलि[3], विलसिये सुख-खान।।४।।
[४१-१५]

बासन्ती दम्पति :–

कोमल कंचन-बेलि तमाल-लाल सौं खेलत आजु बसंत
निरंतर[4] लयैं पराग-गुलाल[5]।
भरे भुजनि-भुज सौरभ साखा, नव पल्लव, मृदु वसन आभरन,
फूले फूल रसाल[6]।।
उरज-अमृत-फल परसत अंकुर, रोमांचित भये हृदनि विशाल[7]।
प्रेमदासि हित पिय-प्यारी के, मोद बढ़ाइ करति विनती यौं,
खेलिये जू नव बाल[8]।।
[४२-१६]

अभिवादक बसन्त :–

आयौ श्रीराधे जू! बनिठनि नटुवा[9], गुदर दैंन[10] कौं वन बसंत।
होत चपल डारि तरु-बल्लीनि की, प्रफुलित त्रिविधि समीर चलत लगि,
नाचत निर्त्तकाली अनंत[11]।।

---

१. पाठा०–रीझि निजजन २. प्रसन्न होकर उस बसन्त-नटुवा का सम्मान करो अथवा रीझकर उसे अपना प्रणय कोप दे दो अर्थात् आप मान करना छोड़ दो ३. बसंत मूर्ति ललित लाल से मिलकर ४. कोमल स्वर्ण बेलि श्रीराधा लाल-तमाल के साथ नित्य ही अथवा अन्तर खोलकर अर्थात् खुले हृदय से ५. प्रीति का पराग और अनुराग का गुलाल लेकर ६. परस्पर भुजाओं का भरना ही सुगंधि पूर्ण शाखायें हैं, कोमल वस्त्र ही नवीन पल्लव हैं और आभूषण ही रस पूर्ण फूल फूल रहे हैं ७. उरोज ही अमृतमई फल हैं और अंग-सांस्पर्श से युगल के विशाल हृदय का रोमांचित होना ही नवीन अंकुरों का प्रागट्य है ८. इस प्रकार सखी भावापन्न प्रेमदासी श्रीप्रिया-लाल के हृदय में आनंद की वृद्धि करती हुई विनती करती हैं कि हे प्रिया जू! आप प्रीतम के साथ बासंती विहार करो ९. नर्तक १०. अभिवादन करने के लिए ११. त्रिविध समीर का स्पर्श पाकर तरु-बेलियों की चपल और प्रफुल्लित डालें ही नर्तक-मण्डल के रूप में निर्त कर रही हैं।

गावत कोकिल-केकी बाजत-मुरज गुञ्जरत अलि-हंसनि की,
किलक-मँजीरा नाहिंन अन्त[1]।
प्रेमदासि हित अद्भुत औसर, निरखहु छबि पिय सौं मिलि हसंत[2]।।
[४३-१७]

मंत्री मदन-मीत :–

राधे जू! त्रिविधि समीर-कुंजर चढ़ि आयौ, नृप-रतिपति मंत्री-बसंत[3]।
अलि-गुंजनि होति डिंडिमी, जुवती मान न करै कोऊ संग कंत[4]।।
कुसुम-बाण रह्यौ तानि धनुष धरि, दुरगम तकत तव पिय कातर ह्वै,
धीर धरैं कैसैं लखि मैमंत[5]।
प्रेमदासि हित हेम-गिरि कुच में, राखौ पियहिं तुम हसंत[6]।।
[४४-१८]

रसिक-सेवित बसन्त :–

प्यारी ! तेरौ तन आजु फूल्यौ बसंत, सुन्दर रूप रसाल[7]।
अरुन अधर पल्लव मुक्ता-फल, दसन हँसन मृदु मौर मंजरी,
झलकत अलक विशाल[8]।।

---

१. कोकिला और मोर ही गायक के रूप में गान कर रहे हैं तथा भ्रमरों की गुञ्जार ही मुरज और हंसों की किलकार ही मँजीरा आदि अनन्त वाद्यों के रूप में अभिगुञ्जित हो रही है। २. हे प्रिया जू! आप प्रीतम से मिलकर हँसते हुए श्रीवन की इस अद्भुत शोभा को देखो ३. हे प्रिया जू! कामदेव रूपी राजा अपने मन्त्री बसन्त के साथ त्रिविधि समीर रूपी हाथी पर चढ़कर आ गया है ४. भ्रमरों की मधुर गुञ्जार ही उसकी डौंडी के रूप में चारों ओर सबको सार्वजनिक रूप से यह सूचना दे रही है कि कोई भी युवती अपने प्रीतम के साथ मान नहीं करे ५. वह कामदेव अपने धनुष पर फूलों के बाणों को रखकर तान रहा है। आपके प्रीतम उसके भय से काँपते हुए आगे बढ़ने के मार्ग को बहुत ही कठिन मार्ग के रूप में देखते हैं। ऐसे दुर्गम मार्ग को देखकर वे मदोन्मत्त प्रीतम अधीर हो जाते हैं। आप ही बतलाओ कि वे किस प्रकार धैर्य धारण करें ६. तुम प्रीतम को हँसते हुए स्वर्ण पर्वत जैसे अपने उरोजों में छिपाकर उनकी रक्षा करो ७. हे प्रिया जू! आपका श्रीअंग आज बसंत के सुन्दर और रसपूर्ण रूप में फूल उठा है ८. अधर ही आम्र के अरुणाभ और नवीन पत्ते हैं, मन्द हँसनि से युक्त दन्तावली ही कपूर या मोती हैं और घुँघराली अलकावली ही मृदुल मंजरी हैं।

नील कंज दृग भृकुटी-अलि-कुल, कुच-कंचन-फल भुज-हेम-डाल[१]।
प्रेमदासि हित मधुप साँवरौ, सेवत सबही काल[२]।।

❀

फाग-विलास

[४५-१]

वृन्दावनीय फाग :— राग-राइसौ

जै जै श्रीवृन्दावन, गाऊँ[३] अति अभिराम।
खेलत प्रेम रँगीले, तहँ नित श्यामा-श्याम।।१।।
कंचन की अवनी मणि, नगनि-जटित रस-मूल।
मनहुँ प्रीति ह्वै बिछिय, चाँदिनी आनँद-फूल[४]।।२।।
प्रफुलित कनक-लता मिलि[५], श्याम तमाल अनंत।
मनहुँ प्रीति-सिंगार मिलि, हँसत हैं मूरतिवंत[६]।।३।।
कूजत कोकिल छबि सौं, भरीं परम आनंद।
मनहुँ सखी मनमथ की[७], गावत रस के छंद।।४।।
मिले मधुप-चय[८] गुंजत, मत्त पियैं मकरन्द।
मनौं सिंगार की सहनाई बाजत सुखकन्द[९]।।५।।
श्रीजमुना जू कैं तट, हंस नदत[१०] रस लीन।
मैंन-वीन सी बाजत[११] वरषत सुधा नवीन।।६।।

---

१. नेत्र ही नीलकमल, भृकुटी ही भ्रमर-समूह, कुच ही स्वर्णिम श्रीफल और भुजायें ही स्वर्ण-शाखायें हैं २. लाल जू भ्रमर बनकर आपका [बसंत मूर्ति श्रीश्यामा का] सदा सेवन करते रहते हैं ३. श्रीवृन्दावन का गुणानुवाद गान करूँ ४. मानों आनंद से प्रफुल्लित प्रीति ही चाँदनी होकर बिछ गई है ५. मिली हुई सुशोभित हो रही हैं ६. मानों मूर्तिवन्त प्रीति और शृंगार ही मिलकर प्रसन्न हो रहे हैं ७. मानों कामदेव की सखी ८. भ्रमरों के समूह ९. मानों सुखकन्द शृंगार की सहनाई बज रही है अर्थात् भ्रमरों की गुञ्जार शृंगार रस को उद्दीप्त कर रही है १०. बोल रहे हैं ११. हंसों की बोलनि कामदेव की वीणा जैसी बज रही है।

नाचत जित तित[१] केकी[२], धरै कौंन लखि धीर।
करत कुलाहल खग[३] सुनि, होत अनंद अधीर।।७।।
त्रिविध समीर चलत कुसुमनि लगि झरत पराग।
मनु बसन्त-मनमथ वन्दन सौं खेलैं फाग[४]।।८।।
देखि विपिन छबि उपज्यौ, पिय-प्यारी मन मोद।
भूषन-वसन सजे तन, चितयौ फाग-विनोद[५]।।९।।
झमकि रहीं सखि चहुँ दिशि, बिच वर ललना-लाल।
कनक-कुमुदनी फूलीं, मनु विवि चन्द रसाल[६]।।१०।।
ताल-पखावज-आवझ[७], झाँझ-मुरज-मुखचंग।
बाजत राजत घन ज्यौं, गाजत मिलि इक संग[८]।।११।।
रूपमंजरी कैं कर, बनीं खंजरी[९] सोइ[१०]।
कनक-कमल-मुख पर मनु, चंचरीक लट दोइ[११]।।१२।।
वीन-वीन[१२] सुर गावति, कोऊ प्रवीन लै वीन।
कोऊ चटक[१३] बजावत, चंद्रा-गति[१४] रसभीन।।१३।।
दोऊ रँगीले गावत, सखी रहीं मुख चाहि[१५]।
उभय हंस से किलकत, प्रफुलित कमलनि माँहिं।।१४।।
हेम-कमोरी[१६] रँग भरि, लीनें कर अलि-वृन्द।
मनहुँ अमी कलशनि सौं[१७], डोलत धर पर चन्द[१८]।।१५।।

---

१. पाठा०—कित २. मोर ३. अन्यान्य पक्षीगण ४. मानों बसन्त ऋतु में कामदेव वन्दन से फाग क्रीड़ा कर रहा है ५. प्रिया-लाल ने ऊपर वर्णित उस पराग निर्झरण रूपी फाग क्रीड़ा की ओर देखा अथवा फाग विनोद करने के लिए एक दूसरे की ओर देखा ६. मानों रसपूर्ण जुगल चन्द्रमा को देखकर चारों ओर स्वर्ण कुमुदिनी फूल उठीं ७. तासे की तरह का एक पुराना वाद्य विशेष ८. वे सभी वाद्य मिलकर बजते हुए ऐसे सुशोभित हो रहे हैं मानों घन गर्जना कर रहे हैं ९. एक प्रकार की छोटी डफली १०. उसके या उसकी ११. स्वर्ण कमल जैसे मुख पर सुशोभित लट द्वय भ्रमरों जैसी लग रही हैं १२. चुन-चुनकर १३. शीघ्रता से या उत्साह से १४. एक प्रकार की बारहताला ताल १५. उनके मुख की ओर एकटक देख रही हैं १६. स्वर्ण की कमोरियों में १७. पाठा० – लै १८. मानों धरती पर अमृत-कलशों से युक्त चन्द्रमा डोल रहे हैं।

कंचन-पिचकारी कर, पियहिं भरत रँग नारि[१]।
मनु मकरंद कमल सौं, शशि पूजत शशि चारु[२]।।१६।।
पिय छिरकत प्यारी सुरँगित सारी में दुरि जाइ[३]।
मनहुँ श्याम घन डरि दामिनि घन लाल छिपाइ[४]।।१७।।
कनक-कमोरी रँग भरि, ढोरी[५] पिय पर बाल।
कनक-लता सी सींचत, मनु सिंगार तमाल।।१८।।
पिय मुख चंदन लावत[६], प्यारी शोभा-पुंज।
मनु बसीठ शशि कौं मिल्यौ, शशि सौं प्रफुलित कंज[७]।।१६।।
पिय-मुख चंदन झलकत, शोभा तन रही छाइ।
मनु घन पर भयौ चंद उदै, मिली चन्द्रिका धाइ[८]।।२०।।
वन्दन सखिनि उड़ायौ, मुख-छबि यौं तन-संग[९]।
कनक-लतनि चढे अमित चंद, छायौ गगन सुरंग[१०]।।२१।।
लाल गुलाल उड़त घमड्यौ सखि अति अभिराम।
मनु अनुराग के घन में, चमकत चपला वाम[११]।।२२।।
न्यारे-न्यारे रँग के, उड़ि अबीर घमड़ाँइ।
मनु वितान रँग-रँग के, राखे मैंन तनाइ।।२३।।
गोरे मुख चोबा की, फुटक[१२] रहीं झलकाइ।
मानहुँ कनक-कमल पर, बैठे अलि-सुत[१३] आइ।।२४।।

---

१. प्रिया जू २. मानों सुन्दर चन्द्रमा कमल-मकरंद से चन्द्रमा का ही पूजन कर रहा है ३. जब लाल जू प्रिया जू पर रंग डालते हैं तो वे अपनी सुरंगित साड़ी की ओट कर लेती हैं ४. उस समय प्रिया जू की छबि ऐसी लगती है मानों श्याम घन से डरकर दामिनी लाल घन में छिप जाती है ५. लुढ़का दी या डाल दी ६. लगाती हैं ७. मानों चन्द्रमा [लाल मुख-चन्द्र] को कोई दूत या मित्र [चन्दन] मिल गया है जिसने चन्द्रमा और कमल को परस्पर मिला दिया है। अतः चन्द्रमा [लाल मुख-चन्द्र] से मिलकर कमल [प्रिया-कर-कमल] प्रफुल्लित हो गया है ८. मानों घन [श्याम घन] पर चन्द्रोदय [चन्दन] हुआ है और चन्द्रिका उससे आकर मिल गई है ६. श्रीअंग के साथ मुख की शोभा इस प्रकार सुशोभित हो रही है १०. स्वर्ण की लताओं [सहचरियों के श्रीअंग] पर चढ़े हुए अमित चन्द्रमाओं [सहचरियों के मुख-चन्द्र] से लाल गगन छा गया है ११. चपला [प्रिया जू का संपूर्ण सखी परिकर] चमक रही है १२. छोटी छोटी बिन्दियाँ १३. भ्रमरों के सुत।

मुख-शशि-मंडल पर मनु, नाचत नटुवा नैंन[१]।
भृकुटि विलासनि सौं मनु, ताल देत रस ऐंन।।२५।।
क्वणित किंकिणी-नूपुर, मानौं बाजत वीन।
रीझि परस्पर तन-मन, हारत दोऊ प्रवीन।।२६।।
अति अभूत[२] रस बाढ्यौ, कहँ लौं कहौं बनाइ।
प्रेमदासि हित के दृग, निरखत पल न अघाइ[३]।।२७।।

[४६-२]

शृंगार मूर्ति श्रीजुगल का फाग :— राग-बिहागरौ

खेलत मंजु निकुंज में, आजु होरी रँग भीनी जोरी।
परम रसिक सिरमौर रँगीले[४], सुन्दर श्याम सरस गोरी[५]।।१।।
रतन-जटित सिंहासन आसन, तापर राजत छबि-सींवा।
पान खात मुसिकात छबीले, दयैं परस्पर भुज ग्रीवाँ[६]।।२।।
झमकि रही नीलांबर सारी, कंचन के[७] फूलनि सौं री।
खमकि रही[८] उर अरुण कंचुकी, फुँदियनि सहित हरी डोरी[९]।।३।।
अतरौटा अति रंग गहगह्यौ[१०], नारंगी[११] शोभा भारी।
बूटीं हरी बनीं कंचन[१२] सो[१३], छपीं[१४] झिलमिलत छबि न्यारी[१५]।।४।।
वैंणी गुही विविध फूलनि सौं, रचित माँग मोतिनि-रोरी।
सीसफूल-चन्द्रिका जराऊ, तिलक दिपत नहिं छबि थोरी।।५।।
बंक विशाल रसाल नैंन, गंजन रतिपति-दल[१६] अनियारे।
अंजन-अँजे रँजे शोभा सौं[१७], कोरनि छुवत चपल तारे[१८]।।६।।

---

१. नैंन रूपी नर्तक २. जो कभी पूर्व में नहीं हुआ ३. एक पलक के लिए भी तृप्त नहीं होते ४. रँगीले प्रीतम ५. रसपूर्ण गौरांगी श्रीराधा ६. एक दूसरे के गले में ७. सुनहरे जड़ाव के ८. कसी हुई सुशोभित हो रही है ६. उस लाल कंचुकी में हरी डोरी की तनियों के साथ फुँदना लगे हुए हैं १०. अत्यन्त गहरा ११. पीले और लाल रंग के मिश्रण से मिलकर बनने वाले नारंगी रंग का १२. स्वर्णिम जड़ाव के साथ-साथ जिसमें १३. वे बूटियाँ १४. चिह्नित १५. विचित्र या अद्भुत १६. कामदेव के दल को हराने वाले १७. शोभा से रंजित १८. उनकी चपल पुतली कोरों को छू रही है अर्थात् खेल के उत्साह में भरी हुई उनकी दृष्टि चारों ओर घूमती हुई चंचल हो रही है।

बंदी[१] अमल बनी मोतिनि की, अलक झलक सौं छबि छाजैं।
ललित लवंग[२] लसत नासा पर, मरुवट[३] केसरि के राजैं।।७।।
रतन-जटित ताटंक बने श्रुति[४], झमकि रहे झूमक नीके[५]।
झिलमिलात अति विमल कपोलनि, होत जोति लखि रवि फीके।।८।।
कण्ठ-सिरी[६] दुलरी[७] हीरनि की, चंपकली[८] चंपक मोहैं[९]।
पुहुप-हार माला मोतिनि की, रतन-खचित चौकी सोहैं।।९।।
बाजूबन्द बने बाजू में, झबिया झूमत झमकि रहीं।
चमकि रहीं गोरे दण्डनि में[१०], हरी चुरीं नहिं जात कहीं[११]।।१०।।
झमकि रहीं पहुँची[१२] पहुँचनि में[१३], कंकण कंचन रतन-खचे[१४]।
रतनचौक अति बने अनूपम, छला[१५] मुदरियनि संग सचे[१६]।।११।।
करतल कलित[१७] रँगे मँहदी सौं, करजनि[१८] सुन्दर रूप रसैं[१९]।
कटि-किंकिणी बर्नी नूपुर पग, मणिमय अद्‌भुत छबि दरसैं।।१२।।
चित्र-विचित्र बने जावक के, पाइल कुन्दन[२०] चुर्नी खचीं[२१]।
बिछिया बने बाजने मणिमय, अनवट[२२] में छबि सकल सचीं।।१३।।
निरखत शोभा कुँवर कुँवरि की, दृग पलकनि की सुधि भूलैं।
झमकि रहीं ललितादिक चहुँ दिशि, निरखि-निरखि सुख अति फूलैं।।१४।।
पाग छबीली लाल लाल कैं[२३], रत्नपैंच छबि विस्तारे।
मोतिनि की कलंगी तुररा, मुकेश के[२४] पहुप-गुच्छ धारे[२५]।।१५।।

---

१. वन्दिनी नामक भाल का आभूषण २. लौंग के आकार प्रकार वाला एक आभूषण जो नासिका में पहना जाता है ३. विवाह के समय मुख पर किया गया चित्रांकन या लेपन ४. कानों में ५. उन ताटंकों में सुन्दर झूमका चमक रहे हैं ६. गले में पहनने का एक प्रकार का जड़ाऊ गहना ७. दो लड़ वाली माला ८. गले में पहनने का एक आभूषण जिसमें चंपा की कली के आकार के स्वर्ण-टुकड़े रेशमी डोरे में पिरोये हुए रहते हैं ९. जो कि चंपा के फूलों को भी अपनी छबि से मोहित कर लेती है १०. गौरांगी श्रीराधा के कर-कमलों में ११. हरे रंग वाली चूड़ियों की शोभा वर्णन नहीं की जा सकती १२. कलाइयों का एक आभूषण विशेष १३. कलाइयों में १४. रत्नों से जटित १५. गोलाकार आकृति वाला अँगुलियों का आभूषण-छल्ला १६. सुशोभित १७. सुन्दर १८. हस्तांगुलियाँ १९. रूप-रस से संभृत सुन्दर हस्त-कमल २०. स्वर्ण की पायल २१. माणिक्यों के छोटे-छोटे टुकड़ों से खचित हैं २२. पग के अँगूठे में पहनने का एक छल्ला विशेष २३. लाल जू के माथे पर लाल रंग के वस्त्र की छबीली पाग है २४. बादले अथवा जरी के काम के तुर्रा २५. धारण किये।

तिलक केसरी दृग आयत[१], अनियारे अंजन सहज बन्यौं।
कल कुण्डल मण्डित गण्डनि में[२], नासा मोती विमल ठन्यौं[३]।।१६।।
कनक कपिस पट[४] तार-हार मणि, कण्ठ पदिक सु अनूठी[५]।
अंगद[६] मणिमय चूरा-पहुँची, रतन चौक कर सु अँगूठी।।१७।।
कटि-किंकिणी बर्नी नूपुर पग, कवणित सखी सुनि सुख अब री[७]।
तिर्ज्य कण्ठ[८] मुसिकात बजावत, वैंनु रुरत लट अति छबि री।।१८।।
पिय बहु भाँतिनि प्रियहिं रिझावत, उचित रुचित मनुहारिनि सौं[९]।
मोंहन बड़भागी चाहत विलस्यौ सुख फाग बिहारिनि सौं[१०]।।१९।।
कुँवरि भई ठाढ़ी चाइनि सौं, पिय कर सौं निजु कर जोरैं[११]।
मिलत नैंन सौं नैंन फिरत, ग्रीवाँ मुरि-मुरि हेरत कोरैं[१२]।।२०।।
परम चतुर ललितादिक आलीं, सब मन की जाननिहारी[१३]।
ल्याईं सकल सौंज होरी की, मुदित भये लखि पिय-प्यारी।।२१।।
प्रफुलित श्रीवृन्दावन की छबि, निरखि उभय[१४] आनँद छाये।
नदित कोकिला-कीर मत्त अलि, गूँजत गन्ध लै लुभाये[१५]।।२२।।
जित तित[१६] निर्त्त करत केकी-कुल[१७], जगमगात अद्‌भुत शोभा।
प्रफुलित कमल विविध जल-थल में, चुगत पराग हंस लोभा[१८]।।२३।।
कोउक फूलनि की नवलासी[१९], फूलनि सौं[२०] आली ल्याईं।
कोउक बहु रंगनि के फूलनि, की गेंदुक लै-लै धाईं।।२४।।

---

१. विशाल २. सुन्दर कुण्डलों का प्रतिविम्व कपोलों पर सुशोभित हो रहा है ३. सुशोभित हो रहा है ४. स्वर्ण के रंग जैसा रंगीन वस्त्र अर्थात् पीताम्बर ५. सुन्दर कण्ठ में अनूठी मणि-माला और स्वर्णतार से गुँथे हुए हार शोभा दे रहे हैं ६. बाँह पर पहनने का 'अंगद' नामक एक गहना ७. अरी सखी! इस समय तू इनकी सुख-संभृत ध्वनि सुन ८. अपने कण्ठ को तिरछा करके ९. अनुनय विनय पूर्वक १०. बड़भागी मोहन बिहारिनि से फाग के सुख का उपभोग करना चाहते हैं ११. प्रीतम के हाथ से अपना हाथ मिलाकर १२. मुड़-मुड़कर नैंन की कोरों से देखती हैं और ग्रीवा फिराकर संकेत में ही होली खेलने के लिए हाँ कर देती हैं १३. आन्तरिक रुचि पहचानने वाली १४. श्यामा-श्याम १५. सुगन्ध से लुब्ध होकर भ्रमर गुञ्जार करते हैं १६. जहाँ तहाँ [पाठा०-जित कित] १७. मोर-मण्डली १८. हंस भी लुब्ध होकर पराग को चुग रहे हैं १९. छड़ी २०. हार्दिक उत्फुल्लता के साथ।

गेंद उछारति लटकति चलति, कुँवरि पिय-सँग खेलनि होरी।
अलिगन चलीं संग बहु रंगनि, सौं भरि लीनी सु कमोरी।।२५।।
कंचन-पिचकारी भरि केशरि, रँग कर में नागर लीने।
सखिनि सहित[१] अबीर झोरिनि में, बाँधें झलकत पट झीने[२]।।२६।।
बाजे विविध बजावत आलीं, गावत जित तित[३] सुख छावैं।
कोकिल-कण्ठ लजावति[४], नैंन-नचावति आवति मन भावैं।।२७।।
त्रिविध समीर तीर रविजा कैं, चलत-चलत सु तहाँ आये।
कमल कपूर कौ चूर लजावत[५], मृदुल पुलिन सुख उमड़ाये।।२८।।
चन्द्रमणि-जटित वेदी[६] तापर, आये ललना-लाल लसैं।
चंचल नैंन खेल के चाइनि, सौं कुलकात रूप-बरसैं।।२९।।
चहूँ ओर मणिमय मिड़वारी[७], भरी सरस केसरि-रँग सौं।
फूलि रहीं तिनमें कुमुदावलि, मध्य समाज वर उमग सौं[८]।।३०।।
कोउक ताल-मृदंग बजावति, कोउ मुरज-डफ कौं साजैं।
कोउ लयें गजक[९]-हुड़क[१०]-सारंगी, अमृतकुण्डली सँग बाजैं।।३१।।
मन्द-मन्द चलि हंस लजावत, आवत सनमुख दोउ प्यारे।
रमकि-रमकि[११] मुख मलत गुलालनि, झमकि-झमकि[१२] करि भये न्यारे[१३]।।३२।।
मृदु मुसिकान सहित अति सुन्दर, गौर-श्याम मुख छबि हेरैं।
चुहचुहानि[१४] तिन पर गुलाल की, निरखि हरषि आये नेरैं[१५]।।३३।।

---

१. अपने पक्ष की सखियों के साथ २. झीने वस्त्र से विनिर्मित फेंटों में अबीर लेकर उसे कटि से बाँधे हुए हैं ३. पाठा०—जित कित ४. अपने मधुरिम गान के द्वारा कोकिल के कण्ठ को लज्जित करती हुईं ५. उस पुलिन की कोमलता कमल को और स्वेतता कपूर-चूर को लज्जित करती है ६. मांगलिक कार्य के लिए तैयार किया हुआ चौकोर स्थान और उसके ऊपर का मंडप ७. किसी थाँभले के चारों ओर का उभरा हुआ गोलाकार भाग अथवा गोल सरोवर की मेंड़ जिसमें भीतर ८. जिसके बीचों बीच श्रीप्रिया-लाल का सखी समाज परम उत्साह के साथ विराजमान है ९. 'गजक' नामक एक वाद्य विशेष १०. एक प्रकार का बहुत छोटा ढोल ११. झूमते-झूमते १२. झम-झम शब्द करके उछलकूद करते हुए १३. पृथक १४. रँगीला और रसीलापन १५. एक दूसरे के निकट।

विमल[१] अलक रुरकत आनन पर, तान तरंगनि[२] सौं गावैं।
लेत हुरमई[३]-गति[४] बोलत मृदु, थेई-थेई सुख उपजावैं।।३४।।
गुन-गन में[५] नागर[६] सुख-सागर, निर्त्त-भेद-विधि सब जानैं[७]।
लेत ललित गति उरप-तिरप[८] सौं, लाग-डाट[९]-सँग मन मानैं[१०]।।३५।।
चलत रँगीली धार रँगीली, के कर सौं ग्रीवाँ रमकैं[११]।
चित्र विचित्र भये मनमोंहन, परम छबीली छबि झमकैं[१२]।।३६।।
एक सखी की ओट भये, आये मनमोंहन लाल छली।
जबही चाहत भर्‌यौ कुँवरि कौं, कुँवरि कमोरी ओजि[१३] खिली[१४]।।३७।।
अब तौ[१५] दाइनि कौं लीनौं चाहत चाइनि सौं श्याम धनी।
अंग-अंग अति चपल छबीले, निर्त्त करत कुण्डल कमनी।।३८।।
चलत छबीली धार छबीले, के कर सौं अति रंग भरीं।
अंचल ओटि बचावति नागरि, सुरँग बूँद छनि वदन परीं[१६]।।३९।।
यह शोभा अति अमित माधुरी, वरनत कवि की मति हारैं[१७]।
निरखत परम चतुर मनमोंहन, दृग निमेष सुधि सु बिसारैं[१८]।।४०।।
अरुणिम रंग बढ्यौ अवनी पर, खेलत फाग रवन-रवनी।
विविध अबीर उड़त नभ घमड्यौ, उमड़ि चल्यौ आनँद अवनी।।४१।।
झीने वसन रंग सौं भीने, लपटि रहे तन छबि-पागे।
सुरँग गुलाल परम चटकीले, तिन पर[१९] सुन्दर विधि लागे।।४२।।

---

१. सुन्दर २. संगीत में कलात्मक रूप से होने वाला अनेक प्रकार की तानों का उपयोग ३. पाठा०— उर्मई ४. प्राचीन कालीन एक नृत्य-गति विशेष ५. संगीत-गुणों का प्रदर्शन करने में ६. दोनों ही परम चतुर हैं ७. ज्ञाता ८. एक आवर्त में सम दिखाते हुए तीन आवर्त में सम पर आना अथवा नृत्य का एक अंग या अंग संचालन का एक प्रकार विशेष ९. गाने या बजाने के समय स्वर के मुख्य अंश या श्रुतियों को आपस में एक दूसरे से अलग न होने देना और सुन्दरता से उनका संयोग करना १०. मन को रुचिकर ११. आनंद से ग्रीवा झूमने लगती है १२. लाल जू की परम छबीली छबि देदीप्यमान हो उठती है १३. कमोरी से रंग उड़ेलकर या डालकर १४. प्रसन्न हो उठीं १५. इस समय तो लाल जू १६. किन्तु अंचल से छनकर रंग की बूँदें प्रिया जू के श्रीमुख पर पड़ गईं १७. पराजित हो जाती है या थक जाती है १८. वे नेत्रों के पलक डालना भूल जाते हैं १९. श्रीअंग में सुशोभित रंगभीने वस्त्रों के ऊपर।

कबहुँक भौंह नचाइ आइ,[१] पिय पर गुलाल के रँग डारैं।
सुरँग वसन झीने में झलकत, श्याम-गात छबि सु निहारैं।।४३।।
मृदु चंदन में वंदन डार्‌यौ, जल गुलाब के सौं गार्‌यौ।
भरत परस्पर भये रँगमगे, शोभा सौं प्यारी-प्यारौ।।४४।।
कबहुँक झूमि-झूमि पद पटकैं, कच-भारनि सौं कटि लचकैं।
झटकत कर मटकत लोचन वर, लुलित हार उर पर लटकैं।।४५।।
सखी-अंश दै बाहु फिरावत, कमल कुँवरि लटकत आवैं।
लोभी लाल निहारत उरजनि, यह शोभा दृग सियरावैं[२]।।४६।।
चोबा सौं मुख मलत लाल, ललना केशरि सौं वदन भरैं[३]।
वंदन अरुण उड़ावत आली, शोभा नैंक न कही परैं।।४७।।
ग्रीवाँ ढोरत तनहिं मरोरत[४], कर जोरैं[५] दोऊ नाचैं।
बूका भरि-भरि मुठी उड़ावत, हो होरी कहि-कहि राचैं[६]।।४८।।
चंदन चारु लग्यौ अंगनि पर, तिन पर सुरँगित रँग लाग्यौ।
उपमा दैंन देत नहिं लोचन, यहै रूप तिनमें पाग्यौ[७]।।४६।।
कुँवरि प्रवीन बीन कर लीनौं, पिय मुरली अधरनि धारी।
तान तरंगनि मोद बढावत, कोटि मैंन छबि पर वारी।।५०।।
कबहुँक तान तोरि माननि पर[८], सनमुख है आनँद झेलैं।
झनक-झनक नूपुर झनकावत, क्वणित किंकणी सुख-रेलैं[९]।।५१।।
सुरँग अरगजा दिपत करनि में, कहा कहौं शोभा हेली।
रमकि भरत आँकौ[१०] माँड़त मुख, पुलकित पिय तन अलबेली।।५२।।
गौर वदन सुन्दर पर कछु-कछु, चोबा की वर बिन्दु बनीं।
तैसैंई लसत साँवरे मुख पर, मृदु वंदन की फुटक घनी[११]।।५३।।

१. कभी तो प्रिया जू भौंहों को नचाती हुई आकर २. यह शोभा उनके दृगों को शीतल करती है ३. लाल जू के मुख पर केशर का रंग मलती हैं ४. नृत्य के भेद-प्रभेद प्रस्तुत करते हुए अपने-अपने अंगों को मरोड़ते हैं ५. परस्पर हाथ से हाथ मिलाकर ६. आनंद से रच जाते हैं ७. मेरे लोचनों में यह रूप पग गया है जिससे वे निष्क्रिय हो गये हैं। अतः वे उपमा देने में असमर्थ हो गये हैं ८. ताल के सम स्थान पर तान तोड़ते हुए ९. जिससे सुख का तीव्र प्रवाह उमड़ उठता है १०. अलबेली श्रीराधा झूमते हुए प्रीतम को अंक में भर लेती हैं ११. छोटी-छोटी अनेक बिन्दी।

कोउ अलीं रस रलीं करावति[१], भलैं-भलैं कहि श्रम टारैं।
मोती[२] वन्दन रँगे रुरत अधरनि पर लखि प्राणनि वारैं।।५४।।
कोउक ल्याईं रतन-जटित, चौकी फूलनि के आसन सौं।
बैठाये तापर नागरवर, प्रफुलित अंग-सुवासनि सौं[३]।।५५।।
बीरी ललिता ललित खवावति, कोउ चँवर सिर पर ढोरैं।
कोउक मुख पोंछति अंचल सौं, कोउक छबि पर तृण तोरैं।।५६।।
केलि-वर्द्धिनी कथा[४] कहति सखि, सुनि विवि प्रेम-रंग-भींजैं।
खेलि फाग अनुराग भरे बलि, लताभवन चलि सुख कीजैं।।५७।।
सस्मित[५] वदन सदन शोभा के, मदन-रंग सौं झलकि रहे।
गौर-श्याम भुज अंश-अंश दै, आवत छावत सुख उमहे[६]।।५८।।
कमल-दलनि सौं निर्मित सेज, विराजे तापर सुखदाई।
हाव-भाव लावण्य ललित सौं, कोक-कला कल प्रगटाई।।५९।।
करत सरस चुंबन-परिरंभन, दंपति सुख संपति विलसैं।
पियत अधर मधु खचित दोऊ उर,निरखि हरषि आलीं हुलसैं।।६०।।
रोम-रोम जो रसना पावैं, इहिं आनँद नहिं वरनि सकैं।
यह विलास रसिकनि की जीवनि, तेई जानत जे रसनि छकैं[७]।।६१।।
जै श्रीहितहरिवंश-कृपा तें, महा मधुर रस कछु गायौ।
प्रेमदासि हित जुगल-बिहार, विमल नित रहौ चित में छायौ[८]।।६२।।

१. जुगलवर को आमोद प्रमोद पूर्वक विनोद कराती हैं २. नासिका में सुशोभित बेसर का मोती ३. श्रीअंग की सुगंध से सभी सखीगण प्रफुल्लित हो रही हैं ४. रस क्रीड़ा का वर्द्धन करने वाली केलि कथा ५. मन्द मुसिक्यान सहित ६. उत्साह में भरे हुए और सुख को छाते हुए आते हैं ७. जो रसमूर्ति जुगल की रस लीलाओं में ही सदा छके रहते हैं वे रसिकजन ही इस रस-विलास के ज्ञाता हैं ८. जुगलवर का यह सुन्दर नित्यबिहार मेरे चित्त में सदैव छाया रहे।

फाग में षटरितु दर्शन :— राग-बिहागरौ

रँग हो-हो होरी खेलत प्यारी, प्रानपियारे लाल सौं।
छके छैल छह रितु एकत करि, राजत रूप रसाल सौं[१]।।१।।
फूलीं झूमक देत सखीजन, फूले गावत पिय-प्यारी।
गुंजत मधुप मनौं मधुरितु में, लखत रूप की फुलवारी[२]।।२।।
लाल गुलाल उड़त नभ घमड़्यौ, शीतल रवि सो आनि छयौ[३]।
वह ग्रीषम काके जिय भावत, या ग्रीषम जग जीति लयौ[४]।।३।।
अरस परस[५] छिरकत केसरि-रँग, करिकैं रस वरषा सोहैं[६]।
ताल मृदंग मेघ ज्यौं गरजत, हँसनि दामिनी मन मोहैं[७]।।४।।
झिलमिलात दर्पन से अँग-अँग, सहज शरद रितु देह लियैं[८]।
नाचत नैन नवल नटुवा[९] से, भ्रुव विलास में ताल दियैं[१०]।।५।।
चरचत चतुर चारु चंदन लै, भींजि वसन तन लपटाने।
ऐसैं शीतल होत परस्पर[११], मानौं हिम[१२] के सुख साने।।६।।
निरखि हरषि वर वदन माधुरी, पुलकि-पुलकि[१३] रमकत झमकैं।
शिशिर माँहिं रोमांचित से ह्वै, हौंन दुलाई कौं दमकैं[१४]।।७।।
छह रितु रूप अनूप अनूपम, श्यामल-गौर सरूप कियैं[१५]।
खेलहु खेल झेलि रस[१६] हिलिमिलि, 'प्रेम' सहित करि वास हियैं।।८।।

१. रसपूर्ण रूप से आनंदित जुगल छैल छहौं ऋतुओं को एकत्रित किये हुए सुशोभित हो रहे हैं २. जुगलवर गान करते हुए ऐसे सुशोभित हो रहे हैं मानों मधुरितु में रूप की फुलवारी देखकर भ्रमर गुंजार कर रहे हैं ३. वह गुलाल शीतल सूर्य के अरुणिम प्रकाश की भाँति आकाश मण्डल में छा गया है ४. वह ग्रीष्म ऋतु किसी के मन को अच्छी नहीं लगती; किन्तु इस ग्रीष्म ने तो सबके [सहचरी जगत के] मन को मोहित कर लिया है ५. एक दूसरे का स्पर्श करते हुए ६. इस प्रकार से रस की वर्षा करते हुए सुशोभित हो रहे हैं ७. उनकी मन्द मुसिक्यान ही दामिनी के रूप में सबका मन मोहित कर रही है ८. उनके अंग-अंगों की द्युति इस प्रकार से झिलमिला रही है मानों प्राकृतिक रूप से शरद ऋतु ही सदेह होकर आ गई है ९. नर्तक १०. भौंह संचालन में ही ताल देते हुए ११. परस्पर इस प्रकार शीतलता का अनुभव करते हैं १२. हेमंत ऋतु १३. पुनः-पुनः रोमांचित होते हैं १४. मानों शिशिर ऋतु के सैत्य का अनुभव करते हुए वे दोनों रोमांचित हो रहे हैं और अपने श्रीअंगों को एक दूसरे की रजाई बना लेने के लिए उत्कण्ठित हो रहे हैं १५. अनुपम गौर-श्याम छहौ ऋतुओं का अनुपम स्वरूप धारण किये हुए सुशोभित हो रहे हैं १६. रस में तन्मय होकर।

नित्य फाग में बारह मास दर्शन :— राग-सारँग

खेलत हो हो होरी[१]।
मंजुल नव निकुंज में सजनी, सुख वरषत चहुँ ओरी।।टेक।।
गौर-श्याम सखियनि में दंपति[२], कोकिल वानी बोलैं।
सौरभ पवन लगत मृदु स्वाँसा, हँसनि-मंजरी डोलैं[३]।।
विलुलित अलक मधुप मतवारे, मोर्‍यौ जोवन भारी[४]।
जो मधुरितु नित कहत विपिन में, सो मधुरितु पिय-प्यारी[५]।।१।।
कनक-पिचकई भरि सौंधे सौं, छिरकत छैल छबीले।
झीने वसन रंग सौं भीने, लपटत तन चटकीले[६]।।
तिय केसरि सौं मलत वदन, पिय मृगमद मुख लपटावैं।
फागुन माँहिं मनौं फगुवा में, पलटत रूप सिहावैं[७]।।२।।
फूलनि की नवलासिनि[८] लीने, खेलत खेल बढावैं[९]।
मानौं रावत[१०] छुटे[११] मैन के, छुइ तन[१२] दाइ बचावैं।।
सित अबीर की घमड़ माँहिं अब, को काकौं[१३] पहिचानैं।
मानौं चैत-चाँदनी[१४] में दोउ, लपटि रहे रति मानैं।।३।।
कुसुम-गेंद लै भये गेंद से[१५], दुरि मुरि दाइनि लागे[१६]।
आवत गेंद गेंद सौं मारैं, फूलि-फूलि अनुरागे।।

१. हो-हो शब्दोच्चारण करते हुए जुगलवर होली खेल रहे हैं २. गौरवर्ण वाली और श्याम वर्ण वाली सहचरियों के मध्य में जुगलवर ३. उनकी कोमल स्वाँस सुगंधित पवन की तरह लग रही है और मन्द मुसिक्यान रूपी आम्र-मंजरी अधरों पर आलुलोलित हो रही है ४. इस प्रकार से उनका जोवन सुकलित हो उठा है अथवा उनके श्रीअंग जोवन रूपी मौर से भरे हुए हैं ५. वृन्दावन में जो नित्य बसन्त कहा जाता है वह बसंत श्यामा-श्याम ही हैं ६. चमकते हुए श्रीअंग में वे वस्त्र लिपट रहे हैं ७. मानों होली में फगुवा [होली के अवसर पर दिया जाने वाला उपहार] के स्थान पर एक दूसरे को अपना रूप देकर प्रसन्न होते हैं ८. गेंद अथवा छड़ी ९. खेलते हुए वे खेल को बढ़ाते चलते हैं १०. शूरवीर ११. अपना कार्य करने के लिए प्रवृत्त हो गये १२. अंगों का स्पर्श करते हुए १३. किसे १४. चैत्र मास की चाँदनी में १५. गेंद जैसे चंचल होकर १६. अपने-अपने दाव पेचों में संलग्न हो गये।

कुमकुम[१]-बिन्दु लसत अँग-अंगनि, अरस परस मन मोहैं।
मनु बैसाख माँहिं सजि भूषन, हेम-पुहुप[२] के सोहैं।।४।।
पहिरैं हार चन्द्रसैंनी[३] उर, कियैं चन्द्र-मुख प्यारे।
चरचत चारु चतुर गति[४] चंदन, भये चखनि के तारे।।
कंचन के पिचकनि सौं छूटत, जल गुलाब की धारैं।
मानौं जेठ माँहिं जल नल[५] सौं छुटत सुगंध फुहारैं।।५।।
रतन-कलसियन रँग भरि सब मिलि, ओजा ओजी लाई[६]।
बाढ़्यौ रंग सुरंग अवनि पर, छई अधिक अरुनाई।।
तामें यौं समाज राजत ज्यौं, रस असाढ़ में लीने[७]।
मनौं अनुराग-सरोवर में दोउ, करत बिहार नवीने।।६।।
श्यामल-गौर-कलेवर[८] में नव, सोहत मोतिनु माला।
मानौं रूप-वृक्ष में दमकत, झूला रुचिर रसाला।।
उभय पदिक में प्रतिविंवित ह्वै, झूलत झमक लगायैं[९]।
नुपुर रुनकत झुनकत झिल्ली, मानौं सावन आयैं[१०]।।७।।
किरत[११] कुसुम केसनि तें मानौं, घन बूँदनि वरषावैं।
बाजत ताल-मृदंग-चंग-डफ, गरजनि मधुर सुहावैं[१२]।।
लहलहात[१३] दामिनि सी अलिगन, वग वनमाल लसायैं[१४]।
निर्त्तत मोर महा चंचल चित[१५], मानौं भादौं आयैं।।८।।

---

१. केसर २. स्वर्ण-फूलों के या स्वर्ण तारों से जटित ३. चन्द्र सैनी हार नामक गले का हार जिसमें अर्द्ध चन्द्राकार धातु के कई टुकड़े लगे रहते हैं और बीच में पूर्ण चन्द्र के आकार का गोल टिकड़ा बना होता है ४. प्रवीणता के साथ ५. वह उपकरण जिससे कुएँ आदि से पानी ऊपर उठाकर नलों की सहायता से दूर-दूर तक पहुँचाया जाता है– फुहारों से ६. भरा हुआ कलश उड़ेल दिया या डाल दिया ७. जैसे असाढ़ मास में सरोवर में क्रीड़ा करते हुए आनन्दित हो रहे हों ८. उरस्थल पर ९. एक दूसरे के हृदयस्थ 'पदिक' नामक आभूषण में प्रतिविम्बित होकर मानों श्यामा-श्याम तीव्र चमक के साथ मोती-माला रूपी झूला के ऊपर विराजमान होकर झूला झूल रहे हैं १०. मानों सावन मास के आगमन में झींगुर झुनझुन शब्द करते हुए बोल रहे हैं ११. गिरते हैं या झड़ते हैं १२. विविध वाद्यों की ध्वनि ही बादलों की मधुर गर्जना बनकर सुशोभित हो रही है १३. लहराते हुए १४. वनमाला बगुलाओं के रूप में सुशोभित हो रही है १५. उनके महा चंचल चित्त ही मोरों के रूप में निर्त कर रहे हैं।

घमड़ि रह्यौ बूका उज्ज्वल मनु, प्रगट्यौ शरद सुहायैं[१]।
नाचत नैंन नवल नटुवा से, भ्रुव मंडली बनायैं[२]।।
क्वणित किंकिणी बजत वीन सी, लै कर कमल फिरावैं।
मानौं क्वार मास में हिलिमिलि, रस कौ रास जमावैं[३]।।६।।
मानौं कातिक के से पख द्वै[४], पिय-प्यारी रँगभीने।
मणिमय भूषन दिपत दीप से, जानि दिवारी कीने[५]।।
खेलत वंदन की मूठनि सौं, पूरे दावनि माँहीं[६]।
जीति रहे दोऊ दोउनि कौं, कबहूँ हारत नाँहीं।।१०।।
अरुन अरगजा लै-लै सुन्दर, मलि-मलि उर कौं भाजैं।
शीतल होत सरस हिय जिय में, फिरि[७] सनमुख ह्वै राजैं।।
उड़त गुलाल गगन में छायौ, पायौ भाव नियारौ[८]।
जैसैं अगहन में रवि भावत, तैसैं लागत प्यारौ[९]।।११।।
चुहचुहानि[१०] निरखत आनन की, पुलकित[११] रसिक रसीले।
मनौं पूस में परम मनोहर, प्रगटे रोम रँगीले[१२]।।
रमकि-रमकि करि दुहूँ ओर तें, लपटनि कौं उमगाहैं।
मानौं शीत भीत ह्वै दोऊ, भयौ दुलाई चाहैं[१३]।।१२।।

---

१. मानों शारदीय वातावरण प्रकट हो गया है २. भौहों की अथवा नई-नई भ्रू-भंगिमा की मंडली लेकर नैंन नवीन नर्तक की तरह नाच रहे हैं ३. प्रभावशाली रूप में प्रत्यक्ष कर देते हैं ४. मानों लाल जू का रूप कृष्णपक्ष और प्रिया जू कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की भाँति लग रहीं हैं अथवा कस्तूरी-रंग से भींजी प्रिया जू कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की भाँति और केशर-रंग से भींजे लाल जू कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की भाँति सुशोभित हो रहे हैं ५. ऐसा ज्ञात होता है मानों दिवाली ही कर दी है ६. मानों चौपड़ खेल के दावों में सब प्रकार से पूर्ण हैं ७. पुनः ८. विचित्र ९. जैसे अगहन मास में सूर्य की लालिमा प्रिय लगती है उसी प्रकार वह गुलाल प्रिय लग रहा है १०. रस-रंग से इतना अधिक भरा हुआ होना कि उसमें से वह टपकता हुआ जान पड़े ११. रोमांचित १२. मानों पौष मास में जाड़े के कारण उनके श्रीअंग रोमांचित हो उठे हैं १३. मानों शीत से भयभीत होकर वे दोनों एक दूसरे की हल्की रजाई ही बन जाना चाहते हैं।

नित होरी में कुँवरि-कुँवर कौं, सेवत बारह मासा।
गावत चैत सदा रँगभीने, दै तिनकौं रस वासा[१]।।
'प्रेम' सहित श्रीव्यासदुलारे, जो रस तुम दरसायौ।
ताकौं अंगीकार[२] करौ तुम, तुव प्रताप जो गायौ।।१३।।
[४६-५]

फाग में सप्तवार दर्शन :— राग-रामकली

हो-हो होरी बोलत डोलत, कुँवरि-कुँवर रँगभीने*।
बार-बार प्रति प्रीति-रीति सौं, करत बिहार नवीने।।१।।
मंगल मूरति मोहनि-मोहन, मंगल गीतनि गावैं।
लै गुलाल कर लाल करे तन, मंगल से मन भावैं[३]।।२।।

---

१. जो नित्य प्रति इस रस गीत का गान करते हैं उन्हें कृपा करके आप रस का निवास स्थान दो। **द्वितीय अर्थ–** वे रँगभीने कुँवरि-कुँवर उन बारह मासों को अपने रस में निवास देकर सदा बासंती गीत गाते रहते हैं। **तृतीय अर्थ–** वे रँगभीने कुँवरि-कुँवर उन बारह मासों की सेवा से रीझकर उन्हें अपने रस में निवास प्रदान कर देते हैं और आज्ञा देते हैं कि तुम सदा हमारे बासन्ती गीत का गान करते रहो। **चतुर्थ अर्थ–** बासन्ती गीत गायन करने वाले उन बारह मासों को रँगभीने कुँवरि-कुँवर अपने रस में निवास प्रदान कर देते हैं २. स्वीकार।

* [यद्यपि श्रीलाड़िली- लाल का नित्यबिहार कालातीत है। वे जब भी जिस भाँति के बिहार की इच्छा करते हैं, सखियों एवं श्रीवृन्दावन के सहयोग से वह उन्हें प्राप्त हो जाता है तथापि निरन्तर चलने वाले उसी बिहार में मानों वे नाना कालों, वारों, तिथियों, ऋतुओं और मासों के आनन्द का भी आस्वादन कर लेते हैं। प्रस्तुत पद में रसिक जुगलवर प्रभात के प्रथम याम की बसन्त ऋतु में मानों एक साथ सप्ताह के सात वारों जैसा रसानन्द प्राप्त करते हुए दिखाई दे रहे हैं।]

३. होली के आनन्द और रंगों में भींजे श्रीलाड़िली-लाल [मत्त होकर] हो हो होरी बोलते हुए वृन्दावन की कुंज-निकुंजों में डोल रहे हैं। वे अपनी प्रीति की [अभिव्यक्ति की प्रत्येक] रीति से बारम्बार [श्लेष अर्थ में- वार दिवसों के] नित्य नये बिहार करते हैं। वे हित स्वरूप किंवा हित मूर्ति [मंगल मूर्ति] मोहनी-मोहन जब होली खेल के मांगलिक गीत गाते हैं और अपने हस्त-कमल में लाल गुलाल लेकर एक दूसरे के श्रीअंगों को लाल कर देते हैं तो मंगल नक्षत्र की भाँति मनभावन प्रतीत होते हैं।

बुध कौ निरखि विनोद सखी री!, बुधि विवेक सब भूले।
ऐसैं जो बुधि जाइ सकल विधि, सो बुधि सुधि सौं फूले[१]।।३।।
वीर वार कौं विमल दुहुँनि कैं, वंदन मुख लपटाने।
यहै खेल सब खेलनि कौ गुरु, और खेल घट जाने[२]।।४।।
लै संपति मय शुक्र दिवस कौं, मारत फूलनि फूले।
मानहुँ चलि-चलि सरस शुक्र से, मिलत परम अनुकूले[३]।।५।।
थिर बासर कौं थिरकि-थिरकि अति, गावत चैत सुहाये।
ताही तें थिर रहत मधुर रितु, वृन्दावन छबि छाये[४]।।६।।
सुनि आदित्य वार कौ घमड्यौ, अरुन अबीर विराजै।
मनौं अतप आदित्य नेह सौं, भयौ चँदोवा छाजै[५]।।७।।

---

१. हे सखी! परम प्रबुद्ध [प्रीति-रीति-विज्ञाता लाल जू] के विविध विनोदों को देखकर हमारे सारे बुद्धि विवेक विस्मृत हो जाते हैं। [प्रिया जू से अपने अभीष्ट विलासों की प्राप्ति हेतु नाना प्रकार के छल छद्मों में] जिनकी बुद्धि ऐसी चलती है; उस बुद्धि के स्मरण मात्र से [वे अथवा सहचरीगण प्रसन्नता से] फूल उठते हैं। यही बुधवार और बुध की हरियाली है।

२. अरी सखी [वीर]! जिस बेला में दोनों के श्रीमुख पीत वंदन से रँग जाते हैं तो सुरत-बेला के वीरों के लिए यही समय वीर [गुरु] वार जैसा बन जाता है। यह बासन्ती क्रीड़ा सभी क्रीड़ाओं में महत्वपूर्ण, भारी या गरिष्ट है। इसकी अपेक्षा अन्य खेल न्यून हैं।

३. होली खेल में शोभामय शुक्र दिवस वही है जब वे फूले [प्रसन्नता से भरे हुए] स्वेत या स्वर्णिम फूलों से परस्पर एक दूसरे पर प्रहार करते हैं। उस समय [श्वेत या स्वर्णिम पुष्प-पंखुड़ियों से लिपटे हुए] वे ऐसे लगते हैं जैसे रसमय शुक्र तारे ही [भोर एवं सन्ध्या कालीन तारे के रूप में] एक दूसरे के निकट जाकर अत्यन्त अनुकूलता से मिल रहे हों।

४. दिन की स्थिरता [शनैश्चरता] वही है जब वे शनैः शनैः थिरक-थिरककर अत्यन्त सुहावने बासन्ती गीत अथवा 'चैती' राग विशेष का गान करते हैं इसी [चैती के प्रभाव के] कारण वृन्दावन में मधु [चैत्र मास की बसन्त] ऋतु स्थिर होकर शोभा फैलाये रही आती है।

५. अरी सखी! सुन; जब आकाश में सूर्योदयकाल की अरुणिम कान्ति का [वाला] लाल अबीर शोभायमान रहता है तो ऐसा प्रतीत होता है मानों ताप-रहित [सम शीतोष्ण] सूर्य प्रेम [विवशता] से चँदोवा बनकर आच्छादन किये हो; यही तो आदित्य [रवि] वार होता है।

सौंमवार कौ खेल सौम सौ, श्रवन सुधा सुख साँचौ।
यहै जीव सब जिय कौ या बिन, और ओम तिथि बाँचौ[१]।।८।।
वारनि वारन से बिहरत करि, वारनि-वारनि ओभा।
'प्रेम' सहित ललितादि होत बलि, देखि दुहुँनि की शोभा[२]।।६।।

[५०-६]

फाग में पाख या पक्ष दर्शन :— राग-गौरी

खेलत मंजु निकुंज में ।। रँग भीनी होरी।।
श्याम-राधिका गोरी[३] ।। रँगनि रँग भीनी होरी।।

१. कानों में जब [प्रेमालाप का अथवा गायन-वादन आदि का] सोम [चन्द्रमा या सोमलता] का अमृत रस जैसा निर्झरित होता है तो वही सोमवार की केलि का सच्चा सुख है। यही सुख सब सहचरियों के प्राणों का प्राण जीवन है। इसके बिना अन्य तिथियों का अवम [क्षय] ही समझना चाहिये। अर्थात् होली खेल में गायन-वादन और नर्तन- इन तीनों अंगों से परिपूर्ण प्रेम का संगीत न हो तो उसे क्षीण ही मानना चाहिये।

द्वितीय अर्थ—चन्द्रोदय के समय का अर्थात् सान्ध्य बेला का खेल तो अमृत जैसा ही है और उसका सुनना-सुनाना ही सच्चा अमृतमई सुख है। यह खेल किंवा बिहार सब सहचरियों के प्राणों का प्राण है। इसके अतिरिक्त अन्य सभी बातें चन्द्रमास की क्षय तिथि [नाशवान] ही समझनी चाहिये। अर्थात् श्यामा-श्याम का नित्यबिहार ही नित्य है और सत्य है।

२. बारंबार अपनी नई-नई आभाओं को प्रकाशित करते हुए अथवा बारम्बार अपनी प्रेम क्रीड़ा में एक-एक बार की छबि भरी शोभा का प्रकाश करते हुए वे दोनों [कुँवरि-कुँवर] करि-करिनी से [मन्दोन्मत्त] बिहार करते हैं। इन अद्वय युगल की अनुपम शोभा को देखकर ललितादिक सहचरियाँ प्रेम से न्यौछावर हो जाती हैं।

३. रसमूर्ति श्यामा-श्याम की नित्य निकुंज प्रांगण में नित्य होने वाली होली में एकम [प्रतिपदा] से लेकर पूर्णिमा तक फागुन के पूरे पाख का भावनात्मक निरुपण करते हुए सहचरी भावानुभावित प्रेमदास जी कहते हैं कि प्रीतम श्यामसुन्दर और गौर वर्णी प्रिया राधिका सुन्दर निकुंज महल में आनन्द के रंगों से सराबोर होली खेल रहे हैं।

एकम एक मतौ कियौ।।रँग०।। मृगमद-केसरि घोरी[१]।। रँगनि०।।१।।
द्वैज भाव द्विज कौ लखौ।।रँग०।। सो द्विज विविध विहंग।। रँगनि०।।
ल्यावति तिनके रूप अलि।।रँग०।। छिरकत बहु विधि रंग[२]।। रँगनि०।।२।।
तीज तिहूँ गुन में जये।।रँग०।। रँग सित-श्याम-सुरंग।। रँगनि०।।
मिलत त्रिवेंनी सी बहै।।रँग०।। रँगत मधुर रितु अंग[३]।। रँगनि०।।३।।
जानि चतुरथी चित-रथी।।रँग०।। मधुरितु रथ चढ़ि धीर।। रँगनि०।।
उमगे रस-संग्राम कौं।।रँग०।। मारत मूठ अबीर[४]।। रँगनि०।।४।।
पाँचैं पाँचौं शब्द मिलि।।रँग०।। बाजे बाजत आजु।। रँगनि०।।
पंचम स्वर गावत सखी।।रँग०।। रँगि पँचरंग समाज[५]।। रँगनि०।।५।।

१. श्यामसुन्दर द्वारा गोरी प्रिया जू को अपने श्याम रंग में रँगने के लिए कस्तूरी घोलने और प्रिया जू द्वारा श्यामसुन्दर को अपने पीत रंग में रँगने के लिए केसर घोलने को सहमत होकर एक मता [निश्चय] करना ही फाग की एकम [प्रतिपदा तिथि] है।

२. द्वैज शब्द 'द्विज' की भाव वाचक संज्ञा है जिसका अर्थ है द्विज से उत्पन्न होने वाला— अथवा **''द्विजानां अयं''** अर्थात् द्विजों का। निकुंज में विविध वर्णों के पक्षी ही द्विज हैं। ये विहंग रूपी विप्र ही फाग केलि के छन्दों का उच्चारण करते हैं। उनके रूप में [अर्थात् फाग केलि के छन्दों की रचना करके उन छन्दों की अप्रतिम उद्गायिका के रूप में] सखियाँ अनेक प्रकार के पक्षियों जैसे लाल, पीले, हरे आदि रंग लाकर छिड़कती हैं। अथवा पक्षी जैसे रूप वाली [अर्थात् होरी खेल में मृगमद के रंग से रंजित कोकिल जैसी कोई हरे व लाल रंग से रंजित तोते जैसी] सहचरियाँ विविध प्रकार के रंगों को लाकर छिड़कती हैं। इन द्विज-समूहों के कारण यही द्वैज [दोज तिथि] है

३. मधु मास बसन्त के मद में छके युगलवर के श्रीअंग [विशेषकर नेत्र] श्वेत, श्याम और लाल रंगों में रँगे हैं। इन तीनों रंगों ने अपने गुणों से सबको जीत लिया है। इन तीनों रंगों की त्रिवेणी निकुंज भवन में नित्य प्रवाहित होती रहती है; वही तीज तिथि है। अथवा प्रीतम का श्याम रंग यमुना, प्रिया का गौर वर्ण गंगा और दोनों के पारस्परिक अनुराग का लाल रंग सरस्वती है, जिनकी त्रिवेणी ही तीज हो जाती है और जो मधुरितु के अंगों को भी रँग देती है।

४. दोनों के चतुर चित्त रूपी रथी [जो रथ पर चढ़कर चलता हो] मधुरितु रूपी रथ पर चढ़कर बड़े धैर्य के साथ उत्साहित होते हुए आनन्द-संग्राम में अबीर की मूठ के अस्त्रों का प्रहार करते हैं। चतुर चित्त रथियों का यह समर ही चतुर्थी तिथि है।

५. आज फाग में तंत्री, सुषिर, ताल आदि पाँच प्रकार के बाजों के साथ पंचम स्वर में गाती हुई सखियों के मधुर स्वर मिलकर समस्त समाज को अपने-अपने स्वरों के रंग में रँगकर पँचरंगी बना रहे हैं। यही पंचमी तिथि है।

छठ छह रसमय अमी ज्यौं।।रँग०।। फागुन मास सुहाइ।। रँगनि०।।
कहौ कौंन की रुचि घटै।।रँग०।। याकैं स्वादहि पाइ[१]।। रँगनि०।।६।।
सातैं सातौं सुर बजैं[२]।।रँग०।। नूपुर माँहिं अनूप।। रँगनि०।।
थक्यौ तमीपति तमी में।।रँग०।। लखत सप्तमी रूप[३]।। रँगनि०।।७।।
आठैं आठौं दिसनि में।।रँग०।। कूजत कोकिल-वृन्द।। रँगनि०।।
मानहुँ रतिपति की सखी।।रँग०।। गावति रस कैं छंद[४]।। रँगनि०।।८।।
नवमी नव रसमय दिपैं।।रँग०।। नव निकुंज नव रीति।। रँगनि०।।
कछुक विरोधी रस तहाँ।।रँग०।। तेऊ रँगे रँग प्रीति[५]।। रँगनि०।।६।।

---

१. फागुन मास मधुर, तिक्त, अम्ल, कषाय, लवण और कटु इन षट् रसों के भोज्य पदार्थों के अमृतमय स्वाद की भाँति सुहाता है। इसके स्वाद को पाकर किसकी रुचि इसमें घट सकती है। प्रिया जू के रूप का माधुर्य और लावण्य, नोंक झोंकमयी बातों की तिक्तता एवं कटुता, असमान मान व सूक्ष्म विरह आदि के कषाय व अम्ल अनुभव ही इसे छहों रसों का स्वाद प्रदान कर देते हैं; यही छठ तिथि है २. पाठा०–सजैं।

३. प्रिया जू के नूपुरों में अनुपम संगीत के सातों स्वर बजते हैं अथवा सातों स्वर सजे हुये है–यही सप्तमी तिथि है। इस सप्तमी रात्रि [तमी] में अर्थात् प्रिया-चन्द्र के सप्त स्वर वाले नूपुरों का माधुर्यास्वादन कर तमीपति [चन्द्रमा] भी थककर स्थिर जड़ीभूत हो जाता है।

४. आठों दिशाओं में कूकती हुई कोयलों के मधुर स्वर ऐसे प्रतीत होते हैं मानों कामदेव की सखियाँ मधुर रस के छन्दों का उद्‌गान कर रही हों। कोयलों का आठों दिशाओं को अपने स्वर से गुञ्जित करना ही अष्टमी तिथि है।

५. फाग में नौ प्रकार की नवल कुंजें नौ प्रकार की नयी रीतियों से नौ भाँति के नवल रसों से प्रकाशित होती हैं; जो नवमी तिथि है। इनमें कुछ विरोधी रस भी हैं किन्तु प्रीति के रंग में रँगे होने के कारण वे भी अनुकूल ही प्रतीत होते हैं; विरोधी नहीं। शृंगार, हास्य, वीर आदि नौ रसों के आस्वादन की भिन्न-भिन्न कुंजें हैं। इनमें करुण, रौद्र, वीभत्स, शान्त आदि कुछ शृंगार रस विरोधी रसों की भी कुंजें हैं किन्तु प्रीति से भरपूर रति रसमयी होने के कारण वे विरोधी नहीं लगतीं। नखक्षत, दंतक्षत घोर शृंगार रस की जुगुप्सापूर्ण अनुभूतियाँ भी अनुकूल ही लगती हैं [इसका विस्तृत वर्णन रसिकवर श्रीहित सहचरिसुखजी की वाणी में दृष्टव्य है]

दसमी दसधा प्रेम है।।रँग०।। रँगत नवनि कौं सोइ।। रँगनि०।।
ता रँग सौं रँगि तन-प्रभा।।रँग०।। क्यौं न दस गुनी होइ[१]।। रँगनि०।।१०।।
एकादशि एकै दसा।।रँग०।। ह्वै रहे लाल गुलाल।। रँगनि०।।
सुधि न परत को सहचरी।।रँग०।। को ललना को लाल[२]।। रँगनि०।।११।।
खेल द्वादसी कौ बढ़्यौ।।रँग०।। द्वादस अभरन टूटि।। रँगनि०।।
मनहुँ रीझि वारन भये।।रँग०।। परत धरनि पै छूटि[३]।। रँगनि०।।१२।।
तेरसि ते रस प्रगटिये।।रँग०।। जे रस सुने न कान।। रँगनि०।।
सूहे सुरँग गुलाल उड़ि।।रँग०।। करत जु सूहे प्रान[४]।। रँगनि०।।१३।।

---

१. नवधा भक्ति से ऊपर दसवीं प्रेमा ही दसमी तिथि है; जो नवों प्रकार की भक्तियों को अपने रंग में रँग देती है। उस अद्‌भुत प्रेम रंग से रँगे अंगों की दस गुनी आभा होना ही दसमी तिथि है। अथवा उस अद्‌भुत प्रेम के गहरे रंग में रँगकर युगल प्रेमियों के श्रीअंगों की आभा भला दस गुनी क्यों न होगी

२. श्रीयुगल तथा सखी परिकर की एक सी दशा ही एकादशी है। ये सभी अनुराग के लाल गुलाल में रँगकर एक समान हो गये हैं। ज्ञात नहीं होता कि इनमें कौन प्रिया है, कौन प्रीतम और कौन सहचरियाँ।

३. प्रगाढ़ प्रेम की आवेगमयी केलि ऐसी बढ़ गई कि युगल प्रेमियों के द्वादश आभरन टूटकर, खुलकर धरती पर गिरने लगे; मानों वे दोनों के प्रेम खेल पर रीझकर उन पर न्यौछावर हो रहे हैं। द्वादश आभरनों का टूटकर गिरना ही द्वादशी तिथि है। वाणीकार प्रेमदासजी ने स्वरचित 'हित चौरासी टीका' की पद सं० ६७ में इन द्वादश आभरनों की परिगणना इन शब्दों में की है– **''चूरी और कंकण में बड़ौ प्रकाश है। चूरी और कंकण सोलह शृंगार में नाहीं, द्वादश आभरन में हैं ताते कहे हैं। ताते जानिये कि द्वादश आभरन हू किये हैं। तिनके नाम ये हैं– सीसफूल, कर्णफूल शृंगार में हू हैं और आभरन में हूँ हैं। किंकिनी, पदिक, चक्रीशलाका, चूरी रु कंकण, दुलरी, मुद्रिका, मोतियन के हार, अंगद, नूपुर, बिछिया।''**

४. जिन रसों के सम्बन्ध में कभी किसी ने अपने कानों से कुछ सुना ही नहीं उन [ते] रसों का प्रकट होना ही तेरस तिथि हो गई। यह अश्रुत पूर्व रस सुरँग गुलाल उड़ाने के साथ-साथ सूहे राग के गान में समुत्पन्न होकर सबके प्राणों को अनुराग के सूहे [लाल] रंग से रँजित कर रहा है।

चतुरदशी कौ जश छयौ।।रँग.।। सुनौं चतुरदस भौंन।।रँगनि.।।
फुरी दस रसी[1] चतुर की ।।रँग.।। देखि चख गह्यौ मौंन[2]।।रँगनि.।।१४।।
पूनौं परम प्रसन्न ह्वै।।रँग.।। पूरे खेलनि खेलि।।रँगनि.।।
पूरी चित की चाह सब।।रँग.।। पूरे आनँद झेलि[3]।।रँगनि.।।१५।।
परिवा परि वा डोल पर।।रँग.।। झूलत नवसत साजि[4]।।रँगनि.।।
यौं बिहरत नित पाख प्रति।। रंग.।। 'प्रेम' सहित छबि छाजि[5]।।रँगनि.।।१६।।

[५१-७]

अनुरागमई फाग :- राग-गौरी

श्रीराधाबल्लभ लाड़िले।। हो होरी हो।।
दूलह मोंहनलाल।। प्रेम रँग होरी हो।।

ललित वलित रस प्रेम में[6]।। हो.।। दुलहिनि कुँवरि कृपाल।। प्रेम.।।१।।
लाल हरषि विनती करी।। हो.।।फूल्यौ वन रितुराज।। प्रेम.।।
परम चतुर-मणि लाड़िली।। हो.।।साजौ[7] सकल समाज[8]।। प्रेम.।।२।।
भई मुदित मन नागरी।। हो.।।नागर सुखहि अपार।। प्रेम.।।
गौर-श्याम सहचरिनु के।। हो.।।करे जूथ द्वै चार[9]।। प्रेम.।।३।।

---

१. पाठा०– दस दसी २. चौदह भुवनों में इस फाग का यश छा जाना ही चतुर्दशी है। चतुर किंवा कुशल रसिकों की जो रस दशा इस फाग में प्रकट हुई उसे देखकर सबके नैनों ने मौन धारण कर लिया अर्थात् सबके नैन अचंचल हो गये अथवा नेत्रों से देखकर सब मौन हो गये। यह मूकास्वादनवत् अनिर्वचनीय हो गया। ३. परम प्रसन्न होकर अनुराग मई फाग के पूर्ण खेलों को खेलकर, सम्पूर्ण रसानन्द का अनुभव करके अपनी और समस्त सहचरियों की मनोभिलाषाओं को पूर्ण करना ही पूर्णिमा है। ४. सोलह श्रृंगार से सुसज्जित होकर उस [वा] डोल पर विराजमान हो [पड़] कर झूलना ही डोल-पड़वा [प्रतिपदा] है। ५. सखी भावापन्न प्रेमदासजी कहते हैं कि इसप्रकार शोभा-युक्त युगलवर प्रेम किंवा प्रीति के साथ प्रतिदिन [नित्यप्रति] फाग के पूरे पाख का विहार परिपूर्ण कर लेते हैं। ६. प्रेम रस के लालित्य से परिपूर्ण ७. पाठा०–साज्यौ ८. हे परम चतुरमणि श्रीलाड़िली जू! यह श्रीवृन्दावन बासन्ती सुषमा से प्रफुल्लित हो रहा है अतः आप अपना संपूर्ण साज समाज सुसज्जित करके फाग-क्रीड़ा करने के लिए पधारो ९. अलग-अलग।

जगमग-जगमग होत तन।। हो.।। गौर-स्याम सुकुमार।। प्रेम.।।
द्वादस अभरन[1] झिलमिलैं।। हो.।। नवसत सजे सिंगार।। प्रेम.।।४।।
लईं सौंज सब खेल की।।हो.।। चले रविजा कैं तीर।। प्रेम.।।
त्रिविध समीर तहाँ चलैं।।हो.।। कूजत कोकिल-कीर।। प्रेम.।।५।।
हंस-मोर-चकवा रुचिर।।हो.।। बोलत भरे हुलास।। प्रेम.।।
नवल द्रुमनि लपटीं लता।।हो.।। फूलि रहीं सु प्रकाश[2]।। प्रेम.।।६।।
मणिमय अवनी में दिपैं।।हो.।। तरु मणिमय बहु भाँति।। प्रेम.।।
लपट डारि मिलि गुच्छ सौं।।हो.।। जल परसत छई कान्ति[3]।। प्रेम.।।७।।
जल-थल में सुंदर कमल।।हो.।। रहे विविधि विधि फूलि।। प्रेम.।।
पुंज-पुंज वर भृंग के।।हो.।। गुंज-गुंज रहे झूलि[4]।। प्रेम.।।८।।
आनंदित ह्वै पुलिन में।।हो.।। फूले मन अभिराम।। प्रेम.।।
अपने-अपने जूथ में।।हो.।। राजत स्यामा-स्याम।। प्रेम.।।९।।
ताल-पखावज-आवझी[5]।।हो.।। महुवर वर मुखचंग।। प्रेम.।।
सरस झाँझ-डफ-मुरलिका।।हो.।। बाजत वीन-उपंग।। प्रेम.।।१०।।
सप्त सुरनि सौं रागिनी।।हो.।। गावत भेदनि संग।। प्रेम.।।
हो होरी कहि-कहि हँसैं।।हो.।। लाजत निरखि अनंग।। प्रेम.।।११।।
अमित कमोरी मणिनिमय।।हो.।। विविधि रंग तिन माँहिं।। प्रेम.।।
साखि-जवादि सुगंध की।।हो.।। तहाँ सु मित[6] कछु नाहिं।। प्रेम.।।१२।।
परम छबीले वदन में।।हो.।। चंचल नैंन सुहाँइ।। प्रेम.।।
खेलत खंजन से मनौं।।हो.।। फूले कंजनि आइ[7]।। प्रेम.।।१३।।
फूलनि सौं बैंनी गुही।।हो.।। डुलत[8] पीठ पर चारु।। प्रेम.।।
मनौं रूप-द्रुम पर चढ़ीं।।हो.।। फूलीं लता सिंगार[9]।। प्रेम.।।१४।।

---

१. बारह प्रकार के आभूषण २. प्रकाशमान होकर प्रफुल्लित हो रही हैं ३. उन वृक्षों की शाखायें फूलों के गुच्छों से लिपटकर जब यमुना जल का स्पर्श करती हैं तो एक अभिनव कान्ति छा जाती है ४. सुन्दर भ्रमरों के समूह के समूह जिन पर बार-बार गुंजार करते हुए मँड़रा रहे हैं ५. तासे की तरह का एक प्राचीन वाद्य ६. नाप तोल या परिमाण ७. प्रफुल्लित कमलों में आकर ८. हिलती है ९. श्रृंगार रस की लता।

बेसरि के मोती नचे।।हो.।।मुख-शशि-मंडल पाइ[१]।।प्रेम.।।
हँसनि छबीली झिलमिलैं।।हो.।।अलक झलक लहकाँइ।।प्रेम.।।१५।।
मणिमय पिचकारी बनी।।हो.।।लाल-बाल कैं पानि[२]।।प्रेम.।।
केसरि के रँग सौं भरीं।।हो.।।छबि को सकत वखानि।।प्रेम.।।१६।।
लहलहात मनु दामिनी।।हो.।।प्यारी-छबि रही छाइ।।प्रेम.।।
जगमगात घनश्याम पिय।।हो.।।अद्‌भुत धर पर आइ[३]।।प्रेम.।।१७।।
पिय-कर पिचकारी छुटैं।।हो.।।प्यारी पर सुख-पुंज।।प्रेम.।।
कनक-लतहि सींचत मनौं।।हो.।।शशि मधु लै नव कंज[४]।।प्रेम.।।१८।।
कुमकुम के रँग सौं भरे।।हो.।।पिय, प्यारी सुख-मूल[५]।।प्रेम.।।
मनु सिंगार-तमाल में।।हो.।।लगे प्रीति के फूल।।प्रेम.।।१९।।
फूलनि की गैंदें चलैं।।हो.।।भये गेंद लखि लाल[६]।।प्रेम.।।
मानौं मनमथ-तुपी के[७]।।हो.।।चलत बान सु रसाल।।प्रेम.।।२०।।
विविधि अबीर गगन छये।।हो.।।न्यारे-न्यारे रंग।।प्रेम.।।
मनु बहु रंगनि के मिले।।हो.।।आइ सरस घन संग।।प्रेम.।।२१।।
मनु अनुराग घुमड़ि रह्यौ।।हो.।।उड़्यौ गुलाल अमंद[८]।।प्रेम.।।
पकरे सखियनि धाइ पिय।।हो.।।मनौं चकोर गह्यौ चंद।।प्रेम.।।२२।।
लै गुलाल कर में सुरँग।।हो.।।मलत लाल-मुख बाल[९]।।प्रेम.।।
मानौं शशिहि पराग दै।।हो.।।मिलत कमल सु रसाल[१०]।।प्रेम.।।२३।।
तिय-उर मणिमय उरबसी[११]।।हो.।।तामें पिय झलकाइ[१२]।।प्रेम.।।
बसत हिये में पिय सदा[१३]।।हो.।।मनौं दयौ प्रगटाइ।।प्रेम.।।२४।।

१. मुख-चन्द्र का रासमण्डल प्राप्त करके २. लाल जू और प्रिया जू के हस्त-कमलों में ३. अद्‌भुत धरनी पर आकर ४. चन्द्रमा नवीन कमलों का मकरन्द ले-लेकर ५. सुख की मूल प्रिया जू ने प्रीतम को कुमकुमा [केशर] के रंग से सराबोर कर दिया ६. जिन्हें देखकर प्रीतम गेंद ही बन गये अर्थात् चंचल हो गये ७. मानों कामदेव की छोटी तोप के ८. निरवधि ९. प्रिया जू लाल जू के मुख पर लगाती हैं १०. मानों रसपूर्ण कमल [प्रिया-हस्त-कमल] चन्द्रमा [लाल-मुख-चन्द्र] को अपना पराग [गुलाल] देते हुए उससे मिल रहा है ११. उरबसी नाम एक आभूषण विशेष १२. उस उरबसी में प्रीतम का प्रतिविम्व झलक रहा है १३. जो प्रीतम सदैव प्रिया जू के अन्तर हृदय में निवास करते हैं।

भरत अरगजा सौं मिले[१]।।हो.।।दोउ मरगजे[२] गात।।प्रेम.।।
भींजि वसन तन सौं लगे।।हो.।।सुंदर रंग चुचात।।प्रेम.।।२५।।
पिय-मुख चोबा सौं मलत।।हो.।।मलत कुमकुमा भाम।।प्रेम.।।
मनौं रूप पलटत दोऊ[३]।।हो.।।प्रगट भयौ मन काम।।प्रेम.।।२६।।
गौर-स्याम पुलकित दोऊ।।हो.।।भरत अंक तजि नेम।।प्रेम.।।
प्रफुलित काम-लता[४] मनौं।।हो.।।अरुझि रही द्रुम प्रेम[५]।।प्रेम.।।२७।।
अलीं भलीं रस सौं रलीं[६]।।हो.।।ल्यांईं कुसुमित कुंज।।प्रेम.।।
कमल-दलनि की सेज पर।।हो.।।बैठे दोऊ सुख-पुंज।।प्रेम.।।२८।।
फूलनि सौं[७] वारत अली।।हो.।।फूल परम सुख झेलि।।प्रेम.।।
विलसति संपति माधुरी।।हो.।।दोऊ कंठ-भुज-मेलि।।प्रेम.।।२९।।
मोहे खग-मृग खेल लखि।।हो.।।थक्यौ हंसजा-नीर।।प्रेम.।।
झरत फूल तरु द्रवि चले[८]।।हो.।।आनँद भयौ अधीर।।प्रेम.।।३०।।
श्रीहित जुत ललितादि अलि[९]।।हो.।।फूलीं मात न अंग[१०]।।प्रेम.।।
रीझि भींजि हौं हू रही।।हो.।।हितरूपमंजरी[११] संग।।प्रेम.।।३१।।
श्रीवृन्दावन में सदा।।हो.।।संतत[१२] करहु बिहार।।प्रेम.।।
यह समाज नित चित बसौ।।हो.।।प्रेमदासि बलिहार।। हो।।३२।।

[५२-८]

फाग-कौतूहल **राग-धनाश्री**

कुँवरि-कुँवर मिलि खेलहीं, रंग रँगीलौ फाग हो।
वास बसन्ती तन रँगे, पगे प्रीति कैं पाग हो[१३]।।१।।
कुसुम-छरी सी[१४] सहचरीं, कुसुम-छरी लै हाथ हो।
रँग-रँग की सारी सजैं, सोहत दंपति-साथ हो।।२।।

१. एक दूसरे से मिलकर वे दोनों परस्पर अरगजा डाल रहे हैं २. शिथिल ३. दोनों एक दूसरे को अपना-अपना रूप देकर रूप का बदलाव करते हैं ४. रमणीय रूप की लता [श्रीप्रिया जू] ५. प्रेम-तरु प्रीतम से ६. रस से एकमेक होकर ७. उत्फुल्ल हृदय होकर ८. वृक्ष प्रेम से पिघल गये और अपने फूलों का निर्झरण करने लगे ९. श्रीहितअली जू के साथ ललितादिक सहचरियाँ १०. अंग में फूल नहीं समाती ११. वाणीकार प्रेमदास जी के गुरुवर्य गो॰रूपलालजी का सहचरी भावानुभावित रूप १२. अखण्ड रूप से १३. प्रीति के पाग से पगे हुए श्यामा-श्याम के श्रीअंग में बसन्ती वस्त्र सुशोभित हैं जो रंग से रँगे हुए हैं अथवा केशरी रंग से रँगे हुए जिनके श्रीअंग में सुशोभित बसन्ती वस्त्र भी प्रीति के पाग से पगे हुए हैं १४. इकहरे वदन वाली और कोमलांगी।

माथैं पर मुक्ता[१] हलैं, बैंना[२] बने अमोल हो।
मनौं चन्द के अंक में, उड़गन करत कलोल हो।।३।।
लियैं अरगजा केसरी, मलत स्याम-मुख भाम[३] हो।
कियौ सुनहरी झोल सौ[४],सौ, नील कमल पर वाम हो।।४।।
चंचल दृग आनन रँगे, करनि गुलाल उड़ाइ हो।
मनु पराग लखि कंज के, शशि के मृग चपलाँइ हो[५]।।५।।
मणि-मण्डल पर नाचहीं, बाजत बीन-मृदंग हो।
झूमक दै-दै गावहीं, उपजत तान-तरंग हो।।६।।
नासा के मोती डुलैं, रँगे सिंदूर सुरंग हो।
मनौं रूप की गेंद सौं, खेलत कीर अभंग हो।।७।।
सुरँग फूल तकि मारहीं, मारत फूलनि-फूल हो[६]।
कर-पिंजर तजि मनु लरैं, लाल मुनीं छबि-मूल हो[७]।।८।।
करतल-पिचका रँग भरे, आये छलन[८] पिय पास हो।
तब लगि गहि गोरी लये, दै दृग-मखि कियौ हास हो[९]।।९।।
धरि मोहन-सिर-चन्द्रिका, सारी सजी बनाइ हो।
मनु पिय तिय हित सौं भयौ, कीट भृंग कैं भाइ हो[१०]।।१०।।
वर वन्दन की धूँध में, को पहिचान्यौं जाइ हो।
दाइ पाइ[११] लपटत दोऊ, जोरि वदन[१२] मुसिकाइ हो।।११।।
इहिं विधि होरी वन मची, उमची[१३] केलि अनूप हो।
'प्रेम' सहित यौं चित बसौ, गौर-श्याम रस रूप हो।।१२।।

१. वन्दिनी के मोती २. माथे पर सुशोभित 'बैंना' नामक आभूषण ३. भामा श्रीप्रिया जू ४. सोने का पानी जैसा चढ़ा दिया है ५. मानों कमलों के पराग [हस्त-कमलों में सुशोभित गुलाल] को देखकर चन्द्रमा के हिरण [मुख-चन्द्र में सुशोभित नेत्र-मृग] चंचल हो रहे हैं ६. दोनों ओर फूलों की ही मार मची हुई है ७. हस्त-कमल रूपी पिंजड़े से निकलकर मानों छबि युक्त लाल मुनैया पक्षी परस्पर लड़ रहे हैं ८. छल करने के लिए ९. जब तक प्रीतम कुछ कर ही नहीं पाये तभी प्रिया जू ने उन्हें पकड़कर उनकी आँखों में काजल लगा दिया और जोर-जोर से हँसने लगीं १०. कीट-भृंग की रीति से मानों प्रीतम भी प्रीति पूर्वक प्रिया स्वरूप ही हो गये ११. अपना-अपना दाव प्राप्त करके १२. मुख से मुख मिलाकर १३. प्रसरित हो उठी या फैल उठी।

[५३-६]

अनुराग-तड़ाग में फाग :— राग-सोरठ

हेली खेलत होरी रंग सौं, [आजु] नवल रँगीली बाल।
लेत गुलालहि हाथ में, हेली कियौ हाथ में लाल[१] ।।१।।
झूमक सारी केसरी[२], हेली खुभी[३] कंचुकी स्याम[४] ।
मोतिनि के झूमक निरखि[५] , हेली झूम्यौ पिय अभिराम[६] ।।२।।
मुरकट[७] अति चुरकट[८] करै, हेली उर लट ढुरि[९] ढ़हराइ[१०]।
मनु-फँदवा री चक्रवनि, हेली डारी मुख-उड़राइ[११]।।३।।
श्यामल-मूठि-गुलाल लखि, हेली तिय-दृग चपल न थोर[१२]।
कमलनि सौं उड़ते मधुप, हेली जो न बँधे मखि-डोर[१३]।।४।।
लाल-पीत-सित-हरित रँग, हेली अवनी बिछे अबीर।
किये बिछौंना रूप के, हेली मदन तीर के तीर[१४]।।५।।
प्रतिविंवित ललना भई, हेली लालन[१५] कैं अँग-अंग।
रोम-रोम प्यारी रमी, हेली सोई मनु दिपत अभंग[१६] ।।६।।
बीनि-बीनि गावति सुरनि, हेली कोउ प्रवीन कर वीन।
कूजति कमलनि में मनौं, हेली हंस प्रवीन नवीन[१७]।।७।।

१. अरी सखी! जब प्रिया जू ने लाल जू का मुख माँड़ने के लिए गुलाल हाथ में लिया हो तो वे प्रिया जू की उस समय की शोभा देखकर बिना किसी प्रयास के ही आनंदित हृदय होकर प्रिया जू के बस में हो गये २. क़ेशरिया रंग की ३. कसी हुई या सुशोभित ४. काले रंग की ५. साड़ी में सुशोभित मोतियों के गुच्छों को देखकर ६. सुन्दर प्रीतम आनंद मग्न होकर झूमने लगे ७. मारवाड़ देश में पहनी जाने वाली कंचुकी ८. चकनाचूर या चूर-चूर ९. नीचे की ओर झुकती हुई या लुढ़कती हुई १०. खुली हुई या हिलती हुई ११. अरी सखी! मानों मुख-चन्द्र ने चकवाओं [मुरकट कंचुकी में सुशोभित उन्नत उरोजों] को फाँसने के लिए [उर पर सुशोभित लटों का] फन्दा डाल दिया है १२. अत्यधिक चंचल १३. प्रिया जू के चख-चाञ्चल्य को देखकर ऐसा लगता है कि यदि नेत्रांजन की डोरी से भ्रमर (काली पुतली) न बँधे होते तो वे कमलों [नेत्र-कमल] को छोड़कर उड़ जाते १४. मानों जमुना तट के निकट कामदेव ने रूप के ही बिछौना बिछा दिये हैं १५. प्रीतम १६. यह प्रिया जू का प्रतिविम्व नहीं है मानों लाल जू के रोम-रोम में बसी हुई प्रिया जू ही नित्य स्थित रूप से प्रत्यक्ष सुशोभित हो रही हैं १७. मानों नवीन कमलों [मुख-कमल] में प्रवीन हंस कूज रहे हैं।

घमड़्यौ बूका[१] अति सुरँग, हेली तहाँ अलि[२] गुंजत आनि।
मनौं गगन अनुराग के[३] , हेली बाजत रस-नीशान[४] ।।८।।
बाजू बंदनि में बँधीं, हेली बाजू बाँधे न्याइ।
अलक झलक बाँधैं छुटीं, हेली अचिरज कह्यौ न जाइ[५]।।६।।
लै पिय सौंधे पिचकई[६] , हेली छिरकत तकि तिय[७]-हीय।
मनौं कलमकारी जरी[८] , हेली प्रेम-चितरे कीय[९]।।१०।।
प्रेमदासि हित दोउ रँगे, हेली बाढ्यौ रँग धरनीहि[१०]।
मनु अनुराग-तड़ाग[११] में, हेली क्रीड़त करि-करनीहि[१२]।।११।।

[५४-१०]

रँगीले ख्याल :— राग-सोरठ

हेली खेलत होरी साँवरौ, संग रँगीली बाल।
रंग रँगीली सखिनि में, हेली करत रँगीले ख्याल[१३]।।१।।
कुसुमित बैंनीं झिलमिलत, हेली तन जगमगत अपार[१४]।
मनहुँ कनक-द्रुम पर चढी, हेली प्रफुलित लता सिंगार[१५]।।२।।
रची माँग सिंदूर सौं, हेली मोती रहे रस-भींज[१६]।
मनु क्यारी अनुराग की, हेली बये रूप के बीज।।३।।
सीसफूल तिय-सीस लखि,हेली पिय-मुख भर्‌यौ मनोज[१७]।
मनौं घन में लखि रवि-उदै, हेली फूल्यौ नील सरोज[१८]।।४।।

१. गुलाल की धूँधर २. भ्रमर ३. मानों अनुराग के आकाश में ४. रस के नगाड़े ५. यह न्यायपूर्ण बात ही है कि प्रिया जू की बाजू जिसके बंधन में बँध गई है अथवा बाजुओं ने ही जिसे बाँध लिया है – ऐसे 'बाजूबंध' संयुक्त बाजुओं से वे अपनी प्रभापूर्ण खुली अलकों को बाँधती हैं किन्तु उन खुली हुई अलकों की एक झलक मात्र ने ही लाल जू के मन को बाँध दिया। प्रिया जू अपनी अलकों को बाँधती हैं किन्तु बँध जाता है ललन का मन–इस निर्बन्ध प्रेम-बन्धन का आश्चर्य वर्णन नहीं किया जा सकता ६. सुगंधित रंग से भरी पिचकारी ७. प्रिया जू ८. पाठा०– अरी ६. अरी सखी! मानों प्रेम-चित्रकार ने जड़ाव के बेलबूटे काढ़ दिये हैं १०. धरती पर ११. अनुराग के सरोवर में १२. गज और उसकी गजनी १३. खेल १४. अपार शोभा से युक्त १५. शृंगार रस की लता प्रफुल्लित होकर १६. आनंद मूलक सुन्दरता से युक्त १७. प्रीतम के मुख पर कामदेव की कान्ति छा गई १८. मानों घन [प्रिया-केशावली में सुशोभित] में सूर्य [सीसफूल] को देखकर नीलकमल [लाल जू] प्रफुल्लित हो उठे।

अरुन बिन्दु तिय-भाल पर, हेली इकटक निरखत लाल।
कनक-कमल पर चंद लखि, हेली प्रमुदित मनहुँ मराल।।५।।
मज्जन करि रंजन नयन[१], हेली अंजन दयैं अनूप।
खंजन-गंजन विशद वर, हेली कंजनि-भंजन रूप[२]।।६।।
कर्णफूल गंडनि-दिपत[३], हेली मिले वंदिनी छोर।
मनौं फिरावत रूप की, हेली चंद लयैं चकडोर[४]।।७।।
छुटीं अलक घुँघरावरी[५], हेली झलकत अमल अमंद[६]।
किधौं रूप की मंजरी, हेली किधौं मैंन के फंद।।८।।
कनक-आरसी लखि कुँवरि, हेली फेरत बेसरि नाक[७]।
पिय-मन लखि मानौं फिरत, हेली चढ्यौ रूप कैं चाक[८]।।६।।
रचित स्याम दसनावली[९], हेली दिपत अधर जुत हास।
मनौं लाल के डबा में, हेली कनी नीलमणि-रासि[१०]।।१०।।
दुलरी नीलमणि पोत तर[११], हेली चौकी कनक अमंद[१२]।
मनहुँ स्याम घन रेख तर, हेली ऊग्यौ चौसर चंद[१३]।।११।।
ग्रीव सींव छबि मुख दिपत, हेली मुक्त-माल झलकात[१४]।
मनौं शुक्र चहुँ दिशि लसत, हेली मधि उड़राज सुहात[१५]।।१२।।

१. शोभायमान नैंनों में २. उन विशद और सुन्दर नेत्रों की छबि खंजन की चंचलता एवं कमलों की उत्फुल्लता को निंदित करने वाली है ३. कपोलों पर प्रतिविम्वित हो रहे हैं ४. मानों चन्द्रमा रूप की चकडोरी लेकर 'चकई' नामक खिलौने को फिरा रहा है ५. घुँघराली ६. वे अलकैं अमन्द और सुन्दर रूप से झलक रही हैं ७. स्वर्ण-मण्डित दर्पण में निज छबि को देखती हुईं श्रीप्रिया जू अपनी नाक की बेसर को सम्हाल रही हैं ८. उस छबि को देखकर मानों प्रीतम का मन रूप के चक्र पर चढ़ा हुआ घूम रहा है ६. मिस्सी लगाने से दन्तावली का रंग श्याम दिखाई दे रहा है १०. मानों लाल रंग के माणिकमयी [अरुणाभ अधर] डिब्बे में नीलमणि [श्याम दन्तावली] के कणों का ढेर लगा हुआ है ११. बारीक मोतियों की माला के नीचे १२. बहुत अधिक प्रभा से परिपूर्ण स्वर्ण की चौकी [गले में पहनने का एक आभूषण विशेष जिसमें कई छोटे-छोटे चौकोर खण्ड एक साथ पिरोये रहते हैं] १३. मानों श्याम बादलों की रेखा के नीचे चौकोर या चौपड़ाकृति चन्द्रमा उदित हो गया है १४. शोभा की अन्तिम अवधि मुख के साथ-साथ ग्रीवाँ सुशोभित हो रही है जिस पर मुक्ता की माला झलक रही है १५. मानों शुक्र नक्षत्रों [मुक्त-माल] के बीच में चन्द्रमा [मुख-चन्द्र] सुशोभित हो रहा है।

कनक-उरबसी नीलमणि, हेली जटित गुही मखतूल।
लियैं गोद सिंगार कौं, हेली प्रीति झुलावति झूल[१]।।१३।।
उर पर चौकी जगमगत, हेली जटित चुर्नी मृदु हेम[२]।
कुच संपुट मणि प्रान पिय, हेली मनौं तहाँ चौकी प्रेम[३]।।१४।।
फबी कुचनि पर कंचुकी, हेली अरुन वरन रस-पाग[४]।
मानौं रति-रन के सुभट, हेली सजैं कवच अनुराग[५]।।१५।।
नीलांबर सारी फबी, हेली कंचन-फूल सुहाँइ।
सरस स्याम घन में मनौं, हेली उड़गन से झलकाँइ।।१६।।
बाजू वंदनि में बँधी, हेली बाजू परम रसाल[६]।
नहिं जानौं खुलि कहा करैं, हेली बाँधैं बाँधैं लाल[७]।।१७।।
चूरीं मखतूली[८] बनीं, हेली गोरे दंडनि संग[९]।
मानौं कनक-मृनाल सौं, हेली लपटि रहे कल भृंग[१०]।।१८।।
रतन-जटित कंकन बने, हेली पहुँचिनि-सँग कर मंजु[११]।
यह अचिरजता देखिये, हेली मंडल बैठे कंज[१२]।।१९।।
रतनचौक[१३]-मुदरी[१४] बनीं, हेली करनि जराऊ चारु।
मनु उड़गन जुत कमल पर, हेली राजत हंस उदार[१५]।।२०।।

---

१. काले रेशम से गूँथी हुई और नीलमणियों से जटित स्वर्ण की 'उरबसी' [गले का एक आभूषण विशेष] उर में इस प्रकार सुशोभित हो रही है मानों प्रीति ही शृंगार रस को अपनी गोद में बैठाकर उसे झुला रही है २. माणिक्यों के छोटे-छोटे टुकड़ों से जटित स्वर्ण की ३. यह 'चौकी' नामक आभूषण नहीं है प्रत्युत उरोजों की मञ्जूषिका में रखे हुए प्रीतम के प्राण रूपी मणि की सुरक्षा हेतु प्रेम की चौकी ही नियत कर दी गई है ४. रसानन्द दायिनी ५. अनुराग का कवच ६. परम रसपूर्ण भुजायें हैं ७. बँधी हुई [बाजूबन्द से बँधी हुई भुजायें] तो वे लाल जू को बाँध देती हैं अर्थात् वे प्रिया जू की भुजाओं की छबि को एकटक देखते रहते हैं। पता नहीं वे बन्धन-मुक्त होकर क्या करेंगी ८. काले रेशमी वस्त्र पर जड़ाव के काम की चूड़ियाँ ९. गोरी-भुजदण्डों के साथ १०. भ्रमर ११. सुन्दर हाथों में पहुँची नामक आभूषण [कलाई पर पहनने का एक आभूषण विशेष जिसमें बहुत से गोल या कँगूरेदार दाने कई पंक्तियों में गुँथे हुए होते हैं] के साथ १२. यह आश्चर्य की बात है कि आज कमल [पहुँची आभूषण] जल में न होकर मंडल [रत्नजटित गोलाकार कंकण] के ऊपर खिले हुए हैं १३. 'रतनचौक' नामक हाथों का आभूषण १४. अँगूठी १५. सुन्दर कर-कमलों में जड़ाव का रतनचौक और अँगूठियाँ ऐसी छबि दे रही हैं मानों तारागणों [अँगूठियाँ] से युक्त कमल [कर-कमल] पर उदार सूर्य [जराऊ रतनचौक] सुशोभित हो रहा है।

मँहदी कर मँहिं दी लसत, हेली कौंन रीति यह वाम।
रँनी बिनु नहिं रँग चढ़त, हेली निरखि रँगे दृग स्याम[१]।।२१।।
कृश कटि आवृत[२] किंकिनी, हेली रतन-जटित कृत बैन[३]।
मनौं डिंडिमी[४] मैंन-घर, हेली बाजत आनँद दैंन[५]।।२२।।
अतरौटा कंचन-वरन, हेली लावनि लावनि-ऐन[६]।
झिलमिलात बूटीं हरी, हेली चीन चुनी छबि-सैंन[७]।।२३।।
नूपुर मणिमय क्वनित वर, हेली करि को सकत प्रसंश।
मनौं चरन-अरविंद पर, हेली नदित चैंटुवा हंस[८]।।२४।।
जाव कली शोभा झिली, हेली बने चित्र कल पाँइ[९]।
मनौं जाल अनुराग के[१०], हेली निरखि मैंन मुरझाँइ।।२५।।
बिछिया बने जराव के, हेली क्वनित श्रवत रस-सार[११]।
मानौं बाजत बीन सी, हेली होत झुनुक झनकार।।२६।।
फैलि रही शोभा गवरि[१२], हेली भरी तिय पिय कैं मोद[१३]।
मनौं सुरँग रँग केसरी, हेली फैलि रह्यौ चहुँ कोद।।२७।।
कलँगी मोतिनि की फबी, हेली सीस लाल कैं आइ।
मनौं सिंगार-तमाल पर, हेली लसत मंजरी भाइ[१४]।।२८।।

---

१. रँग देने वाली वस्तु के बिना रंग नहीं चढ़ता किन्तु प्रिया जू हाथ में लगाई हुई मँहदी किस विचित्र रीति से सुशोभित हो रही है जिसे देखते ही प्रीतम श्याम के नेत्र रँग जाते हैं अर्थात् आनन्द से परिपूर्ण हो जाते हैं २. सूक्ष्म कटि को चारों ओर से घेरे हुए ३. रत्नों के जड़ाव से रची हुई किंकिणी बोल रही है या शब्दायमान हो रही है ४. चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का छोटा बाजा जिससे डुग-डुग शब्द निकलता है ५. मानों कामदेव के घर में आनंद प्रदान करने वाली डिमडिमी बज रही है ६. स्वर्णिम रंग वाले उस लहँगे का घेर लावण्य का ही घर है ७. उसमें जटित शीशे और माणिक्यों के छोटे-छोटे टुकड़े शोभा की सैना ही हैं ८. मानों चरण-कमलों पर हंस के बच्चे बोल रहे हैं ९. सुन्दर पगों में शोभा से परिपूर्ण गुड़हल पुष्प की कली के या जावक के द्वारा चित्र अंकित किये गये हैं १०. वे चित्र अनुराग के फन्दा ही हैं ११. जो आनंद का सार प्रवाहित करते हैं अर्थात् उन बिछुवों की ध्वनि सबके हृदय को आनन्दित करती है १२. गौरांगी १३. प्रीतम को आनंद प्रदायिनी सम्पत्ति से भरी हुई गौरांगी प्रिया जू की शोभा इस प्रकार फैल रही है १४. मानों शृंगार रस के तमाल पर भाव की मंजरी सुशोभित हो रही है।

नासा-मोती थरहरत, हेली वदन साँवरे हास[१]।
पुहुपांजुलि लै वदन पर, हेली नाचत मैंन हुलास[२]।।२६।।
कनक कपिस पट[३] स्याम तन, हेली राजत अद्‌भुत रीति।
मूरतिवंत सिंगार पर, हेली मनौं छाइ रही प्रीति।।३०।।
ललित त्रिभंगी साँवरौ, हेली मुदित बजावत वैंनु।
प्रियहिं रिझावत रीझि निजु[४], हेली शोभा कहत बनैं न।।३१।।
अलकलड़ी[५] चाइनि बढ़ी[६], हेली कमल फिरावत जाइ।
तापर मधुपनि कैं निकर, हेली सरस गुंजरत[७] आइ।।३२।।
पान खात दंपति दिपत, हेली पीक-लीक[८] कल ग्रीव[९]।
मनु सीसी अनुराग की, हेली भरीं खरीं[१०] छबि सींव।।३३।।
मंदिर नवल निकुंज में[११], हेली कूजत खग नव रंग[१२]।
खेलत होरी मैंन बहु, हेली मनु गावत मिलि संग[१३]।।३४।।
प्रफुलित श्रीवृन्दाविपिन, हेली राजत आनँदकंद।
फूले स्यामल-गौर मिलि, हेली खेलत फाग सुछंद[१४]।।३५।।
कनक-कमोरिनि रँग लयैं, हेली ललितादिक अनुकूल।
रस फल जुत फूलीं मनौं, हेली रूप-लता सुख-मूल[१५]।।३६।।
कनक-पिचकई कुँवरि-कर, हेली छुटत सरस रँग पीत।
छुटत कमल नल सु मधु जल, हेली मनौं भरत अलि मीत[१६]।।३७।।

१. लाल जू के हँसते हुए मुख पर २. मानों कामदेव हुल्लास के साथ पुहुपांजुलि लिये हुए मुख की छबि पर नाच रहा है अर्थात् स्वयं को न्यौछावर कर रहा है ३. स्वर्ण के रंग का पीताम्बर ४. अपनी प्रसन्नता से ५. अत्यन्त लाड़िली श्रीप्रिया जू ६. अत्यधिक उत्साह वाली ७. गुञ्जार करते हैं ८. पीक की लकीर झलकती है ९. शोभा की अवधि ग्रीवा में १०. सुन्दर ११. रंग-रंग के पुष्पों और परागों से मण्डित नवीन निकुंजों में १२. नवीन आनन्ददायक पक्षी १३. मानों होरी खेलते हुए बहुत से कामदेव एक साथ गान कर रहे हैं १४. स्वतंत्रतापूर्वक १५. मानों सुख मूल रूप की लतायें प्रफुल्लित हो रही हैं और रसमई फल से युक्त हो रही हैं १६. मानों कमलाकृत फुहारे [प्रिया कर में सुशोभित पिचकारी] से सुन्दर बासन्ती पराग का जल [केशरी रंग] छूट रहा है और अपने मित्र भ्रमर [लालजू] को रँग रहा है।

मूठी चलत गुलाल की, हेली रुरत अलक तन लागि[१]।
कनक-लतनि में अलि लुलित, हेली मनु लखि कमल-पराग[२]।।३८।।
रँग्यौ समाज गुलाल उड़ि, हेली भोडल[३] दिपत विशाल।
मनु उड़गन उड़ि शशिनु कौं, हेली घेरि रहे नभ लाल[४]।।३९।।
गहि सारंगी[५] रंग सौं[६], हेली सारँग[७] गावत स्याम।
हँसनि झिलमिलत हीय में, हेली भयौ हार अभिराम[८]।।४०।।
काम-कली सी तिय खिली[९], हेली झिली प्रेम[१०] करि गान।
गहि प्रवीन[११] कर वीन सुर, हेली बीनि-बीनि[१२] लै तान।।४१।।
कोउ अली रस सौं रलीं[१३], हेली मिलीं देत सँग ताल।
कोऊ झाँझ सु मृदंग डफ, हेली भली बजावैं आलि।।४२।।
कोऊ बजावत कर गहैं, हेली अली मंजु मंजीर[१४]।
मानौं कल कंजनि विषैं[१५], हेली बोलत हंस अधीर[१६]।।४३।।
छुटति रँगीली रँग भरी, हेली पिचकारी कर लाल।
मनौं घन बरसत राग-जल, हेली भींजत दामिनि चाल[१७]।।४४।।

१. जब वह गुलाल श्रीअंग में लगा तो अंग चाञ्चल्य के साथ-साथ अलकावली भी चंचल हो उठी २. मानों कमल पराग [लाल जू के कर-कमलों द्वारा फेंका गया गुलाल] को देखकर स्वर्ण लता [प्रिया जू का श्रीअंग] में सुशोभित भ्रमरावली [अलकावली] चंचल हो उठीं। ३. सफेद भुड़भुड़ ४. मानों लाल गगन [उड़ाया हुआ गुलाल] में तारागण [भुड़भुड़ के कण] उड़-उड़कर चन्द्रमाओं [मुख-चन्द्रों] को घेर रहे हैं ५. एक तार वाद्य ६. आनंदित होकर ७. 'सारँग' नामक संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं और जो मध्याह्न काल में गाया जाता है ८. प्रिया जू ने प्रीतम के गान पर प्रसन्न होकर उनके हृदय में अपना हँसनि रूपी हार पहना दिया और लाल जू का हृदय सुन्दर हार बनकर प्रिया जू के वक्षस्थल पर सुशोभित हुआ अर्थात् लाल जू के सारँग गान पर प्रिया जू प्रसन्न हुईं और लाल जू ने उन्हें आवद्धवक्ष कर लिया ९. रमणीय रूप की कली जैसे खिल उठी हो ऐसी श्रीप्रिया जू ने १०. प्रेम में तन्मय होकर ११. प्रवीणा श्रीप्रिया जू ने १२. चुन-चुनकर १३. रस से एकमेक होकर १४. काँसे, पीतल आदि का बना हुआ एक वाद्य विशेष जो दो छोटी कटोरियों के रूप में होता है और जिसकी एक कटोरी से दूसरी कटोरी पर आघात करके संगीत के समय ताल दी जाती है १५. सुन्दर कमलों में १६. आनन्द से अधीर होकर १७. मानों नवीन बादल अनुराग के जल की वर्षा कर रहा है जिससे चंचल दामिनी भींज रही है।

सुरँग वसन झीने मृदुल, हेली भींजि लपटि रहे गात।
निरखत शोभा परस्पर, हेली दोउ थकित रहि जात।।४५।।
प्यारी स्वेत अबीर सौं, हेली पियहिं भरत उमगाइ।
मानौं रस सिंगार पर, हेली रह्यौ हास रस[१] छाइ।।४६।।
ताता थेई-थेई कहैं, हेली गौर-स्याम रस-भीन।
अनियारी अँखियाँ चपल, हेली बरसत रूप नवीन[२]।।४७।।
आनन पाननि सौं भरे, हेली चंचल नैंन न थोर[३]।
उड़ि जाते अलि से बँधे, हेली जो न कमल मखि-डोर[४]।।४८।।
हरौ अबीर उड़त हरत[५], हेली छबि की उठत झकोर।
गौर-स्याम-दुति मिलि मनौं[६], हेली फैलि रही चहुँ ओर।।४६।।
चारु चरन अंकित धरनि[७], हेली रहे कमल से फूलि।
निरखि थके दृग अलिनु[८] के, हेली मनौं मधुप रहे झूलि[९]।।५०।।
वन्दन मूठिनि भरि उड़त, हेली अरुन भयौ नभ जान।
तान्यौं सकल समाज पर, हेली मनु अनुराग-वितान।।५१।।
लाल-पीत-सित-हरित रँग, हेली बूँद बनी अँग-अंग।
मानौं कंचन-खम्भ में, हेली जटित चुनीं बहु रंग[१०]।।५२।।
घमड़्यौ बूका विशद उड़ि, हेली अवरक-आवृत कुंज[११]।
छिटकि रही मनौं चाँदिनी, हेली फिरत तहाँ उड़-पुंज[१२]।।५३।।
चोबा-चंदन सौं भरत, हेली सखिनु सहित पिय-बाल[१३]।
सुधि न परत को नागरी, हेली को नागर को आलि।।५४।।

१. श्वेत रंग वाला हास्य रस २. नये-नये रूप की वर्षा करती हैं ३. बहुत अधिक ४. चख-चाञ्चल्य देखकर ऐसा लगता है कि यदि वे नेत्र-कमल अंजन की काली दाम से बँध हुए न होते तो भ्रमर की भाँति उड़ जाते ५. सबके हृदय को हरण कर लेता है ६. मानों गौरांगी श्रीराधा की पीताभ और श्यामसुन्दर की नीलाभ दुति मिश्रित होकर [इन दोनों रंगों के मिश्रण से हरे रंग का निर्माण होता है] चारों ओर फैली हुई है ७. जुगलवर के सुन्दर चरण धरनी पर अंकित होकर ८. सहचरियों के ९. भ्रमर झूल रहे हैं १०. बहुत रंग वाले माणिक्यों के छोटे-छोटे टुकड़े ११. संपूर्ण कुञ्ज भुड़भुड़ से छा गई १२. तारागणों के समूह १३. सखियों के साथ श्रीप्रिया और लाल परस्पर एक दूसरे को।

नासा में मोती डुलत, हेली वंदन-रँगे सुरंग।
मानौं लटुवा रूप के, हेली देत फिराइ अनंग[१]।।५५।।
भरत अरगजनि सौं दोऊ, हेली भयौ पुलक[२] अँग-अंग।
मनौं कदंब फूले सरस, हेली स्यामल-गौर अभंग[३]।।५६।।
पिय-प्यारी खेलत मिले, हेली अलियनि में निरसंश[४]।
कंचन-कमलनि में मनौं, हेली क्रीड़त हंसिनी-हंस।।५७।।
वारति पुहुपनि सहचरी, हेली ल्याईं कुसुमित ऐंन[५]।
विलसत संपति माधुरी[६], हेली बैठे दंपति सैंन[७]।।५८।।
माल सखिनि की झिलमिलत, हेली बिच वर जुगलकिशोर।
मनौं घेरैं विवि चन्द्र कौं, हेली धर पर वृन्द चकोर।।५६।।
दंपति संपति माधुरी, हेली वरनी दुगनित[८] सोइ[९]।
उपमा हूँ तौ सार्थक, हेली इहाँ बिना नहिं होइ[१०]।।६०।।
दोहा मोहा मननि के, हेली दोहा हैं स्नेह।
जोहा उभय स्वरूप के, हेली सुख बरसत जो मेह[११]।।६१।।
अति अभूत आनँद बढ़्यौ, हेली कहाँ लौं करौं वखान।
प्रेमदासि हित चित बसौ, हेली जुगल रूप रस-खान[१२]।।६२।।

१. मानों कामदेव रूप के लट्टुओं को घुमा रहा है २. रोमांचित ३. मानों साँवल-गौर के श्रीअंग में रसपूर्ण कदंब के फूल खिल उठे हैं ४. संशय रहित होकर ५. फूलों के भवन में ६. महा मधुर प्रेम की सम्पत्ति का विलास करते हैं ७. शैया में ८. जो दोनों एक में ही मिले हुए हैं अर्थात् जिनकी प्रकृति, मन और प्राण एक ही हैं ९. मैंने उन्हीं जुगलवर की माधुर्यमयी संपत्ति का वर्णन किया है जो दोनों एक में ही मिले हुए हैं अर्थात् जिनकी प्रकृति, मन और प्राण एक ही हैं १०. निकुंज भवन के श्यामा-श्याम, उनकी क्रीड़ा और उनका परिकर आदि को छोड़कर अन्य किसी के लिए उपमा खोजना निरर्थक है। वास्तव में उपमा देना तो यहीं के लिए सार्थक सिद्ध होता है ११. ये 'दोहा' संज्ञक छन्द सबके मन को मोहित करने वाले हैं तथा प्रेम के स्वरूप का सन्दोहन करने वाले हैं; साथ ही सदा सुख-मेह की वर्षा करने वाले श्यामा-श्याम का स्वरूप देखने व दिखाने वाले हैं १२. रस की खान जुगलवर का रूप।

[५५-११]

सप्त खण्ड के नवारे में फाग :— राग-धनाश्री

खेलत होरी रँग भरे, रंग रँगीले जुगल किशोर।
मंजुल नवल निकुंज में, सुख-सौरभ सौं झिले न थोर[१]।।१।।
वास[२] बसंती तन बने, मनौं रूप-निधि से लहरात।
भूषन तन मणिमय ठने[३], फूले फुलवारी से गात[४]।।२।।
सौंधे सनी बनीठनी[५], अलीं भलीं झमकत चहुँ कोद[६]।
अति विचित्र चित्रित भईं, उदित मुदित मन विविधि विनोद[७]।।३।।
मृगनैंनी मृगमदतनी[८], लै कर मुरज बजावति बाल।
मनु कमलनि में कूजहीं, चित्र करत चैंटुवा मराल[९]।।४।।
कोउ लै डफरी[१०] रस ढ़रीं, खरीं छरछरीं[११] अलीं उदार।
लखि री ! चकरी सी फिरैं[१२], हरैं-हरैं[१३] हँसि गावति गारि।।५।।
सुघर सिरोमणि शशिमुखी, झूमक झमकि जमायौ लाग[१४]।
गावत सारँग-लोचनी[१५], सारंगी में सारँग राग।।६।।
नव जुवती नैंननि हँसैं, अमृतकुंडली लै कर ताहि[१६]।
कोउ रवाव किन्नरि सजैं, कोऊ लयैं सुरमंडल चाहि[१७]।।७।।

---

१. सुख और सुगन्ध से पूर्णरूपेण भरे हुए २. वस्त्र ३. सुशोभित ४. श्रीअंग ५. शृंगार सज्जा से सुसज्जित ६. चारों ओर ७. वे प्रमुदित मना सहचरियाँ अत्यन्त ही विचित्र रूप में चित्रित हो रही हैं और जुगलवर के विविध विनोदों से उनका रूप प्रकाशित हो रहा है ८. साँवरे वर्ण वाली बालायें ९. मराल के बच्चे अपनी कूजनि से सबको चित्रवत् करते हैं १०. छोटा डफ ११. इकहरे वदन वाली १२. अरी सखी! तू देख चकरी की भाँति चारों ओर घूमती हुई ये सहचरियाँ १३. धीरे-धीरे अथवा मन्द-मन्द स्वरों में १४. बड़े अनुराग के साथ झमकते हुए प्रभावशाली रूप में झूमक नृत्य प्रस्तुत किया १५. मृग जैसे कजरारे नेत्रों वाली सहचरी १६. अमृत कुण्डली नामक एक वाद्य जो स्वरमंडल की तरह का होता है और जिसका आकार कुण्डली मारे हुए सर्प की भाँति होता है—उसे हाथ में लेकर १७. कोई अभिलाषा के साथ सुरमण्डल लेकर बजाती हैं।

सिमिट[१] बजाइ रिझावहीं, तालनि में तालिनि दै ताल[२]।
बाजत परनि पल न परैं, निरखि चंग मुखचंग रसाल[३]।।८।।
कोऊ प्रवीन वीननि सजैं, बीनि-बीनि[४] सुर लेति नवीन[५]।
दीन करत ध्वज मीन कौं[६], भीनि रंग लचकति कटि छीन[७]।।९।।
मधु महुवरि बाजति खरी, भरीं प्रेम रस झरी लगाइ[८]।
झाँझ माँझ मन लै रहीं[९], रुनक झुनक झनकार सुनाइ।।१०।।
कनकतनी[१०] कंधनि धरैं, करत तमूरा में कल[११] गान।
आछी अछरौटी[१२] बजैं, टूटि मान हिय लागत बान[१३]।।११।।
ढ़ोलक अनमोलक बजैं[१४], गुंजत पारावत[१५] से चारु।
जलतरंग के रंग कौं, लखि[१६] उमंग जिय बढ़ति अपार।।१२।।
रूप-मंजरी सी अलीं[१७], लियैं खंजरी कर-कठतार।
बजत पखावज आवझी[१८], पणव[१९] सुनें पन छाँड्यौ मार[२०]।।१३।।

---

१. एकत्रित होकर २. गायन-वादन में समय का परिमाण ठीक रखने के लिए थोड़े-थोड़े परन्तु नियत अन्तर पर विशिष्ट प्रकारों के आघातों के साथ ही वे सहचरीगण अपनी करतल-ध्वनि के द्वारा ताल लगाती है ३. कुशल किंवा दक्ष [चंग] सहचरियों के मुख में मुखचंग नामक वाद्य देखकर और उसमें मुख्य बोलों के बीच-बीच में बजाये जाने वाले बोलों के खण्ड सुनकर किसी की पलकें नहीं पड़तीं ४. चुन-चुनकर ५. कभी कोमल मध्यम, कभी तीव्र मध्यम, कभी कोमल गान्धार और कभी तीव्र गान्धार, कभी कोमल धैवत और कभी तीव्र धैवत आदि स्वरों को लगाकर नवीन रागों का निर्माण कर लेती हैं ६. कामदेव को झुका देती हैं अर्थात् उनका गान सुनकर कामदेव पराजित हो जाता है ७. रसानंद से भींजी हुई उन सखियों की सूक्ष्म कटि लचकती है ८. प्रेम से भरी सहचरियाँ मधुर 'महुवर' नामक वाद्य को समुचित रूप में बजाकर रस की झड़ी लगाती हैं ९. झाँझ बजाकर मन को आकर्षित करती हैं १०. स्वर्णाभ अंगों वाली सहचरी ११. सुन्दर १२. 'अछरौटी' नामक एक वाद्य विशेष अथवा सितार आदि वाद्यों पर रागों के बोल अलग-अलग और साफ निकालने की क्रिया १३. जिसे सुनकर 'मान' समाप्त हो जाता है और उस वाद्य की मधुरिमा बाण की तरह हृदय में अपना स्थान बना लेती है अर्थात् उसकी स्मृति हृदय में छा जाती है १४. ढोलक में उत्तम गति बज रही है १५. कबूतर १६. 'जल-तरंग' के आनन्द को देखकर अर्थात् 'जल-तरंग' नामक वाद्य में बज रही गतियों का अनुभव करके १७. रूप की मंजरी जैसी वे सखियाँ १८. तासे की तरह का एक प्राचीन वाद्य १९. छोटा ढोल या छोटा नगाड़ा २०. जिसे सुनकर कामदेव ने सबको वश में करने की अपनी प्रतिज्ञा छोड़ दी अर्थात् वह स्वयं ही उसे सुनकर वश में हो गया।

मुरली मन मोहत खरी[१], लगि मोंहन के अधर अनूप[२]।
सो न कौंन जो इहि सुनें, परीऽब प्रबल प्रेम कैं कूप[३]।।१४।।
दंपति करनि गुलाल लै, ठुमकि-ठुमकि चलि ह्वै समुहाइ[४]।
रमकि-रमकि[५] मुख माँडिकैं झमकि-झमकि[६] भये न्यारे आइ।१५।।
मँहदी हाथनि सौं रँगी, रँग-रँग के कर लयैं अबीर।
उड़त फूँक सौं यौं बने, तने चँदोवा मनौंऽव तीर[७]।।१६।।
सरस समाज सँवारिकैं, आये मुकर-महल में धाइ।
प्रतिविंवित तन-तन भये, ललना-लाल न जान्यौं जाइ[८]।।१७।।
पचरँग तरु पचरँग लता, लपटि भयौ मंडल आकार[९]।
आगैं अंबुज यौं खिले, मनौं वन-कंकन धर्‌यौ उतार[१०]।।१८।।
रँग जल नल मंडल विषैं, मोती-मंडल रह्यौ विराजि[११]।
कोर मोर मंडल कियैं[१२], मध्य समाज[१३] बन्यौं छबि छाजि।।१६।।
गेंदैं चलति गुलाल की, लगत अंग-अँग बाढ़ति रंग[१४]।
निरखति उपमा यौं उड़ै, ज्यौं तृन उड़त पवन कैं संग[१५]।।२०।।
अरुन धूँध में[१६] मुख दिपैं[१७], चंचल दृग अंचल न समात।
अरुनोदय में शशिनु पै, मनु नटुवा निर्त्तत बिनु रात[१८]।।२१।।

---

१. समुचित रूप से २. अनुपम अधरों पर सुशोभित ३. वह कौन है जो इसे सुनकर प्रबल प्रेम के कूप में नहीं पड़ी अर्थात् सभी प्रेम के वशीभूत हो गईं ४. एक दूसरे के सामने होकर ५. झूमते हुए ६. झम-झम शब्द करके उछलते कूदते हुए ७. हाथों में सुशोभित रंग-रंग के अबीर जब फूँक मारकर उड़ाये जाते हैं तो वे ऐसे लगते है मानों जमुना के तट पर रंग-रंग के वितान तान दिये गये हैं ८. जब वे एक दूसरे के तन में प्रतिविम्वित होते हैं तो कौन लाल है और कौन ललना है-यह पहचान में नहीं आता ६. पँचरंगी गुलाल से सभी तरु और लता पँचरंगी हो गये और एक दूसरे से लिपटकर मंडलाकृत बन गये १०. उन तरु-लताओं के आगे बने सरोवरों में कमल वृत्ताकार होकर इस प्रकार खिले हुए हैं मानों वृन्दावन ने अपना कंकण ही उतारकर रख दिया है ११. चारों ओर चल रहे रंगीन जल फुहारों के बीच मोतियों का मंडल सुशोभित हो रहा है १२. मोती मंडल के किनारे पर चारों ओर मोरों ने मंडल बना रखा है १३. प्रिया-लाल और उनका सखी समाज १४. आनन्द की वृद्धि होती है १५. उस छबि को देखकर संपूर्ण उपमायें इसी प्रकार उड़ जाती हैं जिस प्रकार हवा के साथ तृण उड़ जाता है अर्थात् वह छबि अनुपम है १६. हवा के साथ उड़ती हुई गुलाल की अँधेरी में १७. सबके मुख प्रकाशित हो रहे हैं १८. मानों दिवस के उषाकाल [गुलाल की धूँधर] में चन्द्र मण्डल [मुख मण्डल] पर नर्तक [चंचल नेत्र] निर्त कर रहे हैं।

नवलासी सी[१] सहचरी, फूलनि की नवलासी ल्याइ[२]।
दई दुहूँनि कैं हाथ में, बाढ़्यौ तन-परसनि कौ चाइ।।२२।।
खेलत नवलासिनि मिले[३], अंग चुराइ[४] बचावत दाव।
मानौं रावत मैंन के, छुटे जुटे रति-रन कैं चाव[५]।।२३।।
मुक्ता-मंडल सौं चले, आये रविजा-तट छबि छाइ।
तहाँ हंस-शुक-पिकनि दै, मणिनु-पैंजनीं पग-झनकाइ[६]।।२४।।
घाट जराऊ विवि[७] बने, तिनपै मुक्त-लता रहीं झूँमि।
लपटीं तरल तमाल सौं, प्रतिविंवित रतननि की भूँमि[८]।।२५।।
मर्कतमणि से नीर में[९], फूलि रहे कंचन के कंज।
कंज-कंज प्रति गुंजरैं, मधु-मतवारे[१०] मधुकर मंजु[११]।।२६।।
लाल नवारे में चढ़े[१२], अलिगन सँग दंपति रस-ऐंन[१३]।
कहा कहौं छबि सुनि सखी! जानत जिय कहा जानैं बैंन[१४]।।२७।।
अरुनिम खन[१५] वन्दन लयौ, खेलत छँदबँद[१६] मुख लपटाइ।
निरखि रहे छबि-माधुरी, पल न परत पल जुगनि बिताइ[१७]।।२८।।
सबहिनि के तन में बनीं, रँग-रँग की लीकैं दुति-लीक।
किधौं रूप-निधि तें उठीं, ललित लहरि सी ठीकम ठीक[१८]।।२६।।

---

१. छड़ी की भाँति इकहरे वदन वाली २. फूलों की छड़ी लाईं ३. छड़ी का खेल खेलते हुए वे दोनों आपस में मिल गये ४. अंगों को छिपाकर ५. मानों रति-रण के उत्साह में भरे हुए कामदेव के शूरवीर स्वतंत्रतापूर्वक आपस में भिड़ गये हैं ६. वहाँ पर जुगलवर ने हंस, तोता और कोकिलादि पक्षियों को मणि-पैंजनी दीं जो उनके पगों में ध्वनित हो रही हैं ७. दोनों तटों पर ८. वे मोती की लतायें तरल तमाल से लिपटी हुई वृन्दावन की रत्न-जटित भूमि में प्रतिविम्वित हो रहीं हैं ६. मर्कत मणि की तरह झलमलाते हुए श्याम जल (जमुना जल) में १०. मकरन्द से प्रमत्त ११. सुन्दर भ्रमर १२. लाल रत्नों से जटित छोटी नाव में १३. रसालय श्यामा-श्याम १४. उस छबि को मेरा हृदय ही जानता है मेरे वचन क्या समझें अर्थात् उस छबि को उसी रूप में व्यक्त करना वचनों द्वारा संभव नहीं है १५. लाल रत्नों से जटित प्रथम मंजिल में १६. छल बल पूर्वक १७. युग बीत जाते हैं किन्तु उन्हें एक पल [बहुत थोड़ा समय] व्यतीत करने की अनुभूति होती है १८. श्रीअंगों में सुशोभित अनेक रंगों की रेखायें मानों कान्ति की ही रेखायें हैं अथवा रूप के समुद्र से जैसी चाहिये वैसी ही सुन्दरता की तरंगें उठ रही हैं।

छुटीं मुठी अमृत पुटी[१], सित अबीर अबरक[२] रह्यौ छाइ।
छिटकि रही मनु चाँदिनी, झलकत उड़गन[३] तिमिर नसाइ[४]।।३०।।
दुतियौ खन मणि-हेम कौ[५], तहाँ आइ खेलत सुकुँवार।
पान भरे मुख रुख लियैं, रीझि रहे सुख लखि रिझवार[६]।।३१।।
चौंप भर्‌यौ[७] चोबा लयैं, मलत बाल-उर लाल बनाइ[८]।
जो सुख इहिं छिन पिय लह्यौ, को जानैं सखि ताकौ भाइ[९]।।३२।।
प्यारी प्यार भरी खरी, भरि सौंधे पिचकारी हेम।
छिरकति पिय-हिय हिय दियैं[१०], कियौ चित्र उर चमकत प्रेम[११]।।३३।।
हीरनि कौं निरखत हरे[१२], सरस तीसरौ सुन्दर खण्ड।
आइ तहाँ दोऊ मिले, खेलनि कौ मन-चाव अखण्ड।।३४।।
जोरि अँगूठा-आँगुरी[१३], पिय अबीर लै दीनौं मेलि[१४]।
तिय-मुख लगि ऐसैं लसै, मैंन-मुहर सी झलकति हेलि[१५]।।३५।।
लाड़गहेली लाड़ सौं, लयैं अबीर सुनहिरी हाथ।
चमकि चौंधि दै पिय-मुखै, लपटावति लपटी उर साथ[१६]।।३६।।
चौथौ खंड जराइ कौ, चढ़े धाइ मन मोद बढ़ाइ।
हरे खरे पन्ना हरे[१७], झिलमिलात छबि कही न जाइ।।३७।।
कनक-कमोरी कर-लई, भरी केशरी रंग सुरंग।
कवि के मन कब के पचे, भये कहनि कौं शोभा पंग[१८]।।३८।।

१. सुन्दर दौनाकृत जैसी मुट्‌ठी के खुलने पर २. सफेद रंग का चमकीला भुड़भुड़ ३. तारागण ४. अन्धकार को दूर करके ५. दूसरा खन स्वर्ण का है जो मणियों से जटित है ६. उस खन का सुख देखकर रिझवार जुगलवर रीझ रहे हैं ७. उत्साह से भरे हुए लाल जू ८. सुन्दर ढंग से ९. उसका भाव या आनन्द १०. हार्दिक प्रेम से ११. लाल जू के उर में केशरी रंग का जो चित्र बनाया है उसमें प्रिया जू का प्रेम चमक रहा है १२. हीरों से जटित तीसरे खण्ड की शोभा देखकर प्रसन्न हुए १३. प्रीतम ने अँगूठे से अँगुलियों को मिलाकर १४. प्रिया जू के मुख पर लगा दिया १५. अरी सखी! उस समय प्रिया जू के मुख की शोभा कामदेव के टकसाली ठप्पे की तरह झलक रही है १६. लाड़ गहेली श्रीप्रिया जू प्रीतम के मुख पर चमक की चौंध देकर सुनहिरी अबीर लपटा देती हैं और साथ ही स्वयं भी उनके हृदय से लिपट जाती हैं १७. उस चतुर्थ खण्ड में बहुत सुन्दर हरे-हरे रंग के बहुमूल्य रत्न [पन्ना] झिलमिला रहे हैं १८. कितने समय से बहुत परिश्रम करके भी इस शोभा का वर्णन करने में असमर्थ हैं।

लाल लालची बाल पै, चाहत ओज्यौ[१] रंग उमाँहि।
तब लगि भरि ललना गई, भयौ हास सबहिनु कैं माँहिं[२]।।३९।।
अब तौ अपने दाइ कौं[३], चाहत प्यारौ जिय ललचाइ।
चंचल तन कुंडल हलैं, नासा में मोती विडुलाइ[४]।।४०।।
भरि कुमकुम[५]-रँग पिचकई, पिय प्यारी पर दई चलाइ।
चित्र विचित्रित उर कियौ, भींजि वसन-तन रंग चुचाइ।।४१।।
खंड-खंड जिय कैं करै[६], खंड पाँचमौं अति अभिराम।
मोतिनु की जाली जुरी, तामें खेलत स्यामा-स्याम।।४२।।
चंदन-वंदन मेलिकैं, तामें नीर गुलाब मिलाइ।
भरत परस्पर सब सखी, अरस परस[७] सुख-सिन्धु बढ़ाइ।।४३।।
कमलनि के डोडानि में[८], लयैं अरगजा स्यामल-गौर।
छिरकि छबीली घात सौं, छके छैल लखि लपटत दौर[९]।।४४।।
छठौ छबीलौ खन दिपै, इन्द्रनीलमनि[१०] कौ छबि-रासि।
स्याम-भाम तहाँ यौं लसैं, ज्यौं घन में बहु चंद्र-प्रकास[११]।।४५।।
हाथ जोरि सनमुख भये, छल-बल करि लंपट रस-भीन।
भामिनि-मुख रँग सौं रँग्यौ, करतल की करि पिचक नवीन।।४६।।
गोरी अति चंचल भई, पौंछि वदन अंचल सौं आप[१२]।
रुरति अलक रोरी रँगीं, चाहति पिय कौं पकर्‌यौ धापि[१३]।।४७।।
कहति सखी सुनि भाँवती ! मैंऽव जाति हौं पिय कैं पास।
बातनि तिनहिं लगाइहौं, तब लगि तुम गहि लीजौं आसु[१४]।।४८।।
हँसति सखी पिय पै गई, सुनहुऽव एक सुनाऊँ बात।
सुननि लगे तब भाँवते, तब लगि गहे कुँवरि करि घात।।४९।।

१. ऊपर से डालना २. तो सभी सहचरियाँ एक साथ हँस उठीं ३. अपना दाव लेने के लिए ४. हिलता है ५. केशर ६. प्राणों के टुकड़े-टुकड़े कर देता है अर्थात् उस खण्ड के सौन्दर्य पर वे अपने प्राणों को न्यौछावर कर देते हैं ७. एक दूसरे का सांस्पर्श करके ८. कमलों की बड़ी कलियों के भीतरी भाग में ९. दौड़ते हुए १०. नीलम नामक रत्न जो घन की तरह नीले रंग का होता है ११. जैसे घन में [नीलम से जटित छटा खन] एक साथ अनेक चन्द्रमाओं का प्रकाश छा गया हो १२. स्वयं ही अपना मुख पोंछकर १३. अप्रत्याशित व्यवहार से चकित या दौड़कर १४. शीघ्रता से आकर।

चहुँ दिसि तें चलि लाल सौं, लपटीं जिहिं चिर सहचरि-वृन्द।
मनहुँ चन्द्र-गन में घिर्‌यौ, अवनि कवनि पर मेघ अमंद[१]।।५०।।
कहति किशोरी तौ बदौं[२], जो अब क्यौंहूँ[३] जाहु छुड़ाइ।
चतुर कहावत आपकौं, लटपटाइ[४] क्यौं रहे लजाइ।।५१।।
वेशरि लई उतारिकैं, नथ पहिराइ हँसति दै तारि।
कलँगी प्यारी कैं धरी, धरी चंद्रिका पिय-सिर नारि[५]।।५२।।
फव्यौ फाग सखि स्याम कौं, वाम वेष पायौ रस-पाग।
फूलनि कौ खन सातमौं, तामें क्रीड़त भरि अनुराग।।५३।।
फूलनि कैं मंडल विषैं[६], फूलनि सौं[७] निर्त्तत नव रीति।
उरप-तिरप लै लाग सौं, उघटत थेई-थेई करि प्रीति।।५४।।
गावत उभय[८] सुहावने, मन-भावन सखि सुभग सुजान।
बूका की मूठैं चलैं, छूटति तबहीं टूटत मान[९]।।५५।।
गोल गुलफ तरहर[१०] हरैं[११], बाजत नूपुर जरित जराव[१२]।
सुलप सरस संगीत में, मिलि नासत[१३] वीननि के राव[१४]।।५६।।
रतन-जटित बिछिया बने, गनैं कवन[१५] नख-मणि की शोभ।
मानौं मंदिर-तट लसैं, कियैं चन्द्र चौकिनि पर ओभ[१६]।।५७।।
फूलनि सौं बैंनी गुही, झूली एड़िनि लगि चिकनाइ[१७]।
मनहुँ चिकुर[१८] चंचल भये, रीझि-भींजि पग परत लुभाइ[१९]।।५८।।

---

१. बहुत सी सहचरियों के वृन्द लाल जू से लिपटकर ऐसे सुशोभित हुए मानों अपनी जीत की गर्जना करने वाला मेघ सुन्दर अवनी पर चन्द्रमाओं के बीच घिर गया है २. मैं तुम्हें चतुर तभी समझूँगी ३. किसी प्रकार से ४. शिथिल होकर ५. सखियों ने ६. उसमें ७. उत्फुल्लता से ८. श्यामा-श्याम ९. जब ताल अपने सम स्थान पर पहुँचती है तभी गुलाल की मुठ्ठी छूटती है १०. एड़ी के ऊपर की गोल गाँठ के नीचे ११. मन्द-मन्द १२. जड़ाव से जड़े हुए नुपूर १३. पाठा०-नासिक १४. [नुपूरों का] रसपूर्ण आलाप या ध्वनि संगीत से मिली हुई है और वीणा की ध्वनि को भी नष्ट कर देने वाली है १५. कौन वर्णन कर सकता है १६. मानों किसी मन्दिर [रतन जटित बिछिया] के निकट चौकियों [पग की अँगुलियाँ] पर चन्द्रमा [नख-अवली] अपनी आभा विकीर्णित करते हुए सुशोभित हो रहे हैं १७. वह चिकनी वैणी १८. केश १९. प्रिया-चरणों के सांस्पर्श की लालच से चंचल होकर।

अरुन अबीर उड़त झर्‌यौ, पर्‌यौ आइ रविजा कैं नीर।
मनौं छयौ सिंगार पै, अलि! अनुराग राग सौं धीर[१]।।५९।।
त्रिविधि समीर चलत उड़े, बहु पराग कमलनि सौं हालि[२]।
मनु दंपति पर मेलहीं[३], लै गुलाल कर जमुना आलि[४]।।६०।।
दुहुँ तट में खेलत फिरैं, हो होरी बोलत करि चैंन[५]।
इहिं सुख वरनत हे सखी! भूलत बैंननि हूँ कौं बैंन[६]।।६१।।
रतन-कुंज घाटनि बनीं, माटनि सौं[७] रँग सजनी लेति।
अटा-अटारी खोलिकैं, वारिनि ह्वै[८] छिरकत छबि देति।।६२।।
इत[९] मणिमय पिचका सजे, बजे दुंदुभी अरु सहनाइ।
भरत सखिनि कौं सहचरी, निरखत जोरी हियैं सिहाइ।।६३।।
दुहुँ दिशि तें गेंदैं चलैं, फूलनि की फूलीं रस-मूल।
मैंन-तुपी के बान[१०] जे, इनहिं देखि तेऊ रहे भूल[११]।।६४।।
उतहिं अटनि अलि रँगभरीं, इतहिं सतेसनि चढ्यौ समाज।
खेलत होरी चन्द्र से, रूप-गगन में आनँद-साज[१२]।।६५।।
तरल तरौंना श्रुति[१३] सजैं, झुके झूमिका देत झुमाइ[१४]।
नासा-वेशरि थिरकहीं, बैंना के मोती थहराँइ[१५]।।६६।।
गोरे मुख पर लसि रहीं, अगर[१६] अगरसत की वर बिन्दु।
त्यौंऽव साँवरौ मुख दिपै, अरुन फुटक सौं पूरन इन्दु[१७]।।६७।।

---

१. अरी सखी! मानों श्रृंगार रस को अपने रंग से रंजित करने के लिए उसके ऊपर सुन्दर अनुराग ही छा गया है २. त्रिविध समीर के चलने पर जमुना में खिले हुए कमल हिले और उनसे पराग उड़ा [जो कि जुगलवर के श्रीअंगों में छा गया] ३. लगाती हैं ४. स्वयं जमुना सखी ही ५. आनन्द में भरकर ६. अरी सखी! इस सुख का वर्णन करते समय बैन ही बैन को भूल जाते हैं अर्थात् उस समय के सुख का वर्णन नहीं हो पाता ७. कलशों से ८. झरोखों या खिड़कियों से ९. इधर की ओर नाव के सप्त खनों में १०. कामदेव की छोटी तोप से निकले हुए बाण भी ११. निष्तेज हो गये १२. आनँद पूर्ण सामग्री के साथ रूप के गगन में जैसे अनेक चन्द्रमा होरी खेल रहे हैं १३. कानों में १४. 'तरौंना' नामक कर्णाभूषण में लगे झूमका मन को झुमा देते हैं १५. हिल रहे हैं १६. एक प्रकार की सुगंधित लकड़ी जिसे घिसकर चन्दन की तरह बना लिया जाता है १७. लाल जू का मुख इस प्रकार छबि दे रहा है मानों चन्द्रमा पर लाल बिन्दु सुशोभित हो रहे हैं।

फूलनि के भूषन रँगे, झरत रंग तिनसौं बहु भाँति।
मुक्त-माल उर पर रुरैं, गहति पलक तिनकी कल काँति[१]।।६८।।
कोविद कोक-कलनि भरे, गुन-गन में अति गहर गंभीर।
हस्तक भेद दिखाइकैं मन-मनसिज की मेटत पीर।।६९।।
केशरि-पंक[२] कुँवरि लई, लई कुँवर कस्तूरी घोरि।
मलत वदन मन यौं भयौ, मनौं रूप पलटत चित चोरि[३]।।७०।।
पाइजेब पाइनि परीं, क्वणित किंकिनी करत सु केलि[४]।
पगनि-पैंजनी-गैंजनी, हलत ललित हिय हार-हमेलि[५]।।७१।।
अरुन पलक ह्वै[६] दृग दिपैं, आनन अति जगमगत मनोज[७]।
मानौं मँहदी सौं रँगे, खेलत खंजन खिले सरोज[८]।।७२।।
वरुनी सौं[९] बूँदैं झरैं, लाल-पीत रँग सौं रहे भींजि।
नासा-मुक्ताहल मनौं, हंस सरद कमलनि में थीजि[१०]।।७३।।
कंकन झंकनि[११] सजि रहे, झुनकति चुरी कियैं झमकान[१२]।
गान गुमाननि भरि करैं, भृकुटिनि ही में तोरति तान[१३]।।७४।।
गज-गति पाँइनु-पेलिकैं, लटकि-लटकि आवति लड़काइ।
अतर अमोल विलोलकैं[१४], करि कलोल[१५] मुख देत लगाइ।।७५।।
झोरी रोरी सौं भरी, भरि-भरि मूठी देत उड़ाइ।
भरत अंक तजि शंक कौं[१६], नाहिंन कोउ पहिचान्यौं जाइ।।७६।।

---

१. उन मोती-मालाओं की सुन्दर कान्ति पलकों को कसकर पकड़ लेती है अर्थात् नेत्र अपलक होकर उस शोभा को देखने लगते हैं २. केशर की कीच ३. जब वे एक दूसरे के मुख पर केशर और कस्तूरी मलते हैं तब मेरा मन ऐसा विचार करने लगता है कि मानों चित्त को चुराने वाले ये जुगलवर एक दूसरे के रूप को बदल रहे हैं ४. कौतूहल करती है ५. धातु के गोल टुकड़ों या सिक्कों की माला जो कण्ठ में धारण की जाती है ६. रंग और गुलाल से पलकें अरुणिम होकर ७. स्वानंग की कान्ति से ८. मानों प्रफुल्लित कमल [मुख-कमल] में मँहदी के रंग से रँगे हुए खंजन पक्षी [नैन] क्रीड़ा कर रहे हैं ९. पलकों के अग्र भाग में सुशोभित बालों से १०. नासिका का मोती इस प्रकार सुशोभित हो रहा है मानों शारदीय हंस कमलों [अधर कमलों] में विराजमान हो ११. झंकार करते हुए १२. बहुत अधिक चमकती हुई चूड़ियाँ १३. कलात्मक ढंग से गाते हुए सम पर आना १४. लहराते हुए १५. क्रीड़ा करते हुए १६. निश्शंक होकर।

नैंन-नैंन मिलि मन मिल्यौ, पुलकित भये रहे मुख ताकि[१]।
ललितादिक तृन तोरहीं, वारति पुहुप रही छबि-छाकि[२]।।७७।।
कोमल कुसुमनि की बनी, चारु चित्रसारी[३] रस रूप।
हँसत लसत आये तहाँ, नवल जुगल रसिकनि के भूप।।७८।।
किसलय सैंन सुहावनीं, तापर क्रीड़त ब्रीड़ा[४] छाँड़ि।
झमकि झरोखनि सौं लगीं, लखत सखी करि हित की आड़[५]।।७९।।
मिलत रँगमगे तन भये[६], छुटत सगवगे[७] सुन्दर केश।
निपट जगमगे सीस तें, झरत फूल रस-मूल सुदेस[८]।।८०।।
जो सुख निजुसजनी लखैं, सो सुख वरनि सकै कहि कौंन।
जो दृग सत रसना लहैं, तऊ ह्वै रहैं वरनत मौंन[९]।।८१।।
जिनकैं हिय यह रस बस्यौ, या रस में जिन कीनौं वास।
तेई रसिक रस में छके, इहिं[१०] रस तिन हिय कियौ उजास[११]।।८२।।
श्रीहितरूप-प्रताप तें[१२], जो कछु निरख्यौ नैंननि खेल।
जत्किंचित मति सौं कह्यौ[१३], प्रेमदासि हिय आनँद झेलि[१४]।।८३।।

[५६-१२]

फाग में रसानन्द :— राग-काफी

होरी खेलैं हो हो रसमय रँगीले[१५]।
गोरी-स्याम अलबेले दोऊ, श्रीवृन्दावन-चन्द छबीले।।१।।

---

१. एकटक देखने लगे २. जुगलवर की छबि देखकर तुष्ट पुष्ट हो गईं ३. शैया भवन ४. लज्जा ५. हित की ओट करके अर्थात् प्रेम में डूबकर ६. मिलने पर दोनों के श्रीअंग रसानन्द से भींज गये ७. फुलेल से भींजे हुए ८. सुन्दर ९. यदि नेत्र एक सौ जीभ भी प्राप्त कर लें तो भी उनकी वाणी अवरुद्ध हो जाती है १०. पाठा०- इन ११. जिनके हृदय में यह रस बस गया है और जिन्होंने इसी रस में अपना निवास कर लिया है अर्थात् जिनके हृदय में प्रेम मूर्ति श्यामा-श्याम के इस प्रेम रस को छोड़कर अन्य किसी रस के लिए स्थान नहीं है वे रसोपासक रसिकजन ही इस रस में छके रहते हैं और यह रस ऐसे रसिकजनों के हृदय में ही प्रकाशित होता है १२. गुरुवर्य गो० श्रीहित रूपलाल जी के चरणों की कृपा बल से १३. जितनी कुछ मेरी थोड़ी सी बुद्धि है उसी के अनुसार मैंने वर्णन किया है १४. आनंद में भरकर या आनंदित होकर १५. रस और रंग से भरे हुए गौर-श्याम हो-हो बोलते हुए होली खेल रहे हैं।

दिपत वसन-आभरन विविधि विधि, महा मनोहर अंग।
कोटिक रवि-शशि मुख पर वारौं, निरखि मदन भये पंगु[१]।।२।।
रूप-रासि गुन-रासि ललित गति, गौर-स्याम अलि-वृन्द।
सुंदर छबि मिलि भई घटा मुख, उदित अमित तहाँ चन्द[२]।।३।।
साखि[३]-जवादि[४] सुगंध भरे, भाजन कर धरैं अनूप।
मानौं कनक-कमल पर कलस, विराजि रहे बहु रूप[५]।।४।।
अरुन-पीत-सित-हरित अबीर, गुलालनि लयैं दुकूल[६]।
झुंडनि-झुंडनि प्रेम-मुनीं सी[७], झमकि रहीं मन फूल ।।५।।
जगमगात अवनी कंचन की, मणिनु जटित बहु भाइ।
मणिमय तरु धर मिलि[८] प्रतिविंवित, शोभा कही न जाइ।।६।।
कबहुँक गोरी कनक कमोरी, भरि रँग छिरकत लाल।
काम-लता[९] मनौं प्रेम-तमालहि[१०], सींचत रंग विशाल।।७।।
लीने कर-कंचन-पिचकारी, भरि केसरि कौ रंग।
पिय भामिनि कौं छिरकत घन मनौं, फिरत दामिनी-संग[११]।।८।।
सुन्दर कर-कमलनि तें उड़त, अबीर गुलाल पराग।
घुमड्यौ गगन सरस अरुणिम रँग, छाइ रह्यौ अनुराग।।९।।
ताल-मृदंग-बाँसुरी-वीना, महुवर[१२] वर मुखचंग।
मधुर झाँझ-डफ सप्त सुरनि सौं, बाजत सरस उपंग।।१०।।
त्रिविध समीर चलत अति रोचक, बाढ़त परम हुलास।
पद पटकत कर झटकत मटकत, भृकुटी नैंन विलास[१३]।।११।।

१. लँगड़े २. सबके मुखों की सुन्दर छबि ही मेघमाला बन गई जिसमें अनेक चन्द्रमा उदित होते हुए दिखाई दिये ३. होली खेल का एक पदार्थ विशेष ४. जवा कुसुम या अड़हुल के लाल फूलों से बनाया गया रंग ५. सुगंधित रंगों से भरे हुए भाजन सहचरियों के हाथ में इस प्रकार छबि दे रहे हैं मानों स्वर्ण कमल पर अनेक रूप वाले कलश विराजमान हैं ६. वस्त्रों की झोली में ७. प्रेम की मुनैया [एक प्रकार की छोटी चिड़िया] जैसी वे सहचरियाँ ८. मणिमय वृक्ष मणि-जटित अवनी से मिलकर ९. अत्यन्त रमणीय रूप वाली लता श्रीराधा १०. प्रेम के तमाल प्रीतम को ११. मानों घन दामिनी के संग फिर रहा है १२. एक प्रकार का वाद्य विशेष १३. नेत्रों से विलास करते हुए भृकुटियों को मटकाते हैं।

झूमत फिरत झूमिका बाँधैं, ललितादिक चहुँ ओर।
गावत उपजावत रँग भारी, नाहिंन आनँद थोर।।१२।।
अलक ललक सौं परसत कुच[१], रुचि सौं सचु पाइ किशोर।
मुरि चितई दृग-कोर किशोरी, रहे कुँवर कर जोर।।१३।।
बार-बार चरननि चख लावत[२], उपजावत मन मोद।
परम चतुर चित खेलनि कैं मिस[३], भुज भरि करत विनोद।।१४।।
सरसानंद अंग-अंगनि में, छाइ गयौ बहु भाइ[४]।
निरखि हितअली किशलय सैंन, बैठाये लेत बलाइ[५]।।१५।।
झलकत अंग उमंग रंग सु, अभंग करत जुत हासि[६]।
जैश्री व्याससुवन-चरननि-बल गावत, प्रेमदासि रस-रासि[७]।।१६।।

[५७-१३]

फाग-क्रीड़ा :— राग-काफी

प्यारी खेलैं होरी लाल सौं।
गह्यौ बाल मोंहन पकर्‌यौ घन, मनौं चाँदनी हाल सौं[८]।।१।।
झमकत नख कर लै वन्दन तिय, मीड़त पिय के गाल सौं।
मनौं पुजाइ मिलवत शशि कौं रवि, ल्याये कमल-मृनाल सौं[९]।।२।।
छुवत अलक सुन्दर सुन्दरि की, माँड़त वदन गुलाल सौं।
मनु निहारि कल हंस कंज मधि, गहत मधुप छबि जाल सौं[१०]।।३।।

१. लालच के साथ अलकों का और उरोजों का स्पर्श करते हैं २. प्रिया जू के श्रीचरणों को लाल जू एकटक देखते हैं ३. व्याज या खेल के बहाने से ४. अंग-अंगों में विविध प्रकार से रसानन्द छा गया ५. जुगलवर को शैया पर विराजमान करके बलैया लेती हैं ६. मन्द-मन्द मुसिक्याते हुए निरवधि आनंद कर रहे हैं ७. सखी भावापन्न प्रेमदासी रस की राशि जुगलवर का विलास गान करती है ८. बाला श्रीराधा ने मोहन को इस प्रकार पकड़ लिया है मानों चाँदनी ने शीघ्रता से घन को पकड़ लिया है ९. मानों सूर्य [प्रिया जू की वन्दन भरी हथेली] चन्द्रमा [लाल जू का मुख] को कमल मृणालों [प्रियाजू की भुजायें] से मिलवाते हुए उसकी पूजा करा रहा है १०. गुलाल-सने प्रिया-मुख पर उनकी अलकावली ऐसी लग रही हैं मानों कमलों के मध्य सूर्य को देखकर शोभा-जाल से युक्त भ्रमर उसे पकड़ने के लिए आ रहे हैं।

'प्रेम' सहित घमड़्यौ अबीर सित,मुख दृग रूप विशाल सौं।
चढ़ि रतननि पर तरत मीन मनु, क्षीरसिन्धु में ख्याल सौं[१]।।४।।
[५८-१४]

फाग केलि :— राग-काफी

हो होरी खेलत रंग सौं।।टेक।।
लाल-बाल भूषन सजे, लाल रतन के लाल[२]।
वसन बसंती तन बने, तिन पर दिपत गुलाल।।१।।
सखी साँवरी स्याम कैं, गोरी कैं अलि गौर।
छबि-तमाल दुति-बेलि की, रहीं डारि सी मौरि[३]।।२।।
झुनकत नूपुर पगनि में, रुनकत[४] कर-कठतार।
थलजनि-जलजनि में मनौं, कूजत हंस-कुमार[५]।।३।।
चंचल कर नख जुत लसैं, सित अबीर घमड़ाहिं।
मनौं चन्द कंजनि चढ़े, फिरत चाँदनी माँहिं[६]।।४।।
प्यारी कर-वन्दन लियौ, पियहिं भयौ आनन्द।
ये मुख माँड़नि कौं लगीं, वे उर मलत सुछंद[७]।।५।।
अरुझी अलकैं दुहुँनि की, कुंडल सौं रस मूल।
भूले अलि से कमल तजि, बैठे करननि फूल[८]।।६।।
मोंहन मुख मुरली धरी, ताल मोंहिनी[९] देत।
जो गति वंशी में बजै, सो गति चुरियन[१०] लेत।।७।।

---

१. विशाल रूप से युक्त मुख और नेत्रों में सफेद अबीर घुमड़ उठा है अथवा मुख और नैंनों में विशाल रूप से सफेद अबीर छाया हुआ ऐसा लग रहा है मानों दूध के समुद्र [स्वेत अबीर युक्त मुख] में रत्नों पर चढ़े हुए मीन [नैंन] तैर रहे हैं २. प्रिया जू और लाल जू ने लाल रत्नों के लाल-लाल आभूषण ही धारण किये हैं ३. वे साँवरी और गोरी सहचरियाँ ऐसी लग रही हैं मानों छबि- तमाल और दुति-बेलि की शाखाओं पर मंजरी सुशोभित हैं ४. बजती है ५. मानों गुलाबों और कमलों में हंस के बच्चे बोल रहे हैं ६. मानों चन्द्रमा [नख] कमलों [कर] पर बैठे हुए चाँदनी में डोल रहे हैं ७. स्वतंत्रता के साथ ८. जैसे कमलों को भूलकर और त्यागकर भ्रमर कर्णफूल (कानों का आभूषण या करना नामक एक प्रकार का फूल) पर बैठे गये हैं ९. मोंहनी श्रीप्रिया जू १०. अपनी चूड़ियों में।

कवि कब के हारत भये, वरनन कौं ये खेल।
तातें मम चित में बसौ 'प्रेम' सहित यह केलि[१]।।८।।
[५६-१५]

फाग में रास रस :— राग-गौरी

रँग होरी खेलत, लाल बाल सुकुमारी।
सँग लियैं सहचरी, बहु अबीर भरि थारी।।
ह्वै लाल गुलालनि[२], जगमगात अति भारी।
मनौं अनुरागनि की, फूलि रही फुलवारी।।टेक।।१।।
फूलि रही फुलवारी अँग-अँग, रँग-रँग विन्दु लसायैं[३]।
थरहरात नासा में मोती, अधरनि सौं छबि पायैं[४]।।
झनकत कटि किंकिनि, नूपुर नदत महारी।
मनौं सीखे मनमथ, इनहीं सौं वीना री[५]।।२।।
चन्द्र कान्ति मणिमय मंडल, इक अधिक[६] विराजै।
तापर निर्त्तत गौर-श्याम अति छबि सौं छाजैं।।
मोर मुकट पिय कैं बन्यौ, कटि काछनी सुरंग।
बनी कुँवरि कैं चन्द्रिका, झूमक सारी अंग।।
खेलत रस होरी, रचि-रचि रास रसाल[७]।
लै कर-कमलनि में, मारत मूठ गुलाल।।३।।
गजक[८]-मुरज-मिरदंग, ताल-बाँसुरी सुहाई।
अमृतकुण्डली[९] माँहिं, बजत अछरौटि[१०] निकाई।।

---

१. कविगण तो कब के हार चुके हैं [किन्तु मैं कवि नहीं हूँ आपकी किंकरी हूँ] अत: प्रेम की यह क्रीड़ा मेरे चित्त में निवास करती रहे २. लाल गुलाल से रंजित होकर ३. सुशोभित किये हुए ४. अधरों की लालिमा से प्रतिविम्वित होकर वह मोती ५. किंकिणी और नूपुर नाद नाद से ही मानों कामदेव ने वीणा बजाना सीखा है अर्थात् इनका किंकिणी और नूपुर नाद ही कामदेव को अपना शिष्य बना रहा है ६. अत्यधिक सुन्दर ७. रसपूर्ण रास की रचना करते हुए रसमई होली खेलते हैं ८. 'गजक' नामक एक वाद्य विशेष ९. स्वरमंडल की तरह का एक बाजा जिसका आकार कुंडली मारे हुए सर्प की तरह होता है १०. 'अछरौटी' नामक एक राग विशेष अथवा राग के बोलों को अलग-अलग और साफ निकालने की क्रिया।

गावत गौरी[१] रँग भरी सातौं सुरनि जमाइ[२]।
टूटत मान[३] बान से छूटत, ताननि लेत जिवाइ[४]।।
हँसि-हँसि मुख बोलत, थेई-थेई कल वानी।
अति लटकि चलनि में, लचकत कटि रस-सानी।।४।।
उड़ि-उड़ि अरुन अबीर, धीर[५] नभ में घमड़ायौ।
मनु शीतल रवि[६] आजु, चँदोवा[७] सौ ह्वै आयौ।।
ताकी[८] सौरभ लै मधुप, करत फिरत गुंजार।
मानौं रस सिंगार के, बजत निशान अपार।।
बहु घमड्यौ बूका[९], विफिरत सखी उमाहीं[१०]।
मनु फिरत चन्द-चय[११], विमल चाँदनी माँहीं।।५।।
कनक पिचकई भरि केसरि-रँग भरत बिहारी।
ताहि निरखि दै रही ओट, झीनौं पट प्यारी।।
तामें ह्वै छनिकैं सुरँग, छींट परीं मुख चारु।
कवि पै कहु कब ह्वै सकै, या दुति कौ निरधार[१२]।।
लखि तिय की[१३] शोभा, पिय बहु विधि छबि लूटी।
न रह्यौ कर में कर, तब पिचकारी छूटी[१४]।।६।।
भरि सौंधे पिचकारी, प्यारी भरत लाल कौं।
करत कलमकारी[१५] सी अँग-अँग, करत ख्याल कौं[१६]।।
फूलनि के भूषन बने, गौर-साँवरे गात।
भींजे पचरँग रंग सौं, शोभा वरनी न जात।।

१. सन्ध्या समय गाई जाने वाली एक रागिनी २. सातों स्वरों को समुचित स्थान पर प्रदर्शित करते हुए ३. तानों की प्रस्तुति में संगीत शास्त्र वर्णित कीर्तिमान टूट जाते हैं अथवा उल्लंघित हो जाते हैं और उनके स्थान पर नये कीर्तिमान स्थापित हो जाते हैं ४. तानों के द्वारा श्रोताओं के प्राणों का पोषण करते हैं ५. एक रस या सुन्दर ६. शीतल सूर्य का अरुणिम प्रकाश ७. वितान ८. उस सुगंधित गुलाल की ९. सफेद भुड़भुड़ की धूँधर १०. उत्साहित सहचरियाँ उस धूँधर में डोल रही हैं ११. चन्द्रमाओं के समूह १२. कहिये कवि के द्वारा इस छबि का निर्धारण कब हो सकेगा अर्थात् कविजन इस छबि का वर्णन करने में असमर्थ हैं १३. प्रिया जू की १४. लाल जू का हाथ उनके बस में नहीं रहा तब पिचकारी भी उनके हाथ से गिर गई १५. चित्रकारी १६. नई-नई युक्तियाँ सोचते हुए अथवा खेल ही खेल में।

रँग छयौ है सबनि पर, करवर लाल गुलाल।
सुधि परत न को अलि, को लालन[१] को बाल[२]।।७।।
विलुलित उर पर हार, चारु दोऊ ओरी सौं।
रुरत अलक करि झलक[३], रँगीं सुरँगित रोरी सौं।।
चोटी लै लोटी मननि[४], रही पगनि सौं लागि।
मनौं फनी डरि चन्द्र सौं, छिपत कमल मधि भागि[५]।।
चंचल चख सोहत, मोहत काननि लागे।
वरुनिनु[६] पर राजत, अरुण बिन्दु छबि पागे।।८।।
फूलनि की नवलासी[७], लै कर माँहिं छबीले।
दाइ बचाइ परसि तन, हँसि-हँसि परत रँगीले।।
खेलत फूलनि सौं अली, फूलनि मार मचाइ[८]।
दुहूँ ओर दंपति खरे, बढ़वत चौंप बनाइ[९]।।
कोऊ अद्भुत रस कौ, खेल मच्यौ रँग भीनौं।
यह सुख वरनैं जो, ऐसौ को परवीनौं।।९।।
लै-लै वंदन हाथ, घात हिय जिय में धारे।
रमकि-रमकि मुख मलि-मलि, झमकि-झमकि भये न्यारे।।
कुसुम गेंद लै गेंद ह्वै[१०], उछरत फिरत उदार।
आवत गेंद गेंद सौं मारत, दोऊ चतुर खिलार।।
रँग कनक-कलसियन, ओजाओजी लाई[११]।
कोऊ भरत अरगजनि, चोबा-कीच मचाई।।१०।।
घोरि श्याम रँग मृगमद[१२], गोरी कैं मुख लायौ[१३]।
लै कुमकुम[१४] गोरी, मोंहन कैं मुख लपटायौ।।

१. लाल जू २. प्रिया जू ३. आभा युक्त होकर ४. चोटी ने सबके मन को आकर्षित करके उन्हें पूरी तरह से लूट लिया ५. मानों सर्प [चोटी] चन्द्रमा [मुख-चन्द्र] के डर से भागकर कमलों [चरण-कमलों] के मध्य में छिप रहा है ६. पलकों के बाल ७. छड़ी अथवा गेंद ८. फूल-गेंदों को एक दूसरे पर मारकर ९. सहचरियाँ फूलों की गेंद बनाकर जुगलवर का उत्साह वर्द्धन करती हैं १०. गेंद की तरह चंचल होकर ११. एक दूसरे पर उड़ेल देते हैं १२. कस्तूरी का काला रंग १३. लगा दिया १४. केसर का पीला रंग।

बढी परस्पर माधुरी, सुन्दर सुखद सरूप।
मानौं फगुवा में दुहुँनि, पलटि लये निज रूप[१]।।
रँग भींजि वसन तन, ललित गतिनि लपटाने।
टपकत रँग तिनसौं, भाव अनूपम ठाने[२]।।११।।
हार जीति नहिं मानत, जानत खेल सदाई।
सदा रहत रस पगे, नहिंन पल अंतरताई[३]।।
रूप रसासव सौं छके, अति आनंदनि झेलि।
निजु दासिनि कैं हेत विवि, करत विविध विधि केलि।।
हित रसिकन कौ धन, यह समाज सरसायौ[४]।
नित प्रेमदासि कैं, रहहु चित्त में छायौ[५]।।१२।।

[६०-१६]

राग-बिहागरौ

रँग होरी गोरी हो, खेलति लाल सौं।
वंशी सँग नुपुरनि बजावति, गावति तान रसाल सौं[६]।।१।।
कनक-पिचकई भरि केसरि-रँग, छिरकत हँसि-हँसि ख्याल सौं[७]।
रीझि-रीझि रस-भींजि रहे छबि, निरखत नैंन विशाल सौं[८]।।२।।
बाजत ताल-मृदंग-चंग-डफ, चलत ललित भ्रुव ताल सौं[९]।
भावनि भरि भाजत राजत अति, मलि-मलि वन्दन गाल सौं।।३।।
अलीं भलीं रस रलीं रँगीली, बाँधैं फैंट गुलाल सौं[१०]।
'प्रेम' सहित तृन तोरि होति बलि, मधुप निवारि रुमाल सौं[११]।।४।।

---

१. अपने-अपने रूप पलट लिये अर्थात् श्याम ने गोरी श्रीराधा का और श्रीराधा ने श्याम का वर्ण धारण कर लिया २. इस दृश्य ने एक अनुपम भाव ही उपस्थित कर दिया ३. एक पल का भी अंतर नहीं होता ४. यह रसपूर्ण होली का खेल हित रसिकों की ही अधिकृत सम्पत्ति है ५. नित्य प्रति चित्त में स्थिर बना रहे ६. लाल जू की वंशी के मधुर स्वरों के साथ प्रिया जू अपने नूपुरों को बजाती हैं और रसभरी तानें लेकर गाती हैं ७. खेल के साथ ८. बड़े-बड़े नैनों से ९. ताल के साथ भौंह-संचालन करते हैं १०. गुलाल से भरी हुई फेंटें बँधी हुई हैं ११. सहचरीगण रुमाल से भ्रमरों को दूर करती हैं।

[६१-१७]

राग-कान्हरौ

किशोरी गोरी रंग-बोरी[१], होरी खेलैं प्यारी लाल सौं।
कोइक छबीली छटा छूटी घन रसाल सौं[२]।।१।।
झूमरि दै-दै गावहीं चलि[३] गयन्दिनि चाल सौं।
लटकि मटकि पग धरैं पिय गति मराल सौं[४]।।२।।
ताल-मृदंग में बाजे चन्द्रागति[५] चटक ताल सौं[६]।
खंजरी की वर गुंज री हो वे मंजु री आलि सौं[७]।।३।।
कोकिल कंठियाँ प्रेम की बंटियाँ भईं निहाल सौं[८]।
प्रेम रँगीली छबीली गारियाँ गावैं धमाल सौं[९]।।४।।
नैंन घुमावहीं कर फिरावहीं प्यारी ख्याल सौं[१०]।
मानौं कमल पै चन्द चढ़े नख मधुप झाल सौं[११]।।५।।
मैंन के खंजन नैंन खेलैं फँदे शोभा-जाल सौं।
रुरति बेसरि मोती डुलैं मुख कंचन थाल सौं[१२]।।६।।
नीली छबीली अँगिया अंग में माल प्रवाल सौं[१३]।
वारने होत अनुराग सिंगारहि देखे ता काल सौं[१४]।।७।।

---

१. होरी के रंग में अथवा आनंद में डूबी हुई २. घनीभूत रसालय श्रीराधा से कोई एक छबीली छटा विकीर्णित हुई अथवा उनके साथ कुछ एक सहचरी इस प्रकार सुसज्जित हैं मानों घनीभूत रसालय श्रीराधा से ही छबीली छटा विकीर्णित हुई है ३. पाठा०- गावदीं सहिये ४. हंस की मंद गति से ५. मृदंग की एक गति विशेष ६. चटकपूर्ण ताल के साथ ७. सुन्दरी सहचरियों के द्वारा खंजरी [एक प्रकार की छोटी डफली] की आनन्द पूर्ण सुन्दर ध्वनि हो रही है ८. प्रसन्नता के साथ प्रेम का फन्दा बन गईं हैं अर्थात् जो उनके गान को सुनता है वही उनके प्रेम-जाल में फँस जाता है ९. होरी धमार गायन के माध्यम से अथवा उछलकूद करती हुई अथवा धमार ताल लेती हुई १०. खेल के साथ ११. भ्रमरों को दूर करते समय या उड़ाते समय उनकी छबि ऐसी लगती है मानों कमलों [कर] पर चन्द्रमा [नख] चढ़े हुए हैं १२. स्वर्ण थाल की भाँति चमकते हुए मुख पर १३. मूँगा की माला के साथ १४. नील अँगिया और लाल मूँगाओं की माला को देखकर अनुराग और शृंगार उसी समय न्यौछावर हो जाते हैं अथवा इस अवसर पर शृंगार रस को प्रिया जू के उन्नत उरोजों में विराजमान देखकर मूर्तिमान अनुराग भी उसकी बलैया ले रहा है।

मोंहन की दृग दीठि डसी गई अलक-व्याल सौं[१]।
सुधा श्रवै चन्द्रमुखी मुसिकनि प्रतिपाल सौं[२]।।८।।
कनक-कमोरियाँ बोरियाँ रँग में आलियाँ हाल सौं[३]।
अमी-कलश सौं तारे मानौं शशि प्रीतम बाल सौं[४]।।६।।
कंचन की पिचकारी धारी पिय हत्थ[५] उताल सौं[६]।
मानौं मनमथ-बाण सजे सखी! सुन्दर ढाल सौं[७]।।१०।।
अवनी रंग सुरंग बढ्यौ सखी खेलैं सँभाल सौं[८]।
विविध कमल फूले मानौं अनुराग-ताल सौं[९]।।११।।
रंग विरंग अबीर अली कर कुँवरि कृपाल सौं[१०]।
चन्द की भेंट पराग करैं मानौं कमल मृनाल सौं[११]।।१२।।
वन्दन छबि सौं लावदीं[१२] प्यारी पिय के गाल सौं।
पूजत कमल चन्द मानौं अनुराग नाल सौं[१३]।।१३।।
दिपत मुख की माधुरी सुरंग तन गुलाल सौं[१४]।
अरुण घन पै चन्द चढ़े मानौं दुति उछाल सौं[१५]।।१४।।

१. प्रिया जू की अलक रूपी सर्प से मोहन के नेत्रों की दृष्टि डस ली गई है २. तब चन्द्रमुखी श्रीराधा मधुर मुसिक्यान रूपी अमृत का निर्झरण करके अपने प्रीतम का प्रतिपालन करती हैं ३. प्रेम से ४. मानों प्रिया जू का संकेत पाकर तारागणों [सहचरियों] ने अमृत का कलश लेकर प्रीतम-चन्द्र को भिंजा दिया अथवा मानों जुगल चन्द्रमा (प्रीतम और बाल) की सम्मति से उनका अमृत-कलश लेकर तारागणों ने सबको भिंजा दिया है ५. अपने हाथ में ६. शीघ्रता से ७. अरी सखी! ऐसा लग रहा है मानों सुन्दर प्रकार से मन्मथ के बाण सुसज्जित हैं ८. सावधानी के साथ ६. अनुराग के सरोवर में १०-११. कृपालु कुँवरि के मुख से अर्थात् प्रिया जू के मुख पर अबीर लगाते हैं। मानों कमल [सहचरियों के कर] मृणाल [भुजाओं] के द्वारा चन्द्रमा [प्रिया-मुख] को पराग [रंग-बिरंगी अबीर] की भेंट करते हैं अथवा कृपालुता के साथ कुँवरि श्रीराधा अपनी अलियों के द्वारा प्रीतम ललन पर रंग विरंगे अबीर लगाने का उपक्रम करती हैं। इस छवि को देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानों कमल (प्रिया जू) अपने मृणाल (सहचरियों की भुजाओं) के द्वारा चन्द्रमा (प्रीतम) को अपना पराग (अबीर) भेंट कर रहा है। १२. लगाती हैं १३. मानों कमल [प्रिया-कर] अनुराग के नाल [प्रिया जू की वन्दन से सनी हुई भुजायें] से चन्द्रमा [लाल-मुख] को पूजते हैं १४. गुलाल से श्रीअंग सुरंगित हो रहा है १५. मानों अरुण घन पर बढ़ती हुई द्युति के साथ चन्द्रमा चढ़ रहे हैं।

केसरि की वर बिन्दु झलकदीं[१] साँवरे भाल सौं[२]।
फूलि रही प्रीति मानौं सिंगार-तमाल सौं[३]।।१५।।
गोरे वदन फुटक[४] चोबेदियाँ[५] छबि विशाल सौं[६]।
मानौं कनक के कमल फूले भृंग-माल सौं[७]।।१६।।
फूली कनक की बेलि बिहारिनि-आलियाँ डाल सौं[८]।
प्रेमदासि हित वारी गुलाल लै संग रुमाल सौं[९]।।१७।।
[६२-१८]

राग-षट

आजु नाचत दंपति मणि-मण्डल पर, बाजत नूपुर झननननन[१०]।
मिलि करत गान लै भ्रुवनि मान[११], अब लेत तान[१२] तनननननननन[१३]।।
उघटत[१४] संगीत अति अमल रीति[१५] भये, मगन मीत लायैं लगननन[१६]।
ललितादि चारु सुन्दर अपार, आछैं देत तार छबि सँगननन[१७]।।
कल करत रंग दोउ[१८] सुलप संग[१९], वीना-मृदंग बाजैं गननननन[२०]।
बढ्यौ 'प्रेम'-सिन्धु लखि थक्यौ चन्द,
लह्यौ आनँदकंद रँग्यौ रँगननन[२१]।।

१. चमकती हैं २. लाल जू के भाल पर ३. मानों शृंगार रस के तमाल पर प्रीति प्रफुल्लित हो रही है ४. छोटी-छोटी बूँदें ५. काले रंग का एक सुन्दर पदार्थ और उस सुन्दर पदार्थ की छींटें ६. अत्यधिक छबि से ७. मानों भ्रमर-माल से आवृत [चोबा की बूँदें] स्वर्ण कमल [नित्य नवल प्रिया-मुख] फूल रहा है ८. प्रिया जू की सहचरियाँ डाल से निकली हुई स्वर्ण बेलि जैसी प्रफुल्लित हो रही हैं अथवा सभी सहचरियाँ इस प्रकार शोभा दे रही हैं मानों वे प्रफुल्लित स्वर्ण-बेलि बिहारिनि से ही निकली हुई शाखाओं के रूप सुसज्जित हैं ६. उन्हीं सहचरी-यूथ के संग में सखी भावापन्न प्रेमदासी भी रूमाल में गुलाल लेकर बलैया लेती हैं १०. नूपुरों के बजने का शब्द ११. भौंहों में ही ताल के संपूर्ण विरामों को दिखाते हुए १२. संगीत में गाने बजाने का वह अंग जिसमें सौन्दर्य लाने के लिए बीच-बीच में कुछ स्वरों को खींचते हुए अर्थात् अधिक समय तक उतार-चढ़ाव के साथ उच्चारण करते हुए कलात्मक रूप से उनका विस्तार किया जाता है १३. तानोच्चारण के शब्द १४. प्रकट करते हैं १५. संगीत के शब्दों में ही स्वरों का उच्चारण करते हुए १६. अनुरक्ति या अनुराग के साथ १७. शोभा के साथ ताल देती हैं १८. पाठा०-शशि १६. सुन्दर आलाप के साथ २०. वाद्यों की गर्जना या समूह २१. चन्द्रमा ने आनंद का मूल प्राप्त कर लिया और वह हित रंग से रँग गया।

[६३-१६]

राग-काफी

नाचैं दम्पति आजु सखी री, बाजत नूपुर झननननननननन[१]।
करत गान रस-खान रँगीले, लेत तान तननननननननननन[२]।।
थेई-थेई कहि बोलत डोलत, गौर-श्याम लायैं लगननननननन[३]।
'प्रेम' सहित ललितादि बजावति, वीना-वैंनु करि रँगनननननन[४]।।

[६४-२०]

राग-ईमन

होरी खेलैं री प्यारी अपने पिय सौं,
लटकि मटकि मंडल मधि राजैं।
गान-तान में प्रवीन, गावत स्वर बीनि-बीनि[५],
नूपुर झनन ननन ननन बाजैं।।
लियैं करनि सित अबीर, माँड़त मुख धमकि धीर[६],
मानौं जौन्ह कंज माँहिं छाजैं[७]।
प्रेमदासि हित वारी, रीझि भींजि सुकुमारी,
रमकि झमकि दुरि मुरि भरि[८] भाजैं।।

[६५-२१]

फाग-विनोद :-

राग-बिहागरौ

होरी खेलत दम्पति रंग रँगीले, मंजुल नवल निकुंज माँझ।
गावत राग हिंडोल तोल सुर[९], बाजत मधुर मृदंग-झाँझ।।१।।
लाल-बाल उड़वत गुलाल मिलि, पहिचान्यौं नहिं परत कोइ।
जानि दुहू कौ रहसि द्यौस मनौं, भयौ निशा अनुराग भोइ[१०]।।२।।

---

१. नूपुरों के बजने का शब्द २. तानोच्चारण के शब्द ३. अनुराग के साथ ४. सबको आनन्दित करते हुए ५. चुन-चुनकर ६. धीरता के साथ वेगपूर्वक ७. मानों कमल [कर] में चाँदनी [सफेद अबीर] सुशोभित हो रही है अथवा चाँदनी [स्वेत अबीर] में कमल [मुख-कमल] सुशोभित हो रहे हैं ८. रंग से सराबोर करके ६. स्वर को तोलकर अर्थात् उस राग में लगने वाले संपूर्ण स्वरों को समुचित प्रकार से साधकर १०. गुलाल की अँधेरी ऐसी लग रही है मानों जुगलवर की ऐकान्तिक क्रीड़ा देखकर दिवस अनुराग से सराबोर रात्रि ही बन गया है।

सुरँग पुहुप कर लै तकि मारत, देत पुहुप सौं पुहुप मारु[१]।
मानौं निकसि कमल पिंजर सौं, लाल मुनी सी लरत चारु[२]।।३।।
प्यारौ लै चोबा उर मसलत, तिय केसरि उर मलत धाइ।
हिय सौं निकसि मनौं दुहुँ की दुति, लपटि रही दोउ-उर लुभाइ[३]।।४।।
चंचल नैंननि की वरुनी[४] पर, अरुन बिन्दु अति ही रहीं राज[५]।
मनु छबि-सीप भरी रँग मोतिनु, रूप-सिन्धु में तिरत सु आज[६]।।५।।
फूलीं फुलवारी सी न्यारी, भईं चित्र अलि लखति सु खेल[७]।
'प्रेम' सहित ऐसैं हीं खेलत, करहु आइ चित माँहिं मेल[८]।।६।।

[६६-२२]

फाग विनोद :-

राग-केदारौ

कुँवरि-कुँवर रँगभीने, बोलत हो-हो हो-हो होरी।
नवल किशोर नवीन किशोरी, परम अनूपम जोरी।।१।।
ललिता ललित अबीर उड़ावत, छावत छबिनि छयौ री[९]।
मनहुँ हास रस कौ अति सुन्दर, तन्यौं चँदोवा सौ री।।२।।
गावत छैल[१०] छवीली भाँतिनु, करत चितनि की चोरी।
बाजत चंग-मृदंग-ताल-डफ, बैंनु[११]-बाँसुरी थोरी।।३।।
रँगी बाल मृगमद[१२] के रँग सौं, रँग्यौ लाल रँग रोरी[१३]।
ताहि बदौं जो अब पहिचानैं, को साँवल को गोरी[१४]।।४।।

---

१. दूसरी ओर से उसका प्रत्युत्तर फूल मारकर ही दिया जा रहा है २. मानों कमल-पिंजड़ों से निकलकर सुन्दर लाल मुनैयाँ लड़ रही हैं ३. मानों दोनों की दुति दोनों के हृदय से निकलकर एक दूसरे के हृदय में लुब्ध हो कर लिपट रही हैं अथवा लिपटकर सबको लुब्ध कर रही है ४. पलकों के आगे के बालों की पंक्ति ५. सुशोभित ६. मानों छबि की सीप [नेत्र] रँगे हुए मोतियों से भरी हुई [अरुणिम बूँदें] रूप के समुद्र [मुख] में तैर रही हैं ७. निराली या विचित्र फुलवारी सी फूली हुई सहचरीगण इस खेल को देखकर चित्रवत हो गईं ८. इसी प्रकार खेलते हुए मेरे चित्त में मिलाप करो अथवा मिलते हुए मेरे चित्त में सदा निवास करो ६. वह अबीर सबके ऊपर छा गया है और निरन्तर छाता भी जा रहा है अथवा वह सबके ऊपर छाकर सबको अपनी छबीली छबि से ढँक लेता है १०. दोनों छैल [प्रिया-लाल] ११. महुवर या वीन नामक वाद्य १२. कस्तूरी के काले रंग से १३. रोरी के लाल रंग से १४. मेरी दृष्टि में वही परम चतुर है जो अब गोरे और साँवरे की पहचान कर सके।

बाढ़्यौ रंग रँगीं जित तित बहु, नव निकुंज की खोरी[१]।
'प्रेम' सहित दम्पति नित क्रीड़त, बँधे निबंधन डोरी[२]।।५।।
[६७-२३]

विलासमयी फाग :— राग-विभास

आजु रँगीली भामिनि सुंदरि, साँवरे पिय सँग खेलति होरी।
कनक-कमोरी-कुच मनमथ के, रंगनि भरीं विविध विधि सो री[३]।।
चलत कटाक्ष धार पिचकारी, नैंन अबीर-हँसनि थोरी-थोरी[४]।
प्रेमदासि हित सुख सौरभ में[५], अँग-अँग भींजि रहे दुहुँ ओरी[६]।।
[६८-२४]

सरोवर में फाग :— राग-बिहागरौ

खेलत रंगनि होरी, रँगभीनी जोरी।
सोहति सहेली संग, सौंधे वर बोरी[७]।।१।।
रतन-जटित कल, सरसी[८] सुहाई।
सीढ़िन पै मोतिनु की, लता झूमि आई।।२।।
कुमकुम कौ नीर[९] तहाँ, नील कंज[१०] छाजैं।
तामें[११] मणि-मण्डल पै, दम्पति विराजैं।।३।।
मंडल की कोर मोर, मंडल सौ कीने[१२]।
तिनकी तनक छबि, मार मार दीने[१३]।।४।।
बाजत मृदंग-चंग, वीना बीनी घातैं[१४]।
इन्हैं सुनि उपमा कैं, दीजे सीस लातैं[१५]।।५।।

१. मार्ग २. निर्बन्ध प्रेम की डोरी से बँधे हुए ३. उनकी कुच रूपी स्वर्ण-कमोरी कामदेव के अनेकानेक रंगों से भरी हुई हैं ४. उनकी नेत्र-कटाक्षों का संचालन ही पिचकारी-धार के रूप में और मन्द-मन्द हँसनि ही अबीर के रूप में सुशोभित हो रही है ५. प्रेम खेल से होने वाले सुख की सुगन्ध में ६. प्रिया जू की ओर के तथा लाल जू की ओर के ७. सुन्दर सुगन्ध से भींजी हुईं ८. सरोवर ९. केसर का जल १०. नीलकमल ११. उस सरोवर के बीचों बीच १२. मंडल के चारों ओर मोरों ने मंडल सा बना रखा है १३. उस मोर-मंडल की रंचक छबि ने कामदेव को भी मार दिया है १४. चुने हुए दाव पेच अर्थात् उन वाद्यों में नई-नई परन दिखाते हैं १५. अर्थात् उस गान की उपयुक्त उपमा नहीं ठहर पाती।

बाँसुरी में बाजै सोई, चूरिनि में बाजै।
रीझि पिय तिय-पग, परि सुख साजै[१]।।६।।
गाननि-गरज श्रुति, भूषन ह्वै सोहैं[२]।
नूपुर क्वनित[३] मन्त्र, मोहन से मोहैं[४]।।७।।
रमकि झमकि दोऊ, सनमुख आये।
माँड़ति[५] वन्दन मुख, निरखि सिहाये।।८।।
रुरति विमल लट, रँगीं[६] रंग रोरी।
रँगे हैं मधुप मानौं, अनुराग-मोरी[७]।।९।।
सौंधे भरि पिचकारी, श्यामा-श्याम लीने।
छिरकत तकि तन, मन-मन दीने[८]।।१०।।
केसर के बिन्दु कण, वरुनी पै[९] राते[१०]।
उगलत मकरन्द, मानौं भृंग माते[११]।।११।।
चलत गुलाल मूठि, लाल घमड़ान्यौं।
भोर कौ अरुण[१२] मानौं, लै वितान तान्यौं।।१२।।
दिपैं कर नख सित, घमड़्यौ अबीरा।
मानौं कंज चढ़े रवि, चाँदनी में धीरा[१३]।।१३।।
लपटे वसन तन, झीने रँग भीने।
रूप के से खम्भ मानौं, मैंन मढ़ि दीने[१४]।।१४।।
झरैं रंग-बिन्दु भीने, भूषन सुहावैं।
मानौं रीझि अभरन, मोती वरषावैं।।१५।।

१. प्रिया जू के पगों में पड़कर सुखानुभव करते हैं २. गायन की गर्जना कानों का भूषण बनकर सुशोभित हो रही है अर्थात् कानों को उस गान से परम सुख की अनुभूति हो रही है ३. पाठा०—घुनित ४. नुपूरों की ध्वनि मोहनी मंत्र को भी मोहित करती हुई सी लगती है अथवा नुपूरों की ध्वनि मोहनी मंत्र जैसी बनकर सबको मोहित कर रही है ५. पाठा०—माँड़नि ६. पाठा०— रँजीं [रँगी हुई] ७. अनुराग की कीच के रंग में रँगे हुए हैं ८. मन से मन मिलाये हुए ९. आँखों की पलकों पर १०. लालिमा लिये हुए ११. मत्त १२. प्रात:कालीन सूर्य की अरुणिमा का १३. मानों कमलों [कर] पर चढ़े हुए सूर्य [नख] चाँदनी [सफेद अबीर] में धैर्यपूर्वक डोल रहे हैं १४. मानों रूप के खम्भों को कामदेव से मढ़ दिया है।

रंगनि की लीकैं[१] नीकैं, अंग-अंग छाईं।
मानौं शोभा-सिन्धुनि की, लहरी सी आईं।।१६।।
चमकि[२] चोबा लै लाल, बाल-उर लायौ[३]।
तामें निजु रूप ताकौ[४], चित्र सौ बनायौ।।१७।।
ताहि देखि तिय-जिय, लाज माँहिं पाग्यौ।
हिय सौं निकसि मानौं[५], प्यारौ उर-लाग्यौ।।१८।।
कमल की कुञ्ज तहाँ[६], दोऊ लपटाने।
मिले अरु बिछुरे री, जात न वखाने[७]।।१६।।
इहिं रंग रँगीं सखी, वरनति बैंना[८]।
बैननि में भये नैंन[६], साजैं सुख सैंना।।२०।।
प्रेमदासि हित छबि, कहत बनैं ना।
किये रस-पीवनि कौं, चषक से नैंना[१०]।।२१।।

[६६-२५]

रंग-रँगीले :— राग-बिहागरौ

रँगीले कुँवर दोऊ, रंग भरे खेलैं।
रंग भीने रस भीने, होरी हो हो बोलैं।।१।।
रंग भरे चोंज[११] चाव,[१२] दुहुँ दिशि साजैं।
रंग भीनी गतिनि सौं, बाजे बहु बाजैं।।२।।
रंग भीनी अंगनि, सुधंग गति न्यारी[१३]।
रीझि रहे देखि तहाँ, दोऊ पिय-प्यारी।।३।।

१. लकीरें २. चमकीला ३. प्रिया जू के उर पर लगाया ४. प्रिया जू के उर में अपने रूप का ५. मानों प्रिया जू के आन्तरिक हृदय से निकलकर ६. पाठा० –तामें ७. इस समय ये दोनों मिले हुए हैं या बिछुड़े हुए हैं - वखान नहीं किया जा सकता ८. सहचरीगण अथवा सहचरी भावापन्न प्रेमदासी उस रसकेलि का वर्णन करती हैं ६. किन्तु नेत्रों में वाणी नहीं होती और वाणी के पास नेत्र नहीं होते इसलिए वाणी में ही नेत्र हो गये [अर्थात् इस बिहार परायण रूप का दर्शन रस-वाणी के द्वारा ही किया जा सकता है] १०. इस रस का पान करने के लिए नेत्रों को रस-पात्र जैसा ही बना लिया ११. चमत्कारपूर्ण उक्ति १२. उत्साह १३. नई-नई या विचित्र।

उड़्यौ है पराग अनुराग बहु रंगा[१]।
रँगीले भये हैं जहाँ, कोटिक अनंगा।।४।।
छिरकत छींट छबि, कही नहिं जाई।
कोटिक छबीली छबि, भई तहाँ माई[२]।।५।।
रंग भरी भायनि की[३], परैं अंग चोटैं।
रंग भीने आगैं दीने, रँगे दृग ओटैं।।६।।
रंग भरे वदन शशि, सदन सुहाये।
रंग भरे हँसैं लसैं, रंगनि लड़ाये[४]।।७।।
रंग ही में रंग बाढ़्यौ, 'प्रेम' रंग गोभा[५]।
रँगीले[६] रसिकनि हियैं, रहौ यह शोभा।।८।।

[७०-२६]

प्रातःकाल का फाग खेल :— राग-ललित

नवल नागरी प्रीतम कैं सँग, भोरहिं होरी खेलनि लागी।
प्रेम मगन नाचत कछु गावत, वीन बजावत पिय अनुरागी।।
हरषि-हरषि हेरत दृग-कोरनि, अंग-अंग सुख-सौरभ पागी[७]।
मुदित गुलाल उड़ाइ भरति रँग, 'प्रेम' सहित रस में निशि जागी[८]।।

[७१-२७]

फागानुराग :— राग-अड़ानौं

खेलत रंग रँगीले[६] होरी।
रंग रँगीली सखिन माँहिं रँगि[१०], श्याम-राधिका गोरी।।१।।
झनन-झनन नुपूर झनकावति, निर्त्तत अति रस भीने।
बाजत ताल-मृदंग-बाँसुरी, गावत लै सुर झीने[११]।।२।।

१. अनुराग ही विविध रंग के पराग के रूप में उड़ा २. अरी सखी! करोड़ों छबीली छबि वहाँ प्रकट हो गईं ३. हाव-भावों की ४. सखियों द्वारा आनन्द से लाड़ लड़ाने पर या होली खेल खिलाने पर ५. प्रेमांकुरण हुआ ६. वन विहार रस के रंग में रँगे हुए ७. उनके अंग-अंग हित-सुख की सुगन्ध से पग गये हैं ८. जिन्होंने संपूर्ण रात्रि जगकर रस बिहार में ही व्यतीत की है ६. पाठा०–रँगीली १०. रँगमगे या रंग से रँगे हुए ११. महीन या पतले स्वर से।

कनक-पिचकई भरि केशरि सौं, तकत घात दुहुँ ओरी[१]।
रमकि झमकि दुरि मुरि भरि भाजति, नवल किशोर-किशोरी।।३।।
भरि-भरि मुठी गुलाल उड़ावत, चंदन मुख लपटावैं।
करत कटाक्षनि मार प्यार सौं, सुख में सुख वरषावैं।।४।।
अवनी बढ्यौ अरुन रँग तापर, छयौ अबीर बसीलौ[२]।
मनु अनुराग-सरोवर में सखि, दिपत पराग लसीलौ[३]।।५।।
कुसुम-गेंद लीने कर-कमलनि, अपु-अपने बल तोलैं[४]।
आवत गेंद गेंद सौं मारत, भये गेंद से डोलैं[५]।।६।।
सुरँग-श्याम-सित-हरित बुँदकई[६], अँग-अँग पै छबि छाईं[७]।
मानौं बहु रतननि की चूनी[८], छबि-निधि में तरि आईं[९]।।७।।
झीने वसन रंग सौं भीने, तन करि तन लपटाये[१०]।
'प्रेम' सहित खेलत नित दंपति, प्राननि-प्रान मिलाये[११]।।८।।

[७२-२८]

राग-ईमन

होरी खेलत आजु निकुंज मंजु में, नवल किशोर-किशोरी।
गावत उपजावत सुख भारी, तान तरंग न थोरी[१२]।।१।।
नव जुवतिनि के जूथ लयैं कर[१३], रँग भरि कनक-कमोरी।
मनौं अमी-कलशनि सौं डोलत, चन्द-वृन्द चहुँ ओरी[१४]।।२।।

---

१. प्रिया जू लाल-पक्ष की और लाल जू प्रिया-पक्ष की ओर घातें ताकते हैं २. वास युक्त या सुगंधित अबीर ३. सुन्दर ४. एक दूसरे पर गेंद फेंककर अपनी-अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं ५. वे दोनों गेंद पर गेंद की चोट करते हुए गेंद की तरह ही चंचल होकर इधर उधर डोलते हैं ६. बूँदें ७. छबि के साथ या छबि पूर्ण अंगों में सुशोभित हो गईं ८. रत्नों के बहुत छोटे-छोटे टुकड़े ९. छबि के समुद्र में तैरती हुई आ गईं १०. अंग से अंग मिलाये हुए ११. एक मन, एक रुचि और एक प्रकृति होकर १२. अनेकानेक प्रकार की तानें १३. नवीन सखियों के समूह अपने-अपने हाथों में १४. मानों चारों ओर चन्द्रमा के वृन्द अमृत-कलश से युक्त होकर डोल रहे हैं।

उड़त गुलाल चमकि भोड़ल[१] रह्यौ, झमकि रहे मुख यौं री।
घेरि रहे उड़गन उड़ि मानौं, शशिन अरुन नभ मौरी[२]।।३।।
'प्रेम' सहित धर बढ्यौ अरुण रँग, भरत परस्पर जोरी।
मनु अनुराग-ताल में क्रीड़त, हंस-हंसिनी सो री[३]।।४।।

[७३-२६]

फाग-चरित :— राग-मलार

रँग हो-हो होरी खेलत गोरी, रंग रँगीले लाल सौं।
दुहुँ तन वसन सुनहिरे[४] सोहत, मोहत मुसिकनि-जाल सौं।।१।।
बाजत ताल-मृदंग-चंग-डफ, गावत सुन्दर ताल सौं।
ताता थेई-थेई कहि बोलत, डोलत चाल मराल सौं[५]।।२।।
सुरँग-सुनहिरी-हरित-बैजनी, लेत अबीर रुमाल सौं।
आवत मूठ मूठ सौं मारत[६], खेलत अद्भुत ख्याल[७] सौं।।३।।
हरित अबीर बिछ्यौ अवनी पर, वन्दन बिन्दु विशाल सौं[८]।
मानौं हरित हरी धरनी मिलि, चन्द्रवधू वर बाल सौं[९]।।४।।
बूका विमल उड़ावति बनिठनि[१०], लै-लै कंचन थाल सौं।
मनौं चँदोवा करी चाँदनी, शशि लसि करनि उछाल सौं[११]।।५।।
'प्रेम' सहित भरि कनक-पिचकई, छिरकत रंग रसाल सौं[१२]।
क्यौं न करैं अब चित्र सखी ये, ह्वै रहे चित्र गुलाल सौं[१३]।।६।।

---

१. पत्तरों या वरकों के रूप में पाई जाने वाली एक प्रसिद्ध चमकीली भुरभुरी सफेद धातु २. लाल गुलालाभिषिक्त और उस पर चमकते हुए भोड़ल [अभ्रक] से मुख की शोभा ऐसी लग रही है मानों आकाश के सर्वोच्च भाग पर अरुणाभ चन्द्रमाओं को चारों ओर से उड़ते हुए तारागण घेर रहे हैं ३. अरी सखी! मानों वे हंस-हंसिनी की भाँति अनुराग के तालाब में क्रीड़ा कर रहे हैं ४. सौने के रंग और चमक की तरह ५. हंस जैसी चाल चलते हुए डोल रहे हैं ६. एक ओर से मुट्ठी में भरा हुआ गुलाल उड़कर आता है तो दूसरी ओर से भी मुट्ठी में भरा हुआ गुलाल फेंकते हैं ७. मन में उत्पन्न होने वाली नवीन बातें ८. बहुत अधिक वन्दन बिन्दुओं के साथ ९. मानों हरी धरनी [हरा गुलाल] वीरवधूटी [लाल बिन्दु] रूपी सुन्दर बालाओं से मिलकर प्रसन्न हो रही है १०. सुसज्जित होकर ११. मानों आनंद में चन्द्रमा ने अपने सुन्दर हाथों से चाँदनी को उछालकर वितान तान दिया है १२. आनंद में भरकर १३. गुलाल से चित्रित ये जुगलकर भी संपूर्ण परिकर को गुलाल से चित्रित या चित्रवत् क्यों न करें अर्थात् निश्चित रूप से करेंगे ही।

[७४-३०]

फाग विलास :— राग-ईमन

होरी नवल महल में, नवल रँगीले खेलैं।
भरे रंग वर मैंन नैंन-पिचकारी[१] चलत कटाक्ष-धार बहु,
झिलमिलात मुसिकानि मनोहर, बूका वंदन मेलैं[२]।।
वलय[३]-किंकिनी-कंकन-नूपुर, रुनुक-झुनुक बाजत कर,
ताल बाँसुरी वीना[४] गावत, अलिगन चौंपनि पेलैं[५]।
सौरभ सरस सकल विधि तन में[६], रीझि भींजि रहे कोक कलनि में[७],
'प्रेम' सहित सुख झेलैं[८]।।

[७५-३१]

रंग रँगीली जोरी :— राग-भैरवी

खेलति रँगीली पिय-सँग होरी।
फूली फुलवारी सी[९] प्यारी, लियैं सखी सँग सौंधैं बोरी[१०]।।१।।
झलकत भूषन लाल रतन के, पहिरैं वसन सुनहिरे गोरी[११]।
मनौं लगाये डाँक[१२] रंग भरि, प्रीति-सहित अनुराग छयौ री[१३]।।२।।
लाल ख्याल सौं[१४] लै गुलाल कर, तकत घात चितवत चख ओरी[१५]।
दृष्टि बचाइ दाइ[१६] लखि ललना, मलत साँवरे-मुख सौं रोरी।।३।।

१. स्वानंग-रंग भरे हुए नैनों की पिचकारी से २. मुसिक्यान रूपी बूका वन्दन डालते हैं ३. चूड़ी ४. बिहार में बज रही कंकण, किंकिणी, चूड़ी और नुपूर की ध्वनि ही करताल, बाँसुरी और वीणा आदि वाद्यों की ध्वनि है ५. अलिगन केलि का गान करके जुगल के उत्साह का वर्द्धन करती हैं ६. उनके श्रीअंग संपूर्ण प्रकार के रसपूर्ण सौरभ से युक्त हैं ७. पाठा०— सौं ८. प्रेमपूर्वक सुख स्वाद का अनुभव करते हैं ९. फुलवारी की भाँति फूलकर अर्थात् आनन्द से प्रसन्न होकर १०. सुगंध से पूर्ण सहचरियों को साथ में लेकर ११. प्रिया जू के श्रीअंग में सुनहरे वस्त्र और लाल रत्नों के आभूषण ऐसी शोभा दे रहे हैं मानों १२. कागज की तरह का चमकीला पतला पत्तर जो नगीनों के नीचे उनकी चमक बढ़ाने के लिए लगाया जाता है १३. मानों प्रीति के साथ रंग भरी हुई डाक पन्नी [सुनहरे वस्त्र] लगा दी है और उसके ऊपर अनुराग [लाल रत्नाभूषण] छा रहा है १४. खेल की नयी-नयी युक्तियों को सोचते हुए १५. प्रिया जू के नेत्रों की ओर देखते हुए उन पर गुलाल डालने का अवसर देखते हैं १६. अवसर।

थरहरात[१] बैंना[२] कैं मोती, दिपत वदन छबि-सीवाँ तोरी[३]।
मानौं कनक-कमल में खेलत, आइ अमित उड़गन से सो री[४]।।४।।
हरी-सुनहिरी-सुरँग-श्याम सित, सोहत अँग-अँग बिन्दु न थोरी[५]।
उछरीं चुनी चमकि रँग-रँग की, मनौं रूप-रतनाकर मोरी[६]।।५।।
अति इतराइ बजाइ बीन-डफ, गावत चैत[७] किशोर-किशोरी।
रमकि-झमकि दुरि-मुरि भरि भाजत,'प्रेम' सहित अलबेली जोरी।।६।।

[७६-३२]

रंग रँगीले कुँवर :—

खेलत होरी रँग भीने, कुँवरि-कुँवर अति सोहैं।
बाल-भाल पर वर गुलाल कौ, बिन्दु मुदित कल हंस साँवरौ,
सूर कमल पर जोहैं[८]।।
कनक पिचकई भरि केशरि रँग, छिरकत उर दुरि मुरि रस-भोहैं[९]।
'प्रेम' सहित मनु काम-चितेरे[१०], करी चित्रकारी
सी अँग-अँग, क्यौं न चित्र करि मोहैं[११]।।

[७७-३३]

राग-पंचम

रँग हो-हो होरी बोलत डोलत, कुँवरि-कुँवर रँगि रंगनि में[१२]।
झीने वसन रंग सौं भीने, लपटि रहे अँग-अंगनि में।।१।।

१. हिलते हैं २. प्रिया जू के सिर का एक आभूषण विशेष ३. जिसने छबि की सीमा तोड़ दी अर्थात् असीम शोभा हो रही है ४. अरी सखी! वैना के वे मोती ऐसे सुशोभित हो रहे हैं मानों स्वर्ण-कमल में तारागण आकर खेल रहे हों ५. बहुत अधिक ६. मानों रूप-समुद्र में अनेक रंगों की चमकती हुई चुन्नी [रत्न या माणिक्य के छोटे-छोटे टुकड़े] उछल रही हैं ७. 'चैती गौरी' नामक ओड़व जाति की एक रागिनी जो चैत्र मास में सन्ध्या समय अथवा रात्रि के प्रथम प्रहर में गाई जाती है। कुछ लोग इसे श्रीराग की पुत्र-वधू भी मानते हैं ८. कमल पर सूर्य की भाँति सुशोभित प्रिया-भाल पर लाल गुलाल का बिन्दु देखकर [प्रीतम रूपी] साँवरे हंस प्रमुदित हो रहे हैं ९. रस में डूब जाते हैं १०. कामदेव रूपी चित्रकार ने ११. वे जुगलवर अपनी इस शोभा से संपूर्ण परिकर को चित्र की भाँति अक्रिय और अवाक् करके क्यों नहीं मोहित करेंगे अर्थात् निश्चित रूप से सबका मन मोहित करते हैं और करेंगे ही १२. सानन्द रंग में भींजकर।

लै नवीन अलि वीन बजावति, जीव जिवावति ताननि में[१]।

भरि गुलाल की मुठ चलावति, चलत तान के माननि में[२]।।२।।

विविध अबीर उड़ावत अलिगन, लयैं सौंज सब थारनि में।

तनत वितान मनौं रँग-रँग के, 'प्रेम' सहित फुलवारिनि में[३]।।३।।

[७८-३४]

प्रेम-फाग :— राग-भैरव

खेलत प्यारी पिय-सँग होरी।

मंजुल नव निकुंज में लीने, गौर-श्याम सहचरि दुहुँ ओरी।।१।।

छाँड़त पिय रँग-धार पिचक भरि, ओट लई तिय करतल ही में।

पियत भँवर मकरंद सुने अब, कंज कंज कौ मृदु मधु पीमें[४]।।२।।

लियैं बाल केशरी अरगजौ, मलत साँवरे मुख सौं हेली।

मानौं कियौ झोल कंचन कौ[५], नील कमल पर रीति नवेली[६]।।३।।

नुपुर क्वणित[७] चारु चरननि में, करत गान दंपति रँग भीने।

सुनि-सुनि किलक मनौं हंसनि की, पढ़त मंत्र से थलज नवीने[८]।।४।।

'प्रेम' सहित उड़वत गुलाल सखि, सब समाज धूँधरि में राच्यौ[९]।

औसर पाइ लपटि रहे दोऊ, खेल किधौं लोकांजन[१०] साच्यौ[११]।।५।।

---

१. तान लेकर प्राणों का पोषण करती हैं २. वह गुलाल गीत के समस्थल पर ही गिरता है अर्थात् ताल का विराम और गुलाल का गिरना एक साथ ही पूर्ण होता है ३. मानों प्रेम पूर्वक फुलवारियों में रंग-रंग के वितान ही तन जाते हैं ४. प्रीतम पिचकारी में रंग भरकर प्रिया जू के मुख पर चलाते हैं और प्रिया जू अपने मुख-कमल पर अपने कर-कमल की आड़ करके उस रंग धार को हथेली पर ही धारण कर लेती हैं। प्रेमदास जी कहते हैं कि भ्रमर कमल-मकरंद का पान करता है— अभी तक ऐसा सुना गया है किन्तु आज की छबि को देखकर ऐसा लग रहा है कि कमल [प्रिया-कर-कमल] ही कमल [प्रिया-मुख-कमल] के कोमल पराग का पान कर रहा है ५. स्वर्ण की कलई या मुलम्मा ६. किसी नवीन प्रकार से ७. शब्दायमान हो रहे हैं ८. चारु चरणों में शब्दायमान नुपूर की धुनि सुनकर रँगभीने श्यामा-श्याम गान करते हुए ऐसे लग रहे हैं मानों हंसों की किलकारी सुन-सुनकर गुलाब ही नवीन मन्त्र पढ़ रहे हैं ९. रच गया है १०. एक प्रकार का अंजन जिसके विषय में यह प्रसिद्धि है कि इसे लगाने से लगाने वाला अदृश्य हो जाता है; उसे कोई नहीं देख पाता ११. सहचरी भावानुभावित प्रेमदास जी कहते हैं कि ये दोनों सच्चा लोकांजन लगाकर अदृश्य ही हो गये हैं अथवा खेल खेल रहे हैं।

[७९-३५]

रस वर्षीले दम्पति :— राग-कान्हरौ

ए होरी खेलत जुगल रँगीले।

झमकि रहीं ललितादिक चहुँदिशि, लयैं अबीर छबीले[१]।।१।।

बाजत ताल-मृदंग-किंकिंणी, नूपुर धुनि सरसीले[२]।

करत गान रस-खान[३] परस्पर, चौंपनि सौं अरवीले[४]।।२।।

कंचन-पिचकारी भरि केशरि, रँग कर लयैं हठीले।

छुटत कमल नल जल अनुराग मनु, दृग-अलि लखि उनमीले[५]।।३।।

अरुणिम रंग बढ़यौ अवनी पर, पिय-प्यारी रस-झीले[६]।

मनौं अनुराग-सरोवर में सखि, क्रीड़त हंस नवीले[७]।।४।।

उड़त गुलाल लाल घुमड़नि में, राजत मुख चटकीले।

अरुण गगन में उदय भये मनु, अमित चंद झमकीले[८]।।५।।

लटकत[९] पद पटकत कर झटकत, मटकत अंग लसीले[१०]।

लेत झूमरी[११] दै गरवहियाँ, हँसि-हँसि रंग-गसीले[१२]।।६।।

रुरकत लट प्यारी-उर, बन्द भये अँगिया के ढ़ीले[१३]।

पिय-मराल मनु टरत न अलि डर, लखि विवि कमल रसीले[१४]।।७।।

सकल समाज साजि सुख रँग रह्यौ, रंगनि गहल गहीले[१५]।

प्रेमदासि हित बसौ सदा चित, दंपति रस-वरषीले[१६]।।८।।

---

१. छबि से युक्त २. सरस ध्वनि के साथ ३. रस के भण्डार जुगलवर ४. उत्साह के साथ अड़ते हुए ५. मानों कमलों से अनुराग के फुहारे छूट रहे हैं जिन्हें देखकर नेत्र-भ्रमर अत्यन्त प्रफुल्लित हो रहे हैं अथवा मानों उन्मीलित [खिले हुए] नेत्र-भ्रमरों को देखकर कमल की नाल [हस्त-कमल अथवा पिचकारी] से अनुराग का रंग छूट रहा है ६. रस में आमग्न ७. नवीन हंस ८. तीव्र उजाले या प्रकाश के साथ ९. वे दोनों कभी लटकते हुए चलते हैं १०. सुन्दरता या शोभा से युक्त ११. होली के समय का एक नृत्य विशेष १२. आनन्द में कसे हुए १३. प्रिया जू के उर पर लटें बिखर रही हैं और कंचुकी के बन्द ढीले हो गये है १४. मानों भ्रमर समूह [प्रिया जू की लटों] से युक्त रसीले कमल द्वय [प्रिया-कुच-कमल] को देखकर भी प्रीतम का मन मराल वहाँ से हटता नहीं है १५. अत्यन्त गहरे रंग में रँगकर १६. रस की वर्षा करने वाले श्यामा-श्याम।

[८०-३६]

मानसरोवर में फाग :- राग-परज

होरी खेलत रंग रँगीले।
गौर-श्याम अभिराम रसिकवर, नागर नवल छवीले।।१।।
लाल नवारे में[१] चढ़ि प्यारे[२], मानसरोवर[३] माँहीं।
रूप-माल सी ललितादिक में, नाचत दै गरवाहीं[४]।।२।।
हेम-सिढी[५] में खचित रतन के, बूटा-बेलि लहरियाँ[६]।
तिनपै झूमि रहीं मोतिनु की, ललित लता छबि-भरियाँ[७]।।३।।
बनी रतन-गुमटीं[८] चहुँ तट में[९] मणि मंडल सौं न्यारी[१०]।
हंस-मोर-चकवा-चकोर तहाँ, करत कुलाहल भारी[११]।।४।।
रँग-रँग के पराग सौं रंगित[१२], नीर नवीन विराजै[१३]।
फूलि रहे बहु कमल अमल जहँ, तहँ अलि गुंजत छाजै[१४]।।५।।
पहिलौ खंड[१५] लाल रतननि कौ, शतनि जतनि सौं कीनौं[१६]।
तामें सुभग समाज[१७] सुहायौ, परम प्रेम रँग भीनौं।।६।।
जरतारी सारी प्यारी[१८] सजि, लै गुलाल कर प्यारी[१९]।
रमकि-रमकि[२०] मुख माँड़ि लाल कौ, झमकि-झमकि[२१] भई न्यारी[२२]।।७।।
लाल ख्याल[२३] सौं लै गुलाल हँसि, जोरि अँगूठा अँगुरी[२४]।
दयौ चलाइ लगत तिय-मुख पर, करी मुहर सी रँगु री[२५]।।८।।

१. लाल रत्नों से जटित छोटी नाव में २. दोनों प्रीतम ३. श्रीहिताचार्य द्वारा आविर्भूत रस वृन्दावन का एक लीलास्थल विशेष ४. रूप की माला जैसी ललितादिक सहचरियों के मध्य वे दोनों परस्पर गलवहियाँ देकर नाच रहे हैं ५. स्वर्ण की सीढ़ियों में ६. लहर की आकृति की रेखाओं का समूह ७. शोभा से भरी हुई ८. रत्नों से जटित छत्रियाँ ९. घाट के चारों ओर के किनारों पर १०. मणि-मंडल से पृथक ११. बहुत अधिक १२. रँगा हुआ १३. सरोवर का जल नये-नये रूप में दिखाई दे रहा है १४. सुशोभित १५. नौका की प्रथम मंजिल १६.जिसमें सैकड़ों उपायों से रचना की गई है १७. श्यामा- श्याम और उनका सखी परिकर १८. अपनी रुचिकर या मन पसन्द १९. प्रिया जू २०. बार-बार झूमते हुए २१. झम-झम शब्द करके उछलते कूदते हुए २२. दूर २३. मन में होने वाला किसी प्रकार का नवीन विचार २४. अपने अँगूठे से अँगुलियों को मिलाकर गुलाल फेंका २५. मुख पर रंग की छाप जैसी लगा दी।

करतल की पिचकाई कीने, चाहतु छल्यौ दुलारौ[१]।
तब लगि दै चकचौंधि छविन की[२], लै अबीर दृग डारौ।।९।।
सखी प्रवीन नवीन वीन में, वर विनान[३] सो गावैं।
तोरति तान[४] मरोरति प्राननि[५], भृकुटिनु मान जनावैं[६]।।१०।।
कनकतनी सी[७] लियैं तँबूरा, धरैं कंध पर कवनी।
विमल[८] बजाइ अछन[९] अछरौटी[१०], हँसत-हँसत गज-गवनी।।११।।
दूजे खन[११] ताही खन[१२] गवने, कुँवर किशोर-किशोरी।
निरखि हरषि मोतिनि की रचना[१३], रचे रुचिनि विवि ओरी[१४]।।१२।।
चमकत अलि चपला सी चहुँदिशि, लै-लै चंदन धाई।
भरत लाल कौं बाल[१५] ताल दै, गावत गारि सुहाई।।१३।।
चलत ललित बूका की मूठैं[१६], मूठ[१७] कहा इन आगैं।
अरुण धूँध में धाइ आइ दोऊ, लपटि-लपटि भरि भागैं।।१४।।
ढोलक अनमोलक बजाइ अलि, सुंदर कर झमकावैं।
मनु खिलाइ कमलनि सौं विमला, पारावत गुटकावैं[१८]।।१५।।
कर मँह दी मँहदी की बैंदी[१९], हस्तक भेद[२०] दिखावैं।
मनौं चढी कंजनि पर डोलत, चंद्र वधू छबि छावैं[२१]।।१६।।

१. हाथों की पिचकारी बनाकर दुलारे प्रीतम प्रिया जू के साथ छल करना चाहते हैं २. अपनी शोभा की चकाचौंध करके प्रिया जू ने ३. वे प्रवीण सहचरियाँ सुन्दर तानों को चुन-चुनकर गाती हैं ४. कलात्मक ढंग से गाते हुए स्वरों के उतार-चढ़ाव आदि का विस्तार करती हैं ५. प्राणों को मरोड़ देती हैं अर्थात् देह की सुधि भुला देती हैं ६. भृकुटियों में सम्मान प्रकट करती हैं अथवा भृकुटियों में ही तालों के विराम प्रदर्शित करती हैं ७. स्वर्ण जैसे अंगों वाली ८. शुद्ध ६. धीरे-धीरे १०. राग के बोल अलग-अलग और साफ निकालने की क्रिया ११. नाव की दूसरी मंजिल पर १२. उसी क्षण या समय १३. मोतियों से विनिर्मित कलाकृतियाँ १४. प्रिया और लाल के पक्षों की सहचरियों के हृदय जिसे देखकर रुचि से रच गये अर्थात् होरी खेल की रुचि और अधिक बढ़ गई १५. बाला श्रीप्रिया जू १६. गुलाल से भरी मुट्ठियाँ १७. किसी पर जादू-टोना करने के लिए मुट्ठी में कोई चीज पकड़कर और मंत्र पढ़कर किसी पर फेंकना १८. मानों सरस्वती ही कबूतरों को कमलों [हस्त-कमल] से खेल करा रही है और वे गुटरगूँ [ढोलक की ध्वनि] करते हुए बोल रहे हैं १६. मँहदी की बिन्दियाँ लगाई गई हैं जिन हाथों में उन कर-कमलों से २०. नृत्य में भाव बढ़ाने के लिए बनाई जाने वाली हाथ की मुद्राओं के अनेक भेद २१. मानों कमलों [कर-कमलों] पर चढ़ी वीरवधूटियाँ [हाथ में लगी हुई मँहदी] डोलती हुई शोभा देती हैं।

गौर-श्याम मुख पर अलकावलि, रुरत रँगीं रँग रोरी।
मनु अनुराग रँगे अलि[१] विलुलित, सरस सरोजनि मोरी[२]।।१७।।
खंड तीसरे की शोभा सखि! करत खंड-खंड जिय के[३]।
तहाँ आइ दंपति अनुरागे[४], भले भाँवते हिय के[५]।।१८।।
पचरँग फूलनि की रचना लखि, रचे फूल सौं[६] दोऊ।
लियैं फूल झोरिन में सजनी, फूलि रहीं सँग सोऊ[७]।।१६।।
कुसुम छरी सी अलीं छरछरी[८] कुसुम-छरी लै आईं।
दई दुहुँनि के हाथ, साथ है[९] बहु विधि चौंप बढ़ाई।।२०।।
गौर श्याम कर श्याम गौर कर[१०], बनी पुहुप नवलासी।
दाइ बचाइ परसि तन छाजत, साजत सुख सुखरासी[११]।।२१।।
पीत-चँबेली वंदन-झेली[१२], तकि तन फूल चलावैं।
आवत फूल फूल सौं मारैं, हँसन-फूल वरषावैं[१३]।।२२।।
पहुप-चँदोवा-तरहर[१४] तरलित[१५] सब समाज रँग राच्यौ।
मानौं देखि फागु की संपति, हँसि अकाश सुख साच्यौ[१६]।।२३।।
एक सखी पिय बातनि लाये[१७], राखि जीय में चोरी[१८]।
तौलौं गोरी कनक-कमोरी, रँग भरि पिय पर ढोरी[१६]।।२४।।
भये दाइ लगि[२०] चपल साँवरे, लै सौंधे पिचकारी।
छल बल सौं छिरकी सुकुमारी, लूट्यौ रंग महा री[२१]।।२५।।

१. भ्रमर २. रसपूर्ण कमलों में ३. प्राणों के टुकड़े-टुकड़े कर देती है अर्थात् नाव की तीसरी मंजिल की शोभा देखकर सबके प्राण न्यौन्छावर हो जाते हैं ४. प्रेम में भर गये ५. हृदय को बहुत सुन्दर लगने वाले जुगलवर ६. प्रसन्नता से भर गये ६. वे भी ८. कुसुम छड़ी की भाँति इकहरे वदन वाली सहचरियाँ ६. और जुगलवर के संग में १०. गौरांगी श्रीराधा के हाथ में श्याम की नीलाभ वाले फूलों की और श्याम के हाथ में गौरांगी की पीताभ वाले फूलों की छड़ी सुशोभित हुई ११. सुख की राशि श्यामा-श्याम सुख को प्रकट करते हैं १२. वंदन से भरे हुए १३. अपने हास्य से उत्फुल्लता की वर्षा करते हैं १४. नीचे १५. चंचल १६. चंचल फूल-वितान की छबि ऐसी सुशोभित हो रही है मानों आकाश ही हँसते हुए फाग-संपत्ति के सुख को संचित कर रहा है १७. एक सखी ने प्रीतम को बातों में लगा लिया १८. पकड़ने के उद्देश्य को छिपाकर १६. उड़ेल दी या डाल दी २०. अपना दाव प्राप्त करने के लिए २१. बहुत अधिक आनंद लूटा।

खेलत फिरत घाट-घाटनि पर, दोऊ अति अरवीले[१]।
टपकत रंग अंग सौं लपटे, भीने वसन वसीले[२]।।२६।।
रतन-जटित कुंजैं घाटनि पै, सहचरि तहाँ सिहाईं[३]।
भरि-भरि रंग जराऊ[४] पिचका, झमकि झरोखनि आईं।।२७।।
चलवत सखी सतेसनि-वारी[५], कुसुम गेंद झमकीली[६]।
उत तें अली अरगजा छिरकत, खिरकिनि थिरकि[७] रसीली।।२८।।
बाजत ताल-मृदंग दुहूँ दिशि, झाँझ-मुरज-डफ-वीना।
कुमकुम डारत छबि विस्तारत, निर्तति गुननि प्रवीना।।२६।।
खरीं चित्रसारिनि[८] नव नारी, पहिरैं झूमक सारी[९]।
भरि-भरि मुठी पराग उड़ावत, गावत दै-दै तारी।।३०।।
श्याम सुघर चोबा चमकावत, श्यामा जू केशरि घोरी।
मलत दोऊ दोऊ के मुख सौं, निरखि-निरखि गति मति चोरी।।३१।।
गारि[१०] गुलाबनीर सौं मृगमद, आनन आनि लगावैं।
अतर अमोल फुलेल बेलि कौ[११], मिलि-मिलि उर लपटावैं।।३२।।
फूलनि के भूषण पै भूषित, पचरँग लीक[१२] लसीली।
सुरँग विन्दु वर वदन विराजत, चुहचुहानि[१३] चटकीली[१४]।।३३।।
थेई-थेई ता थेई-थेई कहि, नैंननि-नैंन मिलावैं।
वंशी-सँग-नूपुरनि बजावत, कल किंकिणि झनकावैं।।३४।।
अरस परस[१५] रँग रह्यौ दुहुँनि में[१६], हार-जीत नहिं जानैं।
या रस कौं जे रसिक रस-छके, तेई भलैं पहिचानैं।।३५।।
प्रेमदासि हित सौं विनवत नित,[१७] कियैं हियैं यह आशा।
या रस में चित बसौ निरंतर, यह रस करौ चित वासा[१८]।।३६।।

१. हठीले २. सुगन्धियुक्त ३. प्रसन्न हो रही हैं ४. जिसमें नग, मोती, रत्न आदि जड़े हुए हों ५. जो छोटी-छोटी नावों पर बैठी हुई हैं वे सहचरीगण ६. चमकीली या खेल की अकड़ से भरी हुई ७. नृत्य जैसी करती हुईं ८. जुगलवर की केलि के अनेकानेक सुन्दर चित्रों से सुशोभित भवन ६. मोतियों के गुच्छों की झालर से सुशोभित साड़ी १०. घोल बनाकर ११. रायबेल के फूलों का १२. पाँच रंग की लकीरें १३. पाठा०-चुहचुहा १४. जिनमें चटक तथा रसीलापन है १५. पारस्परिक सांस्पर्श से १६. श्यामा-श्याम आनन्दपूर्ण हो गये १७. प्रीतिपूर्वक नित्य विनय करते हैं १८. मेरा चित्त प्रेममूर्ति श्यामा-श्याम के इसी प्रेम रस में सदा निमग्न बना रहे और यह प्रेम रस मेरे चित्त में अखंड रूप से विराजमान बना रहे।

[८१-३७]

फाग में रस-झड़ी :— राग-धनासिरी

प्यारे खेलत लाड़िली-लाल, होरी रंग भरी।
नाचत फिरत झूमका बाँधैं, गावत रस लागी झरी[१]।।१।।
लचकत कटि पटकत पद मटकत, दृग चंचल भृकुटी खरी[२]।
झटकत पट[३] लटकत हारावलि, निरखत छबि पाँइनि परी।।२।।
अतर गुलाब फुलेल रेल, सौंधे की प्यारी-पिय करी[४]।
विविध अबीर गुलाल उड़ावत, मोद भरीं सँग सहचरी।।३।।
रंग भरीं कंचन-पिचकारी, ललना-लाल लयैं वरी[५]।
चलत रँगीली धार ललित गति, सबहिनु की सुधि बुधि हरी[६]।।४।।
प्रिया प्रवीन सु वीन लयौ कर, पिय मुरली अधरनि धरी।
मधुर-मधुर बाजत सुनिताननि, भये पंगु सु अनंग री।।५।।
भीने वसन कसनि सिथलित गति[७], अँग-अँग छबि उछरी[८]।
झिलमिलात मुसिकानि मनोहर, 'प्रेम' सहित नैंननि अरी[९]।।६।।

[८२-३८]

रस-रंग क्रीड़ा :— राग-धनाश्री

प्यारे खेलत होरी, आजु रँगीले[१०] रंग भरे।
मृदुल हास जगमगत अमित छबि, निरखत दृग कोरनि खरे[११]।।१।।
ललित कनक-पिचकारि भरी, केसरि-रँग लै कर में लसे।
छिरकत वदन-चन्द कौं[१२] मानौं, कंज परस्पर रसमसे[१३]।।२।।
कलित अबीर गुलाल उड़ावत, करहिं फिरावत रँगमगे।
मानौं चन्द कमल चढ़ि निर्त्तत, नख-मणि-दुति यौं जगमगे[१४]।।३।।

१. वे दोनों दल बाँधकर और झूम-झूमकर नाचते हुए गान कर रहे हैं; जिससे रस की झड़ी लग रही है २. सुन्दर ३. वस्त्र ४. प्रिया-प्रीतम गुलाब का इत्र और फुलेल लेकर सुगंध का तीव्र प्रवाह बहा देते हैं ५. सुन्दर [पाठा०—लयैंऽव री] ६. हरण कर ली ७. रंग में भींज जाने से वस्त्रों की कसन ढीली हो गई ८. छबि उच्छलित हो उठी या बढ़ गई ९. प्रेम के साथ नेत्रों में अड़ी हुई मधुर मुसिक्यान झिलमिला रही है १०. रंग में भरे हुए जुगलवर ११. खड़े हुए या सुन्दर प्रकार से १२. पाठा०—वदन चन्द्र कौ १३. रस से सराबोर १४. गुलाल रंजित हस्त-कमलों में नख-मणि की द्युति ऐसी झिलमिला रही है मानों चन्द्रमा कमल पर चढ़कर नृत्य कर रहे हैं।

पिय माँड़त मुख चोबा सौं, प्यारी मुख मलति गुलाल।
भीने तन जानी न परै सखि, को ललना को लाल।।४।।
वीना सरस मृदंग-बाँसुरी, वर मुखचंग उपंग।
बाजत ताल-रवाव झाँझ-डफ, मिले सप्त सुर संग।।५।।
गावति राग-रागिनी ललितादिक नाचत बहु भाव।
झूमत फिरत झूमका बाँधैं, नवल खेल कैं चाव।।६।।
प्रीतम लोभी औसर[१] लखि भुज, भरत किशोरी कौं निशंक।
मानौं अद्‌भुत घन दामिनि कौं, धाइ धरत निजु अंक।।७।।
मोरी-मोर-हंस-शुक-पिक, सारौ कूजत रस-पुंज।
खेलि फाग अनुराग भरे, आये कमलनि की कुंज।।८।।
शीतल सरस सुगंध फुहार, छुटत जलजंत्रनि सुख अपार।
त्रिविध समीर चलत, पुहुपनि पर, भृंग करत गुंजार।।९।।
कुसुमित सेज विराजे वर[२] श्रीराधाबल्लभलाल।
तहाँ लड़ावत प्रेमदासि हित चित धरि होत निहाल[३]।।१०।।

[८३-३९]

नैंन में फाग :— राग-धनाश्री

प्यारे खेलत होरी, आजु दृगनि में रस भरे[४]।
आनँद-सैंन ललित छबि राजत, मदन सुढ़ार ढ़रनि ढ़रे[५]।।१।।
कलित प्रीति-पिचकारी भरि, अनुराग-सुरँग लै जगमगे[६]।
तीखी अनी कटाक्ष-धार बहु[७], चलत सरस गति रँगमगे।।२।।
चोबा अति कल श्याम अबीरहिं, स्वेत गुलाल अरुन लये[८]।
चौंप जूथ अलियनि के राजत, शोभित शोभा सौं नये[९]।।३।।

१. अवसर २. सुन्दर ३. रस केलि की इस शोभा को अपने चित्त में धारण करके सफल मनोरथ होती हैं ४. रस भरे नेत्रों में ही ५. कामदेव के सुन्दर साँचे में ही ढ़ले हुए उन नैनों की सुन्दर शोभा ही आनंद की सैना है ६. सुन्दर प्रीति की पिचकारी में अनुराग का सुरंग रंग लिये हुए वे जगमगा रहे हैं ७. नेत्रों की पैनी नौंक से निकली हुई कटाक्षें ही रंग की धारायें हैं ८. नैनों की श्यामता, स्वेतता और अरुणता ही क्रमशः चोबा, स्वेत अबीर [भुड़भुड़] और लाल गुलाल लिये हुए हैं ९. नवीन शोभा से सुशोभित चौंप ही सहचरियों के यूथ हैं।

शीतल सौरभ गंधसार अति, रुचिर मनोहर सौं भिंजे[१]।
सुभग फुलेल चारु हित तिनमें[२], झूमत मधु आसव रँजे[३]।।४।।
ललकन गान बिहार पलक, चन्द्रा गति बाजत गुन गने[४]।
प्रेमदासि हित रीझि परस्पर, परिरंभन-चुम्बन सने।।५।।

[८४-४०]

श्री अंग में फाग :— राग-विलावल

प्यारे होरी खेलैं रंग सौं, नवल लाड़िली-लाल हो।
अनुरागहि-रँग ही रह्यौ वन, छवि छिरकत पिय-बाल हो[५]।।१।।
कुमकुम कंचन-तन बनी, प्यारी गडुवा उरज रसाल हो[६]।
सस्मित सुमन पट वास ही, झरि उड्यौ अबीर गुलाल हो[७]।।२।।
नैननि ही सौं पिचकई सँग[८], छुटत कटाक्षनि-धार हो।
मानस बाहुनि में लयैं, चित चोबा चौंप अपार हो[९]।।३।।
गंधसार कौ सार सु सौरभ, व्यापि रह्यौ अँग-अंग हो[१०]।
तिन अंगनि में उमग सु वयसा, लयैं जुगल गन संग हो[११]।।४।।
वलय आदि करतार बाँसुरी, बाजत मधुर मृदंग हो[१२]।
सुख उत्कंठित वदत काकली[१३], मोहे कोटि अनंग हो।।५।।
नवल कशिपु वन प्राण रँगीले, तापर खेलत फाग हो[१४]।
प्रेमदासि हित ललितादिक लखि, मानत अपनौं भाग हो।।६।।

१. सुन्दर मनोहारी चितवन के सुगंधिपूर्ण शीतल चन्दन से ही वे भींजे हुए हैं २. उन नेत्रों में संभृत सुन्दर हित ही सुन्दर फुलेल है ३. वे नैन पारस्परिक प्रेम के मधुर आसव से रँगे हुए झूम रहे हैं ४. नैनों की ललकन ही विहार का गान है और पलकों का बार-बार गिरना ही अनेक गुणों के साथ चन्द्रागति (एक प्रकार का बारह ताला) का बजना है ५. श्रीवन में प्रिया और लाल अनुराग का रंग ही छबि के साथ छिड़क रहे हैं अथवा संपूर्ण वृन्दावन अनुराग के रंग से ही रँगा हुआ है जिसे प्रिया-लाल ने सर्वत्र छबि के साथ छिड़का है ६. प्रियाजू का कंचन तन ही केशर का रंग बना हुआ है और उनके रसपूर्ण उरोज ही कलश हैं ७. अधरों पर सुशोभित मन्द मुसिक्यान ही सुगंधिपूर्ण फूलों के वस्त्र हैं जिनसे अबीर गुलाल झड़ता है और उड़ता है ८. नेत्रों की पिचकारी के साथ ही ९. चित्त की अपार चौंपों [उत्साह] का ही चोबा लेकर सबके मनों को अपने बस में कर लिया १०. चन्दन के भी सार की सुगंध अंग-अंगों में ही संव्याप्त हो रही है ११. सुन्दर किशोरावस्था वाले उन अंगों में सुशोभित उत्साह ही जुगलवर का परिकर है; जिसे वे अपने संग में लिये हुए हैं १२. चूड़ी आदि आभूषणों की ध्वनि ही करताल, बाँसुरी और मधुर मृदंग के रूप में बज रही हैं १३. सुख की अभिलाषा से वे दोनों ऐसी कोमल तथा प्रिय ध्वनि बोलते हैं जिसे सुनकर १४. नवल शैया ही वृन्दावन है जिस पर रँगीले प्राण श्यामा-श्याम यह होली-खेल खेल रहे हैं।

[८५-४१]

रंग रँगीले :— राग-विलावल

आजु होरी खेलत रंग रँगीले।
दुरि मुरि भरि भाजत राजत अति, गौर-श्याम गरवीले[१]।।
पिय भींज्यौ केशरि के रँग सौं, तिय भींजी चोबा[२] चटकीले[३]।
'प्रेम' सहित जाने न परत दोऊ, न्यारे करि अरवीले[४]।।

[८६-४२]

फाग में रूप बदलाव :— राग-काफी

हो होरी रँगनि रँग होरी, खेलत कुँवरि-कुँवर, रँगभीने, रँगनि रँग होरी।
लेत ही बाल गुलाल हाथ में, कियौ हाथ प्यारौ री[५]।।
मोंहन लै मृगमद मुख लावत[६], लावत केसरि गोरी।
मनौं 'प्रेम' सौं पगि फगुवा[७] में, पलटत छबि मिलि जोरी[८]।।

[८७-४३]

नौका में फाग :— राग-सारँग

42

अहो होरी खेलत बाल रँगीली, लाल रँगीले सौं।
चढ़े जराऊ[९] नवल नवारे[१०], नेह नवीले सौं[११]।।१।।
झूमक सारी पहिरैं प्यारी, लै चंदन कर माँहिं।
चमकि छटा[१२] सी भरत लाल कौं, हँसि-हँसि परत उमाँहिं।।२।।

१. खेल के गर्व से गर्वान्वित २. अनेक प्रकार के सुगंधित पदार्थों को पकाकर निकाला हुआ रस जिसकी गिनती गन्ध द्रव्यों में होती है और जो काले रंग का होता है ३. अत्यन्त गहरे ४. प्रेम केलि में ही दृढ़ता पूर्वक जमे रहने वाले इन जुगलवर को अलग-अलग करके जाना नहीं जा सकता अर्थात् इन अद्वय युगल को अलग-अलग नहीं किया जा सकता। अथवा वे प्रेम विलास में इस प्रकार आनखशिख रँग गये हैं कि यह पहचानना कठिन है कि उनमें कौन प्रिया है और कौन प्रीतम ५. प्रिया जू ने हाथ में गुलाल लेते ही प्रीतम को अपने बस में कर लिया ६. लगाते हैं ७. होलिकोत्सव के अवसर पर दिया गया उपहार ८. वे दोनों मिलकर एक दूसरे की छबि को बदलते हैं अर्थात् प्रिया जू लाल जू के केशर लगाकर और लाल जू प्रिया जू के कस्तूरी लगाकर एक दूसरे को अपना-अपना रूप देते हैं ९. मणि-माणिक्यों से जड़े हुए १०. एक प्रकार की छोटी नाव ११. नवीन नेह से परिपूर्ण जुगलवर १२. दामिनी।

कनक-पिचकई भरि केशरि-रँग, लियैं श्याम अभिराम।
करी कलमकारी[१] सी न्यारी, प्यारी कैं उर श्याम।।३।।
श्यामल-गोरी आनँद सौं री, लै अबीर छबि जोइ[२]।
रमकि-रमकि मुख मलत हाल दै[३], झमकत[४] न्यारैं होइ।।४।।
लाँबी लट लहकत आनन पर, रोरी रँगीं अनूप।
मानौं अमल कमल में खेलत, अलि अनुराग सरूप[५]।।५।।
कोउ चतुर चंचल चख[६] कीने, डफहि बजाइ रिझाइ।
जियहि[७] जिवावत जील[८] माँहिं सखि, बीनि-बीनि सुर गाइ।।६।।
लै मंजीरनि हीरनि-दन्ती[९], बजवत मुरज[१०] मिलाइ।
सारंगी में सारँगनैंनी[११], राख्यौ सारँग[१२] छाइ।।७।।
मरकत मणि से जमुनाजल में, घाटनि-घाटनि चारु[१३]।
खेलत फिरत छैल छबि छाके, आनँद कौ नहिं पार।।८।।
मंजु कुंज की अटनि[१४] चढ़ीं अलि, नाचत मोरनि-संग।
तारिनि दै गारिनि रस[१५] गावति, डारि जुगल पर रंग।।९।।
इतहि सतेसनि पर की सजनी[१६], लखि खिरकिन की बाल[१७]।
कुसुम गेंद हँसि-हँसि तकि मारत, डारत बहुरि गुलाल।।१०।।
झीने वसन रँगनि सौं भीने, लगे दुहुँनि कैं गात।
वंदन रँगे अधर पर मोती, थिरकि-थिरकि थिरकात[१८]।।११।।
अरस परस रँग रह्यौ[१९] दुहुँनि में, जानत हार न जीत।
'प्रेम' सहित यौं खेलत नित प्रति[२०], बसौ हियैं दोउ मीत।।१२।।

---

१. चित्रकारी २. अबीर हाथ में लिये हुए एक दूसरे की शोभा देखते हैं ३. प्रेमावेश पूर्ण होकर ४. झम-झम शब्द करके उछलते हुए ५. अनुराग से परिपूर्ण भ्रमर ६. नैंन ७. प्राणों को ८. उच्च या पतला स्वर ९. हीरे की तरह चमकदार दन्तावली वाली सहचरीगण १०.एक वाद्य विशेष ११. मृग जैसे सहज कजरारे नैंनों वाली सखीजन १२. मध्याह्न काल में गाये जाने वाला एक राग विशेष १३. सुन्दर सोपान वाले विशिष्ट स्थानों पर (पाठा०-घाटनि-घाट सुचारु) १४. ऊपरी मंजिल पर बने हुए भवनों में १५. रस की गालियाँ १६. इधर छोटी नौकाओं में विराजमान सहचरियाँ १७. ऊपर की खिड़कियों से झाँकती हुई बालाओं को देखकर १८. वन्दन से रँगे हुए नासिका के मोती अधरों पर प्रसन्न हो होकर नर्तन गति का प्रदर्शन कर रहे हैं १९. पारस्परिक सांस्पर्श से रसानंद प्रदर्शित हो उठा २०. नित्यप्रति इसी प्रकार खेलते हुए।

[८८-४४]

फाग में दाव :— राग-जैतश्री

आजु दीनी हो इन मोंहन गारी।। टेक।।
रूप पाइ[१] इतराइ चल्यौ है, बड़ौ कहावतु छैल।
पकरौ याहि जानि जु न पावै, घेरि लेहु सब गैल।।१।।
कुसुम-गेंद हँसि-हँसि तकि मारत, कहाँ गवाँई कान[२]।
अति मदमातौ वदत न काहू[३], आप कहावतु जान[४]।।२।।
ऐंड़ौ फिरत महा कुंजर[५] सौ, फूलि रह्यौ मन माँहिं।
डारौ पकरि कुँवरि के पाँइन, तब सुधि आवै याहि[६]।।३।।
'प्रेम' सहित सखि या चंचल कौं, भरौ रँगनि[७] बहु भाइ।
श्रीश्यामाजू ने दई आग्या, लेहु आपुनौं दाइ।।४।।

[८९-४५]

प्रेम-पर्यंक में फाग :— राग-काफी

राजत रँगभीनी जोरी।
खेलत प्रेम-पर्यंक पर[८], आनँद की होरी।।१।।
द्वै तन में द्वै रूप धरि, इक प्रान बस्यौ री[९]।
होत गौर तें स्याम, होत स्याम तें गोरी[१०]।।२।।
आनन पाननि सौं भरे, छबि देखत जीवैं।
नित्यबिहार-अहार करि, अमृत रस पीवैं।।३।।
मंजुल मुक्त-लतानि कौ[११], गृह मदन रच्यौ री।
नदित कोकिला-कीर-अलि, गूँजत चहुँ ओरी।।४।।
ललितादिक रंध्रनि लगीं, निरखत छबि गहरी[१२]।
मनौं लतागृह रूप की, माला सी पहिरी[१३]।।५।।

---

१. सुन्दर स्वरूपवान होने के कारण २. लज्जा ३. किसी को कुछ नहीं समझता ४. चतुर ५. गज या हाथी ६. तभी इसे अपने वास्तविक स्वरूप का स्मरण होगा ७. रंग से भिंजो दो ८. प्रेम की शैया पर ९. गौर और श्याम दो रूप धारण करके उन दोनों तनों में एक प्रेम प्राण ही बसा हुआ है १०. गोरी से श्याम होकर और श्याम से गोरी होकर अर्थात् प्रिया जू लाल जू जैसी क्रीड़ायें करती हैं और लाल जू प्रिया जू जैसी क्रीड़ायें करते हैं ११. मोती की लताओं का १२. अत्यधिक १३. रन्ध्रों में लगी हुईं ललितादिक सखियाँ ऐसी सुशोभित हो रही हैं मानों लतागृह ने रूप की माला जैसी पहन ली हो।

बहु रँग जल-सीकर[१] छुटत, जलजंत्र अमित री।
मनौं भौंचपा रूप के[२], छूटत जित तित री ।।६।।
जल-थल में फूले कमल, नव कुंज भवन री।
उड़त पराग अनेक रँग, लगि त्रिविधि पवन री।।७।।
किलकारैं कल हंस-कुल, केकी[३] कल नाचैं।
पारावत[४] गुञ्जत फिरैं, दंपति सुनि राचैं[५]।।८।।
नवसत साजैं अंग में, राजत रँगभीने।
झिलमिलात द्वादस[६] सरस, अभरन छबि लीने।।६।।
नील निचोल जुवति सजैं, पिय पीत वसन री।
मनु घन पर दामिनि छई, दामिनी पर घन री।।१०।।
मोद विनोदनि सौं भरे, दंपति छबि छाजैं।
हाव-भाव-लावण्य सो, समाज, सँग राजैं[७]।।११।।
कबहुँ हँसत कबहूँ रहत, मुख मूँदत[८] भामिनि।
दुरि-दुरि प्रगटित अधर-अरुन घन,मानौं दामिनि[९]।।१२।।
लावत तिय-उर-अरगजा, पिय[१०] तन-मन-फूलैं।
लाल गहत भुज मूल कसि, ललना प्रतिकूलैं[११]।।१३।।
रोमांचित तन-तन भये, अति छबि विस्तारी।
अंग-अंग प्रफुलित मनौं, मनमथ-फुलवारी।।१४।।
पिय निबन्ध[१२] नीवी करत, बाढी अति शोभा।
कोप-कपट टारत करनि, कामिनि-मन-लोभा[१३]।।१५।।

१. रंग बिरंगे जल के कण २. रूप की आतिशबाजी ३. मोर ४. कबूतर ५. जिसे सुनकर जुगलवर आनन्द में रच जाते हैं या प्रसन्न होते हैं ६. बारह आभूषण (देखें-पृ० ७७) ७. हाव-भाव और लावण्य अपने संपूर्ण समाज के साथ सुशोभित हो रहे हैं अथवा हाव-भाव लावण्य ही आज की रँगभीनी होली का समाज बना हुआ है ८. कभी मुख को बन्द कर लेती हैं ६. मानों अधर रूपी अरुण घन में दामिनी [मुसिक्यान या हँसी] बार-बार छिपती और प्रकट होती है १०. प्रिया जू को अपने उर का अरगजा लगाकर अर्थात् उन्हें आबद्ध वक्ष करके प्रीतम ११. प्रिया जू प्रतिकूल होकर लाल को पकड़कर अपने भुजमूल में कस लेती हैं १२. बन्धन रहित १३. रमणीय रूप वाली श्रीराधा अन्तर से अनुकूल होते हुए भी।

अनियारी[१] अँखियाँ विशद, साजी पिजकारी[२]।
धारैं चलत कटाक्ष की, रँग प्रीति महा री[३]।।१६।।
पुलकि-पुलकि आँकौ भरैं, कल खेल सु बाढ्यौ।
लसत कटीली[४] भुजा, करत आलिंगन गाढ्यौ[५]।।१७।।
अप-अपने दायनि भरे, चायनि[६] रस झेलैं।
उरझि सुरझि उरझत[७] दोऊ, गुन गन सौं खेलैं[८]।।१८।।
पियत अधर मधु मत्त मन, परि आनँद गहरैं[९]।
रूप-माधुरी की उठति, तन-तन तें[१०] लहरैं।।१६।।
भरि अनुराग-गुलाल रँग[११], दोउ रँगे रँगीले।
साखि-जवादि सुगंध सो, तन सहज बसीले[१२]।।२०।।
झूमत रस-आसव छके, घूमत अति प्यारे।
मनौं करिनी-करिइन्द्र[१३] मिलि, क्रीड़त मतवारे।।२१।।
चंग-चुरी किंकिनि-मुरज, नूपुर-धुनि-वीना[१४]।
सनमुख रुख जोरैं करत, मिलि गान प्रवीना।।२२।।
मृगमद-चन्दन के तिलक, दोऊ कियैं दुलारे।
कुटिल[१५] कटीली भ्रू लसत, शोभा विस्तारे।।२३।।
गौर-स्याम-शोभा रही, चहुँ ओर झमकि री।
मानौं हरौ अबीर उड़ि रह्यौ, सरस चमकि री[१६]।।२४।।

१. पैनी या कटीली २. कटीली और बड़ी-बड़ी आँखें ही पिचकारी के रूप में सुसज्जित कर लीं ३. उन आँखों से प्रीति-रंग-संभृत कटाक्षों की धारें चल रही हैं ४. रोमांचित ५. प्रगाढ़ ६. चाव के साथ ७. उलझते हैं, सुलझते हैं और फिर से उलझ जाते हैं ८. कोक कला के अनेकानेक गुणों का प्रकाश करते हुए खेलते हैं ६. गहरे आनंद में डूबकर १०. दोनों के श्रीअंग से ११. अनुराग के ही गुलाल और रंग से भरे हुए १२. सहज सुवासित श्रीअंग ही साखि और जवा कुसुम आदि सुगन्धित पदार्थ हैं १३. गजेन्द्र और गजनी १४. चूड़ी ही चंग या मुखचंग, किंकिणी ही मुरज और नूपुर रव ही वीणा आदि वाद्यों की ध्वनि है १५. टेढ़ी १६. पीत आभा वाली गौरांगी श्रीराधा और नीलाभ श्यामसुन्दर के सम्मिलन की शोभा चारों ओर इस प्रकार चमक रही है; मानों रसपूर्ण और चमकीला हरा अबीर उड़ रहा है अर्थात् रन्ध्रों में संलग्न सभी सहचरियों के तन-मन और हृदय प्रसन्न हो गये हैं । [आलेखन कला के विधानानुसार पीले और नीले रंग का मिश्रण हरे रंग की सृष्टि करता है]

रँगे सजन रँग मैंन के[१], नव-नव सुख बरसैं।
दुरनि दुरैं[२] मुरि-मुरि अरैं, घुरि-घुरि[३] अति हरषैं।।२५।।
अति सुन्दर अति सुघरवर, अति छैल छबीले।
अति सुकुमार उदार चित, अति रसिक रँगीले।।२६।।
कंचनमणि में मनु जटित, मर्कतमणि ज्यौं री।
मर्कतमणि में फिर जटी, कंचनमणि त्यौं री[४]।।२७।।
वितरति रति विपरीत कुँवरि संगीत-निपुन री।
निर्तत 'प्रीति' सिंगार के, मंडल मनु सुनि री[५]।।२८।।
फूलनि सौं बैंनी गुही, रमकत तिय-ग्रीवाँ[६]।
विमली[७] फिरत नितंब पर, शोभा की सीवाँ।।२६।।
रतन-जटित कुण्डल चपल, गंडनि में झलकैं[८]।
निरखि रूप दृग लाल के, भूलत सुधि पलकैं[६]।।३०।।
भरी मैंन-रस-रंग उरज, विवि कनक-कमोरी[१०]।
ढोरी[११] मोंहनलाल पर, नव नित्य किशोरी।।३१।।
कुच की केशरि सौं रँगे, उर दोऊ सो री[१२]।
अन्तर कौ अनुराग मनु, बाहिर प्रगट्यौ री।।३२।।
कोविद कोक-कलानि में[१३], सखि नैंन सिहावैं।
केलि-बेलि फूली द्रवत, रस अलि-अलि पावैं[१४]।।३३।।

१. दोनों प्रीतम स्वानंग रंग में रँगे हुए हैं २. एक दूसरे की अनुरक्ति में अनुरक्त होते हैं ३. बार-बार आवद्धवक्ष होते हैं ४. मानों कंचन [पीत] मणि में मर्कत मणि जड़ी हुई और कभी मर्कतमणि [नीलमणि] में कंचन मणि जड़ी हुई जैसी शोभा दे रहे हैं ५. संगीत निपुणा श्रीराधा; प्रीतम को विपरीत रति का वितरण करती हुई ऐसी सुशोभित हो रही हैं मानों शृंगार रस के मंडल पर 'प्रीति' ही निर्त कर रही है ६. जो प्रिया जू के गले में झूल रही है ७. सुन्दर गति से ८. प्रतिविम्वित हो रहे हैं ६. प्रिया जू के उस सुन्दर रूप को देखकर लाल जू के नेत्र अपनी पलकों की सुधि भूल जाते हैं अर्थात् अपलक दृष्टि से देखते रह जाते हैं १०. उरोज द्वय ही कामदेव के रंग से भरी हुईं स्वर्ण-कमोरियाँ हैं ११. लुढ़का दी १२. प्रिया जू ने कुच द्वय की केशर से लाल जू के हृदय को स्वानंग-रंग रँजित कर दिया १३. जुगलवर की कोक-कलाओं का चातुर्य देखकर १४. प्रत्येक सहचरी अथवा सहचरीगण भ्रमर होकर उस रस का पान करती हैं।

भींजीं अलक फुलेल सौं, रुरकत छबि न्यारी।
मोतियनि माल रसाल उर, विलुलित दुति भारी[१]।।३४।।
रँगे अधर-रँग सौं[२] डुलत, वेसरि के मोती।
हँसनि-अबीर उड़त दसन मनु, रँगे शशि-गोती[३]।।३५।।
तिय परिरंभन में बढ़ी, लज्जा पग-पेली[४]।
अरुझी प्रेम-तमाल सौं मनु, काम की बेली[५]।।३६।।
चपल जघन पिय-मन-रँगनि, रस माँहिं कलोलैं।
कनक-कदलि मनु मैंन की, मारुत सौं डोलैं[६]।।३७।।
लचकत कटि लपटत लटकि, प्रीतम-उर प्यारी।
पीक झलकि गंडनि रही, अति सौभगता री।।३८।।
गौर-स्याम मुख पर रुचिर, श्रम-जलकन झमकैं।
मानौं मोती ओस के[७], कमलनि पर दमकैं।।३६।।
श्रम-जल मिलि ढरि माँग कौ, वंदन[८] मुख छायौ।
चुंबन सौं दोऊ रँगे, लखि मदन लजायौ।।४०।।
झरत फूल मृदु कचनि तें[६], उर नख-शशि मोहैं[१०]।
खंडित अधरनि-रंग पर, रँग मषि के सोहैं[११]।।४१।।
प्रतिविंवित तन-तन गसे, गाँसनि सौं लहि री[१२]।
सुधि न परत को नागरी, को नागर कहि री।।४२।।
मनु कल हंसी हंस कैं, गरैं लपटि रही री।
नयौ नेह नेही नये, नव छबि नित ही री।।४३।।

१. अत्यधिक २. अधर के अरुणिम रंग से रँगे हुए ३. हास्य रूपी अबीर उड़ रहा है और दन्तावली ऐसी सुशोभित हो रही है मानों चन्द्रमा के गोत्रीय बन्धु [मणि समूह] रँग गये हैं ४. प्रिया जू ने परिरंभन काल में बढ़ती हुई लज्जा को पग से पेल दिया या त्याग दिया ५. रमणीय रूप की बेली ६. मानों स्वर्ण-कदली कामदेव की हवा से हिल रही हैं ७. मानों ओस कणों के मोती ८. माँग का वंदन श्रम के जल से मिलकर ६. केशों से १०. उर पर सुशोभित नखांक सबके मन को मोहित कर रहे हैं ११. काजल का रंग सुशोभित हो रहा है १२. परस्पर बहुत ही घनिष्ट रूप से।

दृगनि बलैयाँ लेत पिय, उर सौं उर जोरैं।
शुभ चिंतक निजु सहचरी, छबि पर तृण तोरैं।।४४।।
वारत पुहुपनि हितअली, लखि श्रमित बिहारी।
रीझि भींजि रस में रहे, अबला सबला री[१]।।४५।।
इनकी उपमा कौं गेई, अरु उपमा नाँहीं।
जानत जात न रैंन-दिन, संतत रस माँहीं[२]।।४६।।
कही जथा मति महल की, रसरीति री हेली।
प्रेमदासि हित चित बसौ, जोरी अलबेली।।४७।।

[६०-४६]

सनेह-फाग :— राग-कान्हरौ

खेलत होरी रँग भीनी जोरी, राग अनुराग जम्यौ री[३]।
भरे मैंन-रँग भरत पियहिं तिय, लै कुच-कनक-कमोरी[४]।।
हँसन-अबीर उड़त, नूपुर-धुनि, बाजत मुरज न थोरी[५]।
'प्रेम' सहित चलैं धार कटाक्षनि, दृग-पिचकनि रस-बोरी[६]।।

[६१-४७]

राग-सारँग

रंग महल में खेलत होरी, गौर-श्याम अलबेली जोरी।
करत श्याम कौं लाल रँगीली, लियैं रंग कुच-कनक-कमोरी[७]।।
भरि अनुराग नैंन-पिचकारी, चलत कटाक्ष-धार नहिं थोरी।
'प्रेम' सहित अलि-जूथ चौंप सँग[८], हँसनि-अबीर उड़त दुहुँ ओरी[९]।।

१. अबला श्रीराधा को बल की राशि के रूप में देखकर मोहनलाल २. निरन्तर रस क्रीड़ा करते हुए ३. अनुराग का राग यथोचित रूप में प्रत्यक्ष हो उठा है ४. मैन-रंग से भरी हुई कुच की कनक-कमोरी लेकर प्रिया जू लाल जू के ऊपर अनुराग का रंग डालती हैं ५. नूपुरों की ध्वनि ही मुरज आदि बहुत अधिक वाद्यों के रूप में कोलाहल कर रही है ६. नेत्रों की रस भरी पिचकारियों से ७. रँगीली श्रीश्यामा जू कुच की कनक कमोरी में प्रेम का रंग लेकर श्यामसुन्दर को अनुराग के लाल रंग से रंजित कर देती हैं ८. प्रिया जू की हृदयस्थ चौंप [उत्साह] ही सहचरी समूह के रूप में सुशोभित हैं ९. जुगलवर के मुख पर सुशोभित हास्य ही सुन्दर अबीर के रूप में उड़ रहा है।

[६२-४८]

राग-भैरवी

अरी! रँगभीनी होरी खेलत, गोरी श्याम सलौने संग।
माँग-सिंदूर मिलत श्रम-जल बहि[१], रँगी रँगीले[२]-रंग।।१।।
अंजन अधर लसत चोबा कन, पीक कपोल गुलाल[३]।
चलत कटाक्ष छुटत पिचकारी, हँसन-अबीर रसाल।।२।।
उरज-कमोरी भरी मैंन-रँग, सौरभमय सब देह[४]।
'प्रेम' सहित पिय क्यौं न होइ बस, निरखि सखी वृत्ति नेह[५]।।३।।

[६३-४६]

रँगभीना फाग :— राग-आसावरी

आजु बनी रँगभीनी होरी[६]।
रँगभीनी सखियनि में खेलत, रँगभीनी सुन्दर वर[७] जोरी।।१।।
रँगभीनी लै तान मान सौं[८], रँगभीने रस कौं वरषावैं।
रँगभीने मिरदंग[९] वीन सँग, रँगभीनी मंजीर बजावैं।।२।।
रँगभीनी कर लै पिचकारी, रँगभीने छिरकत रँग ठानैं।
रँगभीने गुलाल बहु घमड़े, रँगभीने वितान से तानैं।।३।।
जित देखौ तित रँग रँगभीनौं, रँगभीने समाज पर छायौ।
'प्रेम' सहित यह रँग रँगभीनौं[१०], सदा रहौ चित में सरसायौ[११]।।४।।

१. रति रण के श्रमजल से मिलकर माँग का सिन्दूर बह रहा है २. रँगीले प्रीतम के रंग से ३. अधरों पर लगा हुआ अंजन ही चोबा के कणों के रूप में और कपोलों पर लगी हुई पीक ही गुलाल के रूप में शोभा दे रही है ४. श्रीअंग ही इत्र की सुगन्ध से सुगन्धित है ५. प्रिया जू के प्रेम की वृत्तियों को ही उनके सखी परिकर के रूप में देखकर प्रीतम क्यों नहीं वशीभूत होंगे अर्थात् आपके श्रीअंग में सुशोभित होरी खेल की इन संपूर्ण सौंजों को देखकर वे अनायास ही आपके वशीभूत हो जायेंगे ६. रंग से या आनंद से भरी हुई होली आज सुशोभित हो रही है ७. श्रेष्ठ ८. तालों के विराम प्रस्तुत करते हुए ९. मृदंग १०. आनंद से भरा हुआ रंग ११. चित्त में सदा सरस बना रहे।

[६४-५०]

सेज-मंडल में फाग-रास :— राग-कान्हरौ

होरी राधा-मोहन नव निकुंज में, खेलत प्रेम रँगीले[१]।
कंचन-घट-कुच भरे मैंन-रँग, विशद कटाक्ष धार पिचकारी,
लोचन परम छबीले[२]।।
वलय-किंकिनी बाजत ताल-मृदंग[३] फैलि रही शोभा हँसनि-
अबीर उड़त तन सहज बसीले[४]।
प्रेमदासि हित कोक-कलनि-गुन मिली भुजनि-भुज-मंडली, मंडल—
सेज पै निर्त्तत रसीले[५]।।

डोल - कल्लोल

[६५-१]

होरीडोल विनोद :— राग-काफी

झूलत दंपति डोल[६], कलोलनि सौं भरे[७]।
रमकनि में झमकत रँग, रंगनि में ढ़रे[८]।।१।।
नील-पीत पट की, फहरानि सुहावनी।
आवत सुभग समीर, वीर[९]! सरसावनी[१०]।।२।।
घूँघरवारी अलक झलकि[११], मुख पै रुरैं[१२]।
रतन-जटित बैंदिनि[१३] के, तर मोती डुरैं[१४]।।३।।

१. प्रेम के रंग से रँगे हुए श्रीराधा-मोहन २. वे कुच रूपी कंचन-कलशों में कामदेव का रंग भरे हुए हैं और परम छबीले लोचनों की पिचकारी से विशद कटाक्षों की धार छोड़ रहे हैं ३. वलय-किंकिणी ही ताल-मृदंगादि वाद्यों के रूप में बज रही हैं ४. सहज सुवासित श्रीअंग की शोभा फैल रही है और मन्द मुसिक्यान रूपी अबीर उड़ रही है ५. रसीले श्यामा-श्याम सेज-मंडल पर अपनी भुजाओं की मंडली जोड़कर निर्त करते हैं और कोक-कलाओं के गुणों का विस्तार करते हैं ६. होरीडोल ७. क्रीड़ा की उमंग से संभृत ८. होली के रंग से रंजित जुगलवर के श्रीअंग झूलते हुए आनन्द से परिपूर्ण हो रहे हैं ९. अरी सखी! १०. सरस बना देने वाली ११. झलकती हुई १२. चंचल हो रही हैं १३. वन्दिनी नामक आभूषण १४. वन्दिनी के नीचे उसी में संलग्न मोतियों की लड़ी हिल रही हैं।

तरैं तरौंना कुंडल, दुति कुंडल अरैं[१]।
काननि लागे नैंन[२], क्यौं न चित कौं हरैं।।४।।
वेसरि की सर[३] कौंन करै मुक्ता[४] हलैं।
बरसावति हँसि फूल, अचल देखत चलैं[५]।।५।।
विलुलित उर पर तार-हार[६] अति सोंहने।
पैंजनि-गैंजनि करत, पाँइ मन मोंहने[७]।।६।।
पाननि भरि आनन[८], ताननि कौं लेत री।
बिनु कमान मनु[९] बान, मैंन कैं देत री।।७।।
बजवत बीन नवीन, प्रवीन अली खरीं।
कोकिल ज्यौं कल कण्ठ चाखि[१०] रस-मंजरी[११]।।८।।
उड़वत लाल गुलाल सखी दुहुँ ओर सौं।
छावत दामिनि सी अनुराग-झकोर सौं[१२]।।९।।
देखि दुहुँनि कैं रूप, अनूपम री![१३] अबै[१४]।
गह्यौ मौंन खग-मृगनि, भये मुनि[१५] से सबै।।१०।।
भींज्यौ सकल समाज, आजु सुख साजिकैं[१६]।
'प्रेम' सहित चित बसौ, लसौ छबि छाजिकैं[१७]।।११।।

[६६-२]

राग-सारँग

कुँवरि-कुँवर मिलि रँग भीने नव, डोल पै झूलत दोऊ प्यारे।
रुरत अलक करि झलक कपोलनि[१८], विलुलित तार हार न्यारे[१९]।।१।।

१. उसी के नीचे कानों में तरौना और मण्डलाकार कुण्डलों की दुति परस्पर एक दूसरे से अड़ रही है २. नेत्र कानों से लग रहे हैं अर्थात् बड़े-बड़े हैं ३. समता ४. मोती ५. पर्वत-वृक्ष आदि अचल वस्तुयें भी उनकी शोभा देखकर चल देती हैं ६. स्वर्ण के तार से गुँथे हुए हार ७. मन को मोहित करने वाले पगों में सुशोभित पैंजनी ध्वनि कर रही है ८. मुख में ९. मानों धनुष के बिना ही १०. पाठा०— आप ११. रस की मंजरी का आस्वाद पाकर १२. अनुराग से झूमती हुई १३. अरी सखी! १४. इस समय १५. मौन होकर मनन करने वाले १६. सुख की सज्जा से १७. शोभा की सज्जा से सुशोभित श्यामा-श्याम मेरे चित्त में प्रेम सहित निवास करते रहें १८. कपोलों पर झलकती हुई अलकावली चंचल हो रही है १९. स्वर्ण के तारों से गुँथे हुए विचित्र हार उर में विलुलित हो रहे हैं।

भूषन भूषित लाल रतन के, वसन सुनहिरे तन धारे।
मनु फूले अनुराग दुहूँ दिशि, प्रीति सहित रँग लहिकारे[१]।।२।।
निरखि उभय-मुख रूप-माधुरी, करत चपल चख अनियारे[२]।
मनौं चंद के अंक माँहि कौं, रमकत रचि मृग के वारे[३]।।३।।
करत गान मुसिकान झिलमिलत, झरत फूल अति उजियारे[४]।
'प्रेम' सहित अलि रीझि भींजि रस, लखत सरूप प्राण वारे[५]।।४।।

[६७-३]

राग-धनाश्री

सुन्दर डोल पै दोऊ, झूलत लाड़िली-लाल।
मोद भरे मुसिकान रँगीले, फूले नैन विशाल[६]।।१।।
वसन सुनहिरे लाल इकहिरे, पहिरे रूप रसाल[७]।
रुरत अलक नासा दुति मोती, विलुलित उर-वनमाल।।२।।
गावत छैल छबीली भाँतिनु, मिलति झकोरनि ताल[८]।
बाजत वीन क्वणित नूपूर सुनि, मोहे मैंन-मराल[९]।।३।।
नवल नेह भीनी ललितादिक, लखत दुहुँनि के ख्याल[१०]।
'प्रेम' सहित अलि होत वारने, परीं जुगल-छबि-जाल।।४।।

[६८-४]

राग-साराँग

आजु सोहत रमकनि डोल की[११]।
कुँवरि-कुँवर मिलि झूलत-फूलत, बाढ़ी प्रभा कलोल की[१२]।।१।।

१. इधर उधर झोंके खा रहे हैं २. बार-बार जुगलवर की छबि देखने के लिए सखियाँ अपने पैने नेत्रों को चंचल कर लेती हैं ३. मानों चन्द्रमा के अंक में [जुगलवर के मुख-चन्द्र] में जाने के लिए रस से रचे हुए मृग-छौना [सखियों के चंचल नेत्र] झूल रहे हैं ४. प्रकाशमान स्वेत फूल ५. जुगलवर का अद्‌भुत स्वरूप देखकर अपने प्राणों को न्यौछावर करती हैं ६. आनन्द से भरे हुए और मुसिक्यान से रँगमगे विशाल नैन प्रफुल्लित हो रहे हैं ७. रसालय रूप जुगलवर एक परत वाले लाल रंग के वस्त्र पहने हुए हैं जो सुनहरे जड़ाव से जड़े हुए हैं ८. ताल की झंकार के साथ मिलते हुए अथवा झूले की झकोर के साथ ताल मिलाते हैं ९. कामदेव के हंस १०. खेल अथवा मन में उत्पन्न होने वाले नवीन विचार ११. हिंडोल का झूलना १२. क्रीड़ा की आभा आज बहुत सुन्दर दिखाई दे रही है।

रुरति अलक तिनमें ह्वै झाँई[१], झलकत ललित कपोल की।
छाई अरुणाई आनन पर, कोमल कलित तँबोल[२] की।।२।।
हलत नासिका के मुक्ताहल[३], अरु फहरानि निचोल की[४]।
विलुलित विमल[५] लागि उर-उर सौं, माला रतन अमोल की[६]।।३।।
बरसावत अति रंग[७] अनूपम, शोभा सुन्दर बोल की।
'प्रेम' सहित चित बसौ केलि कल, खेलनि नैंन सलोल की[८]।।४।।

[६९-५]

राग-धनाश्री

माई री झूलत डोल लाड़िली-लाल। झलकत अंग अनंग विशाल[९]।।टेक।।
चितवत दृग-कोरनि नव बाल। झिलमिलात मुसिकान रसाल।।
रुरकत अलक झलक वर भाल[१०]। विलुलित[११] उर पर मंजुल माल।।१।।
आनन पाननि भरे अनूप। चंचल नैंन ऐंन रस-रूप[१२]।।
मानौं फूले उभय सरोज[१३]। तिनमें खेलत खंजन मनोज[१४]।।२।।
झूमक सारी पहिरैं भाम। खुमी[१५] कंचुकी उर अति श्याम[१६]।।
हेम-वरन[१७] अतरौटा चारु। निरखि हरषि फूलत सुकुँवार[१८]।।३।।
क्वनित किंकिनी कंकन खरैं[१९]। नूपुर मधुर-मधुर धुनि करैं।।
भरैं अंक, तजि शंक उदार[२०]। लचकत कटि शोभा कैं भार।।४।।
वैंनी गुही जुही कैं फूल। पृथु[२१] नितंब पर विमली[२२] झूल।।
चंचल कुंडल मंडित गण्ड[२३]। कलंगी हलत चंद्रिका अखंड[२४]।।५।।

१. मुख पर आलुलोलित अलकावली के मध्य होकर २. पान ३. मोती ४. वस्त्रों का हिलना ५. सुन्दर ६. जब वे दोनों एक दूसरे के उर से मिलते हैं तो उनके उर में सुशोभित अमूल्य रत्नों की सुन्दर मालायें विलुलित होती हैं ७. आनन्द ८. जुगलवर के सलोल नैंनों का प्रेम पूर्वक क्रीड़ा करना और उनका सुन्दर प्रेम विलास मेरे चित्त में बसा रहे ९. जिनके अंगों में अनंग की कान्ति बहुत अधिक झलमला रही है १०. चमकते हुए सुन्दर भाल पर ११. पाठा०- लुलकित [हिल रही हैं या झूल रही हैं] १२. चंचल नैंन रूप और रस के भवन ही हैं १३. दो कमल १४. कामदेव के खंजन १५. सुशोभित या कसी हुई १६. श्याम रंग के वस्त्र की १७. स्वर्ण के रंग जैसा १८. कोमलांग प्रीतम १९. बहुत सुन्दर २०. उदार श्रीश्यामा जू २१. पुष्ट २२. सुन्दर वैणी २३. कपोलों पर प्रतिम्बित हो रहे हैं २४. लाल जू की कलंगी और प्रिया जू की चन्द्रिका निर्विघ्न रूप से हिलती हुई शोभा दे रही हैं।

करत अधरमधु[१] पान सलोल[२]। प्रफुलित तन-मन उठत कलोल[३]।।
प्रेमदासि हित जुत सुख-पुंज[४]। सदा बसौ मम नैंन-निकुंज[५]।।६।।

फूलडोल - विनोद

[१००-१]

राग-कान्हरौ

फूलडोल-विनोद :-

फूलनि के महल में फूली महलिनि अलि[६],
फूलनि कौ फूलडोल रचत कलोल सौं[७]।
फूले-फूले स्यामा-स्याम झूलत हैं अभिराम,
चलत कटाक्ष फूले लोचन सलोल सौं[८]।।
फूलनि के भूषन भूषित भये अंग-अंग,
बहत बयारि चारु फूल के निचोल सौं[९]।
प्रेमदासि हित फूली गावैं संग अनुकूली[१०],
डुलत अलक, लगि ललित कपोल सौं[११]।।

[१०१-२]

राग-कान्हरौ

झूलत रँगीले दोऊ फूलत छबीली भाँति,
मंद मुसिकाति झरैं फूल सुखदाई है[१२]।
फूले फिरैं चख चारु[१३] फूलनि के हलैं हार,
फूलनि की चंद्रिका सु कलंगी बनाई है।।

१. अधरामृत २. चंचल होकर ३. क्रीड़ा करने की उमंग उठ रही हैं ४. सुख-पुंज श्रीप्रिया-लाल हित का विलास करते हुए ५. मेरे नैंनों की निकुंज में ६. महल में ही रहने वाली सहचरियाँ ७. खेल ही खेल में ८. चंचल नैनों से ९. फूलों के वस्त्रों का स्पर्श पाकर सुगंधित वायु प्रवाहित हो रही है १०. जुगलवर के साथ ही उनके अनुकूल होकर गान करती हैं ११. सुन्दर कपोलों पर फैली हुई अलकावली चंचल हो रही हैं १२. सुखदाई फूल झड़ते हैं १३. सुन्दर नैन।

फूलि रहे हाव-भाव फूली सखी चढ़ैं चाव[१],
फूलनि के अंबर में[२] सब छबि छाई है।
प्रेमदासि हित वारी भरैं अंक पिय-प्यारी,
फूलडोल पै कलोल आजु बनि आई है[३]।।

[१०२-३]

राग-पूर्वी

झूलत फूलडोल पिय-प्यारी, फूलनि सौं सहचरी झुलावति।
फूलनि के आभरन-वसन सजि, फूलि-फूलि दम्पति कल[४] गावति।।१।।
फूलनि की नव कुंज मंजु में, फूले शुक-पिक बोल सुनावति।
प्रेमदासि हित स्यामा-स्याम सु, फूले चख की[५] कोर चलावति।।२।।

ग्रीष्म-विलास

[१०३-१]

राग-ईमन

चन्दन सिंगार :-

चंदन की कुंज माँहिं[६] चाँदिनी प्रकाश रही,
प्यारी कौ वदन-चंद चंद गात-गात हैं[७]।
कोटि चंद्रमा सौ पिय चंदन चढ़ायैं चारु,
हार चंद्र-सैंनी जुत उर सरसात हैं[८]।।
चंदन की[९] चोली सखी[१०] सजी बैंदी चंदन की,
चंदन की खौरैं[११] धरैं शोभा दरसात हैं[१२]।

१. बहुत अधिक उत्साहित २. अंगों में सुशोभित फूलों के वस्त्रों में ३. फूलडोल पर इस प्रकार का कल्लोल तो आज ही देखा गया है ४. सुन्दर ५. नैनों की ६. सुगंधित चंदन की कुंज में ७. श्रीप्रिया जू के मुख-चन्द्र के साथ-साथ उनके प्रत्येक अंग भी चन्द्रमा जैसे प्रकाशित हो रहे हैं ८. प्रीतम का रसपूर्ण हृदय चंदन का लेपन किये हुए और चन्द्र-सैनी के हार [एक प्रकार का गले का हार जिसमें अर्द्धचन्द्राकार धातु के कई टुकड़े लगे रहते हैं और बीच में पूर्ण चन्द्र के आकार का गोल टिकड़ा बना होता है] से संयुक्त है ९. चंदन के रंग से रँगी हुई १०. सखियों ने अथवा सखी! सम्बोधन है ११. मुख पर लगाई हुई चन्दन की पत्रावली १२. बहुत अधिक शोभा दिखाई देती है।

जाली लाल कौ दुकूल[१] प्रेमदासि हित मानौं,
मंडल में बैठे बहु चन्द्रमा सिहात हैं[२]।।
[१०४-२]

फूल-महल-केलि :— राग-पूर्वी

फूले स्यामा-स्याम सखी सँग[३], फूलि रहीं फूलनि के महल में।
गहैं डार फूलनि की लटकत, चलत रँगीले लाड़ गहल में[४]।।
फूलि रहे दृग परम छबीले, ललित रूप की चहलपहल में[५]।
प्रेमदासि हित झरत फूल मुख, मिली मृदुल मुसिकान सहल में[६]।।
[१०५-३]

राग-श्रीराग

फूलनि की नव कुंज मंजु में, फूलनि सौं दंपति छबि छाजैं।
कनक-कमल अरु नील कंज से, फूलि रहे मुख लट-अलि भ्राजैं[७]।।
फूले कमल कटाछ[८] से लोचन, मनु रतिपति के अंकुर राजैं[९]।
प्रेमदासि हित झरत हँसनि में, फूल निरखि छबि अलि सुख साजैं[१०]।।
[१०६-४]

राग-जैजैवंती

माई! फूले-फूले निर्त्तत दंपति, फूलनि की फुलवारि में ।
फूलनि के सजि मुकट-चंद्रिका, लियैं फूल कर डार में[११]।।१।।

१. जालीदार झीना लाल वस्त्र पहने हुए हैं २. उस वस्त्र के जालीदार छोटे-छोटे वृत्ताकार छिद्रों से चमकते हुए श्रीअंग ऐसे सुशोभित हो रहे हैं मानों मंडल में बैठे हुए अनेक चन्द्रमा प्रसन्न हो रहे हैं ३. संग में संपूर्ण सहचरीजन ४. लाड़ में गर्वित अथवा अत्यन्त गहरे लाड़ में भरे हुए ५. रूप की भीड़ या धूमधाम में ६. जादू से भरी अथवा सहज सरल और मृदुलता से युक्त मुसिक्यान में उनके मुख से फूल झड़ते हैं ७. जिन पर अलकावली रूपी भ्रमरावली विराजमान हैं ८. तिरछी चितवनि ९. कमल की भाँति फूले हुए उस मुख में नैनों की कटाक्षें अथवा कमल की भाँति प्रफुल्लित नैनों की कटाक्षें ऐसी सुशोभित हो रही हैं मानों कामदेव के अंकुर छबिमान हो रहे हों १०. उस छबि को देखकर सहचरीगण सुख सींचित करती हैं ११. हस्त-कमलों में फूलों की डाल लिये हुए हैं।

फूलनि के सब वसन-आभरन, झलकत तन उदगार में[१]।
झरत फूल रस-मूल हँसत मुख, फूलनि नैन उदार में[२]।।२।।
फूल भरी बाजत वन वंशी, मिलि नूपुर-झनकार में[३]।
सजि मृदंग गावति अलि फूलीं, देत तार कठतार में[४]।।३।।
बैंनी विमल[५] जु फिरत पीठ पर, फूलनि के विस्तार में[६]।
गुही जुही के फूलनि लट लगि, रुरत फूल के हार में[७]।।४।।
किरत[८] कचनि तें[९] फूल फूल पट, लेत सुलप अति चारु में[१०]।
मनौं रीझि घन सौं मिलि उड़गन, परत पगनि सुकुमार में[११]।।५।।
घमड़े फूलनि तजि अलि लंपट, रहत[१२] करत गुंजार में[१३]।
प्रेमदासि हित वारत फूलनि, फूलनि के आगार में[१४]।।६।।
[१०७-५]

राग-काफी

खरी सुकुमारी फुलवारी में प्यारी।
फूली तन जोवन-वारी[१५]।।
कहत 'प्रेम' सौं मधुप बिहारी।
अरी!याकैं मति गड़ि जाइ पुहुप पगा री[१६]।।

१. जगमगाते हुए श्रीअंग में सुगंधि की लपटें उठ रही हैं अथवा सुगंधमयी श्रीअंग झलक रहे है २. उदार नेत्रों में फूलन है ३. नूपुर की झंकार से निष्पन्न स्वरों के साथ मिली हुई ४. कठतार नामक वाद्य में ताल देती हुईं ५. सुन्दर ६. फूलों के गुच्छों के साथ ७. जुही के फूलों से गुँथी हुई लटें फूलों के हारों का स्पर्श करते हुए रुरक रही हैं ८. गिरते हैं ९. केशों से १०. अत्यन्त सुन्दर आलाप लेने में ११. मानों घन से मिलकर तारागण सुकुमार श्यामा- श्याम के पगों में पड़ते हैं १२. पाठा०—हरत १३. जुगलवर के मुख-कमल के आसपास ही गुंजार करते रहते हैं १४. फूलों के भवन में फूल मूर्ति जुगलवर की शोभा पर १५. जिनके श्रीअंग में जोवन की बगीची प्रफुल्लित हो रही १६. अरी सखी! अत्यन्त सुकुमारी प्यारी जू के पगों में कोई पुष्प नहीं गड़ जाये।

[१०८-६]

राग-केदारौ

फूलनि कौ मुकट सोहै साँवरे कैं सीस पर,
प्यारी कैं सिर फूलनि की चन्द्रिका री।
फूलनि के कुण्डल कलिन-मण्डित गण्डनि में[१],
ललित डोलत मोती बेसरि के शोभा री[२]।।
फूलनि कैं रुरत हार फूलनि की गहैं डार,
फूलि रहे अंग-अंग रंग भारी।
प्रेमदासि हित वारी विवस भये लखि बिहारी,
चलत कोर नैननि की हँसति प्रिया री[३]।।

[१०६-७]

मोतिया की जाली में गुलाब ही के फूल खचे,
बँगला में रचे सौंनजुही के सु द्वार हैं।
कंज के कलश[४] राजैं माधवी[५] के छज्जा छाजैं[६],
पीत चँबेली के लटकन[७] अति चारु हैं।।
फूल के सिंहासन पै फूलि रहे श्यामा-श्याम,
फूलनि के अभिराम[८] शोभित सिंगार हैं।
प्रेमदासि हित वारी[९] फूलीं अलि फुलवारी,
कुंज-केलि फूली भारी झूलैं रति-मार हैं[१०]।।

१. फूल-कली विनिर्मित उन कुण्डलों का प्रतिविम्व कपोल प्रान्त पर सुशोभित हो रहा है २. सुन्दर वेसर-मोती के हिलने से उनकी शोभा वृद्धि हो रही है ३. जब प्रिया जू हँसती हैं तो उनकी नैन-कोरैं चंचल होती हैं ४. कुंजों और मन्दिरों आदि की शिखर पर लगे हुए वे कँगूरे जो कलश के आकार के होते हैं ५. एक प्रसिद्ध लता जिसमें सुगंधित फूल लगते हैं ६. उस फूल-बँगले में कमलों के ही कलश और माधवी के छज्जे बने हुए हैं ७. झबिया ८. सुन्दर ६. बलैया लेती हैं १०. पुष्प-निकुंज में श्यामा-श्याम की केलि बहुत अधिक सौन्दर्य मई हो रही है जिसे देखकर रति और कामदेव का मन भी झोटा खाने लगता है।

[११०-८]

फूलनि कौ मुकट विराजै सीस साँवरे के,
प्यारी सजैं फूलनि की चंद्रिका नवीन हैं।
फूलनि के भूषन-वसन सोहैं फूलनि के,
फूलनि की फूली-फूली डारैं[१] कर लीन हैं।।
फूलनि सौं निर्त करैं फूले-फूले मन हरैं,
प्रेमदासि हित फूली संग रंग भीन हैं[२]।
फूलनि की कुंज मंजु[३] गुंज अलि पुंज-पुंज[४],
फूली-फूली गावैं अलि[५] वीन में प्रवीन हैं।।

[१११-६]

राग-कान्हरौ

फूलनि सौं फूली कुंज[६] फूलनि की सेज मंजु,
फूले तहाँ सुख-पुंज स्यामा-स्याम रंग में।
फूले नैंन रूप-मूल[७] हासि माँहिं झरैं फूल,
भूषन-दुकूल सोहैं फूलनि के अंग में[८]।।
फूली फिरैं[६] बैंनी चारु फूलनि के डुलैं[१०] हार,
फूल भरी धरी बाल[११] लाल लै उछंग में।
प्रेमदासि हित वारी[१२] फूले हाव-भाव भारी,
केलि-बेलि फूली न्यारी छबि के तरंग में[१३]।।

१. छोटी-छोटी शाखायें २. जुगलवर के संग में आनंद से भींजी हुईं हित प्रेमदासियाँ [सहचरियाँ] भी प्रफुल्लित हो रही हैं ३. सुन्दर ४. झुण्ड के झुण्ड भ्रमरों की गुञ्जार ५. सहचरीगण ६. नव निकुंज फूलों से छाई हुई अत्यन्त सुन्दर लग रही है ७. रूप के मूल जुगलवर के ८. श्रीअंग में फूलों के ही वस्त्राभूषण सुसज्जित हो रहे हैं ६. हिल रही है १०. हिल रहे हैं ११. उत्साह से भरी हुईं श्रीप्रिया जू को १२. बलैया लेती हैं १३. शोभा की लहरों के साथ रस केलि की बेली भी विचित्र रूप से प्रफुल्लित हो रही है।

[११२-१०]

उसीर-भवन-केलि :— राग-सारँग

कुंज उसीर[१] तीर जमुना कैं, चलत ललित गति त्रिविध समीर।
सौरभ-मत्त रणित[२] भृंगावलि, कूजत धीर[३] कोकिला-कीर।।
छुटत सुगंध नीर नल[४] गावत, जुवति-भीर सजि रँग-रँग चीर[५]।
प्रेमदासि हित दंपति संपति[६], अति रति-रण दोऊ वीर[७]।।

[११३-११]

अवनि-उर-मन्दिर-केलि :— राग-सारँग

बनी बाबरी[८] अति सीतल तर[९], दुहुँ दिसि सोहत सुभग तखानैं[१०]।
तिनमें क्रीड़ा करत अली री! गौर-स्याम फूलनि सौं फूले,
चंदन-लेप किये मन मानैं[११]।।
कबहुँक जीलनि[१२] गाइ जिवावत[१३], लेत ललित सारँग की तानैं।
बीन-बीन[१४] सुर वीन बजावत,'प्रेम' सहित अलि रीझि-रिझावत,
या सुख कौं कहि कवि कहा जानैं।।

[११४-१२]

नैन-नौकाबिहार :— राग-केदारौ

प्यारी! तेरौ वदन-सुधा-सर, तामें राजत नैंन-नवारौ[१५]।
झलकत पलक वारि अलि! वरुनी[१६], खेवट कल कटाक्ष उजियारौ[१७]।।

---

१. खस की शीतल और सुगंधित कुञ्ज २. गुञ्जार कर रहे हैं ३. मनोहर या सुन्दर ४. जल फुहारे ५. रँग-रंग के वस्त्रों से सुसज्जित जुवतियों की भीड़ गान कर रही है ६. पाठा०–सुख संपति ७. वे दोनों रति के रण में शूरवीर हैं ८. चौड़े मुँह का एक प्रकार का जलाशय अथवा छोटा तालाब; जिसमें पानी तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बनी हों ६. उसके नीचे अथवा अत्यन्त शीतल १०. महल के नीचे बना हुआ वह कमरा जो ग्रीषम ऋतु में शीतल होता है–तहखाना ११. अपनी इच्छानुसार १२. संगीत में तार सप्तक [सबसे ऊँचे या पतले] के स्वर से गान करके १३. जुगलवर; श्रोता सहचरियों के प्राणों को जिलाते हैं अर्थात् वे उनका गान सुनकर परम प्रसन्न होती हैं १४. चुन-चुनकर १५. प्रीतम श्याम के नेत्रों को प्रिया जू के नेत्रों में प्रतिविम्वित देखकर एक सखी प्रिया जू से कहती है कि हे प्रिया जू! आपका श्रीमुख अमृत का सरोवर है जिसमें नैन ही नौकायें हैं १६. अरी सखी! पलकैं और उनके अग्रिम बालों की पंक्ति ही उस अमृत-सरोवर की मर्यादा के रूप में झलक रही हैं १७. उस नैन-नौका में सुन्दर कटाक्षें ही मल्लाह [नाव संचालक] के रूप में प्रकाशित हो रही हैं।

गोलक-सिंहासन पै हँसनि, बिछाय रूप सो पाट्यौ न्यारौ[१]।
'प्रेम' सहित चित रँग्यौ रँगीलौ, तार्‌यौ[२] तारेनु में लै प्यारौ[३]।।

❀

वर्षा - विलास

[११५-१]

मलार-मधुरिमा :— राग-मलार

पहिरि चूँनरी हरिय लतनि तरैं[४], रंग रँगीली करति गान।
पान खाति इतराति[५] कछुक हँसि,भ्रुवनि तान हर्‌यौ श्याम सुजान[६]।।
देति ताल कर कमल फिरावति, लेत नवल नूपुर में मान[७]।
प्रेमदासि हित लखि ललितादिक, तोरि-तोरि त्रन[८] वारति प्रान[९]।।

[११६-२]

नव बिज्जु-घन :— राग-मलार

माई री! दूलह श्यामसुन्दर-घन, दामिनि दुलहिनि श्यामा प्यारी।
मोर मुकुट सिर इन्द्रधनुष, मोतिनि के सेहरा, बूँद जगमगत न्यारी[१०]।।
वग-पंकति-वनमाल चन्द्रवधू-जावक, धुरवा-लट घुँघरारी[११]।
प्रेमदासि हित गरजनि मुरली-नाद मुदित सुनि,अलिगन मोर-सभा री[१२]।।

---

१. आँखों की पुतली रूपी सिंहासन पर सुन्दर रूप का ही विचित्र पट्टा है और मन्द मुसिक्यान ही बिछायत है २. पाठा०–**तारि न** एवं एक अन्य प्रति में–**तारौ** (पार कर दो) ३. सखी के ये वचन सुनकर श्रीप्रियाजू ने प्रीतम के चित्त को प्रेमपूर्वक आनन्दित करके उन्हें अपनी नेत्र की पुतलियों में बैठाकर पार कर दिया ४. हरी-हरी लताओं के नीचे ५. प्रेम के लाड़ से गर्वान्वित ६. जिन्होंने भोंहों को तानकर चतुर श्याम का भी मन हरण कर लिया ७. संगीत शास्त्र के अनुसार ताल का विराम जो सम, विषम, अतीत और अनागत चार प्रकार का होता है ८. पुनः-पुनः तिनका तोड़कर फेंकती हैं जिससे उनकी सुन्दरता को नजर न लगे ६. अपने प्राणों को न्यौछावर करती हैं १०. सिर पर सुशोभित मोर मुकुट ही इन्द्र धनुष है और मोतियों के सेहरा ही विचित्र बूँदें हैं ११. हृदयस्थ वनमाला ही वगों की पंक्ति, पगों में रचित जावक ही वीरवधूटी और घुँघराली अलकावली ही धुरवा हैं १२. मुरलीनाद ही बादलों की गर्जना है जिसे सुनकर सहचरीजनों के मन रूपी मयूर प्रमुदित हो उठे हैं।

[११७-३]

राग-मलार

रथोत्सव :–

मन हरनीं हरिनी कंचन सी[१], कंचन के रथ जुतनि[२] सुहाई।
तापर चढ़े किशोर-किशोरी, निरखि सखी कैसी छबि छाई।।
चले हंसजा की दुति[३] देखनि, बिच-बिच कुंजनि केलि मचाई।
'प्रेम' सहित ललितादिक सजनी, रुचि में रुचि उपजावत जाई[४]।।

[११८-४]

राग-अड़ानौं

सु झूलत हैं री ललित हिंडोरैं, ललित बलित[५] पिय-प्यारी।
ललित रमक में[६] ललित झमक सौं[७], डुलत[८] ललित माला री।।
ललित हँसनि लखि चलत ललित चख[९], रुरत ललित लट न्यारी[१०]।
ललित[११] 'प्रेम' सौं ललित[१२] सु गावत, बजत ललित वीना री।।

[११९-५]

राग-अड़ानौं

सु झूलत हैं री हरित हिंडोरैं[१३], दोऊ हरित सिंगार करैं[१४]।
अरस परस[१५] प्रतिविंवित दम्पति, ह्वै तन हरित हरैं[१६]।।
नाचत मोर हरित अवनी पर, हरी लतानि तरैं।
हरित वसन पहिरैं गावत अलि[१७], 'प्रेम'-पियूष झरैं[१८]।।

---

१. स्वर्णिम हिरणी २. जुती हुई या खींचती हुई ३. शोभा ४. साथ में विशेष रूप से रुचि उत्पन्न करती हुई ललितादिक सहचरियाँ भी जा रही हैं ५. लालित्य से पूर्ण ६. झूले पर झोटा लेने में ७. तीव्र चमक के साथ ८. हिलती हैं ९. सुन्दर नेत्र चंचल होते हैं १०. निराली ११. सुन्दर १२. षाडव जाति का एक राग जो भैरव राग का पुत्र कहा गया है और जिसमें निषाद स्वर नहीं लगता तथा धैवत और गांधार के अतिरिक्त और सब स्वर कोमल लगते हैं–'ललित राग' कहा जाता है १३. हरे पत्तों से सुसज्जित झूले में १४. हरे रंग के वस्त्र और हरे पन्ना के आभूषण धारण किये हुए १५. जब परस्पर अंग स्पर्श करते हैं १६. तो धीरे-धीरे या मन ही मन प्रसन्न होते हैं १७. सहचरीगण १८. उनके गान से प्रेमामृत का निर्झरण होता है।

[१२०-६]

राग-मलार

झूलत रंग हिंडोरैं राधाप्यारी, लाल झुलावत कैसौ नीकौ लागैं।
चंचल दृगनि पर लटकी लट लटपटात[१] वदन-कमल में,
मानौं अलि डरि खंजन से भागैं[२]।।
अंग-अंग रूप-रस-निधि उमड़त, भूषन जराऊ मानौं बाँधी आड़ आगैं[३]।
प्रेमदासि हित वारी रीझि भींजि सुकुमारी हँसि लसि भेंटैं,
पिय अंग अनुरागैं[४]।।

[१२१-७]

राग-मलार

दम्पति फूले कदंब-तर[५] झूलत,
वरषत फुही[६] घमड़ि घन आये।
ग्रीव उचाइ[७] हँसि लेत बूँद मुख,
राज हंस से, मुक्ता पियत सुहाये[८]।।
हरी भूमि बूढ़नि की रैंगनि[९], मनु सिंगार डहडहे पर,
अनुराग फिरत बहु तन दरसाये[१०]।
'प्रेम' सहित सिंगार सुरँग सजि, गावत अलिगन,
वीन बजावति, सावन-गीत[११] सुहाये।।

---

१. योवनोन्मत्तता और झोटा लेने के कारण अलकें दृगों पर लटकी हुई सुशोभित हो रही हैं २. मानों मुख-कमल पर आलुलोलित भ्रमरों [अलकावली] के डर से खंजन [चंचल नैन] भाग जैसे रहे हैं ३. मानों जड़ाऊ भूषणों के रूप में उस रूप-रस के समुद्र को रोकने हेतु सहचरियों ने आड़ लगा दी है ४. रीझ में भींजकर जब सुकुमारी श्रीराधा प्रीतम के अनुरागी अंगों को हँसती हुई अंकस्थ करके सुशोभित होती हैं अथवा जब श्रीप्रियाजू अनुराग के साथ प्रीतम को अंकस्थ करती हैं तब सखी भावापन्न प्रेमदासी बलैया लेती हैं ५. कदम्ब वृक्ष के नीचे ६. बरसने वाले पानी की छोटी-छोटी बूँदों की झड़ी ७. गले को ऊपर की ओर करके ८. हंसराज जैसे मुक्ता पी रहे हों ९. इन्द्रवधूटी नामक लाल रंग के मखमली कीड़ों का चलना १०. मानों खिले हुए शृंगार रस के ऊपर अनुराग ही अनेक शरीर धारण करके चल रहा है ११. सावन की मलारें।

[१२२-८]

रूप-हिंडोरा :— राग-मलार

माई री! प्यारी रूप-हिंडोरैं पै[१], आजु छबि सौं पियहिं झुलावति।
विशद कटाक्षनि-झोटा देत बहु[२], तन-मन मोद बढ़ावति।।
क्वणित किंकिनी-कंकन-नूपुर, वाद्य सहित रागिनि प्रगटावति[३]।
प्रेमदासि हित रीझि होत बलि, पिय तिय[४] हँसि उर लावत।।

[१२३-६]

पाट-पवित्रा :-

पानिप भरे पवित्रा पहिरैं, गौर-श्याम पाटनि के नागर[५]।
लाल बाल कैं बाल लाल कैं, मनु हिय बसि लसि उरनि उजागर[६]।।
नील-पीत झूला से चमकत, नील-पीत तरु-तन छबि-आगर[७]।
प्रेमदासि हित तापर झूलत, नवल जुगल के मन रस-सागर[८]।।

[१२४-१०]

रुचिर राखी :—

जानि सलूनौं[९] जुगल सलौने[१०], लौनी राखी करनि बँधाई[११]।
गुलअनार[१२] रेशम की रचिपचि, गजमोतिनु सौं रुचिर रचाई[१३]।।

---

१. प्रिया जू अपने रूप के झूले पर २. विशद कटाक्षों के द्वारा ही वे उन्हें अनेक झोटे देती हैं ३. वे कंकण-किंकिणी और नूपुरों के शब्द ही अनेक वाद्यों और रागिनियों के रूप में प्रकट करती हैं ४. प्रिया जू को ५. कान्ति से भरे हुए परम चतुर जुगलवर गौर रंग की प्रतीक पीली और श्याम रंग की प्रतीक नीली रेशम के पवित्रा पहने हुए हैं ६. प्रिया जू के उर में सुशोभित नीलाभ रेशम की पवित्रा और लाल जू के उर में सुशोभित पीताभ रेशम की पवित्रा ऐसी लग रही है मानों प्रिया जू के उर में लाल जू और लाल जू के उर में प्रिया जू ही बसी हुई हैं। इस प्रकार से वे एक दूसरे के हृदय को प्रकाशित कर रहे है ७. छबि में अग्रगण्य गौर-श्याम के तन [वक्षस्थल] रूपी तरु में वे पवित्रायें नीले और पीले झूला के समान चमक रही हैं ८. इस पवित्रा रूपी झूले में रस-सागर नवल जुगल के मन झोटा ले रहे हैं अर्थात् परस्पर एक दूसरे की पवित्रा पर एक दूसरे के मन मुग्ध होकर झूम रहे हैं ९. श्रावणी पूर्णिमा को होने वाला 'रक्षाबन्धन' नामक त्यौहार जानकर १०. लावण्य से संभृत जुगलवर ने ११. अपने कर-कमलों में सुन्दर राखी बँधवाई १२. एक प्रकार का गहरा लाल रंग जो अनार के फूल की तरह का होता है अर्थात् लाल रंग के रेशम की १३. जिसमें सुन्दर गजमोती जड़कर रचना की गई है।

पहुँची पहुँचनि गौर-श्याम कैं, पानिप पाइ-पानि में छाई।
मनु गुलाब की कली कमल पर, स्वाँति बूँद भरि 'प्रेम' खिलाई[१]।।

❀

शारदीय विलास

[१२५-१]

साँझी-समुल्लास :— राग-गौरी

अरी हेली! रंग रँगीली लाड़िली, प्यारी खेलति साँझी साँझ हो।
लियैं ललित सँग सहचरी, नव कुंज महल कैं माँझ हो।।१।।
लाल रसाल रुमाल माँहिं लै, फूले फूल सुरंग हो[२]।
मदन-सदन कौं रचन चले रचि, रचत तलप नव रंग हो[३]।।२।।
तब लगि ललिता ललित लली सौं, कही बात हित जानि हो।
सुनौं कुँवरि! मिलि खेलैं साँझी, यहै खेल रसखानि[४] हो।।३।।
सुनति सखी के वचन छबीली, फूलि उठी मन माँहिं हो।
रमकि झमकि चमकति चपला सी, हँसि-हँसि परति उमाँहिं[५] हो।।४।।
नीलाम्बर सारी तिय-तन जुत, हेम पुहुप अरु सेत[६] हो।
सुन्दर सरस श्याम घन में मनौं, वग-उड़गन छबि देत हो।।५।।
अँगिया अरुण बनी कटाव की, कसी कुचनि पर खैंचि हो।
मनु अनुराग-जाल में लीने, चक्रवाक[७] से ऐंचि हो।।६।।

---

१. गौर-श्याम की कलाइयों में पहुँची नामक आभूषण भी उनके कर-कमलों में (की) कान्ति प्राप्त करके इस प्रकार शोभा पा रही है मानों स्वाँति नक्षत्र की बूँद से भरे हुए कमल [पानिप से पूर्ण कर-कमल] पर गुलाब की कली [राखी और पहुँची नामक आभूषण] खिली हुई हैं २. सुन्दर रंग-रंग के खिले हुए फूलों को लेकर ३. मदन-सदन [शैया भवन] की रचना रचने के लिए चल दिये और किसी ऐकान्तिक कुञ्ज में पहुँचकर नवरंगी लाल रचपच कर शैया रचने लगे ४. साँझी का यह खेल रस का खजाना है ५. उत्साह से भरी हुई ६. उस नीलाम्बर में स्वर्णिम और स्वेत पुष्प ऐसे सुशोभित हो रहे हैं ७. एक प्रसिद्ध जल-पक्षी जिसके सम्बन्ध में यह प्रसिद्धि है कि यह रात को अपने जोड़े से अलग हो जाता है।

लहकि[१] हरित लहँगा लाग्यौ कटि, लेत घेर मन घेर[२] हो।
लावनि लागे मुक्तावलि फिरैं, लगि लावनि कैं फेर[३] हो।।७।।
सीसफूल सौं लगि मुक्तालर[४], लगी तरौंननि जोर हो।
मनौं सूर छबि-चकरिनु खेलत, कियैं रूप की डोर हो।।८।।
चंचल नैंन समात न अंचल, विहँसत वदन अनूप हो।
मानौं चंद फिरावत कमलनि, बरसावत रस-रूप हो।।६।।
नासा की तिल तूल न पावत, फूल्यौ तिल-तिल होय हो।
तन पिसाइ तऊ नेह भयौ इति, मुँह न हिलायौ सोय[५] हो।।१०।।
कंचन की बनी नीलमणी सौं[६], नासा ललित लवंग हो।
सुवरन चंपक लियैं भली विधि, पियत रंग सौं भृंग[७] हो।।११।।
आतप में[८] तपि जपा[९] जप्यौ जप[१०], हौंन अधर सम आय हो।
सूर प्रवीन[११] भाति[१२] हिय ताकैं, दई कलौंस[१३] चढ़ाय[१४] हो।।१२।।
रचित पान रसखान दसन-दुति, रहे अरुनता-पूर हो।
मानौं रूप-सिन्धु में पैरत, मुक्ता रँगे सिन्दूर[१५] हो।।१३।।
कर मँह दी मँहदी की बैंदी[१६], बाढ़ी अमित उदोति[१७] हो।
मनौं कमल में बैठीं बनिठनि, चन्द्रवधू करि जोति[१८] हो।।१४।।
पग की सम करिवे कौं आये, थलज-जलज[१९] छवि-सींव हो।
ताही तें कंटक में डारे[२०], उपजत तहीं सदीव[२१] हो।।१५।।

१. इधर उधर हिलता डुलता हुआ २. लहँगा का घेर मन को घेर लेता है अर्थात् अपनी छबि में फँसा लेता है ३. लहँगे की कोर में लगीं मुक्तावलि उस लहँगे की कोर के साथ ही चारों ओर चक्कर काटती हैं ४. मोती-लड़ी की जोड़ी ५. जो तिल बिना ननुनच किये अपने तन के टुकड़े-टुकड़े कराकर और स्वयं को पिसाकर तेल ही बन जाता है- इस प्रकार से अपना सर्वस्व समर्पण कर देने वाला ऐसा तिल का प्रफुल्लित पुष्प भी उनकी नासिका की समता नहीं कर पाता ६. नीलमणि से जटित ७. मानों आनंदित भृंग [चारों ओर जटित नीलमणि] स्वर्ण चम्पा पुष्प [स्वर्ण की बनी लवंग] का पराग कर रहे हैं ८. धूप ताप सहन करके ६. एक लाल रंग का पुष्प १०. मन्त्रोच्चार ११. चतुर सूर्य ने १२. [भा+अति] अत्यन्त आभा वाले अथवा चमकदार १३. श्यामता या कालिमा १४. चढ़ा दी या लगा दी १५. सिन्दूर से रँगे हुए मोती १६. मँहदी की छोटी-छोटी बिन्दियाँ हाथों में लगाईं १७. द्युति १८. वीर वधूटी अपनी ज्योति बिखेरती हुई १६. गुलाब और कमल २०. काँटों के बीच पटक दिये २१.सदा ही।

कुसुम-छरी सी खरीं छरछरी[१], कुसुम-छरी कर-लेत हो।
अली भली रस रली लियैं सँग, आईं कुसुम-निकेत[२] हो।।१६।।
अलबेली इक धाई आई, कहति श्याम सौं बैंन हो।
चलौ कुँवरि कौ कौतुक देखौ, सफल करौ निजु नैंन हो।।१७।।
अरबराइ चल्यौ लाल ख्याल हित[३], बाल भेष धरि मीत[४] हो।
मनौं बाल कैं ध्यान लाल भयौ[५], कीट-भृंग[६] की रीति हो ।।१८।।
श्यामसखी कौं लखि श्रीश्यामा, मोहित ह्वै बतराय हो।
को है री ! तू रहति कहाँ, तेरौ नाम कहा सुखदाय हो।।१६।।
सुनि प्यारी ! हौं तोपर वारी, तूही मेरैं प्रान हो।
मोहि कहति सब राधादासी, तेरी सखी सुजान हो।।२०।।
तब ललना लड़काय बाहु निज, पिय-अलि ग्रीवाँ[७] डारि हो।
श्याम फूल चुनैं गौर चुनति त्यौं, गौर श्याम फुलवारि[८] हो।।२१।।
रँग रँलियाँ अलियाँ[९] झिलमिलियाँ, लै रँग[१०] डलियाँ पानि[११] हो।
बीनत कलियाँ बहु विधि खिलियाँ, करत मधुप-सँग गान[१२] हो।।२२।।
सौंनजुही के सो न जुही के, सौंनजुही लै फूल हो।
बैंनी छबि-सैंनी गुहि अलकनि धरति जु ही के फूल[१३] हो।।२३।।

१. इकहरे वदन वालीं श्रीप्रिया जू २. फूलों के बगीचे में ३. खेल करने के लिए ४. मित्र बनकर अर्थात् सहेली बनकर ५. मानों कीट-भृंग की भाँति बाला [प्रिया जू] का ध्यान करते-करते लाल जू भी बाला [प्रिया जू] ही बन गये ६. 'भृंग' एक प्रकार का कीड़ा होता है; जिसके विषय में यह प्रसिद्धि है कि वह किसी अन्य कीड़े के बच्चे को पकड़कर ले आता है और उसे मिट्टी से ढँक लेता है। वह उस पर बैठकर और डंक मार-मारकर इतनी देर तक और इतनी जोर से 'भिन्न-भिन्न' करता है कि वह कीड़ा भी उसी भृंग का ध्यान करते हुए उसी की तरह हो जाता है ७. अली वेष से सुसज्जित प्रीतम के कण्ठ में ८. श्याम पीताभ पुष्प चुनते हैं और उसी प्रकार गौरांगी प्रिया नीलाभ पुष्प चुनती हैं ६. जुगल-केलि के आनंद से भरी हुईं वे सहचरियाँ १०. रंगीन अथवा रंगों से चित्रित ११. हाथों में १२. भ्रमर की तरह गुनगुनाती हुईं १३. वह न तो स्वर्ण जूथिका के फूल ही हैं न स्वेत जुही के ही फूल हैं- ऐसे कोई अद्भुत स्वर्ण जूथिका के फूल लेकर शोभा की श्रेणी वैंणी में हार्दिक फूल से अलकावली गूँथी गई है।

चुनति मोतिया चंद-जोतिया[1], मोतिया रद चमकाय[2] हो।
करत ख्याल[3] रचि माल बाल कौं, पहिराई हुलसाय हो।।२४।।
पीत चमेली सित रस झेली, अलबेली अलि बीन[4] हो।
पाइजेब[5] रचि पाइनु डारी, पहुँची[6] पहुँचनि[7] कीन हो।।२५।।
मृदु मल्ली चन्दन मल्ली की[8], कल किंकिनि अलि ल्याई हो।
बाँधत कटि में कटे झुके हरि[9], लखि-लखि तिय मुसिक्याई हो।।२६।।
मौलसिरी कौं सिरी दई[10] अलि, ताके फूलनि तोरि हो।
तिनकी बैंदी रची भाल पर, लाल-बाल-रँग-बोरि[11] हो।।२७।।
फूलीं डारि नवाइ नारि नव, चुनति फूल रस-मूल हो।
ललित लतनि गहि लटकति तिन पर, झमकत झौंरा फूल[12] हो।।२८।।
फूली फुलवारी में सजनी, फूली साँझ सुहात हो।
अरस परस फूलनि के भूषन[13], पहिरति फूलीं गात हो।।२६।।
फूलनि की गेंदैं-नवलासी[14], रचीं नवल नव भाँति हो।
खेलति खेल बचाय[15] धाय[16] धपि[17], कुलकि-कुलकि किलकाँति हो।।३०।।
कमल-मुखी दृग-कमल नचावत, ल्याईं कमलनि भाम[18] हो।
लै कर-कमल[19] फिरावति गावति, आईं साँझी-धाम हो।।३१।।

---

१. चन्द्रमा की ज्योति है जिनमें ऐसे 'मोतिया' नामक सफेद रंग के सुगंधित पुष्प २. मोती जैसी चमकदार दन्तावली ३. खेल करते हुए अथवा मन में किसी नवीन बात का चिन्तन करते हुए ४. उज्ज्वल रस से आपूर्ण अलबेली अलियाँ पीत चमेली के पुष्प बीन रही हैं ५. पगों में पहिनने वाला एक आभूषण विशेष ६. कलाई पर पहनने वाला एक आभूषण विशेष, जिसमें बहुत से गोल या कँगूरेदार दाने कई पत्तियों में गुँथे रहते हैं ७. हाथ की कलाइयों में ८. चन्दनी [पीत] चमेली की कोमल कलिकाओं से गूँथी हुई ९. प्रिया जू की सूक्ष्म कटि में कल किंकिणी को झुककर बाँधते हुए प्रीतम ने उनकी कटि-शोभा पर आकर्षित होकर अपने प्राण न्यौछावर कर दिये १०. सर्वोपरिता या शोभा प्रदान की ११. लाल जू ने बाला [प्रिया जू] के अरुणिम रंग में डुबोकर अथवा सखियों ने लाल के श्याम और बाल के अरुणिम रंग में डुबोकर बिन्दी लगा दी १२. फूलों के झब्बे १३. श्यामा-श्याम के पारस्परिक सांस्पर्श से उत्पन्न उत्फुल्लता के ही आभूषण हैं जिन्हें धारण करके वे सहचरीगण १४. छड़ी १५. दूसरी ओर वाले खिलाड़ी के दावों को बचाकर खेल खेलते हैं १६. दौड़कर १७. पूर्ण रूप से उत्साहित होकर १८. कमल जैसे मुख वाली सहचरीगण अपने नैन-कमलों को नचाती हुईं कमलों के फूल लेकर आईं १९. उन कमलों को अपने कर-कमलों में लेकर।

हीर-भीति[1] लै नीर सुगंधनि, धोई पौंछि बनाय हो।
लाल गुलाल अरगजनि लै-लै, लीपति बाहुँ चढाय हो।।३२।।
मृगमद घोल अमोल अनूपम, केशरि कलित पिसाय हो।
रचत उभय मूरति मनमोंहन, गौर-स्याम छबि छाय[2] हो।।३३।।
कंचन के फूलनि सौं चीती, मूरति साँवल वाम हो।
मूरति गौर श्याम कर चीतत, लै-लै फूलनि श्याम[3] हो।।३४।।
हितरूपा अलि कहत लली सौं, ये हित देवीदेव[4] हो।
मन-वच-क्रम करि पूजौ इनकौं, सफल हौंहि सब सेव हो।।३५।।
धरति भोग भामिनि गजगामिनि, भरि-भरि कंचन-थार हो।
मोदक मकरंदी[5] मधु मेवनि, रचि-रचि धरति सँवार हो।।३६।।
कनक-कचौरा[6] धरे भोग भरि, दिपत थार मधि चारु हो।
मानौं विमल चन्द सौ चमकत, पहिरैं उड़गन-हार हो।।३७।।
शीतल जल पिवाय अँचवन दै, बीरी धरी रचाय हो।
हित-आरति[7] आरती उतारति, बाजे विविध बजाय हो।।३८।।
श्यामलसखी विनय करि माँगति, नेह कुँवरि-सँग[8] देहु हो।
करि दण्डवत कहति तिय[9] दै मोहि, देवी ! पिय-सँग नेहु[10] हो।।३९।।
पूजि-पूजि करि सखी-सहेली, मिलति सु भरि-भरि अंक हो।
देति बधाई गावति माई, फूलीं फिरति निशंक हो।।४०।।
श्यामसहेली गौर नवेली, मिलति मानि सुख चैंन हो।
मिलत बाल सौं लस्यौ लाल कैं, अंग-अंग में मैंन हो।।४१।।

---

१. हीरों से जटित दीवाल २. शोभा की वृद्धि करते हुए गौर-श्याम मन को मोहित करने वाली जुगल मूर्तियों की रचना रचते हैं ३. साँवल ने स्वर्णिम फूलों से वाम श्रीप्रिया जू की मूर्ति का चित्रण किया और गौरांगी श्रीराधा ने अपने कर-कमलों से नीलाभ फूल ले-लेकर प्रीतम श्याम की मूर्ति का चित्रण किया ४. ये साँझी ही हित रूप दई देवता [पूज्य] है ५. फूलों के रस की सुगंध से आपूर्ण मोदक ६. स्वर्ण के कटोरों में ७. हित की आर्ति से अथवा प्रेम पूर्ण हृदय से ८. कुँवरि श्रीराधा के साथ ९. तिय श्रीराधा १०. हे साँझी देवी! मुझे प्रीतम के साथ प्रीति प्रदान करो।

छल सौ जानि हाल दै[१] पिय की, छाती छुवति सुछंद[२] हो।
कुच न[३] लखे मुख मोरि हँसीं तिय, जान्यौ पिय कौ फंद[४] हो।।४२।।
हँसि-हँसि परीं सखी सब लखि-लखि, बाढ़्यौ आनँद-पुंज हो।
ललिता ललित विनय सौं ल्याई, दम्पति कौं रति-कुंज हो।।४३।।
भोजन भलैं कराय दुहुँनि कौं, बैठारे सुख सैंन हो।
दोऊ मैंन के चैंननि[५] भीने, निरखि शरद की रैंन हो।।४४।।
भरि-भरि गोदनि बाँटत मेवनि, सहचरि चहचर छाँड़[६] हो।
खात-खवावति हँसति-हँसावति, भरीं दुहुँनि कैं लाड़ हो।।४५।।
यौं कौतूहल करति सहचरी, नित प्रति चोंज[७] बढ़ाय हो।
सदा सुखी दम्पति के सुख सौं, और न इन्हें सुहाय हो।।४६।।
जो यह साँझी पढ़ै-पढ़ावै, गावै हित कैं भाय[८] हो।
प्रेमदासि सौं साझौ[९] पावै, या साँझी में आय हो।।४७।।

[१२६-२]

राग-परज

रास रसोत्सव :-

आजु खेलत रास रँगीले।
लटकि-मटकि[१०] पग धरत पुलिन में, स्यामा-स्याम छबीले।।१।।
फरहरात कंचन-फूलनि सौं[११], विमल वसन झमकीले।
जगमग होत जराऊ भूषन, अंग-अंग रस-झीले[१२]।।२।।
बाजत ताल-मृदंग-चंग-डफ, नूपुर नदित नवीले[१३]।
उरप[१४]-तिरप[१५] लै लाग-डाट[१६] सौं, गावत गुननि गहीले[१७]।।३।।

१. तत्काल ही या उसी समय २. स्वतंत्रता पूर्वक ३. पाठा०–कुँवर ४. जाल ५. आनन्द ६. कोलाहल छोड़कर अर्थात् मौन होकर ७. उत्साह ८. प्रेम-सहित ९. हिस्सा या बट १०. लटकते हुए ओर मटकते हुए ११. स्वर्णाभा वाले फूलों से अथवा स्वर्ण तारों से विनिर्मित फूलों की आकृति से १२. रस में तल्लीन १३. नवीन १४. नृत्य का एक अंग या अंग-संचालन का एक प्रकार १५. नृत्य में एक प्रकार का ताल जिसे त्रिसम या तिहाई कहते हैं अथवा संगीत के बोलों की अन्तिम तुक को तीन बार कहकर सम पर आना १६. गाने या बजाने के समय स्वर के मुख्य अंश या श्रुतियों को आपस में एक दूसरे से अलग न होने देना और सुन्दरता से उनका संयोग करना १७. अत्यन्त गहरे गुणों वाले जुगलवर या गुणों से गर्वान्वित जुगलवर।

भरे पान मुख हँसत ललित गति, झरत प्रसून नसीले[१]।
मुकट-लटक चंद्रिका-चटक लखि, होत मदन-मन ढीले[२]।।४।।
लेत सुलप में सरस हास गति[३], दंपति रसिक रसीले।
प्रेमदासि हित तन-मन वारत, निरखि नैंन उनमीले[४]।।५।।

[१२७-३]

राग-परज

खेलत रास रैंन रँगभीने[५]।
गौर-श्याम अभिराम परस्पर, रूप-रसासव पीने[६]।।१।।
विमल वसन-भूषन नीरज के[७], जगमग होत नवीने।
रुरत अलक मुख हँसनि विलोकत, लेत मुदित मन छीने[८]।।२।।
पुलिन पवित्र महा अति झलकत, चंद चाँदिनी कीने[९]।
तामें जूथ नवल जुवतिन के, झमकत आनँद दीने।।३।।
बाजत ताल-मृदंग रंग सौं[१०], लेत सखी गति वीने[११]।
करत गान रसखान[१२] मान सौं[१३], तान-तरंगनि लीने।।४।।
निरखत रुप अनूप माधुरी, होत मैंन आधीने।
प्रेमदासि हित बसौ सदा चित, स्यामल-गौर-नगीने[१४]।।५।।

[१२८-४]

राग-गौरी

निर्त्तति कोटिक चन्द उजागर, लाल-बाल अलि नागर[१५]।
मुक्त-माल मंडल शुक्रनि कै, झमकि रहे छबि-आगर[१६]।।१।।

१. मादकता से पूर्ण फूल २. शिथिल या कमजोर ३. सुन्दर आलाप में रसपूर्ण हास्य की गति लेते हैं ४. जुगलवर की छबि देखकर सहचरियों के नेत्र प्रफुल्लित हो गये ५. रात्रिकाल में रँगभीने जुगलवर अथवा रजनी के रंग में भींजे हुए जुगलवर ६. पीते रहते हैं या पीने वाले ७. मोतियों के अथवा कमलों के ८. मन को छीन लेते हैं ९. चन्द्रमा ने चाँदनी छिटका दी है १०. आनंद के साथ ११. चुन-चुनकर अथवा वीणा में १२. रस के भंडार जुगलवर १३. ताल के संपूर्ण विरामों के साथ १४. गौर-श्याम रूपी मणि रत्न १५. करोड़ों चन्द्रमा के समान प्रकाशमान परम चतुर प्रिया-लाल और अलियाँ रासमंडल में निर्त कर रहे हैं १६. शोभा के भंडार जुगलवर के उर में मोतियों की मालायें सुशोभित हैं अथवा शुक्र नक्षत्रों के समूह चमक रहे हैं।

रँग-रँग की सारी घन बूटी, किरन बादले की बन[१]।
जगमगात भूषण जराव के, झलकत जित तित उड़गन।।२।।
झिलमिलात नख चारु चाँदनी[२], फैलि रही शोभा थल।
फूले नैंन-चकोर चहूँ दिसि, पिवत अमी आनँद कल[३]।।३।।
बढ़्यौ रूप-रस-सागर सजनी! लहरैं उठत हँसनि अति[४]।
प्रेमदासि हित यह सुख निरखत, मुरझि परे मनमथ-रति।।४।।

[१२६-५]

राग-पूर्वी

मोर मुकट सिर श्रवननि कुंडल, झलकत लोल कपोलनि माँहीं[५]।
फरहरात पीतांबर सुंदर, उर वनमाल रसाल कराहीं[६]।।
बाजत वैंनु नदित नूपुर नव, कटि काछिनी कछत छबि छाहीं[७]।
प्रेमदासि हित बाल विलोकत, निर्त्तत लाल निरखि निजु छाँहीं[८]।।

[१३०-६]

राग-कान्हरौ

वंशीवट तट आजु री, प्यारौ वंशी बजावै।
प्रिया प्रवीन नवीन वीन में, बीन-बीन सुर गावै[९]।।
आनन पानन भरे विराजत, रुरत अलक छबि छावै[१०]।
प्रेमदासि हित भये श्रवन दृग, दृग ह्वै श्रवन सिहावैं[११]।।

१. विविध रंग की साड़ियों में बादले की किरणों से बनी हुई सघन बूटियाँ हैं २. सुन्दर नखों की चाँदनी ३. सुन्दर रासानन्द के अमृत का पान करके सखियों के नैन-चकोर प्रफुल्लित हो उठे ४. अरी सजनी! इस रासोत्सव में रूप-रस का सागर उमड़ चला जिसमें हास्य की बड़ी-बड़ी लहरें उठ रही हैं ५. कानों में विराजमान चंचल कुण्डल कपोलों पर प्रतिविम्वित हो रहे हैं ६. उर में सुशोभित वनमाला सबके हृदय रसपूर्ण कर रही है ७. सुसज्जित कटि काछनी शोभा को छा रही है ८. सखी भावापन्न प्रेमदासजी कहते हैं कि प्रिया जू अपने प्रीतम की शोभा देख रही हैं और लाल जू उनके चरण-कमलों में अपनी छाया [प्रतिविम्व] देखते हुए निर्त कर रहे हैं ९. चुन चुनकर नवीन स्वरों का गान करती हैं १०. छबि छा जाती है ११. प्रेमदास जी कहते हैं कि दोनों के नेत्र श्रवण बन जाते हैं और श्रवण नेत्र होकर प्रसन्न हो उठते हैं अर्थात् वे दोनों नैनों की सैनों से ही पारस्परिक वार्तालाप सुन लेते हैं और श्रवणों से सुनकर ही गेय पद में वर्णित पारस्परिक केलि कलित रूप का दर्शन कर लेते हैं। किसी अन्य वाणीकार ने भी इसी पंक्ति का भाव साम्य प्रदर्शित करते हुए लिखा है कि –
बाँकौ मारग प्रेम कौ, कहत बनै नहिं बैंन। नैंना श्रवण जु होत हैं, श्रवण होत हैं नैंन॥

[१३१-७]

रास रसोत्सव :– राग-ईमन

करत नव निर्त्त[१] पिय स्याम-स्यामा संग,
नव जुवति जूथ में मुदित आनंद सौं।
मनहुँ कुमुदावली[२] फूलि चहुँ दिशि लसत,
फैलि रही चाँदिनी मध्य विवि चंद सौं[३]।।१।।
चरन-गति चपल कर उड़त कर्पूर की,
रैंनु अंकित भई धरनि छबि-वृन्द सौं।
मनहुँ अस्थल कमल फूलि जित कित रहे,
नैंन-अलि अलिन के भरे मकरंद सौं[४]।।२।।
चपल कुण्डल दिपत विमल गंडस्थलनि,
रुरत लट ललित उर हार स्वछंद सौं[५]।
चंद्रिका चटक-जुत[६] मुकट-ग्रीवा-लटक,
चलत दृग-कोर बहु हास गति मंद सौं[७]।।३।।
करत कल गान मुक्तानि बेसरि डुलत[८],
ताल-मिरदंग-धुनि किंकिनी दुंद सौं[९]।
धुनित कर-मुरलिका[१०] हित प्रेमदासि सुनि,
नाहिं निकसत मैंन मैंन के फंद सौं[११]।।४।।

१. नवीन-नवीन गतियों के साथ निर्त करते हैं २. कुमुदावली रूपी सहचरियाँ ३. चन्द्र द्वय [श्यामा-श्याम] से निकली हुई चाँदनी सहचरियों के रूप में फैल रही है। ४. चरणों की गति चंचल करने पर अर्थात् निर्त की तीव्र गति लेने पर कपूर की धूल उड़ती है जो छबि का समूह बनकर धरनी पर अंकित हो जाती है। उस समय धरनी पर सुशोभित जुगलवर के चरण चिह्न ऐसे लग रहे हैं मानों जहाँ तहाँ स्थल कमल [गुलाब] फूल उठे हों और सहचरियों के नैंन-भ्रमर उसके मकरन्द से भर गये हों ५. स्वतंत्रता के साथ ६. कान्ति-युक्त ७. जोर से हँसने में और मन्द हँसने में नैंनों की कोर चलती हैं ८. सुन्दर गान करने में बेसर के मोती हिलते हैं ९. जुगलवर की किंकिणी के साथ १०. हाथ में सुशोभित मुरली की ध्वनि ११. जिसे सुनकर कामदेव भी कामदेव के फन्दे से नहीं निकल पाता।

[१३२-८]

रास में रूप बदलाव :- राग-कान्हरौ

मुकट धरैं राजत रँगभीनी[१]।
सजैं चंद्रिका छैल छबीलौ, जगमगात अति ललित नवीनी।।१।।
अँग-अँग रस तें मरदन कीने, पीत वसन साजैं सुकुमारी।
प्यारी जू कौ नीलांबर लै, अनुपम अंगनि धर्‌यौ बिहारी।।२।।
मंजुल पुलिन नलिन[२] सौरभ बहु, विमल चंद नभ त्रिविध पवन री।
मणिनु[३]-जटित मंडल पै निर्त्तत, अलग लाग[४] गति रवनी-रवन री।।३।।
मोती डुलति उभय[५] बेसरि के, रुरत हार बेसर-छबि न्यारी।
प्रिया बजावति मुरली प्रीतम, कमल फिरावत मुदित महारी।।४।।
धुनित[६] किंकनी-कंकन-नूपुर, ताल-मृदंग-वीन सँग बाजैं।
करत गान रसखान परस्पर, आनन पानन भरे विराजैं।।५।।
अलकलड़ी अलबेली की छबि[७], मुरि-मुरि चितवत लालबिहारी।
अद्‌भुत कौतिक बढ्‌यौ निरखि हित,प्रेमदासि या छबि पर वारी[८]।।६।।

हिम-शिशिर-विलास

[१३३-१]

हेमन्त-हुलास :- राग-केदारौ,चौतालौ

राजत दम्पति मृदुल सेज पर, ओढ़ैं श्याम[९] सुदेश[१०] रजाई।
कंचन कैं फूलनि सौं लाल रुई झलकत,सिंगार-भूमि तामें प्रीति-फुलवारी-
सींचि अनुराग खिलाई[११]।।

१. आनंद से भरी हुई श्रीराधा २. कमल ३. पाठा०-चन्द्रमणि ४. एक पृथक प्रकार का नृत्य ५. दोनों की ६. शब्दायमान ७. पाठा०-जुवति अलक परस्पर मोहन की ८. न्यौछावर ९. काले रंग की १०. सुन्दर ११. उस काली रजाई के बीच-बीच में स्वर्ण फूलों के साथ-साथ लाल रुई भी झलक रही है। वह ऐसी सुशोभित हो रही है मानों शृंगार रस की अवनी में अनुराग का सिंचन करके प्रीति की फुलवारी को प्रफुल्लित किया गया है।

झमकि रहीं ललितादिक चहुँदिशि, जाल रन्ध ह्वै,निरखति शोभा,
तहाँ कछू उपमा मन आई।
प्रेमदासि हित मनौं सैंन गृह, चन्द्रमान[१] की, पहिरी माला,
झलमलात अछवाई[२]।।

[१३४-२]

शिशिर सिंगार :- राग-केदारौ,चौतालौ

प्यारी ओढ़ैं सुरँग पाँवरी[३], मनौं अनुराग छयौ,
दामिनि पर छबि छाजै।
सजैं श्याम थिरमा[४] कंचन सौ[५], मानौं प्रीति तासौं,
लपट्यौ घन अति राजै[६]।।
धरी सेज-ढिंग कनक-अँगीठी, जरत[७] अगर[८] आमोद समाजै[९]।
हिमरितु-शिशिर सुहात दुहुँनि मन, मिलि तन सौं तन,
'प्रेम' सहित सुख साजै[१०]।।

१. पाठा०-चन्द्रमनिन २. सैंन रन्ध्रों में लगी हुई ललितादिक सहचरियाँ ऐसी सुशोभित हो रही हैं मानों शैया भवन ने ही अनेकानेक चन्द्रमाओं अथवा चन्द्रमणियों की माला पहन ली है जिससे उस सुन्दरता का प्रकाश जगमगा रहा है ३. प्रिया जू के ओढ़ने का एक गर्म वस्त्र विशेष ४. लाल जू के ओढ़ने का एक गरम वस्त्र विशेष ५. स्वर्ण के रंग का सा ६. मानों प्रीति से लिपटा हुआ घन सुशोभित हो रहा है ७. पाठा० - पिवत ८. एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत सुगन्धित होती है ९. स्वर्ण-अँगीठी में 'अगर' प्रज्ज्वलित हो रहा है जो निकुंज महल के संपूर्ण समाज को आनन्दित कर रहा है १०. सुख को सज्जित करते हैं।

हित रस-विलास

[१३५-१]

राग-विभास

निशान्त-छबि :–

जुगलकिशोर रैंन रस भीने, सैंन करत ओढ़ैं पीतांबर।
कंचन वरन[१] बदरिया छाई, मनौं मनोहर जुगल-चन्द पर।।
बिछुरे भैंटे कहे न जात यौं, अरुझे गौर-श्याम तन सुन्दर।
प्रेमदासि हित रूप-प्रेम की, सींवा दम्पति रसिक-पुरन्दर[२]।।

[१३६-२]

राग-आसावरी

रस-देशाधिपति उरोज :–

प्यारी ! तेरे उरजनि ललित महीपति[३], राजत उर-सिंहासन आइ।
प्रीतम-करवर-छत्र मनोहर, मणिनि-जटित बहु भाइ[४]।।१।।
अंचल चंचल धुजा-पताका, सरस कंचुकी खुली सुभाइ[५]।
शशि-गोती माला कल मण्डित, सभा सकल सुखदाइ[६]।।२।।
पिय के प्राण-रतन संपति सौं, पूरित दोऊ रहे उमदाइ[७]।
मन्त्री मैंन कुन्त अनियारे, सुभट भाव सरसाइ[८]।।३।।
रसमय देश देह लहि अद्भुत, करत राज आनंद बढ़ाइ[९]।
प्रेमदासि हित कुंजबिहारी, बरबस किये सिहाइ[१०]।।४।।

---

१. स्वर्ण के रंग की २. रसिकेन्द्र ३. सुन्दर राजा ४. अनेक आभूषणों से विभूषित प्रीतम के मनोहर करवर ही विविध मणि-जटित छत्र हैं अथवा प्रीति के विविध भावों की मणियों से जटित प्रीतम के मन हरण सुन्दर कर ही जिनके छत्र हैं ५. चंचल अंचल ही ध्वजा और खुली हुई सरस कंचुकी ही प्राकृतिक पताका हैं ६. शशि- गोत्रीय अर्थात् चन्द्रमा की भाँति आकृति वाली और चमकदार अथवा मणियों की सुन्दर मालायें ही उसकी सुखदायिनी सभा है ७. ये उरोज-नृपति प्रीतम के प्राण रूपी रत्नों की संपत्ति से भरे हुए उन्मत्त हो रहे हैं ८. कामदेव ही जिसका मन्त्री है और कामदेव का आनुगत्य करने वाले अनेक शूरवीर ही पैने भाले लिये हुए रसपूर्ण भावों का प्रदर्शन कर रहे हैं ९. प्रीतम के तन-मन रूपी रसमय देश को प्राप्त करके आनन्द की वृद्धि करते हुए उस पर राज्य कर रहे हैं १०. कुञ्ज बिहारीलाल को बलात् बस में करके वे [उरोज नृपति] प्रसन्न हो रहे हैं।

[१३७-३]

लालची लोचन :–

राग-गूजरी

राजत परम रँगीली अँखियाँ, लाल की ललचौंहीं[१]।
प्रिया-उरज-अंबुज पर[२] अटकीं, मधुपिनि[३] टरत न क्यौंहीं[४]।।१।।
नीलांबर सारी कंचन के, फूलनि सौं झलकौंहीं[५]।
फूल्यौ उपवन मनु सिंगार कौ, निरखि मृगी सी मोहीं[६]।।२।।
रविजा-रोमावली दुहूँ दिशि, पुलिन कनकमय ज्यौंहीं।
दोउ खंजनी छबि की खेलति[७], तहाँ न पलक लगौंहीं।।३।।
मुक्त-माल रस-रूप-निधी में, मीन फिरत चपलौंहीं[८]।
झिलमिलात मुसिकान-चाँदिनी, लखि चकोर सी भौंहीं[९]।।४।।
वदन-चन्द्र[१०] अवलोकि कुमुदिनी, फूलीं रस उपफनौंहीं[११]।
विशद[१२] विशाल रसाल दृगनि में, ह्वै मषि[१३] मृदुल समौंहीं[१४]।।५।।
अद्भुत रस सौं भरे परस्पर, श्याम-राधिका त्यौंहीं[१५]।
प्रेमदासि हित बसहु सदा चित, लाल-लड़ैती जू यौंहीं[१६]।।६।।

---

१. लालच से भरी हुईं २. कुच-कमलों पर ३. लाल जू आँखें भ्रमरी बनकर अटक गईं हैं ४. वे किसी प्रकार भी वहाँ से नहीं हटतीं ५. स्वर्णिम फूलों से झलकती हुई सुशोभित हो रही है ६. मानों शृंगार रस का उपवन फूला हुआ देखकर लाल जू की मृगी जैसी आँखें उसमें विमोहित हो गईं हैं ७. प्रिया जू के श्रीअंग में सुशोभित रोमावली ही जमुना है और दोनों ओर स्वर्णमयी पुलिन है जिसमें लाल जू की दोनों आँखें छबि की खंजिनी बनकर क्रीड़ा करती रहती हैं ८. मोतियों की माला ही रस और रूप का समुद्र है; जिसमें लाल जू की आँखें चंचल मीन होकर कल्लोल करती हैं ९. प्रिया जू की झिलमिलाती हुई मुसिक्यान-चाँदनी को देखकर लाल जू की आँखें चकोर सी हो गईं १०. प्रिया-मुख-चन्द्र ११. उफान लेने वाले रस की भाँति फूल उठती हैं १२. मनोहर १३. अंजन १४. प्रिया जू के दृगों में लाल जू के दृग कोमल अंजन बनकर समा जाते हैं १५. उसी प्रकार उपर्युक्त उपमेय और उपमानों की भाँति श्रीराधिका और श्याम भी एक दूसरे पर आसक्त होकर किसी विचित्र रस से ही भरे हुए हैं १६. इसी प्रकार एक दूसरे से आसक्त लड़ैती-लाल।

[१३८-४]

सुरतान्त-सुषमा :— राग-विभास

भोर किशोर सेज उठि बैठे, रसमसात[१] भीने रति रस सौं।
विथुरी[२] अलक वदन श्रम जलकन, अधर अंजन अरु पीक पलक पर,
मृदु मुसिकात गसीली गस सौं[३]।।
ललित गवाछनि[४] छई ललित दुति, मनु बहु चन्द मिले पारस सौं[५]।
प्रेमदासि हित ललितादिक सखि, चहुँदिशि रंध्रनि ह्वै सुख निरखत,
रूप-हार मनु गुहि गरैं लस सौं[६]।।

[१३६-५]

राग-विभास

पाग लटपटी[७] लाल[८] लाल कैं[९], छुटे छबीले छोर सुरंगा।
मानौं मरकत मणि के गिरि की, शिखर उदय भयौ प्रात पतंगा[१०]।।
पीक ग्रीव[११] मानौं सिंगार में, जगमगात अनुराग अभंगा।
प्रेमदासि हित प्यारी कैं रस-भीनौं मोहन मोहत अनंगा।।

[१४०-६]

राग-भैरौं

कोटि चन्द्र मन्द होति, राजत वर वदन जोति,
मृदुल हँसन अरुण दसन[१२], अधर मधुर सुरस-सार[१३]।
रतन-जटित कर्णफूल, जगमगात रूप-मूल,
अमल गण्ड मण्डित मषि[१४], पीक-लीक छबि अपार।।१।।

---

१. प्रेम मग्न या रसमय २. बिखरी हुई ३. प्रीतम को आबद्ध वक्ष किये हुए ४. झरोखों ५. मानों बहुत से चन्द्रमा [झरोखों से निकलने वाली जुगलवर की नई-नई अंग-दुति] पारस के प्रकाश मण्डल [रन्ध्रों में लगे सहचरी मण्डल] से जाकर मिल रहे हैं ६. सहचरियों ने मानों रूप से गुँथे हुए शोभा युक्त हार [जुगल की अनन्त रस केलियों का दर्शन] को अपने कण्ठ में धारण कर लिया है अर्थात् वे रस केलि परायण श्यामा-श्याम के रूप का चिन्तन कर रही हैं ७. ढीली ढाली ८. लाल रंग वाली ९. रसिक प्रीतम के सिर पर १०. सूर्य ११. ग्रीवा में सुशोभित पान की पीक १२. पान से रचित दन्तावली अरुण है १३. अधरों का माधुर्य सुन्दर रस का सार है १४. अंजन से।

झिलमिलात सीसफूल, नील वरन मृदु दुकूल,
कंचन कैं फूलनि सौं, झलकत शोभा उदार[१]।
अनियारे दृग अनूप, तरल[२] तिलक अमित रूप,
विथुरी लट अरुझि रही, बन्दी[३] भृकुटी सुचारु।।२।।
बेसरि अति कलित कांति, श्रम-जल-कन ललित भाँति,
उर नख-शशि मथित मार[४], मोतिनु के गलित हार[५]।
सूचत पिय-संगम तिय-अंगनि में गसनि लसनि[६],
किरत कुसुम केशनि तें, आलस रस भरी नारि।।३।।
खुली कंचुकी सुहात, रँगमगाइ रही[७] गात,
सुभट जीति रतिरण मनु, धरत कवच कल उतार[८]।
रीझत लखि कमलनैन[९], चटकीले कहत बैन,
प्रेमदासि हित वारी, अद्भुत शोभा निहार[१०]।।४।।

[१४१-७]

राग-विभास

प्यारी कैं वदन पर विथुरी अलकैं,
मानौं घन में दरार परी झिलमिलात, तामें चन्द विराजै[११]।

---

१. स्वर्णिम फूलों से युक्त उस झीने नीलांबर से प्रिया जू के उदार अंगों की शोभा झलक रही है २. कान्तिवान या चमकीला ३. बिखरी हुई अलकावली वन्दिनी नामक आभूषण से उरझ रही हैं ४. प्रिया जू के उरोजों में सुशोभित प्रीतम-नख-चन्द्रों के चिह्न कामदेव के मन का मंथन कर रहे हैं ५. रस केलि में मोतियों के हार खण्डित हो गये हैं ६. प्रीतम को प्रगाढ़ रूप से आवद्धवक्ष करने के कारण प्रिया जू के श्रीअंगों में स्थल-स्थल पर सुशोभित चिह्नों की शोभा ही प्रीतम से संगम की सूचना दे रही है ७. सुरतानंद की सूचना दे रही है ८. मानों रति रण में जीतकर आये हुए शूरवीरों [प्रिया-उरोजों] ने अपने कवच [कंचुकी] उतारकर रख दिये हैं ९. कमल जैसे नेत्र वाले प्रीतम श्याम १०. सुरत-समलंकृत प्रिया जू की अद्भुत शोभा को देखकर दासीगण अपने प्राणों को न्यौछावर करती हैं और उनसे हास परिहास के चटकीले वचन बोलती हैं ११. प्रिया जू के मुख सुशोभित अलकावली ऐसी शोभा दे रही हैं मानों बादलों के फटने पर रेखाकार स्थानान्तरण झिलमिला रहा है और उसके मध्य में चन्द्रमा विराजमान है।

श्रमजल अमृत श्रवत फनी हित[१], पीक-लीक मषि गण्ड,
विधुंतुद पूज्यौ विधु, मानौं मिलि छबि छाजै[२]।।
उरज कंचुकी-बिनु यौं राजत, महा सुभट ज्यौं,
सजत न कवचनि-रण में, त्यौं ये रतिरण भ्राजैं[३]।
प्रेमदासि हित कुँवरि किशोरी, मृदु मुसिकाइ किये बस,
मोंहन-दृग कुलकत अमित सुख साजैं[४]।।
[१४२-८]

राग-विभास

अरुण अधर साँवरे वदन पर, मन्द हँसनि छबि कहत बनैं न।
मनु सिंगार-तमाल मध्य-अनुराग पत्र-फूलनि कैं ऐन[५]।।१।।
रद प्रतिविंव अधर-अधरनि प्रति,प्रतिविंव रदन गुन जात गनैं न[६]।
मनु सिंदूर रँगी मोतिनु की, लरी निरखि दृग निमिष टरैं न[७]।।२।।
ललित ललौंह[८] पीक मखि गंडनि, मनु मणिगन भूषण सुखदैंन[९]।
रूप-सरोवर में विलुलित मनु, मीन मैंन के चंचल नैंन[१०]।।३।।

१. मुख पर आलुलोलित अलकावली और श्रम स्वेद के कण इस प्रकार सुशोभित हो रहे हैं मानों सर्प के लिए अमृत का निर्झरण हो रहा है २. प्रिया जू के कपोलों पर पीक और अंजन के चिह्नों की सम्मिलित छबि ऐसी लग रही मानों राहु ने चन्द्रमा [प्रिया-मुख-चन्द्र] की पूजा की है ३. जिस प्रकार महा शूरवीर रण में जीत हो जाने के पश्चात् अपने कवच को उतार देते हैं उसी प्रकार रति-रण में जीतकर कंचुकी रहित उरोज सुशोभित हो रहे हैं ४. प्रिया जू की सुरत-समलंकृत इस छबि को देखकर मोहनलाल के दृग प्रसन्न होते हैं- अनन्त सुखों से संभृत होते हैं ५. साँवरे लाल जू के अरुणाभ अधरों पर विराजमान मन्द मुसिक्यान ऐसी छबि पा रही है मानों शृंगार रस के तमाल विटप में पूर्ण अनुराग के ही अरुण पत्ते और फूल फूल रहे हैं ६. दन्तावली में अधरों का प्रतिविंव पड़ रहा है और अधरों में दन्तावली का प्रतिविंव पड़ रहा है। परस्पर प्रतिविम्वित होने के कारण नवीन-नवीन छबि उत्पन्न हो रही हैं अत: उनके गुणों का कथन नहीं किया जा सकता ७. नेत्रों की पलकें नहीं पड़तीं अर्थात् अपलक दृष्टि से देखने लगते हैं ८. पाठा०-ललौभ ६. लालजू के कपोल प्रान्त पर लालिमा भरी हुई पीक और सुन्दर अंजन के चिह्न मानों सुखदायिनी मणियों [अरुण मणि और नीलमणि] के आभूषण की भाँति सुशोभित हो रहे हैं १०. चंचल चख ऐसे सुशोभित हो रहे हैं मानों रूप के सरोवर [मुख] में कामदेव के मीन क्रीड़ा कर रहे हैं।

चन्दन-बिन्दु ललाट पटल पर, मनु वर उदै भयौ शशि रैंन[१]।
चल[२] कुण्डल मण्डित गण्डनि मनु, निर्त्तत सौभगता मथि मैंन[३]।।४।।
सुन्दर भृकुटी नीलकमल पर, जुटीं मनौं मधुपिनि रस लैंन[४]।
कंचन वरन पाग चटकीली, पीत पराग बनत कहि बैंन[५]।।५।।
झलकत अलक ललित घुँघरारी, मनु राजत भृंगनि की सैंन[६]।
नासा-मोती थरहरात मनु, नटवा रूप नचत लहि चैंन[७]।।६।।
मुख पर मुख प्रतिविंवित प्यारी, कौ तामें बाजत मृदु बैंन।
कनक-कमल अरु नील कंज में, मनु किलकत हंसिनी सु नैंन[८]।।७।।
अद्‌भुत रूप अनूप माधुरी, गौर-श्याम पूरित सुख सैंन[९]।
प्रेमदासि हित चित रँगभीने, भागनि कौ फल सखी लखैं[१०] न[११]।।८।।
[१४३-६]

बतरस बिहार :- राग-गौड़ सारँग

जब प्रसन्न देखौं तेरे दृग, तब चितऊँ[१२] तेरौ मुख प्यारी।
जौलौं कृपा करौ तुम तौलौं[१३], साहस रहत तन मोहि हिया री[१४]।।
तुम जाननिमणि हौं अजान अति, कैसैं कहौं करौं मनुहारी[१५]।
प्रेमदासि हित निरखि प्रेम बस, भरे बाल[१६] भुज लालबिहारी।।

१. मानों सुन्दर रात्रि [लालजू के मुख] में चन्द्रमा [चन्दन-बिन्दु] उदित हुआ है २. चंचल ३. मानों कामदेव का मन मंथन करती हुई सुन्दरता ही निर्त्त कर रही है ४. लाल जू की सुन्दर भृकुटी ऐसी शोभा दे रही है मानों नीलकमल का रस लेने के लिए भ्रमरी एकत्रित हुई हैं ५. स्वर्णिम रंग की चटकीली पीली पाग को उस नीलकमल [लाल जू का मुख] का पीत पराग कहना उचित ही है ६. भ्रमरों की सैना ७. मानों रूप ही नर्त्तक बनकर प्रसन्नता पूर्वक निर्त कर रहा है ८. लाल जू के मुख पर प्रिया जू का मुख प्रतिविम्वित हो रहा है और उस समय वे मधुर वंशी वादन करते हुए ऐसे लग रहे हैं मानों स्वर्णिम कमल और नीलकमल में सुन्दर नेत्र वाली हँसिनी बोल रही है ६. प्रात:काल भी शैया विहार के सुख से पूरित श्यामा-श्याम १०. सुरत समलंकृत जुगलवर की इस शोभा को देखकर सहचरियाँ अपने भाग्य का फल मानती हैं ११. [अन्तिम पंक्ति में 'न' अक्षर पद की तुकों के मिलान हेतु ही प्रयुक्त किया गया है; अर्थ की दृष्टि से इसका कोई महत्व नहीं है] १२. देखूँ १३. जब तक तुम कृपा करके मेरी ओर देखती रहती हो तभी तक १४. मेरे हृदय में और तन में बल रहता है १५. मैं आपसे कैसे कहूँ केवल विनती ही कर सकता हूँ १६. प्रिया जू ने।

[१४४-१०]

राग-ईमन

बहु रँगनि रँगीली नागरी लड़काइ[१],
चोंज की बतियाँ पिय सौं करत मुदित।
पान खात सरसात गात[२] मुसिकात,
भाँति बहु आनन पर विमली अलक रुरत[३]।।
झमकि रहीं ललितादिक चहुँ दिशि, प्रफुलित कनक-कमल मनु तिन मधि,
हंस-हंसिनी परम ललित।
प्रेमदासि हित या छबि पर बलि,
कोटि मैंन के मदनि दलित[४]।।

[१४५-११]

कुसुम-कंदुक क्रीड़ा :–

राग-श्रीराग

झूमक सारी[५] पहिरैं सोसनी[६], कंचन के फूलनि सौं[७] प्यारी।
पान खात मुसिकाति उछारति, फूलनि की कर गेंदुक न्यारी[८]।।
सखी अंश दै बाँहु ऐंठ[९] इठलात[१०] निरखि पिय कौं सुकुमारी।
प्रेमदासि हित रोम-रोम पर, त्रिभुवन की शोभा बलिहारी।।

[१४६-१२]

राग-पूर्वी

गौर श्याम-कर श्याम गौर-कर, फूलनि की नवलासी राजैं[११]।
मानौं छुटे मैंन के सायक[१२], दाइ बचाइ परसि तन छाजैं[१३]।।
लियैं अली गैंदुक कुसुमनि की, अँग-अँग तकि हँसि-हँसि दै भाजैं[१४]।
प्रेमदासि ललितादिक सजनी, पुहुपनि वरषावति सुख साजैं[१५]।।

---

१. लाड़ में भरकर २. श्रीअंग सरस हो जाता है ३. प्रिया जू के मुख पर सुन्दर अलकैं अनेक प्रकार से नव-नव सौन्दर्य के साथ रुरक रही हैं ४. इस छबि पर करोड़ों कामदेवों के गर्व नष्ट हो जाते हैं ५. वह साड़ी जिसकी झालर में मोतियों के गुच्छे आदि लटके हों ६. सोसन के फूल के रंग की अर्थात् लालिमा लिए हुए नीले रंग वाली ७. स्वर्ण तारों से विनिर्मित फूल छापे वाली ८. निराली ९. अपनी बात पर अड़े रहने की प्रवृत्ति १०. मनोविनोद के लिए की गई ठसक ११. श्याम के कर-कमलों गौर वर्ण वाले पीत फूलों की और गौरांगी श्रीराधा के कर-कमलों में श्याम वर्ण वाले नील फूलों की गेंदें सुशोभित हैं १२. बाण १३. दाव को बचाते हुए अंगों का स्पर्श करते हैं १४. दौड़ती हैं १५. फूलों की वर्षा करते हुए सुख लूट रही हैं।

[१४७-१३]

कमल-क्रीड़ा :–

राग-जैजैवंती

माई ! आवति लाड़गहेली[१], कमल फिरावत[२]।
सखी अंश पर वाम बाहु दै[३], मंद-मंद हँसि गावत।।
फैलति तरुवनि की अरुनाई, मानौं धर[४] अनुराग बिछावत।
'प्रेम' सहित पिय झारि अलक मग[५], अलकलड़ी[६] कौं लाड़ लड़ावत।।

[१४८-१४]

राग-श्रीराग

लटकति आवति स्यामा प्यारी, सखी अंश भुज दीने।
कमल फिरावति हँसि-हँसि गावति, मधुर-मधुर सुर लीने।।१।।
कोमल फूलनि के दल आगैं, लाल बिछावत जात नवीने।
पुहुप-वाटिका प्रफुलित चहुँ दिशि, अलि-चय करत गुंज मधु पीने[७]।।२।।
देत छबीलौ करनि पान मुख, गूढ मनोरथ कीने[८]।
मुरि चितई दृग-कोर रँगीली, थकित भये मोंहन आधीने।।३।।
विवस जानि पिय, प्यारी अंक भर्‌यौ, मुख देत अधर रँगभीने।
प्रेमदासि हित दम्पति सुख संपति, विलसत मिलि उभय प्रवीने।।४।।

[१४९-१५]

गुलाब कुंज-क्रीड़ा :–

राग-पूर्वी

आवति लटकति प्यारी तिन पर[९], लाल कमल सौं मधुप उड़ावत।
फूलि रहे थल-जलज कनक-धर, मनौं मंजु हृद-कमल बिछावत[१०]।।

---

१. लाड़ से गर्वान्वित अथवा अत्यन्त गहरे लाड़ से युक्त श्रीराधा २. अपने हस्त-कमल से कमल फिराते हुए ३. बायीं भुजा रखकर ४. धरती ५. प्रिया जू जिस मार्ग पर आयेंगी उस मार्ग को प्रेमाधिक्य से विवश प्रीतम अपनी अलकों से झाड़ते हुए चलते हैं ६. लाड़िली श्रीराधा ७. पराग पान करके भ्रमरों के समूह गुञ्जार करते हैं ८. गूढ़ मनोरथ युक्त होकर लाल जू अपने कर-कमलों से प्रिया जू के मुख में पान खिलाते हैं ९. प्रिया जू के ऊपर से १०. अवनी में प्रफुल्लित थल के कमल [गुलाब] ऐसे सुशोभित हो रहे हैं मानों कनक धरनी ने अपना सुन्दर हृदय-कमल ही बिछा दिया है।

नूपुर नवल बजाइ ताल दै, पगनि[१] मगन ह्वै जब दोउ गावत।
प्रेमदासि हित तब की कहा कहौं, श्रवन नैंन तन पलटि सिहावत[२]।।
[१५०-१६]

अलि-आमोद :– राग-पूर्वी

पुहुपनि तजि अलि[३] घमड़े दंपति पर,
सहचरि निवारति[४] कमलनि सौं री।
पिय-उर लागत बाल मधुप सौं झिझकि[५],
दुरत मानौं विमल चन्द घन मौं री[६]।।
फूलनि-भरे[७] खरे[८] लपटत दोउ, को समुझै अलि! इनकी गौं री[९]
प्रेमदासि हित चित रँगभीने, अरुझे तन सौं तन मन सौं मन,
बँधे हैं निबन्धनि डोरी[१०]।।
[१५१-१७]

हंससुता तट पर हंस-कौतूहल :– राग-पूर्वी
ठाढ़ी कुँवरि हंसजा[११] कैं तट, मोती चुगावति हंसनि कौं री।
लै कर कमल उड़ावति मधुपनि, लाल रसाल परम छबि सौं री।।
फैलि रही शोभा तन अद्भुत, खिली चाँदिनी सी दिन में री[१२]।
प्रेमदासि हित मृदुल हँसनि में, झरत फूल कंचन के जब री[१३]।।

---

१. अपने-अपने पगों से ताल देते हुए २. जब वे दोनों नैनों को श्रवणों की ओर घुमाकर परम प्रसन्न होते हैं अर्थात् एक दूसरे को नैनों की कोरों से देखने लगते हैं। **द्वितीय अर्थ**–श्रवणों को नेत्रों के रूप में पलटकर परम प्रसन्न होते हैं अर्थात् श्रवणों को नैंन बनाकर उनके द्वारा एक दूसरे के सांगीतिक गान का मधुरिम रूप दर्शन करके परम प्रसन्न होते हैं ३. भ्रमर ४. हटाती हैं ५. डरकर ६. मानों चमकता हुआ चन्द्रमा घन में छिपता है ७. उत्साह से भरे हुए ८. सुन्दर ९. इन दोनों का हार्दिक भाव या उद्देश्य १०. प्रेम की निर्बन्ध डोरी से बँध गये हैं ११. जमुना जी १२. हंसों पर झलकती हुई श्रीप्रिया जू के श्रीअंग की अद्भुत शोभा दिन में भी चाँदनी की तरह खिल रही है १३. जब वे हँसती हैं तब स्वर्णिम फूल झड़ने लगते हैं।

[१५२-१८]

कदंब कुंज केलिः– सखी के वचन प्रिया जू प्रति, राग-हमीर
खरे री! आजु कदंब-तरैं,[१] श्याम सुजान[२] रँगभीने।
ताननि में बान से चलाइ[३], नुपूर बजाइ, पगनि ताल गति लीने।।
सुनि सुकुमारी[४] चित्रसारी[५] की किवारी खोलि,
वारी ह्वै[६] लखति छबि इकटक कीने[७]।
प्रेमदासि हित मानौं रूप-घन सौ विदारिकैं, निकसि चन्द सुख दीने[८]।।
[१५३-१९]

अद्भुत विटप - लता :– राग-पूर्वी
सौंनजुही[९] में सौंनजुही सी, न्यारी ठाढ़ी तादृश छबि,
तातैं जानी न परैं री[१०]।
श्याम तमाल[११] तरैं श्याम-तमाल ठाढ़े, सहज रूप एकत्र करैं री[१२]।।
नैंननि की सैंननि करि[१३] दंपति, प्रेम-रूप-रस रंग ढरैं री[१४]।
प्रेमदासि हित विटप-लता किधौं, लोकांजन[१५] दृग दुहुँनि धरैं री[१६]।।

---

१. नीचे २. चतुर प्रीतम ३. तानों के बाण जैसे चलाकर वे आपके ही रूप-गुणों का गान कर रहे हैं ४. सखी के मुख से ऐसा सुनकर सुकुमारी श्रीप्रिया जू ने ५. रस केलि के विचित्र चित्रों से चित्रित भवन ६. झरोखों से होकर ७. लाल जू को एकटक दृष्टि से देखती हैं या देखा ८. मानों रूप-घन को विदारकर चन्द्रमा उदित हो गया है। इस प्रकार से प्रिया जू ने लाल जू को सुख प्रदान किया ९. एक प्रकार की जूही जिसके फूल हल्के पीले रंग के और अधिक सुगंधित होते हैं १०. सौंनजुही के फूलों के मध्य सौंनजुही जैसी छबि वाली श्रीप्रिया जू खड़ी हुई हैं। यद्यपि वे सौंनजुही के फूलों से सर्वथा भिन्न रूप वाली हैं अर्थात् सौंनजुही के पुष्प उनके अद्भुत रूप-सौन्दर्य की समता नहीं कर सकते फिर भी इस समय उनकी छबि सौनजुही के फूलों जैसी ही है; इसीलिए वे पृथक से दिखाई नहीं देतीं ११. एक प्रकार का सदा बहार वृक्ष १२. एक ही स्थल पर इकट्ठा करते हैं १३. नैनों के संकेतों द्वारा ही १४. प्रेम, रूप और रस-रंगमय हो जाते हैं १५. एक प्रकार का अंजन जिसके विषय में यह प्रसिद्धि है कि इसे लगाने से लगाने वाला अदृश्य हो जाता है; उसे कोई नहीं देख पाता। १६. सहचरी भावानु- भावित प्रेमदासजी कहते हैं कि इस समय जुगलवर तमाल वृक्ष और सौनजुही की लता की भाँति दिखाई दे रहे हैं अथवा वे अपने नैनों में लोकांजन लगाकर अदृश्य जैसे हो गये हैं।

[१५४-२०]

प्रतिबिम्ब-प्रताप :— राग-पूर्वी

आजु विपिन के पुहुप-पत्र में[१], झिलमिलात[२] दोऊ रसिक रँगीले।
फूल-फूल दल-दल सिज्या करि, मनु बिहरत दंपति झमकीले[३]।।
भई सखी चकई[४] सी लखि-लखि, दोऊ ओर के रूप छबीले[५]।
प्रेमदासि हित यह सुख निरखत, भये मैंन के अँग-अँग ढ़ीले[६]।।

[१५५-२१]

राग-आसावरी

री! तेरे वदन माँहिं प्रतिबिंवित पिय-दृग, मानौं चंद में कंज वई[७]।
तव आनन पर निजु नैंननि में, तोहि दामिनी सी लखि मोंहन,
वरषत घन सौ रंग नई[८]।।
लाल बाल कौं पाय चखनि में, मूँद लीइते तिन मधुपनि कौं,
तरफन तिय-मुख-कमल भई[९]।
प्रेमदासि हित मोद ओट ह्वै, लोचन ललित खुलाइ मिलाइ,
कुँवरि-कुँवर मिलि रूप छई[१०]।।

१. वृन्दावन के फूलों और पत्तों में २. रह-रहकर जगमगाते हैं ३. चमकीले श्यामा-श्याम ४. काठ का एक प्रसिद्ध खिलौना जो लगी हुई डोरी पर ऊपर-नीचे चढ़ता उतरता है ५. दोनों ओर के छबीले रूप को देख-देखकर सहचरियाँ चकई सी हो गईं अर्थात् उनके आगे पीछे चक्कर लगाने लगीं ६. कामदेव के सभी अंग सिथिल हो गये ७. मानों चन्द्रमा [प्रिया मुख-चन्द्र] में कमलों [प्रीतम-नैन का प्रतिविम्व] का वपन कर दिया है ८. तुम्हारे मुख पर प्रतिविम्वित अपने नेत्रों [जिनमें कि चंचल दामिनी की भाँति आप सदा बसी रहती हो] में वे [मोहन] तुम्हें दामिनी सी देखकर घन की भाँति नवीन आनन्द की वर्षा करने लगते हैं ९. प्रिया जू के मुख पर प्रतिविम्वित नेत्रों में उन्हीं की झलक पाकर लाल जू सोचने लगते हैं कि प्रिया जू मेरे नेत्रों में ही आ बसी हैं। अत: इस आनन्द-संभार से वे अपने नेत्र-भ्रमरों को मूँद लेते हैं। लाल जू की इस क्रिया से जब दोनों की दृष्टि अमिलित हुई तो प्रिया जू के मुख-कमल पर अपने अनन्य भ्रमर का दर्शन पाने की आकुलता उत्पन्न हो जाती है १०. प्रेम की दासीगण अथवा सखी भावापन्न प्रेमदासी श्रीहित के इस आनन्द को रन्ध्रों की ओट से देख रही थीं। वे निकट गईं और लाल जू के ललित लोचनों को खुलवाकर उन्होंने श्रीप्रिया-लाल के नेत्र मिलवा दिये। कुँवरि-कुँवर के इस सम्मिलन से एक अद्भुत रूप छा गया।

[१५६-२२]

अद्भुत वन बिहरण :— राग-जौंनपुरी तोड़ी

मन्द-मन्द पग धरत रँगीले, खेलत मद गज हंसनि की गति[१]।
होत ललामी[२] लाल चरनन की, मानौं हृदय-कमल बिछावत अवनी,
थके लखि नैंन अलिन के मधुव्रत[३]।।
दियैं भुज ग्रीवाँ दम्पति राजत, मनु दामिनि पर छाय रह्यौ घन,
घन पर दामिनि छबि सौं छाजत[४]।
प्रेमदासि हित चलति कटाक्ष सौं, मानौं लहर सिंगार-सिन्धु की[५],
मंद हँसनि लखि होत बलि रतिपति।।

[१५७-२३]

विवाह-विलास :— राग—सूहौ विलावल

आजु सखिनु मिलि व्याह रचायौ। बहु फूलनि सौं मंडप छायौ।।
गजमोतिनु[६] सौं चौक पुरायौ। आँगन रतननि रुचिर खचायौ[७]।।
खचाइ आँगन रतन-वेदी[८], सेज कंज[९]-दलनि रची।
बाँधि वन्दनमाल मोतिनु की सकल रचना सची[१०]।।
तने विविध वितान फूलनि, के सरस छवि सौं छये।
दैन दैंहिं न नैंन उपमा, मैंन लखि विथकित भये।।१।।
उवटन पिय-प्यारी के कीने। मज्जन[११] करंत जुगल रँगभीने।।
सूहे वसन[१२] सखिनु पहिराये। चरननि जावक चित्र बनाये।।
बनाइ जावक चित्र चरननि, करनि मँहदी रँग रँगे।
गुही वैंनी मणिनु सौं, मुख खौर[१३] मरुवट[१४] जगमगे।।

१. मदमाते गज की तरह मल्हकते हुए और हंस की तरह मन्द-मन्द चलते हुए २. लालिमा ३. जिन्हें देखकर सहचरियों के नेत्र-भ्रमर थकित हो गये ४. शोभा देती है ५. उनके नेत्र-कटाक्षों से मानों शृंगार रस के समुद्र की लहरें चलती हैं ६. गजराज के मस्तक पर होने वाला मोती ७. खचित किया या जड़ दिया ८. मांगलिक कार्य के लिए तैयार किया हुआ एक चौकोर स्थल ९. कमल १०. पाठा०—खची ११. स्नान १२. चमकीले गहरे लाल रंग के वस्त्र १३. चन्दन की पत्रावली १४. विवाह के समय दूलह के मुख पर रोरी और हल्दी से किये गये चित्रांकन (पाठान्तर-वरुवट)।

झमकि रहे अँग-अंग भूषन, विशद दृग अंजन करे।
मौर-मौरी[१] फूल के, पहिराइ मुख पानंनि भरे।।२।।
दुलहिनि-दूलह श्यामल-गोरी। बाँधे कँगना[२] प्रीति न थोरी।।
जलज[३] सेहरे[४] रचि पहिराये। अंचल चंचल ग्रन्थि[५] जुराये[६]।।
जुराय अंचल ग्रन्थि आवत, श्याम-श्यामा मुख[७] सजैं।
सखी जुगल-सुहाग गावति, व्याह के बाजे बजैं।।
मनाइ छबि सौं गौर हित मधु-पर्क[८] मधु[९] चाखत मिले।
फेरि भाँवरि नेह की करि, दूधाभाती[१०] रस झिले।।३।।
पलिकाचार समय सुख छायौ। अँग-अँग मैंन-रंग झलकायौ।।
रोमांचित भये मोंहन प्यारे। नवल वधू घूँघट नहिं टारैं।।
टारैं न घूँघट नवल भामिनि, लाल बहु छँदबँद करैं।
करि प्रनय कौ कोप कंचन-खानि सी उर में धरैं[११]।।
करी सब विधि रीति, मृदु मुसिकाइ तिय पिय सौं मिली।
प्रेमदासि हित बाँटि मेवनि, गोद भरि अलि रस-झिलीं[१२]।।४।।

[१५८-२४]

मोहन-मोहक रूप :— राग-आसावरी

करि मन! श्यामा जू कौ ध्यान।
परम आनँदकंद सुंदर श्याम के धन प्रान[१३]।।१।।
गुही बैंनी मनिनु सौं, मनु फूली लता सिंगार[१४]।
हेम-कदली मृदुल दल, कछु पिष्ट की उनहार[१५]।।२।।

१. विवाह काल में नव दूलह-दुलहिनी को धारण कराये जाने वाले शिरोभूषण २. हाथ का एक आभूषण विशेष ३. मोतियों के ४. विवाह कालीन मुख-भूषण जो अनिवार्यतः धारण कराया जाता है ५. आँचल गाँठ ६. गाँठ जोड़ी या बाँधी ७. पाठा०—सुख ८. वैवाहिक भोजन ९. मधुर १०. विवाहोपरान्त होने वाली एक रीति जिसमें नव दूलह और नव दुलहिनी परस्पर एक दूसरे को भोजन कराते हैं ११. प्रणय कोप के समय होने वाली प्रिया जू की शोभा को लाल जू स्वर्ण की खदान जैसा मानकर हृदय में धारण करते हैं १२. रस में तल्लीन हो गईं १३. जो परमानन्द की मूल हैं और श्यामसुन्दर की प्राणधन हैं १४. मानों शृंगार रस की श्याम लता ही प्रफुल्लित हो रही है १५. उनकी पीठ की छबि कथंचित सादृश्य स्वर्ण-कदली के कोमल पत्तों में देखा जा सकता है।

केस-घन[१] वग-पाँति-मुक्ता, चाँप सेंदुर मंग[२]।
चमक-छन[३] रुचि-रूप-वरषत, कुँवर-चात्रक-संग[४]।।३।।
सीसफूल सु फूल सौं[५], पिय धर्‌यौ निजु कर ऐन[६]।
कमल पूजत कमल सौं, मनु चन्द लखि सुख नैन[७]।।४।।
चंद्रिका ढिंग वंदिनी, चल-दल कनक ता माँहिं[८]।
चन्द्र मुख की चंद्रिका मनु, कला लागी ताहि[९]।।५।।
सुभग बैंना[१०] खच्यौ, नव रतननि मनोहर भाल।
सूर प्रगट्‌यौ भवन शशि मनु, मन बढ़ावनि लाल[११]।।६।।
दियैं कुमकुम[१२]-आड़, बैंदी-मृगमद[१३] लसत लिलार[१४]।
जगमगत अनुराग-गोद, सिंगार मनु छबि चारु[१५]।।७।।
बंक भृकुटी-धनुक छूटत, बान दृग नव रंग[१६]।
जुगल सैंना अलक लखि, लोचन भई पिय पंग[१७]।।८।।
श्याम तिल[१८] अभिराम[१९] गंडनि-पर[२०] दिपत बहु भाइ।
मनौं राजत भृंग पिय-मन, दल कमल थल आइ[२१]।।९।।

१. केश काले हैं और सघन हैं २. माँग के मोती वग-पंक्तियाँ हैं और माँग का सिन्दूर सप्तरंगी धनुष है ३. माँग-मोतियों की चमक ही दामिनी है ४. इस प्रकार प्रिया जू लाल रूपी चात्रक के साथ रुचि और रूप की वर्षा करती हैं ५. उमंग से ६. जैसा होना चाहिये वैसा ही ७. मानों चन्द्रमा [श्याम-चन्द्र] कमलों से [अपने कर-कमल से] कमल [प्रिया मुख-कमल] की पूजा करता है जिसे देखकर [सभी सहचरियों के] नेत्र सुखी होते हैं ८. उस चन्द्रिका में स्वर्ण के पीपल पत्ता की आकृति बनी हुई है ९. मानों प्रिया जू के मुख-चन्द्र पर सुशोभित उस चन्द्रिका में मूर्तिमान कला ही सुशोभित हो रही है १०. सिर का एक आभूषण विशेष ११. मानों लाल जू के मन को उत्साहित करने के लिए चन्द्रमा के भवन [प्रिया-मुख] में सूर्य [वैना नामक आभूषण] ही प्रकट हो गया है १२. रोरी या केशर १३. कस्तूरी १४. भाल प्रान्त पर १५. मानों अनुराग की गोद [रोरी] में शृंगार रस [कस्तूरी] की सुन्दर छबि जगमगा रही है १६. बंक भृकुटी रूपी धनुष से नेत्र-कटाक्षों के नव रंगी प्रीतम पर अथवा नवीन रंग वाले बाण छूट रहे हैं १७. प्रिया जू की अलकावली को देखकर प्रीतम के नेत्र द्वय रूपी दोनों ओर की सेनायें पंगु हो गईं अथवा दोनों ओर की अलकावली रूपी सेना को देखकर प्रीतम के लोचनों की गति पंगु हो गई १८. काले रंग का तिल १९. सुन्दर २०. कपोल पर २१. मानों प्रीतम का मन रूपी भृंग गुलाब के दल किंवा थल कमल दल (प्रिया जू के मुख) पर आकर सुशोभित हो रहा है।

करनि कंजनि-झूमका, मन नील षटपद लोल[१]।
विंव प्रतिविंवन छई छबि, चारु रुचिर कपोल[२]।।१०।।
कलित[३] बेसरि बनी नासा-कीर पर दुति-दाम[४]।
अधर रद प्रतिविंव मुसिकनि[५], चिवुक विंदु सु श्याम।।११।।
कंबु कंठ सु पदिक-दुलरी, सौंनजुही सु माल।
नील आँगी मिलि त्रिवेनी, भई परम रसाल[६]।।१२।।
कमल कली कुच भुज-मृणाल केयूर राजत मंजु[७]।
स्याम चुरी[८] अरु वलय[९] पहुँची[१०], कोष कल कर कंज[११]।।१३।।
ललित[१२] गजरे[१३] रतनचौक[१४] सु, छल्ला[१५] मुदरी[१६] अनूप।
करज नख दल कमल पर, शशि करत वरषा रूप[१७]।।१४।।
उदर सुन्दर सिन्धु रस कौ, नाभि भँवर[१८] विशाल[१९]।
लहर त्रिवली[२०] मीन मन पिय[२१], किंकिनी सु मराल[२२]।।१५।।

---

१. प्रिया जू के कानों में कमलों के झूमका हैं जिन्हें देखकर श्याम-भ्रमर का मन चंचल हो रहा है २. सुन्दर कपोलों पर उन झूमका के प्रतिविम्व की सुन्दर छबि छा रही है ३. सुन्दर ४. दुति की राशि ५. अधर और दन्तावली में मुसिक्यान का प्रतिविम्व पड़ रहा है ६. शंख के आकार जैसे सुन्दर और सुडौल कण्ठ पर पदिक से युक्त लाल रत्नों की दुलरी [सरस्वती] और सौनजुही [गंगा] की माला सुशोभित हैं जो नील कंचुकी [जमुना] से मिलकर परम रसपूर्ण त्रिवेणी की शोभा विकीर्णित कर रही हैं ७. सुन्दर भुज-मृणाल में बाजूबंद नामक आभूषण है ८. काले रंग की (मर्कत मणि की) चूड़ी ९. हाथ में पहनने का कंगन १०. कलाइयों पर पहनने का एक आभूषण विशेष ११. सुन्दरता के कोष कर-कमलों में १२. सुन्दर १३. फूलों की घनी गुँथी हुई माला; जो कलाई पर गहने के रूप में पहनी जाती है १४. हाथों का एक आभूषण विशेष १५. धातु विनिर्मित अँगूठी के आकार का एक भूषण; जो हाथ के अँगूठे में पहना जाता है १६. अँगूठी १७. अँगुलियों के नख रूपी कमल दलों पर चन्द्रमा रूप की वर्षा कर रहा है १८. अत्यन्त गहरे जल में लहरों का वृत्ताकार होकर घूमना १९. सुन्दर उदर रस का समुद्र है जिसमें नाभि ही विशाल भँवर है २०. नाभि के कुछ ऊपर पड़ने वाली तीन रेखायें २१. रस के समुद्र उस उदर में त्रिवली की तीन रेखायें ही लहरें हैं जिनमें प्रीतम का मन मीन होकर कल्लोल कर रहा है २२. कटि में स्थित शब्दायमान किंकिणी ही हंसों का सुन्दर बोल है।

पीत अतरौटा[१] छपैमा[२], नीलांबर कनक सुरंग[३]।
मनौं दामिनि पर छयौ घन, करि अलंकृत अंग[४]।।१६।।
कटि तनक[५] जंघा रुचिर[६], कल पृथु[७] नितम्वनि संग।
हेम-सिंहासन महीपति, कुँवर मदन अभंग[८]।।१७।।
जानु[९] दंड सु हेम के, पाइल सरस रस बान[१०]।
चारु चरनन-कमल पिय के, प्रान भृंग सु जान[११]।।१८।।
चित्र जावक के करत, मन चित्र पिय ततकाल[१२]।
धुनित बिछिया दल कमल पर, मधुप परि छबि जाल[१३]।।१९।।
सुभग अनवट[१४] चन्द्रमनि नख, मिले झिलमिल होत[१५]।
चकित नैंन-चकोर पिय के, भये निरखि उदोत[१६]।।२०।।
रूप-रस की सींव की छबि[१७], कही कापै जाइ।
वेई जानत नैंन पिय के, रही तहाँ समाइ[१८]।।२१।।
प्रेमदासि हित करैं जो जन, ध्यान इहिं चित लाइ[१९]।
श्रीराधाबल्लभलाल निरखैं, सहचरी-तन पाइ[२०]।।२२।।

---

१. पीला लहँगा २. छापेदार ३. स्वर्ण के से सुन्दर रंग वाली श्रीराधा के ऊपर ४. अपने अंगों को सजाकर ५. सूक्ष्म ६. सुन्दर ७. पुष्ट ८. मानों स्वर्ण के सिंहासन पर राजा कामदेव के कुँवर अचल रूप से विराजमान हैं ९. घुटना और घुटने से नीचे का भाग १०. जानु स्वर्ण के डण्ड हैं जिनमें नीचे सुशोभित पायलों का शब्द रस का सरस प्रवाह बना हुआ है ११. प्रिया जू के सुन्दर चरण-कमलों में प्रीतम के प्राण ही भ्रमर समझो १२. प्रिया जू के चरणों में बने जावक के चित्र प्रीतम के मन को तत्काल ही चित्रवत् बना देते हैं अर्थात् उनका मन चित्र की भाँति प्रिया जू के चरणों में ही टिक जाता है १३. पगों की अँगुलियों में बिछुवा नामक भूषणों की ध्वनि ऐसी लग रही है मानों कमल दलों पर छबि के जाल में फँसे हुए भ्रमर गुञ्जार कर रहे हैं १४. पगों के अँगूठे में पहनने वाला एक प्रकार का छल्ला १५. चन्द्रमणि की भाँति देदीप्यमान नख सुन्दर छल्लों से मिलकर झिलमिला रहे हैं १६. उन्हें प्रकाशमान या उदय होते हुए देखते ही प्रीतम के नेत्र-चकोर चकित हो गये १७. रूप और रस की अन्तिम सीमा श्रीराधा की छबि १८. प्रीतम के वे नेत्र ही इस शोभा को जानते हैं जिनमें श्रीराधा के प्रत्यंग की छबि समाई हुई है १९. चित्त लगाकर २०. उन्हें अपने नित्य सिद्ध सहचरी वपु से हित मूर्ति श्रीश्यामा-श्याम का दर्शन होगा।

[१५६-२५]

राग-आसावरी

प्रिया-प्रिय रूप :-

भजि मन! राधाबल्लभलाल।
परम आनँदकंद सुंदर, रसिक-इन्दु[१] रसाल[२]।।१।।
फूले नील सरोज पद सु, पराग केसरि-चित्र[३]।
चन्द्र नख मकरंद सुख कौं, मनौं आये ह्वै मित्र[४]।।२।।
हेम-नूपुर[५] जटित मनि-नग, धुनित रस-आगारु[६]।
मनौं कमलनि मध्य कूजत, हंस-सुत-चय चारु[७]।।३।।
जानु[८] वर रसखानि लखि, दृग आन कौं नहिं जाइ[९]।
इही उपमा सखी इनकी, और नहिं ठहराइ।।४।।
बाग मनमथ के कदलि मनि, नीलमय जो होय।
सुंदर जंघ अनूप की छबि, छटा सम नहिं कोइ[१०]।।५।।
स्याम तन अभिराम जगमग, रही धोती पीत[११]।
मूरतिवंत सिंगार पर मनु, छाइ रही सु प्रीति[१२]।।६।।
कटि तनक[१३] लखि कटत मन[१४] कछु, शोभा कहत बनैं न।
किंकिनी के जाल परि, निकसत न खंजन नैंन[१५]।।७।।

---

१. रसिकों के चन्द्रमा २. रस से पूर्ण ३. लाल जू के चरण नील कमल की भाँति फूले हुए हैं जिनमें केसर से विनिर्मित चित्र ही कमल-पराग के रूप में शोभा दे रहे हैं ४. मानों नख-चन्द्रमा पराग-पान का सुख प्राप्त करने के लिए कमलों के मित्र बनकर यहाँ आ गये हैं ५. स्वर्ण के नूपुर ६. जिनकी ध्वनि रस का घर ही है ७. मानों कमलों के बीच सुन्दर हंस के बच्चों का समूह गुञ्जार कर रहा है ८. घुटना और घुटने से नीचे का भाग ९. रस की खान जानु की शोभा देखकर मेरे नेत्र अन्य किसी उपमा की ओर नहीं जाते क्योंकि १०. यदि कामदेव के बाग में नीलमणि की कदली भी लग जाये तो भी सुन्दर और अनुपम जंघस्थली की छबि छटा से उनकी समता प्रदर्शित नहीं की जा सकती ११. पीले रंग की धोती जगमगा रही है १२. प्रीति का रंग पीला होता है– [**''प्रथम प्रेम कौ पीत रँग''**-अतिबल्लभदास जी की वाणी] १३. सूक्ष्म १४. मन न्यौछावर हो जाता है १५. किंकिणी के जाल में पड़े हुए नेत्र-खंजन नहीं निकल पाते।

नाभि गहरी सिन्धु रस, लहरी सु त्रिवली सुहाय।
रोमावलि मनौं रूप-सरिता, मिलीं सहज सुभाइ[१]।।८।।
हार मोतिनु के मनोहर, लसत उर वनमाल।
महा कोमल ह्रदै-कमल वर, रहत सदा कृपाल[२]।।९।।
उर बसी उरबसी तामें, लसी कुँवरि अनूप।
उर बसी प्यारी लसी मनु, प्रगट धरैं सरूप[३]।।१०।।
मुदरिका मनिमय करज[४] नग[५], रतनचौक अमंद।
मनौं कमलनि पर चढ़े सखी, सहित उड़गन चंद[६]।।११।।
चूरा बने अमेंठमा[७], ऐंठत सु मनहिं नवीन[८]।
बाजू बाजूबंद[९] बाजू, वीना मन-मृग[१०] कीन[११]।।१२।।
कंचुक[१२] तनसुख[१३] कौ रह्यौ[१४], तन लागत तन सुख मूल[१५]।
कलमकारी काम जुत तहाँ, लसत कंचन-फूल[१६]।।१३।।

---

१. गंभीर नाभि ही रस का समुद्र है जिसके निकट त्रिवली की रेखायें ही उसकी लहरें हैं। रोमावली ही रूप की सलिता बनकर उस नाभि-समुद्र से सहज और स्वाभाविक रूप से मिल रही हैं २. जिनका महा कोमल ह्रदय-कमल सदैव कृपा से पूर्ण बना रहता है ३. उर में विराजमान 'उरबसी' नामक आभूषण में कुँवरि श्रीराधा का अनुपम चित्र इस प्रकार सुशोभित हो रहा है मानों लाल जू के ह्रदय के भीतर सदा निवास करने वाली प्रिया जू ने ही प्रत्यक्ष स्वरूप धारण कर लिया है ४. हस्तांगुलियों में मणि जटित अँगूठियाँ हैं ५. पाठा०–नख ६. हस्त-कमलों में अमन्द ज्योति वाले नगों के 'रतनचौक' नामक आभूषण ऐसे लग रहे हैं मानों कमलों [हस्त-कमलों] के ऊपर तारागणों [मोती की लड़ियों] के साथ चन्द्रमा [वृत्ताकार रतनचौक] विराजमान हो ७. घुमावदार ८. हस्त-कमलों में सुशोभित वे नवीन चूरा मन को मरोड़ देते हैं अर्थात् मन उनकी छबि में उलझकर घूमने लगता है ९. भुजाओं में 'बाजूबन्द' नामक गहना है १०. पाठा०–खग ११. पार्श्व में विराजमान प्रिया जू के वीणा वादन ने उनके मन को मृग बना दिया है १२. जामे या अचकन की तरह का एक पहनावा विशेष जो घुटनों तक लम्बा होता है १३. एक प्रकार की फूलदार बढ़िया महीन मलमल १४. सुशोभित १५. जो श्रीअंग में पहनते ही अंगों को सुख प्रदान करता है १६. उस कंचुक में काम युक्त बेल बूटे और स्वर्ण तारों से विनिर्मित फूलों की आकृति बनी हुई हैं।

फव्यौ पीतांबर मनोहर, स्याम तन बहु भाँति[१]।
नीलमनि के मेरु पर मनौं, छयौ[२] अरुन प्रभात[३]।।१४।।
कण्ठ कण्ठी मणि दिपत, जगमगति प्रभा-प्रकाश।
रूप-रस की सींव ग्रीवाँ, मनु बसी वा पास[४]।।१५।।
झिलमिलत मुसिकान सौं जब, कहत रसमय बैंन।
कूजत छबि की मंजरी पर, कोकिला सुखदैंन[५]।।१६।।
मिलत रद छद भाइ अरुनिम, रदन मुख छबि पूर।
मनु कमल में धरी मुक्ता-लरी रंगि सिंदूर[६]।।१७।।
बनी बेसर इक नगी[७], नासा रुचिर पर आइ।
मुकतनि की थरहर करै मन, मुक्तनि कैं रस चाइ[८]।।१८।।
मकराकृत[९] कुंडल बने सुठि[१०], चपल झलक कपोल।
मीन मनसिज कैं करत मनु, रूप सींचि कलोल[११]।।१९।।
अलक लखि दृग ललक बाढ़त[१२], पल पलक[१३] गहि लीन[१४]।
रही पेंचन खाइ मन गहि, पेंच पेंचन कीन[१५]।।२०।।

---

१. अनेक आभाओं से युक्त २. पाठा०–छप्यौ ३. मानों नीलमणि के पर्वत पर प्रात:काल का सूर्य छा रहा है अर्थात् उसकी पीत आभा और अरुण आभा विकीर्णित हो रही है ४. ग्रीवाँ मानों रूप और रस की सींवाँ ही है और उसी के पास बसी हुई मणियों की कण्ठी ऐसी शोभा दे रही है मानों सूर्य मंडल का प्रकाश जगमगा रहा है ५. मन्द मुसकान के साथ जब वे रसमई वचन बोलते हैं तो ऐसा लगता है मानों छबि की मंजरी पर बैठी सुखदाई कोकिला कुहुक रही है ६. ओष्ठ भावपूर्वक परस्पर मिलते हैं और मुख में पान की अरुणिमा से पूरित दन्तावली की छबि ऐसी लग रही है मानों कमल में सिंदूर से रँगी हुई मोतियों की लड़ी रखी हुई हैं ७. एक नग वाली बेसर ८. वह मोतियों की बेसर मुक्तजनों के मन को भी कँपित कर देती है और रस के उत्साह से उत्साहित बना देती है ९. मकर की आकृति जैसे १०. सुन्दर ११. उन कुण्डलों की चंचल छबि कपोलों पर ऐसी प्रतिविम्वित हो रही है मानों कामदेव की मछली रूप का सिंचन करती हुई कल्लोल कर रही हैं १२. अलकावलि की सुन्दर छबि को देखकर [मेरे या दृष्टा के] नेत्रों में उस छबि को देखने की चाह और अधिक बढ़ जाती है १३. पाठा०–झलक १४. उस छबि ने एक क्षण में ही पलकों की गति को रोक लिया अर्थात् नेत्र निर्निमेष दृष्टि से अलकावली की छबि देखने लगे १५. पेच खाती हुई- घुमाव फिराव से युक्त घुँघराली अलकावली की उस छबि ने मन को पकड़कर ऐसे चक्करों में डाल दिया कि उसके कार्य या विचार की दिशा ही बदल गई अर्थात् मन अलकावली की घुँघराली छबि में ही अटक गया।

वर[१] विशाल रसाल[२] लोइन[३], अनी कोइन माँहिं[४]।
बनी रस सौं सनी मनमथ, कनी लखि मुरझाहिं[५]।।२१।।
बंक भृकुटी लसत दरसत, सरस रस बरसाय।
नैंन नील सरोज के मनु, मधुप अनत न जाय[६]।।२२।।
भाल ललित विशाल मध्य[७], रसाल चंदन-बिन्दु।
शरद राका रैंनि में मनौं, उग्यौ पूरन इन्दु[८]।।२३।।
लाल फेंटा हरी बूटी, वर मुकेसी जाल[९]।
चुहचुह्यौ[१०] धरि चारु चटकीलौ[११] मनोहर भाल[१२]।।२४।।
रतनपेंच[१३] अनूप तुर्रा, जरी के नव रंग।
बनी कलंगी[१४] मोतियनि की, पुहुप-गुच्छनि संग[१५]।।२५।।
परम ललित त्रिभंग[१६] मूरति, वर सरस रस-खान।
करत मुरली में किशोरी, के गुननि कौ गान[१७]।।२६।।
रहत प्यारी कौ वदन नित, फूल्यौ हेम सरोज।
लाल-अलि मकरंद-रस लै, सेवत भर्‌यौ मनोज[१८]।।२७।।

---

१. श्रेष्ठ या सुन्दर २. रसपूर्ण ३. नेत्र ४. आँख के कोने बड़े ही पैने हैं या उनमें बड़ा ही नुकीलापन है ५. लाल जू के नैनों की शोभा का एक कण मात्र देखकर रस सनी रति [मनमथ की बनी] भी मूर्छित हो जाती है ६. देखते ही हृदय में रस की सरस वर्षा करने वाली लाल जू की बाँकी भृकुटी ऐसी सुशोभित हो रही हैं मानों वे प्रीतम के नैन रूपी नील कमलों के ही भ्रमर हैं जो इन्हें छोड़कर कहीं अन्यत्र नहीं जाते ७. बीचों बीच ८. लाल जू के भाल प्रान्त पर लगा चन्दन का बिन्दु ऐसा लग रहा है मानों शरद पूर्णिमा की रात्रि में पूर्ण चन्द्रमा उदित हो रहा है ९. सिर पर बाँधी जाने वाली हलकी पगड़ी लाल रंग के वस्त्र की है; जिसमें हरे रंग की छोटी-छोटी बूटियाँ और जरी का जाल बना हुआ है १०. रस से इतना अधिक ओतप्रोत या भरा हुआ कि उसमें से रस टपकता हुआ जान पड़े ११. जिसमें खूब आभा और चमक हो १२. मनहरण भाल रस से ओत प्रोत, बहुत अधिक आभा युक्त और सुन्दरता को धारण किये हुए है १३. सिर का एक आभूषण विशेष जो पाग के अग्रभाग में खोंसा या लगाया जाता है १४. कई प्रकार के पक्षियों के बहुत ही कोमल और सुन्दर पर जो पाग में आगे की ओर शोभा वर्द्धन के लिए लगाये जाते हैं १५. फूलों के गुच्छों के साथ १६. खड़े होने की मुद्रा जिसमें तीन बल पड़े हुए हों १७. सहज कृपालुता, दयालुता, मृदुता और मधुरता आदि अनन्त गुणों का गान करते हैं १८. प्रिया जू का श्रीअंग स्वर्ण कमल की भाँति नित्य प्रफुल्लित बना रहता है; स्वानंद-संभृत हृदय लाल जू अनन्य भ्रमर बनकर उसके मकरन्द रस का पान करते हुए सदा सर्वदा सेवन करते रहते हैं।

प्रेमदासि हित ध्यान यह जो, नित करै चित लाइ।
श्रीवृन्दावन रानी करैं, तापर कृपा सुख पाइ[१]।।२८।।

[१६०-२६]

लाल-लावण्य :- राग-श्रीराग

आजु सखी साँवरे वदन पर, लटकि रहीं लट घूँघरवारी[२]।
बंक विशाल रसाल नैन की, कोरनि सौं चितवत छबि न्यारी[३]।।१।।
पाग लटपटी लाल लाल कैं[४], पुहुप-गुच्छ शोभा अति भारी।
कबहूँ कुँवर कपोल विकसावत, कुंडल झलमलात सु तहाँ री[५]।।२।।
कबहुँक चरन नचावत गावत, रूप-चातुरी बहु विस्तारी[६]।
कबहुँक लै कर कमल फिरावत, तहाँ अलि आइ करत गुंजारी।।३।।
मंद-मंद हँसि वैंनु बजावत, गावत राधा-राधाप्यारी।
प्रेमदासि हित रसिक रँगीलौ, लटकि चलत मन हरत बिहारी।।४।।

[१६१-२७]

मनमोहक श्रृंगार :- राग-मालव गौरी

राजत श्रीवृषभानुदुलारी[७]।
झमकि रहे नव-सत अँग-अंगनि, त्रिभुवन की छबि वारी।।१।।
कियैं प्रथम मज्जन मन रंजन[८], दियैं जलज[९] नासा री।
नीलांबर सारी अति राजत, नीवी[१०] सरस सँवारी।।२।।
वैंनी गुही जुही[११] फूलनि सौं, दिपत तरौंना भारी[१२]।
अंगराग[१३] तन चिकुर-चंद्रिका, गुही ललित[१४] शोभा री[१५]।।३।।

---

१. वृन्दावन रानी श्रीराधा अपने प्रीतम का यह गुणगान सुनकर परम प्रसन्न होंगी और उस पर कृपा करेंगी २. घुँघराली ३. प्रियाजू की निराली छबि को देखते हैं ४. लाल जू के भाल प्रान्त पर लाल रंग के वस्त्र की ढीली ढाली पाग बनी हुई है जिसमें ५. कभी वे हँसते हैं तो उनके वे कपोल खिल उठते हैं जिनमें कर्ण-कुण्डलों की आभा प्रतिविम्वित हो रही है ६. वे गान करते हुए नृत्य करते हैं जिसमें चातुर्य के नये-नये रूपों का विस्तार होता है ७. श्रीप्रिया जू शोभायमान हो रही हैं ८. मन को अच्छा लगने वाला ९. मोती १०. इजार वंद ११. पाठा०-विविध १२. तरौंना नामक कर्णाभूषण बहुत अधिक जगमगा रहा है १३. अंग-सजावट की सामग्री १४. पाठा०-लसत १५. केशों पर चन्द्रिका या केशों की चन्द्रिका को सुन्दर शोभा से गुम्फित किया गया है।

उर-माला कर-कमल पान मुख, चिवुक श्याम बिन्दु न्यारी[१]।
दृग-अंजन मुख-मकर-पत्रिका[२], जावक पगनि-सुधारी[३]।।४।।
कस्तूरी कौ तिलक भाल लखि, मोहे नंदलला री।
प्रेमदासि हित यह सुख निरखत, अँखियाँ टरत न टारी।।५।।

[१६२-२८]

रसिक-रचित श्रृंगार :- राग-कान्हरौ

सज्यौ साँवरे निजु कर फेंटा[४], गौर वदन पर हरौ[५] छबीलौ।
रतनपेंच पै मनहिं पेंच दै, फब्यौ अग्र मोती चटकीलौ[६]।।१।।
जरी-तार कौ तुर्रा झलकत, झुकत झुकावत पियहि लसीलौ[७]।
झूमि रही कलंगी मोतिन की, झूम्यौ छबि लखि दृग उनमीलौ[८]।।२।।
खात-खवावत पान परस्पर, बाल रँगीली लाल रँगीलौ।
प्रेमदासि हित प्यारी मृदु मुसिकाइ कियौ बस रसिक रसीलौ।।३।।

[१६३-२६]

रूप-आभरन :-

अहो सूही[९] सारी सोहै, कंचन के फूलनि सौं[१०], प्यारी के तन गोरैं।
मनु अनुराग-मेघ ह्वै घुमड़्यौ दामिनि पर, तामें चहुँदिसि उड़गन,
झलमलात नहिं थोरैं[११]।।

फवी है विचित्र श्याम जाली की अँगिया[१२],
मानौं सिंगार रस के पिंजरा में, जगमगात चकवा रुख जोरैं[१३]।

---

१. उर में माला, हाथों में कमल, मुख में पान और चिवुक पर काली बिन्दी की शोभा विचित्र प्रकार की ही है २. चन्दन से चित्रित मकराकृति ३. पगों में जावक से चित्र बनाये ४. सिर पर बाँधी जाने वाली पाग ५. हरे रंग के वस्त्र का ६. मन को घुमा देने वाले 'रतनपेंच' नामक आभूषण के अग्रभाग में एक चटकीला मोती सुशोभित है ७. 'तुर्रा' नामक आभूषण चमकता हुआ झुक रहा है; जो लाल जू को प्रिया जू के समक्ष सहज रूप से झुका देता है ८. प्रफुल्लित नेत्र वाले लाल जू भी जिसकी छबि देखकर झूम उठे ९. लाल रंग की बहुत ही चमकीले वस्त्र वाली १०. स्वर्णिम फूलों से जटित ११. मानों दामिनी [प्रिया जू का श्रीअंग] पर अनुराग [लाल साड़ी] ही बादल बनकर घुमड़ उठा है और उसमें चारों ओर तारागण [स्वर्णिम फूल] तीव्र प्रकाश के साथ झिलमिला रहे हैं १२. काले वस्त्र की जालीदार कंचुकी १३. एक दूसरे से मिले हुए।

अँग-सँग भूषण दिपत जराऊ, रूप-सिन्धु से हिलोरत,
पिय-दृग 'प्रेम सहित' तहाँ, छबि-जहाज से डोरैं[१]।।

[१६४-३०]

अद्‌भुत आभा :
राग-आसावरी

गौर-श्याम दंपति मुख जोरैं[२], निरखति दर्पन में निजु शोभा।
इक-इक छबि पर[३] रीझि रहे दोऊ, लखि दुगनित छबि विवस भईं सब[४],
भयौ रूप-पट अद्‌भुत ओभा[५]।।
बाढ़ी ललक झलक अँग-अँग दृग भई—
देखि तिनकौं आनंद के मन उपजी आनँद की गोभा[६]।
प्रेमदासि हित चित रँगभीने[७], झमकि मिले उर सौं उर तजत न
ज्यौं धन पाय रंक-मन-लोभा[८]।।

[१६५-३१]

अद्‌भुत जोड़ी :
राग-आसावरी

रूप-गुननि की खानि[९] किशोरी।
तैसैंई प्रेम-सींव मनमोंहन, बँधे परस्पर हित की डोरी।।१।।
खात-खवावत पान रँगीले, चितवनि रीझि भींजि मुख-ओरी[१०]।
झलकत[११] अलक छुटीं[१२] प्यारी की, पिय-मन बँध्यौ आइ तासौं री।।२।।
विवस जानि पिय भरे अंक में, जोरि रही मुख सौं मुख गोरी।
प्रेमदासि हित बसहु सदा चित, यह अद्‌भुत अलबेली[१३] जोरी।।३।।

---

१. प्रिया जू के श्रीअंगों में जराऊ आभूषण ऐसे लग रहे हैं मानों रूप के समुद्र में लहरें उठ रहीं हैं और प्रीतम के दृग छबि के जहाज जैसे बनकर उसमें प्रेम पूर्वक डोल रहे हैं २. परस्पर मुख से मुख मिलाये हुए ३. प्रिया और लाल परस्पर एक दूसरे की छबि पर ४. सभी सहचरीगण विवश हो गईं ५. जुगलवर का रूप-पट अद्‌भुत आभा से युक्त हो गया जिसे देखकर ६. एक दूसरे के अंगों और नेत्रों में एक दूसरे की छबि प्रतिविम्वित हुई जिसे देखकर उन्हें [जुगल के हृदय में] देखने की और भी अधिक ललचान बढ़ गई और मूर्तिमान आनंद के हृदय में भी आनंद के अंकुर उत्पन्न हो गये ७. रँगभीने चित्त वाले जुगलवर ८. जिस प्रकार धन प्राप्त करके रंक के मन में और भी अधिक लोभ बढ़ जाता है ९. खजाना अथवा वह स्थान जहाँ कोई वस्तु अधिकता से होती है १०. वे दोनों रँगीले एक दूसरे की मुख-छबि को देखते हुए पारस्परिक चितवन पर रीझते हैं और आनंद से भींज जाते हैं ११. चमकती हैं १२. मुख पर बिखरी हुई १३. अनूठी और सुन्दर।

[१६६-३२]

कच-केलि :
राग-सारँग

वैंणी छबि-सैंनी पिय गुही, जुही कैं फूलनि श्यामा! तेरी।
सौंधें में कर केश फिरावत[१], नख झमकत मनु चढ़ि कमलनि पर,
चन्द्र फिरत नव नीरद में री[२]।।
चम्पकलीं[३] कछु खिलीं झिलीं रस चिकुर-चन्द्रिकनि[४] में राजत,
ताकी शोभा न्यारी झलकै री।
प्रेमदासि हित फूलि रही, मानौं प्रीति सिंगार-अस्थली में[५],
बलिहारी तेरी छबि पर हेरी[६]।।

[१६७-३३]

अलक-अहि :—
राग-देवगिरी

प्यारी ! अलक स्याम[७] घुँघरारी तेरी, नागिनि रहीं बल खाइ[८]।
डसी दीठ मोंहन की[९] फैल्यौ, रोम-रोम विष जाइ।।
कंचनतनी[१०] गाड़रू[११] तू अब, करि बलि नैंकु सहाइ।
प्रेमदासि हित मुसिकनि-मंत्र बिनु, नाहिंन आन उपाइ।।

[१६८-३४]

नैंन-नृपति :—
राग-कान्हरौ

प्यारी! तेरे नैंन नृपति वर[१२]।
भ्रुव-कमान रहे तान कान लौं, गोलक-कवच कियैं चितवनि-सर[१३]।।

---

१. लाल जू अपने हाथ में सुगंधित फुलेल लगाकर प्रिया जू के केशों में फिराते हैं २. उस समय उनकी चमकती हुई नखावली की शोभा ऐसी लग रही है मानों नवीन बादल [प्रिया-केश] में कमलों [लाल कर-कमल] पर चढ़े हुए चन्द्रमा [नख चन्द्र] डोल रहे हैं ३. चम्पा नामक पीले रंग के सुगंधित पुष्प की कलियाँ ४. केशों की चन्द्रिका में ५. केशों की चन्द्रिका में पीत चम्पा की छबि ऐसी सुशोभित हो रही है मानों शृंगार रस की भूमि में प्रीति प्रफुल्लित हो रही है ६. देखकर अथवा अरी हेली ७. काली ८. बीच में से कहीं कुछ टेढ़ी होकर किसी ओर थोड़ी मुड़ी हुई हैं ९. जिसने मोहन की दृष्टि को काट लिया है जिससे उनके १०. स्वर्णांगी श्रीराधा ११. साँप का विष मंत्र-बल से उतारने वाला १२. हे प्रिया जू! आपके नेत्र श्रेष्ठ राजा हैं १३. जो भौंह रूपी धनुष को कानों तक खींचते हुए चितवन रूपी बाणों का प्रहार करते हैं। साथ ही उनकी [नेत्रों की] काली पुतली ही नेत्र रूपी राजा की अंग रक्षा करने वाला कवच है।

मुख-विधु आसन निकट तरौंना, छरीदार लट-छरी लियैं कर[१]।
प्रेमदासि हित असि-अंजन-बल, कियौ लाल बस रति-रन में अर[२]।।

[१६९-३५]

नैन-सुभट :- राग-कान्हरौ

सुन्दर नैंन सुभट तिय तेरे[३]।
चितवन-बान कान लौं तानत[४], भृकुटी-धनुष सहित मैं हेरे[५]।।
अंचल-कुन्त तुरंग-चपलता, वरुणी-कवच[६] कियैं गरवे रे[७]।
प्रेमदासि हित असि-अंजन-बल[८], किये स्याम बस राखे नेरे[९]।।

[१७०-३६]

नैन-पारधी :- राग-कान्हरौ

नैंन पारधी[१०] तेरे प्यारी।
चितवनि-बान कमान भुवनि[११] सजि[१२], मोंहन-मृग बेध्यौ छबि[१३] न्यारी।।
करत चोट घूँघटहि ओट ह्वै, चूकत नाहिं अचूक[१४] खिलारी।।
प्रेमदासि गोलक मन चंचल, हित करि पलक सिथिल गति धारी[१५]।।

---

१. मुख-चन्द्र ही उनका आसन है जिसके निकट तरौना नामक आभूषण ही छड़ीदार बनकर अपने हाथ में लट रूपी छड़ी लिये हुए हैं २. जिन्होंने रति रण में सुदृढ़ता पूर्वक स्थित रहकर अंजन रूपी तलवार के बल से लाल जू को अपने बस में कर लिया है ३. हे प्रिया जू! आपके सुन्दर नेत्र शूरवीर हैं ४. पाठा०–साधत ५. मैंने देखा कि वे भृकुटी रूपी धनुष के साथ ६. पाठा०–**वरुनी कन्त तुरंग चपलता, गोलक कवच** ७. वे चपलता रूपी घोड़े पर नेत्रांचल [पलक] रूपी भाला या बरछी लेकर और वरुनी [पलकों के अग्रभाग में सुशोभित बाल] रूपी कवच पहनकर गर्वान्वित हो रहे हैं ८. काजल रूपी तलवार के बल से ९. उन शूरवीर नैनों ने प्रीतम श्याम को बस में करके अपने निकट ही रख लिया है १०. शिकारी ११. पाठा०–भ्रूनि १२. भौंह रूपी धनुष सुसज्जित करके १३. अपनी विचित्र छबि से १४. कुशल संधानक या जो बिना चूके ही अपना उद्देश्य सिद्ध कर ले १५. लाल जू के चंचल मन, आँखों की पुतली और पलकों ने प्रेमपूर्वक सिथिल गति धारण कर ली अर्थात् वे प्रिया जू की छबि को एकटक देखने लगे।

[१७१-३७]

रस-समतूल दंपति :- राग-कान्हरौ

कौंन इक विधि सौं[१] मुख चितै रहे दोऊ,
भरे अपल नैंननि हित[२]।
हरषि-हरषि पुलकित मन मिलि मन, चाहत कह्यौ[३] कही नहिं आवत,
गदगद कण्ठ[४] रहत नित।।
प्यारी के प्रान की मूरति श्याम, श्याम-प्रान की मूरति प्यारी,
रचि कीनी शिल्पकार जित[५]।
'प्रेम' विवस निरखति दंपति कौं, चित्र लिखी सी[६] भईं ललितादिक,
यह सम रस इनकौ वित[७]।।

[१७२-३८]

चौपड़-चातुर्य :-

खेलत हैं री दम्पति, पाँसेनु[८] मृदु मुसिकाइ।
पिय कैं नौ परत तिय कैं पौ पर, बारह[९] परत जिताइ[१०]।।
जीती बाल माल-मणि-कलंगी[११], सोई आपु पहिरति सरसाइ।
लालहि जीति सजित बागौ मनौं[१२], 'प्रेम' सहित प्रफुलाइ।।

---

१. किस आश्चर्यजनक प्रकार से २. हित संभृत अपलक नेत्रों से ३. कुछ रहस्यपूर्ण बात कहना चाहते हैं ४. प्रेमाधिक्य के कारण कण्ठ का अवरुद्ध होना ५. जो सभी को अपनी कारीगरी से जीत लेने वाले शिल्पकार प्रेम ने निर्मित की है ६. चित्र की भाँति मूर्तिमान ७. सदा रस-समतूल श्यामा-श्याम के रूप में क्रीड़ा परायण हित ही इनका धन है ८. चौपड़ खेल में दाव निश्चित करने वाले उपकरण विशेष ९. पाँसों का इस प्रकार पड़ना कि एक पाँसे में पौ और बाकी दोनों पाँसों में छः छः के दाव [६+६+१] आयें। यह जीत का सबसे बड़ा दाव माना जाता है–इसे ही पौ बारह कहते हैं १०. प्रिया जू के पाँसों में पौ बारह का दाव पड़ने पर सहचरीगण उन्हें जिता देती हैं ११. प्रिया जू ने लाल जू की मणि-माला और कलंगी जीत ली १२. प्रियाजू की जीत से लालजू के प्रत्यंगों हुई प्रेम की प्रफुल्लता ही मानों लाल जू के बागे के रूप में सुसज्जित हो गई।

[१७३-३६]

नित्य नव नेह :-

ज्यौं-ज्यौं नई-नई छबि प्यारी की, त्यौं-त्यौं नई-नई चितवनि पिय की[१]।
प्रगटत प्रीति नई-नई छिन-छिन, एक रीति दम्पति कैं जिय की[२]।।
एक प्रान रस-पान एक मन[३], एक वैस[४] प्रीतम अरु तिय की[५]।
प्रेमदासि हित कहत न आवत, लखि-लखि प्रमुदित अँखियाँ हिय की[६]।।

[१७४-४०]

निर्बन्ध प्रेम-डोरी :-

सब रस-निधि[७] सब गुन-निधि रूप-निधि,
सब सुख-निधि आली नवल किशोरी यह।
पिय-तन-मन कौ अधार सार रैन-दिन,
रंग भरी ललित लड़ैती प्यारी गोरी यह।।
जाकैं अंग-अंग की छबीलौ छबि देखि दृग,
त्रिषित छिनहिं-छिन[८] सुरत-झकोरी यह।
नैंननि सौं नैंन बँधे बैंननि सौं बैंन बँधे[९],
मन सौं बँध्यौ है मन ऐसी 'प्रेम' डोरी यह।।

[१७५-४१]

सांध्य भोग :- राग-गौरी

भोजन करत जुगल रँगभीने।
स्यामा-स्याम माधुरी मूरति[१०], सुन्दर परम प्रवीने।।१।।

---

१. ठीक उसी प्रकार प्रीतम की देखने की ललक भी नई-नई ही है २. जुगलवर के प्राणों की एक यही रीति है कि उनकी प्रीति क्षण-क्षण में नये-नये रूप में प्रकट होती है ३. एक प्राण वाले जुगलवर के मन में एकमात्र रस-पान की ही अभिलाषा बनी रहती है ४. सदा नित्य किशोर वय ही ५. प्रिया जू की ६. सखी भावापन्न प्रेमदासी की हृदय रूपी आँखें इस छबि को देखते हुए सदा आनंदित बनी रहती हैं ७. कोष या खजाना ८. छबीले लाल छिन-छिन त्रिषित चकोर ही बने रहते हैं ९. जो बात प्रिया जू कहती हैं वही लाल जू कहते हैं १०. शोभा से युक्त सौन्दर्य की मूर्ति।

सन्ध्या समय साँझ सी फूली, अली भली लै आई[१]।
कंचन-थार हेम-बेला[२] भरि, मेवा मधुर मिठाई।।२।।
कुँवरि-कुँवर लै खाजा-खुरमा, देत वदन कर सोहैं[३]।
मानौं पूजत कमल चंद कौं, अरस परस[४] मन मोहैं।।३।।
लाखन अभिलाषनि सौं[५] दाखनि[६], लई पानि[७] पिय प्यारे।
जानि मनोरथ हँसी लाड़िली, बसी दृगनि ह्वै तारे[८]।।४।।
फैंनी छबि-सैंनी हरि लैंनी, मृगनैंनी तिय पावै[९]।
सिता रलाई दूध मलाई, तामें लाल मिलावै[१०]।।५।।
मोंहन[११] मोहनभोग लियैं कर, नैंननि माँहिं निहोरैं[१२]।
रवनी रवन रँगी[१३] अति कमनी, चितवति चित-वित चोरैं।।६।।
इहिं विधि भोजन करत निकुंजे[१४], आनँद-पुंजे[१५] दोऊ।
ललिता ललित करति परिहासनि, रँगीं प्रेम रँग सोऊ[१६]।।७।।
दंपति दिपत पियत सौरभ रस, करि गण्डूष छबीले[१७]।
प्रेमदासि हित बैठि सिंहासन, चावत[१८] पान रँगीले।।८।।

[१७६-४२]

सन्ध्या आरती :- राग-गौरी

करत आरती अलि रँगभीनी।
सन्ध्या समय साँझ सी फूलीं, दंपति कैं गुन गुनत प्रवीनी[१९]।।१।।

---

१. संध्याकालीन प्राकृतिक शोभा की भाँति अरुण और पीत परिधानों में प्रफुल्लित सहचरी सायंकाल के समय सन्ध्याभोग भलीप्रकार से सजाकर ले आईं २. स्वर्ण के कटोरों में ३. अपने हाथों से एक दूसरे के मुख में देते हैं ४. परस्पर ५. अनेकानेक अभिलाषाओं के साथ ६. अंगूर अथवा किसमिस ७. अपने हाथ में [प्रिया जू को पवाने के लिए] ८. लाल जू के नेत्रों में उनकी पुतली होकर बस गई ९. जिनकी उत्तरोत्तर छबि मनहरण करने वाली है वे मृगनैनी प्रिया जू 'फैनी' नामक पकवान पाती हैं १०. मिश्री मिश्रित दूध में लाल जू मलाई मिलाते हैं ११. लाल जू १२. मनुहार करते हैं १३. प्रीतम के प्रेम रंग में रँगी हुई प्रिया जू १४. निकुंज महल में १५. आनन्द के समूह १६. वे भी १७. शोभा-युक्त वे दोनों छबीले प्रीतम पानी से कुल्ला करके सुगन्धियुक्त रस पान करते हैं १८. चर्वण करते हैं १९. संध्याकालीन प्राकृतिक शोभा की भाँति प्रफुल्लित वे प्रवीण सहचरीगण सायंकाल के समय जुगलवर के गुणों का गान करती हैं।

गजमोतिन सोहैं मधि थारनि[१], धरति जराऊ दीप नवीनी।
घृत-कपूर सौं पूरि वर्त्तिका, होति जोति कर-कमलनि लीनी।।२।।
पानिप भरे पानि सौं फेरत, हेरत छबि[२] जै-जै धुनि कीनी।
बाजति झालरि-झाँझ-मुरलिका, ताल-मृदंग अधिक दुति दीनी[३]।।३।।
सखी सकल गावति मन भावति, निर्तति लेति निर्त्त गति बीनी[४]।
रूप निहारि वारि पुहुपांजुलि, प्रेमदासि हित अमृत पीनी[५]।।४।।

[१७७-४३]

ललन-मुरलिका-माधुर्य :- राग-बिहागरौ

वंशी बजति री! दै कान[६]।
छेदत हृदय-कपाट बरबस, बेधत मुनि-मन-प्रान[७]।।१।।
झिलमिलत वर[८] चपल करजनि, रही रन्ध्रनि बानि[९]।
मनु कमल चढ़ि चन्द्र निर्त्तत, सुर सु मण्डल आनि[१०]।।२।।
मटकि[११] पटकत पदनि ललकत[१२], चलत चावत पान।
मिलि अधर की अरुणिमा, भई अरुण मृदु मुसिकान[१३]।।३।।
रुरत कुण्डल गण्ड मण्डित[१४], रुरत लट रस-खान।
प्रेमदासि हित ऐसे पिय सौं, क्यौं कीजत बलि मान।।४।।

---

१. गजमोतियों से जड़े थाल के मध्य में २. कान्ति से भरे हुए कर-कमलों से फिराती हैं और जुगलवर की छबि निहारती हैं ३. वाद्यों के वादन से शोभा की द्युति और अधिक बढ़ रही है ४. चुन-चुनकर ५. हितामृत का पान किया ६. मौन धारण किये हुए, प्रीतम के आसक्त रूप में विचार निमग्न–श्रीप्रिया जू से एक सखी कह रही है कि हे प्रिया जू! लाल जू की वंशी बज रही है; आप कान लगाकर सुनो ७. मौन होकर मनन करने वालों के मन और प्राणों का भी वह बेधन कर देती है और उनके हृदय रूपी कपाट में बलात् छिद्र कर देती है ८. पाठा०–रव ९. वंशी के छिद्रों में लगी हुई सुशोभित १०. मानों स्वरों के मण्डल [वंशी से निश्रित स्वर] में कमल [कर-कमल] पर चढ़े हुए चन्द्रमा [नख-चन्द्र] निर्त कर रहे हैं ११. अंग प्रत्यंगों को नाज नखरे के साथ अनेक रूपों में प्रदर्शित करते हुए १२. लालसा से भरे हुए १३. अधरों की अरुणिमा से मिलकर उनकी मृदु मुसिक्यान भी अनुराग के लाल रंग से रँजित हो गई है १४. कपोलों पर प्रतिविम्बित हो रहे हैं।

[१७८-४४]

संगीत-दक्ष दंपति :- राग-कल्यान

खरी रँगीली रंगमहल में, पहिरैं झूमक सारी।
कमल फिरावति हँसि-हँसि गावति, ललित वलित सुकुमारी[१]।।
लेत भुवनि में मान पगनि सौं, देत ताल[२] गति न्यारी[३]।
प्रेमदासि हित चख की कोरनि[४], मोहे लालबिहारी।।

[१७९-४५]

राग-कल्यान

लागति लौंनी[५] मूरति स्याम की।
कमल फिरावैं विहँसत आवैं, गावैं तान गुन-ग्राम की[६]।।
मुकट-चटक भ्रुव-मटक-लटक उर, सोहै मुक्ता-दाम की[७]।
पगनि पैंजनी[८] करत गैंजनी, भरी 'प्रेम' अभिराम की[९]।।

[१८०-४६]

संगीत- शृंगार :-

ए बाजत मधु[१०] मृदंग झनन ननन ननन नन
धा धिलंग धुमकट तक गदगिन धा धिन्न धा।
धुमत धुमत धुं धुं धुं तत्तन क्रुकुतक्क झनकत तक,
धिधिकट धिधिकट धाधिधिकट धाधिधिकट धाधिन्न धा।।
तक्कधिक्क तक तक धिधिकट तक धिनानिकट धित्ताधिलांग,
धुमकट तक दीदीकट तक झनकट धा धिन्न धा[११]।
गिगीनान थुंनुतान धिननन धिनानिकट धित्ता धिलांग,
धुमकट तक कट तक कट तक गदगिन धा धिन्न धा।।

---

१. सुन्दरता से युक्त सुकुमारी श्रीराधा २. **पाठान्तर-लेत तान** ३. पगों से नृत्य करते हुए वे विचित्र ताल लगा रहीं हैं और साथ ही संगीत शास्त्र में वर्णित ताल के सम स्थान को भौहों में ही प्रस्तुत कर रही हैं ४. नेत्र-कोरों के संचालन में ५. लावण्य से युक्त ६. गुणों के समूह वाली तानें ७. मोतियों की माला ८. पगों का एक आभूषण विशेष जो कड़े के आकार का परन्तु उससे मोटा और खोखला होता है। इसके अन्दर कंकड़ी भरी रहती हैं जिससे चलने में वह बजता रहता है ९. पगों में सुन्दर प्रेम से भरी हुई पैंजनी गर्जना करती है या बजती है १०. मधुर ११. मृदंग के बोल।

मणि मण्डल पर निर्त्तत दंपति, कुणित किंकिणी-कंकण नूपुर,
होत झन झनक-झनक झन कतक धा धिन्न धा।
'प्रेम' सहित गावत मन भावत, नव जुवतिन के जूथ सुहावत,
थेई-थेई करत तत तक धा धिन्न धा।।
[१८१-४७]

श्रीवन संगीत :- राग-केदारौ

आजु वर विहँसत री प्यारी, कोकिल-सँग,
होत गान अति चारु[1]।
इत सुर देति सुघर ललितादिक, उत मधुपनि-गुंजार।।१।।
इतहिं प्रवीन[2] बजावति वीननि, उत हंसनि-किलकार।
इत नाचत मोंहन, उत निर्त्तत मत्त मयूर उदार।।२।।
वृन्दावन बिनु यह न कहूँ सुख, जानत रसिक विचार[3]।
प्रेमदासि हित लेहु दृगनि कौ, फल लखि प्रेम-विहार[4]।।३।।
[१८२-४८]

रूप-चन्द्रिका :- राग-खंभाइच

हो रँग भीनी जोरी।
चाँदनी सी फूली चाँदनी ये[5] लहौ री[6]।।
मोंहनी सी मोहै मोंहन कौं किशोरी।
'प्रेम' केलि बाढी मैंन लखि नयौ री[7]।।
[१८३-४६]

हीर-कुञ्ज-केलि :- राग-पूरिया

खरे री हीरान की कुंज मधि, श्याम-राधिका रानी।
यौं राजति ज्यौं चन्द्र-चन्द्रिका[8], अरस परस सुखदानी[9]।।

१. अरी सखी! आज सुन्दरी प्रिया जू मन्द मुसिक्याती हुई कोकिला के साथ अत्यन्त सुन्दर स्वर में गान कर रही हैं २. प्रवीण सखियाँ ३. रसिकजन विचार करके यह जान गये हैं कि यह सुख तो एकमात्र वृन्दावन में ही है; अन्यत्र नहीं ४. इस प्रेम विहार को देखकर नेत्रों का फल प्राप्त करो ५. पाठा०—में ६. यह रँगभीनी जोड़ी चाँदनी सी प्रफुल्लित हो रही है। इसी चाँदनी को प्राप्त करो ७. इनकी वर्द्धमान प्रेम केलि में नवीन कामदेव के दर्शन करो ८. पाठा०—चन्द्र-चाँदनी ६. इनका पारस्परिक सांस्पर्श सुखप्रदाता है [पाठा०—रसदानी]।

पिय रँग भींजि खवावत पाननि, तिय लखि छबि मुसिकानी[1]।
लतनि लगीं ललितादिक निरखति, 'प्रेम' सहित रस-सानी[2]।।
[१८४-५०]

मर्कतमणि-महल-केलि :- राग-कान्हरौ

आवति प्यारी मरकतमणि[3] के महल में,
नख झिलमिलत पगनि पर।
मानौं मूरतिवंत निशा में, दामिनि आगैं, कमल दुहूँ दिशि,—
चलत लियैं दीपक वर[4]।।
ललिता ललित निवारति मधुपनि,
कंचन-कंज सरस सुंदर कर[5]।
प्रेमदासि हित पाछैं चरन-चिन्ह पर, धरत भाल प्यारौ,
लखि लियैं कुँवर मुरि भुज भर[6]।।
[१८५-५१]

हित-रंग-रंगी :- राग-बिहागरौ

लियैं पिय कनक-बेला[7] चारु।
मेलि मिश्री भर्‌यौ तामें, कढ्यौ[8] दूध सँवारि।।१।।
प्रानप्यारी कौं पिवावति, करि बहुत मनुहार।
भये विथकित श्यामसुन्दर, चपल नैंन निहार।।२।।
करि कछू परिहास कर सौं, लियैं तिय सुकुमार[9]।
प्रेमदासि हित भरे रँग सौं, दोउ भये दोउनि हार[10]।।३।।

१. प्रिया जू उस समय प्रेमाशक्त लाल जू की छबि देखकर प्रसन्न होती हैं २. पाठा०—**पान खात इतरात लाड़ सौं, कहि-कहि केलि कहानी। प्रेमदासि हित लतनि लगीं सखि, ललितादिक सुखदानी॥** ३. श्याम रंग की मणि विशेष ४. मानों मूर्तिवन्त रात्रि [मरकतमणि-महल] में दामिनी [श्रीराधा] के आगे-आगे दोनों ओर कमल [चरण] दीपक [नख] लेकर चल रहे हैं ५. स्वर्ण कमल जैसे सुन्दर और रसभरे हाथों से या हाथों में सुन्दर और रस भरे स्वर्ण कमल लेकर ६. पीछे-पीछे आ रहे लाल जू प्रिया-चरण-चिह्नों पर भाल रखकर पुनः-पुनः उनका नमन कर रहे थे। पीछे मुड़कर प्रिया जू ने जब यह देखा तो उन्हें अपनी भुजाओं में भरकर हृदय से लगा लिया ७. स्वर्ण-कटोरा ८. तत्काल निकाला हुआ ६. प्रिया जू ने परिहास करते हुए प्रीतम के हाथ से दूध का कटोरा ले लिया अथवा सुकुमारी प्रिया जू ने अपनी भुजाओं से प्राण प्रीतम को अपने हृदय से लगा लिया १०. दोनों आवद्धवक्ष होकर एक दूसरे के हृदय का हार बन गये।

अमान मान : [१८६-५२] राग-सुघरई

श्रीराधे ! तेरे तन में मान छबि देत।
ज्यौं कुसुंभ[1] रँग मिले खटाई, चुहचुहान[2] बहु लेत।।१।।
चिवुक प्रलोइ[3] मनावत पिय कर, नख मुख मिलि छबि-वृन्द।
नीलकमल मिलि शशि मनौं कनक कमलहि मिलावत चन्द[4]।।२।।
भरे गर्व दृग लचकत, कटि सुकुमारि मोहि डर होइ[5]।
सुनि! बलि कीजै मान इतौ जो, मान नाम सो होइ[6]।।३।।
तोहि निरन्तर गावत पिय, हौं हित की कहति बनाइ।
प्रेमदासि हित कीट-भृंग-गति, मति कबहूँ है जाइ[7]।।४।।

[१८७-५३]

राग-केदारौ

प्यारी जू ! मान मनहिं निवारि[8]।
करुन करन विचारि भामिनि, जु हिय प्रीति अपार[9]।।१।।
करी विनती केतकी कल, चम्प वरन उदार[10]।
सेवती तुही सदा नागर, बन्धु जिय के तार[11]।।२।।
बसहु पिय जा हिय सुभग तन, मन मदन बानहिं टार[12]।
मौलिसिरी तुव सरस सुंदरि, छाँड़ि पनौ अनार[13]।।३।।

---

१. केशर अथवा लाल रंग २. जिसमें चटक तथा रसीलापन हो ३. स्पर्श करके ४. जब लालन के हस्त-कमल के नख प्रिया जू के मुख-कमल से मिलते हैं तो शोभा का समूह बढ़ जाता है; मानों नील-कमल [लाल जू के हस्त]चन्द्र समूह [हाथों के नख] को साथ लेकर या उनसे मिलकर उनकी (उन चन्द्रमाओं की) भेंट स्वर्ण कमल [श्रीप्रिया-मुख] से करा रहा है ५. कोमल कटि लचक रही है जिसे देखकर मुझे उसके टूटने या गिरने का भय लगता है ६. सुनो मैं आपकी बलिहारी जाती हूँ आप इतना ही मान करिये जिसमें नामत: ही मान हो स्वरूपत: नहीं; ७. हे प्रिया जू! प्रीतम तुम्हारा ध्यान करते-करते कीट-भृंग की भाँति कहीं तुम्हारा रूप ही धारण नहीं कर लें ८. मान को मन से त्याग दो ९. आप करुणा करके लाल जू के हृदयस्थ अपार प्रीति की ओर ध्यान दो १०. हे उदार चम्पक वरनी श्रीराधे! लाल जू आपसे मान त्यागने की अनेकों विनती कर चुके हैं ११. प्राणों के तारों से बँधे हुए नागरवर सदा आपका ही सेवन करते हैं १२. हे सुभग तन श्रीप्रिया जू! आप सदा जिस हृदय में बसी रहती हो उन्हीं प्रीतम के हृदय में जाकर बसो और उनके तन-मन में लगे कामदेव के बाणों को दूर करो १३. हे चतुर शिरोमणि श्रीराधे! तुम सरस और सुजान हो अत: असमझदारी करना छोड़ दो।

कुंद मन क्यौं करहि सुनि रव, मोतिया के चारु[1]।
प्रेमदासी हित भई उर, प्रिया नवरँग हार❀[2]।।४।।

[१८८-५४]

केलि प्रेरिका वृन्दा :- राग-शंकराभरण

ए हो कनक-लता सखि, तोहि मनावति, निरखि कुँवरि! थाकी छबि[3]।
नव पल्लव जगमगत वसन मृदु[4], फूले फूल झमकि रहे भूषण
झिलमिलात अँग-अंग फबि[5]।।
झुकीं डार भुज लयैं भेंट फल, परसन कौं तव चरन रही नवि[6]।
लपटि रही री! श्याम-तमालहिं, प्रेमदासि हित तोहि सिखावति,
आलिंगन पिय सौं[7] अवि[8]।।

[१८९-५५]

सरवरी-सहचरी :- राग-शंकराभरण

ए हो रैंन-सजनी, तोहि मनावनि आई[9]।
पूरन चन्द्र-वदन झमकत, उड़गन-भूषण सजि, सारी-उजारी सुहाई[10]।।
त्रिविध समीर चलत री तोकौं, करत विजन[11] सुखदाई।
प्रेमदासि हित विहँसि मिली, नव बाल लाल सौं, होत दुहुँनि मन भाई[12]।।

---

१. लाल जू के मोती जैसे जड़े सुन्दर वचनों को सुनकर भी आप विमन क्यों हो रही हो २. सहचरी के वचनों को सुनकर प्रिया जू नवरंगी प्रीतम के हृदय का हार बन गईं अर्थात् उन्हें आवद्धवक्ष कर लिया। ❀ **विशेष ज्ञातव्य**—उक्त पद में निवारी, करना, जुही, केतकी, चम्पा, सेवती, बन्धुजीव, मदनबान, मौलिश्री अनार, कुन्द और मोतिया आदि फूलों के नामों का सम्प्रयोग करके वाणीकार ने सहचरी के वाक्-चातुर्य का परिचय दिया है ३. श्री प्रिया जू को वन विहार की प्रेरणा देती हुई एक सखी कहती है कि हे कुँवरि श्रीराधे! श्रीवन की स्वर्ण लता रूपी सखी तुम्हें मना रही है; आप इसकी शोभा को देखो; मैं तो इसकी शोभा देखकर जकी-थकी रह गयी हूँ ४. इसके कोमल और नवीन पल्लव ही वस्त्रों के रूप में जगमगा रहे हैं ५. लता में प्रफुल्लित फूल ही झिलमिलाते हुए आभूषणों के रूप में उसके प्रत्यंगों में सुशोभित हो रहे हैं ६. वह तुम्हारे चरणों का स्पर्श करने के लिए झुक रही है और उसकी झुकी हुई शाखायें ही अपनी भुजाओं में आपकी भेंट हेतु फल लिये हुए है ७. श्याम तमाल से लिपटकर वह तुम्हें अपने प्रीतम से आलिंगन करना सिखा रही है ८. अरी लज्जावती श्रीराधे! ९. हे प्रिया जू! यह रात्रि रूपी सखी तुम्हें मनाने के लिए आई है १०. पूर्ण चन्द्रमा ही उसका मुख, तारागण ही उसके आभूषण और चाँदनी ही उसकी सारी के रूप में सुसज्जित है ११. पंखा १२. जुगलवर के मन की अभिलाषा पूर्ण हुई।

[१६०-५६]

शैया बिहार :- राग-बिहागरौ

फूले लाड़िली नव लाल।
खिली घन में चाँदनी सी, कुँवरि परम कृपाल।।१।।
झरत फूल हँसत सरस गति, हलत उर-वनमाल।
होत भूषित श्रवण सुनि-सुनि, क्वणित किंकिणि-जाल[१]।।२।।
चलत विशद कटाक्ष फूले, नैंन-नलिन[२] विशाल।
रुरत लट वर डुलत मोती, लुलित[३] वैंना भाल।।३।।
प्रेमदासि हित लसत किशलय-सैंन पर पिय-बाल।
फूली मर्कतमणि जटित मनु, फूले कनक रसाल[४]।।४।।

[१६१-५७]

राग-बिहागरौ

दम्पति लताभवन में हेली, राजत कुसुमित सैंन[५]।
पान खात चितवत दृग-कोरनि, हँसत भरे रस मैंन[६]।।१।।
भरे अंक चुम्बन-परिरम्भन, करत रँगीलौ लाल।
प्रणय-कोप सौं नेति-नेति कहि, लपटत उर नव बाल।।२।।
हाव-भाव-लावण्य रसासव, छके करत कल केलि।
कोक-कलनि सौं प्यारी विलसत, रति विपरित सुख झेलि।।३।।
रुरत अलक मुख श्रमजल झलकत, किरत कचनि तें कुसुम रसाल।
लचकत कटि अति क्वणित किंकिणी, लुलकित[७] उर-वनमाल।।४।।
चंचल कुण्डल मण्डित गण्डनि, डुलित चन्द्रिका सीस अभंग[८]।
विलुलित वैंनीं गुही सु फूलनि, रोमांचित अँग-अंग।।५।।
थरहरात बेसरि कौ[९] मोती, लखि रीझत रिझवार[१०]।
प्रेमदासि हित सींचत नैंननि, दोऊ सुरत रस सार[११]।।६।।

---

१. किंकिणी की सुन्दर ध्वनि सबके श्रवणों का आभूषण बन जाती है—अर्थात् किंकिणी की ध्वनि सबके कानों में छा जाती है २. नेत्र-कमल ३. चंचल ४. मानों रसपूर्ण स्वर्ण में जड़ी हुई मर्कतमणि प्रफुल्लित हो रही है ५. फूलों की शैया पर विराजमान हैं ६. स्वानंग रस से भरे हुए ७. हिल रही है या चंचल हो रही है ८. चन्द्रिका सीस पर बराबर हिल रही है ९. पाठा०—के १०. रिझवार लाल जू ११. श्यामा-श्याम सुरत रस के सार से प्रेम दासियों के नेत्रों का सिंचन करते हैं।

[१६२-५८]

प्रेम-केलि :- राग-बिहागरौ

सजनी! नव महल नव केलि।
चलत विशद कटाक्ष, उपजत सरस आनँद-बेलि।।१।।
हाव-भावनि कोक-दावनि, बढ़्यौ अद्‌भुत खेल।
विलसि रति विपरित मुदित, दई लाज अति पग पेल।।२।।
तिय-कचनि झरि कुसुम पिय-मुख, परति रीति नवेल[१]।
मनौं घन सौं टूटि उड़गन, करत शशि-सँग मेल[२]।।३।।
डुलित बैंनी गुही फूलनि, लुलित हार-हमेल[३]।
हलत मोती नासिका, लट रुरत भरीं फुलेल।।४।।
गौर आनन भर्‌यौ पाननि, रह्यौ श्रमकन झेलि[४]।
जटित हीरनि की कनी मनु, कनक मणि[५] में हेलि[६]।।५।।
पिय लखत तिय लजत, हँसि हिय धरत भुजनि सकेलि[७]।
प्रेमदासि हित दृग-चषक भारे, पिवत रस की रेलि[८]।।६।।

[१६३-५९]

विपरीत विलास :- राग-भैरौं

कमल की सी कली, उरज कर पिय परस,
होत अति चपल तन[९], रुरत अलकावली।
हंस चरणहिं निरखि भृंग मानौं कलह,
मोंहन रचि उठी तन दिपत रोमावली[१०]।।१।।

---

१. प्रीतम के मुख पर नवीन रीति से गिरते हैं २. चन्द्रमा [प्रीतम-मुख-चन्द्र] के साथ मिलाप कर रहे हैं ३. धातुओं के गोल टुकड़ों की माला ४. श्रमकणों को धारण किये हुए सुशोभित हो रहा है ५. स्वर्ण आभा वाली मणि में ६. अरी सखी! ७. भुजाओं में भरकर ८. दासीगण रस के तीव्र प्रवाह का नैन-चषकों से पान करती हैं ९. प्रीतम कर-कमलों के स्पर्श से प्रिया जू चपल तन हो जाती हैं और स्वयं ही रति केलि करने लगती हैं १०. प्रिया-चरणों की हंस-गति को देखकर मोहन के श्रीअंगों में रोमावली दीप्त हो उठीं अर्थात् वे रोमांचित हो गये। उस समय उनकी वह रोमावली ऐसी सुशोभित हुई मानों भ्रमरों में कलह मच गई है।

श्रवत सुख-पुञ्ज नव कुञ्ज विपरीत रति[१],
झिलमिलत मुसिकनी[२] लुलित[३] हारावली।
नीलमणि-मेघ पर सुभग वर दामिनी,
करत मनौं विविध विधि कलित नृत्यावली[४]।।२।।
हित प्रेमदासि आश्चर्ज चूमत कंज–,
चन्द्रमा कौं भर्‌यौ ललित प्रेमावली[५]।
करत सु चकोर अमृत-पान कमल में,
इन्दु में मकरन्द पिवत भ्रमरावली[६]।।३।।
[१६४-६०]

अटपटी हित रीति :-

राग-आसावरी

राजत वृन्दाविपिन बिहार[७]।
नव निकुंज सुख सैंन निवेसित[८], श्यामा-श्याम उदार।।१।।
रति-रण जीति मीत दोउ बैठे, फूले अंग न मात।
छिन न अघात नीर लौं प्यासे[९], कैंहूँ[१०] त्रिषा[११] न जात।।२।।
आँगी अरुन कसनि तिय पिय-मन, रह्‌यौ कुचनि पर छाइ[१२]।
निर्त्तत मोर[१३] हेम-गिरि पर मनु, सुरँग घटा में आइ[१४]।।३।।

१. नवल निकुंज में इस विपरीत रति से सुख का पुंज निर्झरित होने लगा २. अधरों में मन्द मुसिक्यान झिलमिलाने लगी ३. चंचल ४. मानों नीलमणि के मेघ [श्यामसुन्दर] पर सुन्दर दामिनी [प्रिया जू] विविध प्रकार से नृत्य की अनेकानेक सुन्दर गति ले रही है ५. यह परम आश्चर्य ही है कि प्रेम के विविध सुन्दर प्रकारों से संभृत कमल [प्रिया-कमल] चन्द्रमा [लाल-चन्द्र] का चुम्बन कर रहा है ६. लाल जू चकोर बनकर प्रिया जू के मुख-कमल से ही अमृत का पान कर रहे हैं और प्रिया जू के मुख-चन्द्र से ही भ्रमर समूह [प्रिया-मुख पर आलुलोलित अलकावली] मकरन्द का पान कर रहे हैं ७. वृन्दाविपिन में श्रीहित दंपति का बिहार सुशोभित हो रहा है ८. विराजमान ९. जल-प्यासे की भाँति ही उन्हें निरन्तर बिहार की पिपासा है १०. किसी भी प्रकार से ११. प्यास १२. प्रिया जू के उरोजों पर सुशोभित अरुणाभ कंचुकी की कसनि में प्रीतम का मन छा गया है अर्थात् प्रीतम के मन ने वहाँ पर डेरा डाल दिया है; वह वहाँ से हटता नहीं है १३. लाल जू का मन रूपी मोर १४. प्रिया जू के वक्षस्थल रूपी स्वर्ण पर्वत पर सुशोभित अरुणाभ घटाओं में आकर।

विसमय ह्वै प्यारी पिय जान्यौं, पीन पयोधर माँहिं[१]।
तब हरषी अँगिया अति दरकी[२], फूले उरज उमाँहिं[३]।।४।।
हँसन कोर कुच भई धार सी, चढ़्यौ तहाँ ह्वै लाल।
वदन-कमल लखि अधर-अमी हित, अलि सौ भयौ रसाल[४]।।५।।
हलत अलक नासा दुति मोती, रीझि चलत तिय-ग्रीव[५]।
खिल्यौ कुमुद पिय निरखि चाँदिनी, सौभग निशि छबि-सींव[६]।।६।।
अलक वंदिनी ह्वै हरि आये, लाल विन्दु पर भाल।
भयौ कंज कल लखत सूर सौ, परी सोच में बाल[७]।।७।।
झलक्यौ उदर माँहिं वह बैंदा, नमत कण्ठ सुकुमार।
नाभि सरस सर ह्वै गयंद सौ, क्रीड़त प्रानअधार[८]।।८।।
सहज किंकिनी क्वनित मणिनुमय, करि को सकत प्रसंश।
सुनत मनौं हंसिनि की कूजनि, भयौ साँवरौ हंस[९]।।९।।
जरतारी सारी सुरँगित ह्वै, उतरत सुन्दर स्याम।
रूप-जालि सी पाइजेब में, अरुझ्यौ खग बिनु दाम[१०]।।१०।।

१. आश्चर्यचकित होकर प्रिया जू ने ऐसा समझा कि मेरे पीन पयोधरों में प्रीतम ही हैं २. तरक गई ३. उत्साहित होकर ४. पर्वत माला जैसी पृथुल कुच-कोरों के सहारे लाल जू की दृष्टि ऊपर की ओर प्रिया जू के हास्यपूर्ण मुख मंडल पर पहुँची और वहाँ प्रिया-वदन-कमल पर सुशोभित अधरामृत का पान करने के लिए वे भ्रमर ही बन गये ५. लाल जू के इस कौतुक से प्रियाजू की अलकावली तथा नासिका के मोती की दुति चंचल हो उठी और उन्होंने रीझकर ग्रीव-संचालन किया ६. छबि-सींव अलकावली-सौन्दर्य की रात्रि में नासिका के मुक्ता-दुति की चाँदनी को देखकर प्रीतम का मन रूपी कुमुद खिल उठा ७. अलकावली और वन्दिनी के सहारे होते हुए उनकी दृष्टि प्रिया-भाल पर सुशोभित लाल बिन्दु पर जा टिकी। उसे उदय कालीन अरुणाभ सूर्य समझकर उनका मन सुन्दर कमल की भाँति खिल गया। आसक्ति के कर्म-विपाक ने जब लाल जू के मन को कुमुद से कमल बना दिया तब प्रिया जू ग्रीव नमित करके विचार निमग्न हो गईं ८. प्रिया जू की ग्रीवाँ झुकने पर उनका भालस्थ बेंदा उनके ही उदर में प्रतिविम्बित हुआ। प्राणाधार प्रीतम का मन भी प्रिया उदरस्थ नाभि के सरस सरोवर में गयंद बनकर क्रीड़ा करने लगा ९. मणिमई किंकिणी की शब्दावली को हंसिनी की कूक समझकर रसिकवर श्यामसुन्दर का मन उससे मिलने के लिए हंस ही बन गया १०. अरुणिम जरतारी साड़ी के सहारे होकर लाल जू की दृष्टि प्रिया-चरणों की ओर बढ़ी और वहाँ रूप के जाल जैसी पाइजेब में उनका मन रूपी खग निर्बन्ध बन्धन में उलझ गया।

करी जोति नूपुर-बिछिया मिलि, ते हैं सुर के धाम।
तहाँ आइ गाइक ह्वै गावत, लै मोंहन गुन ग्राम[१]।।११।।
झिलमिलात बहु भाँति चंद से, नख जावक-रँग-भीन।
भयौ चकोर निहारि चारु गति, प्यारौ परम प्रवीन[२]।।१२।।
तब ललना चौकी चमकाई, पग-नख-प्रभा मिलाइ।
ता मारग ह्वै प्राननाथ कौं, राख्यौ उर पर लाइ[३]।।१३।।
दयौ राज बैठाइ सिंहासन, पूरति मन की आस।
यौं पोषत प्यारी प्रीतम कौं, करि वर विविध विलास।।१४।।
दिन क्रीड़त ब्रीड़ा[४] तजि दंपति, भूलि-भूलि निजु रूप[५]।
जब भूलत बिहार निजु तन कौ, तब ये मिलत अनूप[६]।।१५।।
नित्यबिहार कहत हैं याकौं, जे हैं रसिक सुजान[७]।
प्रेमदासि हित-रीति अटपटी, जाननि हू में जान[८]।।१६।।

---

१. सप्त स्वरों के धाम स्वरूप रत्नजटित नूपुर और बिछुवों ने मिलकर जब संगीत का प्रकाश फैलाया तब वहाँ आकर मोहन का मन भी गायक बन गया और सम्मोहनकारी ग्राम समूहों को लेते हुए गान करने लगा अर्थात् प्रेम का संगीत छिड़ गया २. जावक के रंग से रँजित प्रिया जू की नखावली उदयकालीन चन्द्रमा की भाँति नई-नई छबि विकीर्णित करती हुई झिलमिला रही है; जिसे देखकर परमाशक्त प्रीतम के मन की गति ने भी सुन्दर चकोर का रूप धारण कर लिया ३. जब प्रिया जू ने देखा कि प्रेमाशक्ति से विवश प्रीतम का मन चकोर बनकर मेरे पग-नख-चन्द्र में ही रम गया है तब उन्होंने पग-नखों की प्रभा के साथ-साथ अपने हृदयस्थ 'चौकी' नामक आभूषण को चमकाया और इस क्रिया से प्रीतम को यह संकेत भी कर दिया कि आपका स्थान पगों में नहीं सदा मेरे हृदय में ही है। प्रिया जू ने इस सांकेतिक प्रेम मार्ग से होकर प्रीतम को अपने हृदय-सिंहासन पर विराजमान कर लिया ४. लज्जा ५. अपना देहानुसंधान भूलकर अर्थात् पुनः-पुनः प्रेम -निमग्न होकर ६. प्रेममूर्ति प्रिया-प्रीतम का यह अनुपम विहार तभी अनुभूत हो सकता है जब अपने शरीर की विस्मृति हो जाय अर्थात् इसी जीवन में भावतः राधा किंकिरी वपु प्राप्त करके ही इस नित्यबिहार की अनुभूति हो सकती है ७. रस-ज्ञाता रसिकजन इसी को नित्यबिहार कहते हैं ८. प्रेमदासजी का कथन है कि रस-ज्ञाताओं में भी कोई श्रेष्ठ रस-ज्ञाता ही इस अटपटी हित-रीति को जान सकता है।

[१६५-६१]

सैंन शोभा :-

राग-बिहागरौ

पौढ़े लाड़िली नव लाल।
मुदित किशलय[१] सैंन पर दोउ, मरगजी[२] गर माल।।१।।
लतनि लागीं निरखि सुख, ललितादि होत निहाल।
निकट छबि सौं फिरत[३] कोकिल, कीर-मोर-मराल।।२।।
पीतपट में दुहुँनि के मुख, झमकि रहे विशाल।
झिलमिलत मनौं कनक घन में[४], जुगल चंद रसाल।।३।।
स्वेद-सीकर[५] जगमगत, राजत मनोहर भाल।
श्रवति अमी आनन्द, पीवत दृग चकोरी बाल[६]।।४।।
सुपन में क्रीड़त मिले मन[७], नवल पिय सँग बाल।
छलक छबि झलकति ललित गति, रुचिर रन्ध्रनि जाल।।५।।
प्रेम-सागर स्याम, सुख निधि, रूप कुँवरि कृपाल[८]।
प्रेमदासि हित निरखि शोभा, होत बलि इहिं काल[९]।।६।।

[१६६-६२]

राग-बिहागरौ

प्यारी-पिय पौढ़े हैं करि केलि।
मानौं विमल लता आनँद की, प्रफुलित तन रस झेलि[१०]।।
वदन-चंद आनन्द श्रवत दृग, भरत चकोरी हेलि[११]।
प्रेमदासि हित ललित झरोखनि, झिलमिलात छबि-रेलि[१२]।।

---

१. नवीन और कोमल पत्तों से विनिर्मित २. मसली हुई या दबी हुई ३. डोलते हैं ४. स्वर्ण बादल में छिपे हुए ५. श्रम जल के कण ६.सहचरीगण ७. मन मिले हुए ८. प्रेम के सागर श्याम और सुख तथा रूप की समुद्र कुँवरि श्रीराधा कृपालु हैं ९. इस शुभावसर की शोभा देखकर बलिहारी जाती हैं १०. रस में तल्लीन उनका श्रीअंग मानों आनन्द की सुन्दर लता के रूप में प्रफुल्लित हो रहा है ११. जुगल के मुख-चन्द्र आनंद का निर्झरण कर रहे हैं; जिसे चकोरी सहचरीजन अपने नेत्रों से पान करती हैं १२. छबि का तीव्र प्रवाह।

[१६७-६३]

पाट महोत्सव :- राग-सूही विलावल

श्रीवृन्दावन बजति बधाई । नवल कुंज नव फूलनि छाई।।
बरसगाँठि दम्पति की आई । जोरी उबटन-उबटि न्हवाई।।
न्हवाइ उबटन-उबटि जोरी, कुसुम-भूषन सखि सजैं।
पहिरि पीत दुकूल फूलत, गौर स्यामल छबि छजैं[1]।।
बने सुभग सिंगार नख-सिख, परस्पर छबि यौं बढ़ैं।
केशरी बागे पहिरि मनु, सूर[2] रति-रन कौं चढ़ैं।।१।।
गावति मंगल अली सुहाई। झूमक सारी सजि-सजि आई।।
लै कर कुमकुम अजिर[3] लिपायौ। गजमोतिनु सौं चौक पुरायौ।।
पुराइ मोतिनु चौक चहुँदिशि, धुजा रँग-रँग की धरैं।
रतन-वंदनमाल बाँधति, कुम्भ कंचन के भरैं[4]।।
कनक-कदली रोपि तिनमें[5], धरी चौकी हेम[6] की।
तहाँ स्यामा-स्याम राजत, करत वरषा प्रेम की।।२।।
नव जुवती घसि केशरि ल्याई । लाल-भाल पर खौरि बनाई।।
कोऊ अरगज लियैं विराजैं । अरस परस छिरकत सुख[7] साजैं[8]।।
साजैं सुखहि रँग छिरकि सुंदरि, मनौं खेलैं फाग री।
होत सूहे[9] प्रान सुनि-सुनि, करत सूहौ राग[10] री।।
बीनि-बीनि नवीन वीननि[11], परनि[12] परवीननि[13] लई।
ताल-चंग-मृदंग बाजत, चंद्रगति[14] उपजत भई।।३।।
नाचत अलीं भलीं सुकुँमारी । बदि-बदि अपनी-अपनी वारी[15]।।
जब-जब अलग लाग गति लैहीं । तब-तब रीझि उभय[16] सब दैंहीं।।

१. छबि से शोभायमान २. शूरवीर ३. आँगन ४. स्वर्ण-कलशों में जल भरती हैं ५. उस आँगन में ६. स्वर्ण ७. पाठा०—छबि ८. सुख लूटती हैं व लुटाती हैं ९. अनुराग के रंग से रँजित १०. संगीत में ओड़व-षाड़व जाति का एक राग जो दिन के दूसरे पहर के अन्त में गाया जाता है ११. वीणा में चुन-चुनकर नवीन तानें लीं १२. वाद्यों को बजाते समय मुख्य बोलों के बीच-बीच में बजाये जाने वाले बोलों के खण्ड १३. चतुर सखियों ने १४. संगीत की एक गति विशेष १५. अपना-अपना दाव आने पर १६. जुगलवर।

दैंहिं रीझि यु उभय अभरन, लैंहि इहिं चिर[1] सहचरी।
नन्द-जसुदा भानु-कीरति, कहति तिनकी जस खरी[2]।।
करति ये नित चोज[3] सजनी, लै पुहुप लावति झरी[4]।
प्रेमवारि हित जुगलवर[5] हँसि, गोद मेवनि सौं भरी।।४।।

हित-जस-विलास किंवा ब्रज-विलास

[१६८-१]

लाल जू की जन्म बधाई :- राग-भैरवी

अरी सुनि आजु बधाई नँदराइ कैं,बाजत मदिलरा द्वार।
प्रगटे श्रीमोहन सोहन अति, फूल्यौ ब्रज परिवार[6]।।
आनँद बढ्यौ तिहूँ पुर छाई, दिवि दुंदुभि झनकार।
'प्रेम' सहित सुत निरखि महर जू[7], दये वारि भंडार।।

[१६६-२]

राग-मधु माधव

नाचत ब्रजरानी जू कैं आगैं, मंगलमुखी रँगीले।
नन्दसुवन कैं जनम सोहिले[8], गावत छैल छबीले[9]।।
चार पदारथ छुवत न[10] हीरा, लाल लुटावत लै गरवीले[11]।
'प्रेम' सहित बिनु लखैं कुँवर कैं, टरत न हठनि हठीले[12]।।

१. बहुत सी अथवा नित्यप्रति २. वे सहचरियाँ जुगलवर के सुन्दर विरद गान में उनकी आनन्द-यश-दायिनी प्रभापूर्ण कीर्ति का कथन करती हैं ३. चमत्कार पूर्ण बात ४. फूलों की झड़ी लगाती हैं ५. जुगलवर ने सब सखियों की ६. संपूर्ण ब्रज उनका परिवार बना हुआ प्रसन्न हो रहा है ७. नन्द बाबा ने ८. जन्मोत्सव के गीत ६. छैल छबीले गोपगण १०. जिन्हें चारों पदार्थों [धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष] की भी कोई चाहना नहीं है ११. वे स्वयं ही हीरा और लाल आदि बहुमूल्य मणियों को लुटा-लुटाकर गर्वान्वित हो रहे हैं १२. कुँवर-दर्शन की हठ में पक्के हैं वे वहाँ से हटते ही नहीं हैं।

[२००-३]

राग-देवगंधार

रानी जू जायौ पूत सुलक्षन।
विप्रनि दान देत मणि-कंचन, ब्रज-बनितनि पट-दक्षन[१]।।
जनमत गयौ घोष[२] कौ नसिकैं[३], सब संताप[४] ततक्षन[५]।
प्रेमदास प्रभु प्रगट भये हैं, निज दासनि कौं रक्षन[६]।।

[२०१-४]

राग-चैती गौरी

मंगल गावैं श्रीनँदराय कैं गावैं,
आली कोकिल कण्ठी[७] आज।
झूमक सारी तन बनी, मणिमय भूषन साज।।१।।
धन्य भरथ कौ खण्ड[८] री, तहाँ ब्रज प्रगट लसाय।
तामें धनि जसुदा तुही, जायौ सुत सुखदाइ।।२।।
गोप-सभा में राजहीं, श्रीब्रजपति सुख भीन।
फूले चहुँ दिशि कंज से, मधि सीतल रवि लीन[९]।।३।।
मोतिनु चौक पुरावहीं, बाबा जू हरषाय।
फूलनि भवन छवावहीं, बाँधीं धुजा रँगाय[१०]।।४।।
कंचन-कलस भरावहीं, चीतत बहु रँग द्वार।
तोरन सहित जराव की, बाँधीं बन्दनवार।।५।।
कदली कनक रुपाइकैं, विप्र बुलाइ अपार।
नामकरन करवाइकैं, उमगे सुतहिं निहार।।६।।
कामधेनु, विप्रनि दई, देत रतन मित छाँड़ि[११]।
बन्दीजननि पर वरषहीं, हेम-हीर तजि आड़[१२]।।७।।

१. वस्त्र और दक्षिणा २. ग्वालों की एक जाति विशेष ३. नष्ट हो गया ४. दुःख ५. उसी क्षण या तत्काल ६. रक्षा करने के लिए ७. कोयल जैसे सुरीले कण्ठ वाली ब्रजयुवतियाँ ८. राजा भरत के द्वारा किये हुए पृथ्वी के नौ खण्डों में से एक खण्ड-भारतवर्ष ९. अपने मध्य में शीतल सूर्य को लेकर १०. रँगाकर ११. मित छोड़कर अर्थात् जिनकी कोई इयत्ता नहीं है इतने अधिक १२. मर्यादा त्यागकर सबको समान रूप से स्वर्ण और हीरे प्रदान कर रहे हैं।

केसर सौं माखन रँग्यौ, मलत मुखनि सौं गोप।
होत सुनहरी झोल[१] सौ, खिले कमल करि ओप[२]।।८।।
हरदी मिलि दधि यौं दिपै, लीनौं पुरट[३] निचोर।
अरस परस छिरकत खरे, नाचत जन ज्यौं मोर[४]।।९।।
पीत बूँद झलकत खरीं[५] ब्रजवासिन कैं अंग।
मानौं सुवरन फूल सौं, फूले तरुवर रंग[६]।।१०।।
सुर सुमननि वरषावहीं, देव दुंदुभी बजाय।
तिहुँ पुर में आनँद बढ्यौ जय-जय धुनि रही छाय।।११।।
नर-नारिनु पहिराइकैं, यौं उमहे ब्रजराय[७]।
प्रेमदासियन सौं कह्यौ, तुम फूलौ हित गाय[८]।।१२।।

[२०२-५]

राग-आसावरी

ब्रज की बनिता बनि मंगल गावत आवैं।
नव-सत साजि सिंगार चलीं मिलि, जसुमति-सुतहिं लड़ावैं।।१।।
कंचन-कलस ललित सिर शोभित, यौं मुख तन सरसावैं।
मनौं दामिनी धरि कमलनि पर, अमृत-भाजन लावैं[९]।।२।।
निरख्यौ आइ लाल कौ आनन, बाल विमल बतरावैं।
चाहत कह्यौ कह्यौ नहिं आवत, हिय जिय आनँद छावैं।।३।।
ज्यौं सुख होइ सजाती सौं मिलि, त्यौं चख लखि[१०] सचु पावैं।
लोचन श्याम श्याम यह सुन्दर, 'प्रेम' सहित हरषावैं[११]।।४।।

१. स्वर्णिम आवरण २. आभा युक्त ३. स्वर्ण ४. ब्रजवासी गण ऐसे सुशोभित हो रहे हैं जैसे आनन्दोन्मत्त मोर नृत्य कर रहे हैं ५. सुन्दर ६. आनन्द के वृक्ष ७. ब्रज के राजा नन्द ८. श्रीहित का रस-जस गान करके फूलो ९. मानों ब्रजबालायें रूपी दामिनी अपने हस्त-कमलों में अमृत-भाजन के रूप में कंचन का कलश लेकर नंद भवन में गवन कर रही हैं १०. अपनी आँखों से देखकर ११. सुन्दर श्याम को देखकर उन ब्रजबालाओं के श्याम लोचन सजाति की भाँति हर्षित होते हैं।

[२०३-६]

राग-गौरी

आँगन नंद के दधिकाँदौ।
नाचत गोपी-ग्वाल परस्पर, प्रगटे जग में जादौ[१]।।१।।
दूध लेहु दधि लेहु लेहु घृत, माखन माट सँजूत[२]।
गृह-गृह तें गोपी गावति आईं, भयौ महरि कैं पूत।।२।।
बाजत तार[३] करत कोलाहल, वारि-वारि[४] दैंहिं दान।
जायौ जसुमति पूत तिहारैं, जातैं सदा कल्यान[५]।।३।।
छिरकैं लगे छबीले दीसे[६] हरदी पीत सु वास[७]।
महा आनंद 'प्रेम' सु मंगल, इहिं ब्रज सदा हुलास[८]।।४।।

[२०४-७]

राग-बिहागरौ

नव रस रूप लाल[९], प्रगट्यौ है शुभ काल,
लोचन विशाल देखौ, कहा नीकौ[१०] लाल है।
चलिहै मराल चाल, सोहैगी सु गुञ्जमाल,
बैरिन कौ उर-साल[११], संतनि कौ पाल[१२] है।।
कीरति की सुता बाल, जोरी जुरि है रसाल[१३],
जैसैं हेम-डाल[१४] अरु, साँवरौ तमाल है।
सुनौं नन्द! तत्काल, कोऊ 'प्रेम' रूप-जाल,
ग्वालनि के नाल[१५], खेलि करैगौ निहाल है।।

१. यादव जाति में उत्पन्न नन्दनंदन २. घड़ों के साथ-साथ मक्खन ३. तार वाद्य ४. पुनः पुनः या न्यौछावर कर करके ५. जिससे सर्वदा सबका हित होगा ६. दिखाई दिये ७. हल्दी की छींटों से पीले वस्त्र ८. श्यामसुन्दर के प्रागट्य से इस ब्रज में महा उल्लास, महा आनन्द और प्रेम का मंगल सदा बना रहेगा ९. नवीन रस ही लाल के रूप में अथवा नवों रस का एक ही स्वरूप श्यामसुन्दर बनकर १०. क्या सुन्दर है ११. शत्रुओं के हृदय को सालने वाला १२. पालन करने वाला १३. श्रीराधा के साथ इसकी रसपूर्ण जोड़ी बनेगी १४. स्वर्ण की बेलि १५. संग में या साथ में।

[२०५-८]

छबीली छठी :–

राग-सारँग

नन्द जू फूले अंग न मात, निरखि लाल कौ रूप।।टेक।।
आजु कुँवर की छटी जटी सुख, नाचत ब्रज की बाल।
पहिरावत तिनकौं कंचन-पट, अरु मोतिनु की माल।।१।।
गोप ओप सौं[१] हेरी गावत, सजैं सिंगार बनाई।
छिरकत चोबा-चंदन-वन्दन, दधि-मधि हरद मिलाई।।२।।
जिते जगत में जाचक कहियैं, ते आये हैं द्वार।
पूरन करत मनोरथ सबके, ब्रजपति परम उदार।।३।।
देत असीस सकल नर-नारी, अति आनँद में फूल।
'प्रेम' सहित चिरुजियौ नन्दसुत, ब्रज की जीवनि मूल।।४।।

[२०६-६]

श्रीप्रिया जू की जन्म बधाई :-

राग-आसावरी

आजु प्रगटी श्रीवृषभानभवन में, श्रीवृन्दावन रानी।
रसिकनि हित रस-सागर नागरि, ब्रज धरु करी रवानी[२]।।१।।
सत-चित-आनँद लली-लला बनि[३], यह मति विरले[४] जानी।
नित्यबिहार प्रगट करिवे कौं, प्रगटे आनँददानी।।२।।
कीरति-भानु नन्द-जसुमति मिलि, सुभग सगाई ठानी।
संपति सकल लुटाइ चाइ सौं, दै-दै मान अमानी[५]।।३।।
सुर सुमननि बरसावत-गावत, बोलत जै-जै वानी।
प्रेमदासि हित गौर-स्याम की, नित चित बसौ कहानी[६]।।४।।

१. शोभा से संयुक्त गोपगण २. ब्रज में प्रकट होकर वहाँ की धरनी सुशोभित की ३. सच्चिदानन्द स्वरूप परात्पर तत्व रस ही श्रीराधा-श्यामसुन्दर के रूप में लोक प्रत्यक्ष हुआ ४. कोई एक ५. जो सम्मान करने के योग्य नहीं हैं उन्हें भी सम्मान प्रदान कर करके महान कार्य कर दिखाया ६. गाथा या आख्यायिका।

[२०७-१०]

राग-देवगंधार

आजु ब्रज घर-घर बजति बधाई।
भयौ उदय[१] वृषभानराइ कैं, नवलकिशोरी जाई[२]।।१।।
घर-घर धुजा-पताका राजति, वंदनमाल सुहाई।
घर-घर नर-नारी मिलि नाँचत, मिलत मंगली[३] गाई।।२।।
घर-घर तें बनिठनि[४] वर बनिता, भान-भवन में आई।
गोपी-ग्वाल दुग्ध-दधि छिरकत, हेरी दै-दै भाई[५]।।३।।
बीनि-बीनि[६] जाँचक त्रिभुवन के[७], देत नृपति ठकुराई[८]।
कीरति जू की कीरति सुनि-सुनि, कमला फिरत लजाई।।४।।
देव-वधू सुमननि वरषावति, सुर दुंदुभी बजाई।
फूले रसिक रँगीले तन-मन, 'प्रेम' सहित निधि पाई।।५।।

[२०८-११]

राग-सारँग

हमारैं[९] माई नित ही मंगलचार।
नित जसुदा नित नन्दराइ नित, मोंहन जनम विचार।।१।।
नित कीरति वृषभानराइ नित, कुँवरि जनम उदगार[१०]।
नित फूलनि सौं भवन छवावत[११], नित चित्रित आगार[१२]।।२।।
नित मोतिनु सौं चौक पुरावत, नित धरि धुजा अपार।
नित कंचन के कुम्भ भरत नित, बाँधत वन्दनवार।।३।।
नित कदली रोपत सौंने के, नित धरि दीप सँवार।
नित गुलाब छिरकत नित तानत, सुरँग वितान उदार।।४।।
नित घर पंच शब्द बाजत नित, फूलत ब्रज परिवार।
नित सब सजन[१३] बधाई गावत, नित हिय सुख विस्तार।।५।।

१. ज्योति पुञ्ज का प्रसार हो गया २. प्रकट हुई ३. मांगलिक गीत ४. सुसज्जित होकर ५. पाठा॰– गाई ६. खोज-खोजकर ७. पाठा॰– जाँचक सब जग के ८. राज्य श्री ९. हमारे ब्रज स्थल में १०. हमारे हृदय से श्रीराधा जन्म के उद्‌गार निकलते रहते हैं अर्थात् श्रीराधा जन्म के गीतों की रचना होती रहती है ११. फूलों का वितान तानते हैं १२. भवन १३. सम्बन्धी।

नित छिरकत दधि-मधि हरदी नित, नाचत गोपी-ग्वार।
नित बरसावत सुर सुमननि नित, करि दुंदुभि झनकार।।६।।
नित जाँचक आवत तिनकौं नित, देत भंडारनि वार[१]।
नित द्विज आइ लेत धैंनुनि कौं[२], नित करि जै-जैकार।।७।।
नित वृन्दावन नित ताके शशि लाल-बाल सुकुँवार।
प्रेमदासि हित श्याम-स्वामिनी, नित नव करत बिहार।।८।।

[२०९-१२]

राग-सारँग

नेगिनि नंदीस्वर[३] तें आई।
दई असीस जियौ उत मोंहन, इत कीरति तुव जाई।।१।।
कहा कहौं सुख नंदगाँव के, क्यौं हूँ कहत न आवैं।
फूले-फूले नन्द-जसोदा, आपु बधाई गावैं।।२।।
सुनि कन्या पै सर्वसु वार्‍यौ, यौं कहि मोहि पठायौ[४]।
कीजौ[५] विनती कीरति जू सौं, भयौ आजु मन भायौ।।३।।
सुनि हरषे वृषभान नृपति जू, रानी मोद बढ़ाये।
कनक-वसन रतननि के भूषन, नेगिनि कौं पहिराये।।४।।
करी विदा करि बोल वचन सब, बहु भंडार लुटाये।
प्रेमदासि हित सब ब्रज फूल्यौ, मन वांछित फल पाये।।५।।

[२१०-१३]

राग-मारू

जाँचक अभिमानी नहिं मो सौ।
सुन्यौ आजु वृषभान नृपति मैं, दाता और न तो सौ।।१।।
कीरति जू की कूख सिरानी, तिहुँ पुर आनँद छायौ।
बहु दिन की मैं आशा कीनी, भयौ आजु मन भायौ।।२।।
कुँवरि लली कौ जनम सुनत हौं, फूलत अंग न मायौ[६]।
यह दिन अविचल रहौ तिहारैं, जिन मुहि परम सिहायौ[७]।।३।।

१. न्यौछावर करके २. गायों को ३. नन्दगाँव से ४. भेजा है ५. जाकर ये कहना अथवा ये विनती करना ६. मैं फूला नहीं समाया ७. जिस उत्सव ने मुझे परम सुख दिया है या परम प्रसन्न किया है।

तुम तौ महा उदार गोप-नृप, घन लौं[१] कंचन बरसे।
मोती-हीरा-लाल-रतन के, लाइ रहे वर झर से[२]।।४।।
अब कहौ कृपन[३] रहैगौ को जग, जब तुम ऐसैं सरसे।
औरौ दान देत अति अद्‌भुत, तुम से तुमहीं दरसे।।५।।
अष्ट सिद्धि नव निधि जे चाहत, तिनकौं दै निरवेरौ[४]।
अरु जे चाहत इन्द्रलोक कौं, ताकौं देहु घनेरौ।।६।।
ब्रह्मा कैं पद कौं जे माँगत, दीजै ताहि सबेरौ[५]।
हौं तौ इनमें कछू न चाहौं, गर्व गुमानी तेरौ[६]।।७।।
नहिं चाहत बैकुंठ वास कौं, अरु कहि कहा सुनाऊँ।
चाहत हौं इक द्वार तिहारौ, ताकौ सेवन पाऊँ।।८।।
या पन[७] कौं निरवाह करौ प्रभु, तुव पद-सीस नवाऊँ।
देहु सुता की चरन-रैंनु मुहि, 'प्रेम' सहित गुन गाऊँ।।९।।
[२११-१४]

राग-कल्यान

रमकि झमकि नाचति रँग राचत, मंगलमुखी रँगीले।
कुँवरि लली कैं जनम सोहिले, गावत छैल छबीले[८]।।
लै बलाइ वृषभानु-सुता की, सुख-सागर में झीले[९]।
'प्रेम' सहित लखि गौर-वदन-छबि, पाये लाग रसीले[१०]।।
[२१२-१५]

राग-बिहागरौ

रावल रँगीली भई[११], जहाँ तहाँ छबि छई,
कीरति कैं सुता जई[१२], फूल्यौ कान्ह वनरा[१३]।
गावत मंगलचार, बाजत मंदर द्वार,
नर-नारि भेंट लै-लै, आये बहु धनरा[१४]।।

१. बादल की तरह २. तुमने सुन्दर झड़ी जैसी लगा दी है ३. कंजूस ४. निपटा दो ५. शीघ्र ही ६. मैं तो आपका ही गर्व गुमानी हूँ और आपका ही गर्व गुमानी बना रहूँगा ७. प्रतिज्ञा ८. बहुत बनठन कर रहने वाले ९. तल्लीन १०. प्रिया जू की मुख छबि को ही लाग [शुभावसर पर मिलने वाले नियत धन] के रूप में प्राप्त करके वे रस-संभृत हो गये ११. रावल की भूमि आनंद के रंग से रँग गई १२. प्रकट हुई १३. दूलह श्याम १४. सम्पत्ति।

नन्द-जसुमति धाये, वृषभान जू कैं आये,
नाचैं गोपी-गोपनि में, लयैं गोद जनरा[१]।
दधि में हरद नाइ[२], छिरकत मुसिकाइ,
सजन-सजन[३] मिलि, बाढ्यौ 'प्रेम' घनरा[४]।।
[२१३-१६]

पलना :-

राग-विलावल

बन्यौ पालनौं लाल गुलाल[५]।
कीरति की कुल-मंडनि राधे, तामें झूलति रूप रसाल[६]।।१।।
कंचन की डोरी में झलकति, मोतिनु के झूमक छबि जाल।
तापर तन्यौं वितान जरी कौ, झालरि में झलकति मणि-लाल।।२।।
लियैं गोद में ललितादिक कौं, लसति चहूँ दिशि ब्रज की बाल।
मनौं चन्द-चय[७] धरैं अंक में, दमकि रहीं दामिनि की माल।।३।।
नित्य किशोरी रसिकनि कैं हित, प्रगट भई शिशु ह्वै शुभ काल।
प्रेमदास हित विपिन इन्दु कौ, नंदराइ कैं करत निहाल[८]।।४।।

१. अपने लाला [श्यामसुन्दर] को गोद में लेकर २. डालकर ३. समधी-समधी [नन्द और वृषभान] ४. बहुत अधिक ५. गुल्लाला के फूलों की भाँति गहरे लाल माणिक्यों का पलना सुशोभित है ६. रसालय रूप वाली श्रीराधा ७. चन्द्रमा के समूह ८. वृन्दावन का चन्द्रमा [श्यामसुन्दर] नंदराय के यहाँ प्रगट होकर सबको प्रसन्नता पूर्ण बनाता है।